साङ्गोपाङ्ग महाविद्या-शान्ति-प्रयोग

॥ श्रीमहाविद्यापुरश्चरणपद्धतिः ॥

लेखक एवं सम्पादक

डॉ. रामप्रिय पाण्डेय

साङ्गोपाङ्ग महाविद्या-शान्ति-प्रयोग

॥ श्रीमहाविद्यापुरश्चरणपद्धतिः ॥

लेखक एवं सम्पादक

डॉ. रामप्रिय पाण्डेय

॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
५३१

श्रीमहाविद्यापुरश्चरणपद्धतिः

(साङ्गोपाङ्ग महाविद्या-शान्ति-प्रयोगः)

लेखक एवं सम्पादक
डॉ० रामप्रिय पाण्डेय

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

© सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण या किसी भी विधि (जैसे-इलेक्ट्रोनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉडिंग या कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यंत्र में भंडारण, जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो, प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नही किया जा सकता है।

ISBN : 978-93-81484-21-0

प्रकाशक :
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के 37/117 गोपाल मंदिर लेन, पोस्ट बॉक्स न. 1129
वाराणसी-221001
दूरभाष : (0542) 2335263

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : 2012
मूल्य : 500.00

अन्य प्राप्तिस्थान :
चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली न. 21-ए, अंसारी रोड़, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
दूरभाषः (011) 32996391, टेलीफैक्सः (011) 23286537

*

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड़, जवाहर नगर,
पोस्ट बॉक्स न. 2113, दिल्ली-10007

*

चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)
पोस्ट बॉक्स न. 1069, वाराणसी-221001

मुद्रक
डीलक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

स्तुतिकुसुमाञ्जलिः

काश्यामुपेत्यविधिवत् तपसाबलेन, प्राप्तश्रियः सकलशास्त्रविचारदक्षान्।
अध्यापनेन सततं कृतशास्त्ररक्षान्, श्रीवायुनन्दनबुधान् प्रणमामि नित्यम्॥१॥
पूर्वं नमस्त्रिमुनिशास्त्रविचक्षणाय, साहित्यमर्मविदुषे कृतिने ततश्च।
मीमांसया दलितदुर्व्यसनाय पश्चात्, श्रीवायुनन्दन! महामतये नमस्ते॥२॥
शास्त्राण्यधीत्य बहवः कटुकैर्विवादैर्ग्रस्तान्तरास्तु समयं क्षपयन्ति नित्यम्।
श्रौतप्रभाविलसिता गुरवो मदीया, श्रीविश्वनाथपदभक्तिजुषः किलासन्॥३॥
साहित्यशास्त्रसुरवृक्षविवर्धनेन, तस्यामृताभफलदानमनोहरेण।
सत्रेण भारतधरा किल यस्य भाति, तस्मै बृहस्पतिनिभाय नमो नमस्ते॥४॥
ये ब्रह्मवंशविभुताकलितान्तरङ्गा, आचारतश्च भृतभूरिविभूतिभङ्गा।
गङ्गावगाहनशिवार्चनतत्परास्ते, श्रीवायुनन्दनबुधा गुरवो जयन्ति॥५॥
भस्मत्रिपुण्ड्रविलसच्छुभविग्रहाणां, विद्याविलासविगलद्मधुवाग्झराणाम्।
पाण्डेयवर्यविदुषां पदयोर्नतिर्नौ, भूयादहर्निशममङ्गलनाशनाय॥६॥
काश्यां विपश्चिदतुलासु सभा सुसभ्या, यत्यन्निधौविधृतमौननिभा अभूवन्।
तान् ते विश्वनाथपदपङ्कजभृङ्गभूतान्, श्रीवायुनन्दनगुरून् सततं स्मरामि॥७॥
जाज्वल्यमाननिजपावनविग्रहेण, लोकोत्तरेण महसा च तपोबलेन।
श्रीविश्वनाथपदमाशुगतं भवन्तः, ध्यात्वा पितः वयमहो कृतिनो भवामः॥८॥

परमपूज्यश्रीपितृचरणगुर्वर्पणमस्तु

।।श्रीः।।

सम्पादकीय

अखिल ब्रह्माण्डनायिका मातेश्वरी श्रीदुर्गा परमेश्वर की प्रधान शक्ति हैं, जो समय-समय पर आवश्यकतानुसार अवतार लेकर परब्रह्म परमात्मा के विश्व का कल्याण तथा उसकी रक्षा करती रहती हैं, वे ही ब्रह्म के व्यवहारचतुष्टय के समय विभिन्न रूपों को ग्रहण करती हैं—

एकैव शक्तिः परमेश्वरस्य, भिन्नाश्चतुर्धा व्यवहारकाले।
पुरुषेषु विष्णु भोगे भवानी, समरे च दुर्गा प्रलये च काली॥

इनकी श्रद्धा-भक्तिपूर्वक आराधना करके मनुष्य अपने जीवन में समस्त कामनाओं की पूर्ति कर आप्तकाम हो जाता है।

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्॥

पुराणों के अनुसार जब-जब देवताओं पर विपत्तियाँ आयीं, तब-तब समस्त देवता मिलकर साक्षात् ब्रह्ममय महाभगवती की आराधना करके अपनी समस्त आपत्ति-विपत्ति से छुटकारा पाकर अपने को कृतार्थ किया करते थे तथा अपने समस्त भोगों एवं ऐश्वर्यों को प्राप्त करने के लिए परमेश्वरी की कृपाप्राप्ति के लिए तप किया करते थे।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥

वे इस घोरतम भवसागर में कर्म, भक्ति तथा ज्ञान-वैराग्य की कृपापूर्वक प्राप्ति के लिए भक्तों के लिए वाञ्छाकल्पतरु हैं। मनुष्य किसी भी कामना से इनकी आराधना के द्वारा समस्त मनोऽभिलषित दुर्लभतम वस्तु की सहज प्राप्ति कर सकता है। महर्षि मेधामुनि ने राजा सुरथ तथा समाधि वैश्य को अपनी समस्त कामना की पूर्तिहेतु इन्हीं महादेवी की उपासना के लिए निर्देश दिये तथा मेधामुनि से ही विधिपूर्वक दीक्षा ग्रहण करके दोनों भक्त राजा सुरथ तथा समाधि वैश्य ने महादेवी की कृपा मात्र तीन वर्ष में ही प्राप्त की।

तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा॥

इस कलियुग में भक्तजनों के हितार्थ स्वयं सदाशिव ईश्वर ने भगवती से लोककल्याण के लिए सुगम तथा सहज उपाय का निर्देश करने के लिए कहा—

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी।
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः॥

उक्त प्रश्न के उत्तर में स्वयं महादेवी ने कलियुग में हितकारी सर्वोच्च साधन के रूप में समस्त कामनाओं की पूर्ति करने के लिए बताया है—

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम्।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते॥

वे ही महादेवी महामाया समस्त प्राणियों के चित्त को मोहित करके संसारबन्धनों में ग्रस्त कर देती हैं, चाहे वह महाज्ञानी पुरुष ही क्यों न हो—

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥

और वे ही भक्तिपूर्वक स्मरण करने पर समस्त प्राणियों का भय हरण कर लेती हैं, स्वस्थ प्राणियों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। दुःख, दारिद्र्य और भय का हरणकर निर्भय करनेवाली एकमात्र परमकल्याणमयी महादेवी ही हैं। ये ही महाभगवती समस्त मङ्गल प्रदान करनेवाली मङ्गला, समस्त कल्याणप्रदायिनी कल्याणप्रदा, शरणागतवत्सला, एकमात्र तीन नेत्रोंवाली महागौरी हैं—

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे,
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते,
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥

इस विघटनकारी युग में जहाँ मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिए राक्षसी वृत्ति को ग्रहण करके दूसरे मनुष्य को सदैव कष्ट देने के लिए ही उपाय करता है, ईर्ष्या-द्वेष से ग्रस्त हो करके अपने मन में एक-दूसरे से शत्रुता का व्यवहार करता है, शत्रुतावश सदैव एक-दूसरे की हानि करने के लिए ही उद्यत रहता है, लौकिक व्यवहार में सीधे यदि कुछ हानि करने में समर्थ नहीं हो तो निकृष्ट तान्त्रिकों ओझा-सोखाओं तथा पीर-पैगम्बरों का आश्रय लेकर भूत-प्रेतादि के द्वारा ही हानि करने का प्रयास करता है; ऐसी परिस्थितियों में सभ्य लोगों के पास ऐसे लोगों से अपने रक्षार्थ किसी भी सुगम उपाय की अनुपलब्धता में सबसे सरल उपाय महाविद्याशान्तिप्रयोग ही है। इसके प्रयोग की पूर्ण विधि समाज में अनुपलब्ध होने के कारण तथा सन्तजनों की माँग पर इसका लेखन महादेवी की कृपा से सम्पन्न हो सका है, जो विपरीत परिस्थितियों में मनुष्यों की दयनीय अवस्था से रक्षा के लिए तथा उनका भला करने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इस शुभ अवसर पर मैं श्रीपितृचरण स्व०

प्रोफेसर वायुनन्दनपाण्डेयजी का स्मरण करता हूँ। उन्हीं के पूर्वनिर्देशानुसार तथा उनकी असीम अनुकम्पा से 'श्रीमहाविद्या-पुरश्चरणपद्धति' प्रबन्धग्रन्थ का लेखन पूर्ण हुआ; जिसका प्रकाशन श्रीनवनीतदास गुप्त जी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन के द्वारा जनकल्याणार्थ किया गया है। सभी जन इसके माध्यम से अपने जीवन को सुरक्षित तथा भयमुक्तकर शान्तिमय सुख प्राप्त करें तथा अपने जीवन को भयमुक्त बना सकें, यही इसकी रचना का उद्देश्य है।

प्रस्तुत प्रबन्धग्रन्थ के अन्त में कुछ विशिष्ट लोगों से प्राप्त सामग्री को भी परिशिष्ट के रूप में दिया गया है। इस श्रीमहाविद्या-पुरश्चरणपद्धति (महाविद्याशान्ति-प्रयोग) का आधार मुख्यतः रुद्रयामल-पूर्वतन्त्र का है, जो पाण्डुलिपि के रूप में हमारे पूज्य पिताश्री के पास था जिसे विस्तारित करके लोककल्याण की भावना से लोकोपयोगी बनाने का प्रयासमात्र किया है।

'नित्यं शुभं भवतु'

श्रावण शुक्ला पञ्चमी,
संवत् २०६७ वि०

रामप्रिय पाण्डेय

भूमिका

चतुष्टयी प्राकृतिक सृष्टि में मनुष्य ही एक विवेकवान् है। लेकिन विवेक का सदुपयोग आज के कलियुग में कोई भी नहीं कर रहा है। सर्वत्र सभी जन भौतिक समृद्धि के लिए दिन-रात प्रयत्नशील हैं। इस भौतिक प्रयत्नशीलता में वे इतने व्यस्त हैं कि उन्हें कर्तव्याकर्तव्य का तनिक भी स्मरण नहीं है। आज व्यक्ति किसी भी तरह से, कैसे भी धर्माधर्म का विचार किये विना ही अधर्माचरण का आश्रय ग्रहण करके जल्दी-से-जल्दी ही समृद्ध बन जाना चाहता है। अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए तरह-तरह के हथकण्डे अपनाता रहता है। अपने अगल-बगल के प्रतिद्वन्द्वियों को भौतिक संसाधनों के साथ-साथ तन्त्र-मन्त्र का भी सहारा लेकर क्षुद्रतान्त्रिकों (प्रेतादि उपासक, टोनाटोटकादि) का आश्रय लेकर अन्यान्य प्रकार के अहित की कामना से विभिन्न प्रकार के प्रेतादियुक्त अभिचार (षट्कर्म-मारण-मोहन-उच्चाटन-वशीकरण-आकर्षणादि) कराने लगता है, जिसके प्रभाव में आकर अभिचारित व्यक्ति विभिन्न प्रकार से परेशान रहता है, इस युग का मनुष्य अपने स्वार्थ-साधन में सदैव अनृत भाषण में ही संलिप्त हो गया है, सदैव ही अन्यों के अहित चिन्तन में ही अनुरक्त है। वह युगानुकूल कालुष्य से लिप्त होकर कलुषित हृदय होकर रह गया है, जिससे समस्त समाज ही कष्टों से युक्त हो दुःखग्रस्त हो गया है।

कर्तव्याकर्तव्य का विचार त्याग देने के कारण तथा विभिन्न प्रभावों में पड़कर पितृकार्यादि का पूर्णतः परित्याग कर देने के फलस्वरूप आज मनुष्य पितृदोषों से ग्रस्त होकर परेशान हो गया है। अधुना समाज में बहुतेरे जन प्रेतादि दोषों से ग्रस्त हो गये हैं, जिससे उन्हें सन्तानादि, धनादि, सामाजिक व्यवहारादि समस्त प्रकार की हानियाँ हो रही हैं, उनके घर में वंश-वृद्धि रुक गयी है, यदि सन्तान किसी कारण से हो भी गयी तो वह जीवन को कष्ट देनेवाली हो जा रही है, अत्यधिक परिश्रम करने पर भी आवश्यकता के अनुरूप धनागम नहीं हो रहा है। वह मानसिक परेशानियों से ग्रस्त होने के कारण कष्टमय जीवन जी रहा है। यह दोष कलियुग में युगधर्मानुसार दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है।

इसी प्रकार से लोक में मनुष्यों को कष्टग्रस्त देखकर एक बार गिरिराज हिमालय के उच्चशिखर पर आसीन कपाल-मालाधारी कामारि गङ्गाधर देवाधिपति भगवान् शङ्कर से स्वयं गिरिसुता भगवती पार्वती ने विनम्रतापूर्वक कहा कि हे देव! आजकल समग्र जगत् के प्राणी नाना प्रकार की व्याधियों से पीड़ित दरिद्रता का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अतः आप सकल दुःख के निवारण के लिए कोई ऐसा उपाय बतलाने की कृपा करें, जिससे

रोग, दरिद्रता एवं शत्रुओं द्वारा सताये हुए प्राणी क्लेशमुक्त होकर जीवन सुखी बना सकें। तब जटाजूटधारी, सृष्टिसंहर्ता भगवान् त्र्यम्बक महादेव शिवशङ्कर ने कहा कि हे पार्वति! समस्त क्लेशों से छुटकारा दिलानेवाले उन अमोघ मन्त्रों का मैं वर्णन करता हूँ, जिनका विधानपूर्वक अनुष्ठान कर लेने पर मनुष्य रोगों, समस्त प्रकार के शोकों, दरिद्रता, शत्रुओं के भय, शत्रुओं के द्वारा किये गये एवं कराये गये समस्त अभिचारों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है, यह अनुष्ठान विशेषत: प्रेतादि दोषों को समाप्त करके समस्त प्रकार का सुख प्रदान करनेवाला है।

मूलप्रकृति महामाया महादेवी की सृष्टिविधि में पाँच प्रकार के भेद हैं, ये महादेवी ही दुर्गा, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती तथा सावित्री रूप से प्रकट होती हैं—

गणेशजननी दुर्गा राधा लक्ष्मीः सरस्वती।
सावित्री च सृष्टिविधौ प्रकृतिः पञ्चधा स्मृता॥

ये ही मूलप्रकृति महादेवी ब्रह्मरूपिणी सत्त्व-रज-तम भेदवाली हैं। इन्हें ही शक्तिपद से सम्बोधित किया जाता है। सृष्टि के आदि में जो स्थित है, वे ही प्रकृतिपद वाच्या हैं। इसी प्रकृति के योग से आत्मा सृष्टिविधि में दक्षिण और वाम दो रूपों में अभिव्यक्त होता है। दक्षिण भाग पुंभाव तथा वाम भाग प्रकृतिरूपा है, वही ब्रह्मरूपा है, वही नित्या सनातनी है। यह आत्मा तथा शक्तिपद ही योगाग्नि में दाह होकर स्त्रीपुंभेद की समाप्ति करके शाश्वत ब्रह्ममय हो जाता है—

प्रकृतेर्लक्षणं वत्स को वा वक्तुं क्षमो भवेत्।
किञ्चित्तथापि वक्ष्यामि यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रतः॥१॥
प्रकृष्टवाचकः प्रश्च कृतिश्च सृष्टिवाचकः।
सृष्टौ प्रकृष्टा या देवी प्रकृतिः सा प्रकीर्तिता॥२॥
गुणे सत्त्वे प्रकृष्टे च प्रशब्दो वर्तते श्रुतः।
मध्यमे रजसि कृश्च तिशब्दस्तमसि स्मृतः॥३॥
त्रिगुणात्मस्वरूपा या सा च शक्तिसमन्विता।
प्रधाना सृष्टिकरणे प्रकृतिस्तेन कथ्यते॥४॥
प्रथमे वर्तते प्रश्च कृतिश्च सृष्टिवाचकः
सृष्टेरादौ च या देवी प्रकृतिः सा प्रकीर्तिता॥५॥
योगेनात्मा सृष्टिविधौ द्विधारूपो बभूव सः।
पुमांश्च दक्षिणार्धाङ्गो वामार्धा प्रकृतिः स्मृता॥६॥
सा च ब्रह्मस्वरूपा च नित्या सा च सनातनी।
यथात्मा च तथा शक्तिर्यथाग्नौ दाहिका स्थिता॥७॥
अतएव हि योगीन्द्रैः स्त्रीपुंभेदो न मन्यते।
सर्वं ब्रह्ममयं ब्रह्मञ्छश्वत्सदपि नारद॥८॥

वे ही ब्रह्मस्वरूपिणी महादेवी स्वेच्छामय ब्रह्म श्रीकृष्ण की सिसृच्छा से सहसा मूलप्रकृति के रूप में आविर्भूत हो करके पञ्च भेदवाली सृष्टिकर्म की विभेदिका होकर भक्तानुग्रहविग्रहा हुयीं—

स्वेच्छामयस्येच्छया च श्रीकृष्णस्य सिसृक्षया।
साऽऽविर्बभूव सहसा मूलप्रकृतिरीश्वरी॥१॥
तदाज्ञया पञ्चविधा सृष्टिकर्मविभेदिका।
अथ भक्तानुरोधाद्वा भक्तानुग्रहविग्रहा॥२॥

गणेश की माता पार्वती जो दुर्गारूपा हैं, शिवरूपा हैं, शिवप्रिया हैं, वे ही नारायणी, विष्णुमाया, पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी सनातनी हैं, वे ही ब्रह्मादि देवताओं तथा मुनियों की पूज्या तथा स्तुता हैं, वे ही सभी की अधिष्ठात्री शर्वरूपा हैं। वे ही धर्म, सत्य, पुण्य, कीर्ति, यश तथा मङ्गल प्रदान करनेवाली हैं। वे ही सुख, मोक्ष, हर्षदात्री, शोकार्तिदुःखनाशिनी हैं, वे ही शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणा हैं, वे ही तेजस्वरूपा परमा सर्वशक्तिस्वरूपा हैं, वे ही सिद्धेश्वरी, सिद्धिरूपा, सिद्धिदा, सिद्धीश्वरी हैं, वे ही बुद्धिनिद्राक्षुत्पिपासाछायातन्द्रादयास्मृतिजातिक्षान्तिभ्रान्तिशान्तिकान्तिचेतनातुष्टिपुष्टिलक्ष्मीधृतिमाया तथा सर्वशक्तिस्वरूपिणी हैं—

गणेशमाता दुर्गा या शिवरूपा शिवप्रिया।
नारायणी विष्णुमाया पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी॥१॥
ब्रह्मादिदेवैर्मुनिभिर्मनुभिः पूजिता स्तुता।
सर्वाधिष्ठातृ देवी सा शर्वरूपा सनातनी॥२॥
धर्मसत्यपुण्यकीर्तिर्यशोमङ्गलदायिनी ।
सुखमोक्षहर्षदात्री शोकार्तिदुःखनाशिनी॥३॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणा ।
तेजःस्वरूपा परमा तदधिष्ठातृदेवता॥४॥
सर्वशक्तिस्वरूपा च शक्तिरीशस्य सन्ततम्।
सिद्धेश्वरी सिद्धिरूपा सिद्धिदा सिद्धिरीश्वरी॥५॥
बुद्धिर्निद्रा क्षुत्पिपासा छाया तन्द्रा दया स्मृतिः।
जातिः क्षान्तिश्च भ्रान्तिश्च शान्तिः कान्तिश्च चेतना॥६॥
तुष्टिः पुष्टिस्तथा लक्ष्मीर्धृतिर्माया तथैव च।
सर्वशक्तिस्वरूपा सा कृष्णस्य परमात्मनः॥७॥
उक्तः श्रुतौ श्रुतगुणश्चातिस्वल्पो यथागमम्।
सर्वसम्पत्स्वरूपा सा तदधिष्ठातृदेवता॥८॥

वे ही महादेवी मूलप्रकृति की द्वितीय रूप सर्वसम्पत्स्वरूपिणी लक्ष्मी हैं। वे ही कान्ता, शान्ता, सुशीला, सर्वमङ्गला तथा भक्तानुरक्ता हैं तथा वे ही भगवान् विष्णु की

प्रियंवदा हैं। वे ही लक्ष्मीरूप वैकुण्ठ में पतिसेवारता सती है। वे ही स्वर्ग में स्वर्गलक्ष्मी, राज्य में राज्यलक्ष्मी, घर में गृहलक्ष्मी के रूप में तथा मनुष्यों में गृहिणीरूपिणी हैं। वाणिज्य रूप से लक्ष्मी ही वणिक् के यहाँ, पापियों के यहाँ कलह करनेवाली कलहलक्ष्मीरूपी, तथा विद्वानों के यहाँ वेदरूप से व्याप्त हैं।

कान्ताऽतिदान्ता शान्ता च सुशीला सर्वमङ्गला।
लोभमोहकामरोषमदाहङ्कारवर्जिता ॥१॥
भक्तानुरक्ता पत्युश्च सर्वाभ्यश्च पतिव्रता।
प्राणतुल्या भगवतः प्रेमपात्रं प्रियंवदा॥२॥
सर्वसस्यात्मिका देवी जीवनोपायरूपिणी।
महालक्ष्मीश्च वैकुण्ठे पतिसेवारता सती॥३॥
स्वर्गे च स्वर्गलक्ष्मीश्च राजलक्ष्मीश्च राजसु।
गृहेषु गृहलक्ष्मीश्च मर्त्यानां गृहिणां तथा॥४॥
सर्वप्राणिषु द्रव्येषु शोभारूपा मनोहरा।
कीर्तिरूपा पुण्यवतां प्रभारूपा नृपेषु च॥५॥
वाणिज्यरूपा वणिजां पापिनां कलहाङ्कुरा।
दयारूपा च कथिता वेदोक्ता सर्वसम्मता॥६॥
सर्वपूज्या सर्ववन्द्या चान्यां मत्तो निशामय।

महादेवी महामाया मूलप्रकृति की तृतीय स्वरूप वाणी की अधिष्ठात्री सरस्वती हैं, जो परमात्मरूपिणी बुद्धि-विद्या-ज्ञान की स्वामिनी हैं, भक्तों को बुद्धि, मेधा, प्रतिभा, स्मृति प्रदान करनेवाली हैं, नाना प्रकार के सिद्धान्तों के भेद को प्रकट करनेवाली हैं, स्वर, संगीत, सन्धान, ताल प्रदान करनेवाली हैं, विषय ज्ञान में वाग्रूपा हैं, वे ही व्याख्या तथा वाद करने-वाली शान्ता एवं वीणा-पुस्तक धारण करनेवाली हैं, वे ही शुद्धसत्त्वरूपा सुशीला तथा श्रीहरि की प्रिया हैं, वे ही तपस्वरूपा हैं तथा तपस्वियों को तपःपूत करनेवाली हैं, वे सिद्धिविद्यास्वरूपा हैं, सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करनेवाली हैं।

वाग्बुद्धिविद्याज्ञानाधिष्ठात्री च परमात्मनः।
सर्वविद्यास्वरूपा या सा च देवी सरस्वती॥१॥
सा बुद्धिः कविता मेधा प्रतिभा स्मृतिदा नृणाम्।
नानाप्रकारसिद्धान्तभेदार्थकलना मता॥२॥
व्याख्याबोधस्वरूपा च सर्वसन्देहभञ्जिनी।
विचारकारिणी ग्रन्थकारिणी शक्तिरूपिणी॥३॥
स्वरसङ्गीतसन्धानतालकारणरूपिणी ।
विषयज्ञानवाग्रूपा प्रतिविश्वोपजीविनी॥४॥

व्याख्यावादकरी शान्ता वीणापुस्तकधारिणी।
शुद्धसत्त्वस्वरूपा च सुशीला श्रीहरिप्रिया॥५॥
हिमचन्दनकुन्देन्दुकुमुदां भोजसन्निभा।
यजन्ती परमात्मानं श्रीकृष्णं रत्नमालया॥६॥
तपःस्वरूपा तपसां फलदात्री तपस्विनाम्।
सिद्धिविद्यास्वरूपा च सर्वसिद्धिप्रदा सदा॥७॥
देवी तृतीया गदिता श्रुत्युक्ता जगदम्बिका।
यथागमं यथाकिञ्चिदपरां त्वं निबोध मे॥८॥

महामाया महादेवी मूलप्रकृति के चतुर्थ भेद का गुणगान वेदों में, छन्दों में, सन्ध्या-वन्दन के मन्त्रों में, सभी तन्त्रों मे व्याप्त है। वे ही द्विजजातिरूपा हैं, जपरूपा तपस्विनी हैं, ब्राह्मणों में तेजोरूपा हैं। वे पवित्रीरूपा गायत्री, सावित्री, ब्राह्मणप्रिया हैं, तीर्थों में उनका स्पर्श होने पर ही आत्मशुद्धि होती है। जो शुद्ध स्फटिक के समान शुद्ध सत्त्वरूपा हैं, वे परमानन्दस्वरूपिणी परम सनातनी हैं, जिनके पादरज से समस्त जगत् पवित्र हो जाता है।

माता चतुर्णां वर्णानां वेदाङ्गानां च छन्दसाम्।
सन्ध्यावन्दनमन्त्राणां तन्त्राणां च विचक्षणा॥१॥
द्विजातिजातिरूपा च जपरूपा तपस्विनी।
ब्रह्मण्यतेजोरूपा च सर्वसंस्काररूपिणी॥२॥
पवित्ररूपा सावित्री गायत्री ब्रह्मणः प्रिया।
तीर्थानि यस्याः संस्पर्शं वाञ्छन्ति ह्यात्मशुद्धये॥३॥
शुद्धस्फटिकसंकाशा शुद्धसत्त्वस्वरूपिणी।
परमानन्दरूपा च परमा च सनातनी॥४॥
परब्रह्मस्वरूपा च निर्वाणपददायिनी।
ब्रह्मतेजोमयी शक्तिस्तदधिष्ठातृदेवता॥५॥
यत्पादरजसा पूतं जगत्सर्वं च नारद।
देवी चतुर्थी कथिता पञ्चमीं वर्णयामि ते॥६॥

महादेवी महामाया मूलप्रकृति की पाँचवी भेद राधास्वरूपिणी भगवती हैं, ये ही पञ्चप्राणाधिदेवी पञ्चप्राणस्वरूपिणी हैं। सभी में परमसुन्दरीरूपा समस्त सौभाग्यस्वरूपिणी हैं। ये ही ब्रह्म की वामाङ्गभूता सर्व तेजोरूपिणी हैं। श्रीकृष्ण की रासेश्वरी हैं, गोलोक ही जिनका वासस्थान है। वे स्वयं गोपीवेश धारण करनेवाली हैं, वे निर्गुणा, निराकारा, निर्लिप्ता, आत्मस्वरूपिणी, परमाह्लादकारिणी सन्तोष तथा हर्षरूपिणी हैं, वे चन्द्रमा के सदृश प्रभावाली सर्वदा श्रीविग्रहयुक्ता हैं।

पञ्चप्राणाधिदेवी या पञ्चप्राणस्वरूपिणी।
प्राणाधिकप्रियतमा सर्वाभ्यः सुन्दरी परा॥१॥

सर्वयुक्ता च सौभाग्यमानिनी गौरवान्विता।
वामाङ्गार्धस्वरूपा च गुणेन तेजसा समा॥२॥
परावरा सारभूता परमाद्या सनातनी।
परमानन्दरूपा च धन्या मान्या च पूजिता॥३॥
रासक्रीडाधिदेवी श्रीकृष्णस्य परमात्मनः।
रासमण्डलसम्भूता रासमण्डलमण्डिता॥४॥
रासेश्वरी सुरसिका रासावासनिवासिनी।
गोलोकवासिनी देवी गोपीवेषविधायिका॥५॥
परमाह्लादरूपा च सन्तोषहर्षरूपिणी।
निर्गुणा च निराकारा निर्लिप्तात्मस्वरूपिणी॥६॥
निरीहा निरहङ्कारा भक्तानुग्रहविग्रहा।
वेदानुसारिध्यानेन विज्ञाता सा विचक्षणैः॥७॥
दृष्टिदृष्टा न सा चेशैः सुरेन्द्रैर्मुनिपुङ्गवैः।
वह्निशुद्धांशुकधरा नानालङ्कारभूषिता॥८॥
कोटिचन्द्रप्रभा पुष्टसर्वश्रीयुक्तविग्रहा।
श्रीकृष्णभक्तिदास्यैककरा च सर्वसम्पदाम्॥९॥
अवतारे च वाराहे वृषभानुसुता च या।
यत्पादपद्मसंस्पर्शा पवित्रा च वसुन्धरा॥१०॥
ब्रह्मादिभिरदृष्टा या सर्वैर्दृष्टा च भारते।
स्त्रीरत्नसारसम्भूता कृष्णवक्षःस्थले स्थिता॥११॥

वे परमात्मभूता महामाया महादेवी महाविद्यारूपिणी ही सर्व जगत् में एकमात्र सर्वदोषों का शमन करके सर्वसुखसौभाग्यप्रदायिनी हैं, जिनके एकमात्र स्मरण से ही प्राणीमात्र शुद्ध तथा परमपवित्र होकर नित्यशुद्ध स्वरूप होकर ब्रह्म हो जाता है तथा मुक्त हो जाता है। वे देवी परम तेजोरूपा निराकारस्वरूपिणी हैं, जिनका सदैव ही योगीजन सतत ध्यान करते रहते हैं तथा उन्हीं की वन्दना करते रहते हैं। वे ही अदृश्य भाव से सभी की द्रष्टा हैं।

तेजोरूपं निराकारं ध्यायन्ते योगिनः सदा।
वदन्ति च परं ब्रह्म परमानन्दमीश्वरम्॥१॥
अदृश्यं सर्वद्रष्टारं सर्वज्ञं सर्वकारणम्।
सर्वदं सर्वरूपं तं वैष्णवास्तन्न मन्वते॥२॥
वदन्ति चैव ते कस्य तेजस्तेजस्विना विना।
तेजोमण्डलमध्यस्थं ब्रह्म तेजस्विनं परम्॥३॥
स्वेच्छामयं सर्वरूपं सर्वकारणकारणम्।
अतीव सुन्दरं रूपं बिभ्रतं सुमनोहरम्॥४॥

किशोरवयसं शान्तं सर्वकान्तं परात्परं।
नवीननीरदाभासधामैकं श्यामविग्रहम्॥५॥
शरन्मध्याह्नपद्मौघशोभामोचनलोचनम् ।
मुक्ताच्छविविनिन्द्यैकदन्तपंक्तिमनोरमाम् ॥६॥
मयूरपिच्छचूडं च मालतीमाल्यमण्डितम्।
सुनसं सस्मितं कान्तं भक्तानुग्रहकारणम्॥७॥

महादेवी ही प्रकृत्यात्मक कार्य सम्पादनार्थ गुणाधार रूप से तीन रूपों को धारण करती हैं। सृष्टिकार्य के लिए ही देवी योगमायारूपिणी हैं। वे महादेवी महाविद्या मूलप्रकृति ही योगमाया महाकाली रूप में विद्यमान हैं। वे ही महामाया हैं, उन्हीं के वशीभूत होकर सभी प्राणीमात्र अपने-अपने कार्य का विधान करते हैं। वे ही षोडशकलात्मिका हैं। वे ही परम दुर्दान्त दैत्य मधुकैटभ का विनाश करती हैं।

जगन्माये महामाये समुद्रशयने शिवे।
त्वदाज्ञावशगाः सर्वे स्वस्वकार्यविधायिनः॥१॥
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिर्मदोत्कटा ।
व्यापिनी वशगा मान्या महानन्दैकशेवधिः॥२॥
महनीया महाराध्या माया मधुमती मही।
परायणां सर्वेषां परमा त्वं प्रकीर्तिता॥३॥
लज्जा पुष्टिः क्षमा कीर्तिः कान्तिः कारुण्यविग्रहा।
कमनीया जगद्वन्द्या जाग्रदादिस्वरूपिणी॥४॥
परमा परमेशानी परानन्दपरायणा।
एकाऽप्येकस्वरूपा च सद्वितीया द्वयात्मिका॥५॥
त्रयी त्रिवर्गनिलया तुर्या तुर्यपदात्मिका।
पञ्चमी पञ्चभूतेशी षष्ठी षष्ठेश्वरीति च॥६॥
सप्तमी सप्तवारेशी सप्तसप्तवरप्रदा।
अष्टमी वसुनाथा च नवग्रहमयीश्वरी॥७॥
नवरागकला रमया नवसङ्ख्या नवेश्वरी।
दशमी दशदिक्पूज्या दशाशाव्यापिनी रमा॥८॥
एकादशात्मिका चैकादशरुद्रनिषेविता।
एकादशीतिथिप्रीता एकादशगणाधिपा॥९॥
द्वादशी द्वादशभुजा द्वादशादित्यजन्मभूः।
त्रयोदशात्मिका देवी त्रयोदशगणप्रिया॥१०॥
त्रयोदशाभिधा भिन्ना विश्वेदेवाधिदेवता।
चतुर्दशेन्द्रवरदा चतुर्दशमनुप्रसूः॥११॥

पञ्चाधिकादशीवेद्या पञ्चाधिकदशीतिथिः।
षोडशी षोडशभुजा षोडशेन्दुकलामयी॥१२॥
षोडशात्मकचन्द्रांशु व्याप्तदिव्यकलेवरा।
एवं रूपाऽसि देवशि निर्गुणे तामसोदये॥१३॥

चराचर जगत् की अधिष्ठात्री महादेवी ही हैं, वे ही ब्रह्मरूपा हैं। उनका निरञ्जनरूप प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमानादि से नहीं जाना जा सकता है। वे ही परम विलक्षण लोकविख्यात माया नाम की शक्ति हैं। इन्हें सत्याऽसत्य से अलग एक विलक्षण तत्त्व कहा गया है।

सन्नाप्यसन्नाप्युभयात्मिकानो, भिन्नाप्यभिन्नप्युभयात्मिकानो।
सङ्गाप्यसङ्गाप्युभयात्मिकानो, महाद्भुतानिर्वचनीयरूपा॥

वह महाविद्यारूप ही अग्नि में दाहकत्व रूप से, सूर्य में प्रकाशकत्व रूप से तथा चन्द्रमा में चन्द्रिका रूप से सदा ही विद्यमान रहती हैं। जिस प्रकार सुषुप्ति अवस्था में समस्त व्यवहारशून्य हो जाते हैं, वैसे ही प्रलयकाल में जीव के कर्म, स्वयं जीव और काल सभी उसी में विलीन हो जाते हैं।

पावकस्योष्णतेवेयमुष्णांशोरिव दीधितिः।
चन्द्रस्य चन्द्रिकेवेयं ममेयं सहजा ध्रुवा॥१॥
तस्यां कर्माणि जीवानां जीवाः कालाश्च सञ्चरे।
अभेदेन विलीनाः स्युः सुषुप्तौ व्यवहारवत्॥२॥

वे महाविद्या विशिष्ट ज्ञान से अनुभूत होती हैं, वे ही संवित् ज्ञानमय शरीररूपी हैं। वे नित्य पदार्थरूपा हैं, वे ही चिर अनन्त परम प्रेम की आश्रयभूता आनन्दरूपा हैं, जिस प्रकार प्रकाश और अन्धकार दोनों की एक साथ अवस्थिति नहीं हो सकती, उसी प्रकार मिथ्या पदार्थ के साथ नित्य पदार्थ अर्थात् दोनों एक स्थान पर एक साथ ही नहीं हो सकते हैं।

अत एव च नित्यत्वं प्रोक्तं सच्छास्त्रकोविदैः।
आनन्दरूपताः चास्याः परप्रेमास्पदत्वतः॥१॥
मा न भूव हि भूयासमिति प्रेमात्मनि स्थितम्।
सर्वस्याऽन्यस्य मिथ्यात्वादसङ्गत्वं स्फुटं मम॥२॥

वे ही महाविद्या समस्त प्राणियों के अन्तःकरण में सङ्कल्प-विकल्प कार्याधार होने के कारण मनरूप हैं और सङ्कल्पविकल्प से निश्चयात्मक रूप होने से बुद्धिरूप है। पुनः स्मृतिरूप व्यापार से वे चित्तरूप हो जाती हैं तथा जब तद्पदार्थज्ञानवानस्मीत्याकारक हो जाती हैं तो अहङ्कार रूप से व्याप्त होती हैं अर्थात् अन्तःकरण में कार्यरूप से तत्तद् भेदों से भेदवान् होकर व्याप्त रहती हैं।

यदा तु सङ्कल्पविकल्पकृत्यं तदा भवेत्तन्मन इत्यभिख्यम्।
स्याद् बुद्धिसंज्ञं च यदा प्रवेत्ति सुनिश्चितं संशयहीनरूपम्॥

अनुसन्धानरूपं तच्चित्तं च परिकीर्तितम्।
अहंकृत्यात्मवृत्या तु तदहङ्कारतां गतम्॥

वे ही महाविद्या नामरूप (शब्दार्थ) वाली हैं, उनका नाम ही शब्दब्रह्म तथा रूपात्मकता ही प्रपञ्चरूप है। वे शब्दब्रह्मात्मिका परमेश्वरी जब पुनः प्रपञ्च से संयोग करती हैं तो पदात्मिका-वर्णात्मिका हो जाती हैं। उनका वर्णात्मिका रूप ही मातृकारूपिणी है। वर्णमयी मातृका ही इस जगत् में जीवों का परमकल्याण करती हैं। वे ही वर्णात्मिकारूपिणी पराभगवती महाविद्यारूपिणी हैं तथा भक्तों के कष्टों का निवारण करती हैं, इन्हीं के स्मरणानुष्ठानादि करने से समस्त क्लेशों की परिसमाप्ति होती है अर्थात् प्राणियों के शारीरिक, मानसिक, व्यावहारिक समस्त दुःखों के कारणों की आत्यन्तिक परिसमाप्ति हो जाती है। इनकी उपासना के लिए प्रामाणिक तथा परिष्कृत विधि समाज में अनुपलब्ध होने से विद्वानों की कामनापूर्ति हेतु ही प्रस्तुत प्रबन्ध निबन्धन के रूप में अवतरित है। दोषों-कष्टों की अधिकता होने पर इस पद्धति का आश्रय लेकर अनुष्ठान कराकर सुखरूपी फलप्राप्ति की जा सकती है। आवश्यकता होने पर इस अनुष्ठान को कभी भी किया जा सकता है। इसमें किसी विशेष मुहूर्त की भी आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि इसका आपत्तिकाल में भी प्रयोग होता है। जिस क्षण आपत्ति की जानकारी हुई, उसी काल में इस प्रयोग को किया जा सकता है। जिस क्षण विपत्ति का आगमन हुआ और जब ही अनुष्ठान करने की कामना हो गयी, उसी क्षण इस अनुष्ठान को सम्पादित कराकर लाभान्वित हुआ जा सकता है। आतुरकाल ही इसका सर्वसुलभ मुहूर्त है। इसलिए निःशङ्क होकर मानव-जन इस विधि से अपना कल्याण कर सकते हैं। यह सर्व सरल और सुगम विधि है। श्रीकाशीविश्वनाथस्वरूप मेरे जनक परमपुण्यमय श्रीसद्गुरुस्वरूप स्व० प्रो० वायुनन्दनपाण्डेयजी के असीम कृपाप्रसादस्वरूप जनकल्याणार्थ यह महाविद्यापुरश्चरण का लेखन पूर्ण हुआ है, जो उन्हीं को समर्पित है। यह जनकल्याणकारी हो, जनसामान्य तथा कर्मकाण्डी विद्वान् इस विधि का अनुसरण करके अपना तथा लोक का भला करें।

विद्वत्चरणंचञ्चरीक
रामप्रिय पाण्डेय

॥श्रीः॥

श्रीगणेशस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः। आचम्य प्राणायामं कृत्वा न्यासं कुर्यात्।
ॐ गं वक्रतुण्डाय नमः दक्षिणहस्ते न्यस्यामि।
ॐ गं शूर्पकर्णाय नमः वामहस्ते न्यस्यामि।
ॐ गं विघ्नेशाय नमः ओष्ठे न्यस्यामि।
ॐ गं गजाननाय नमः सम्पुटे न्यस्यामि।
ॐ गं लम्बोदराय नमः दक्षिणपादे न्यस्यामि।
ॐ गं एकदन्ताय नमः वामपादे न्यस्यामि।
ॐ गं ब्रह्मणस्पतये नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ गं शिवतनुजाय नमः चिबुके न्यस्यामि।
ॐ गं विनायकाय नमः दक्षिणनासिकायां न्यस्यामि।
ॐ गं ज्येष्ठराजाय नमः वामनासिकायां न्यस्यामि।
ॐ गं विकटाय नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ गं कपिलाय नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ गं धरणीधराय नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ गं आशापूरकाय नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ गं महोदराय नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ गं धूमकेतवे नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ गं मयूरेशाय नमः ललाटे न्यस्यामि।
ॐ गं स्वानन्दाय नमः दक्षिणबाहौ न्यस्यामि।
ॐ गं सच्चित्सुखधाम्ने नमः वामबाहौ न्यस्यामि।

सदात्मरूपं सकलादिभूतममायिनं सोऽहमचिन्त्यबोधम्।
अनादिमध्यान्तविहीनमेकं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१॥
अनन्तचिद्रूपमयं गणेशं अभेदभेदादिविहीनमाद्यम्।
हृदि प्रकाशस्य धरं हृदिस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥२॥
समाधिसन्स्थं हृदि योगिनां यः प्रकाशरूपेण विभान्तमेतम्।
सदानिरालम्बसमाधिगम्यं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥३॥

स्वबिम्बभावेन विलासयुक्तं प्रत्यक्षमायां विविधस्वरूपम्।
स्ववीर्यकं तत्र ददाति यो वै तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥४॥
त्वदीयवीर्येण समर्थभूतं स्वमायया संरचितञ्च विश्वम्।
तुरीयकं ह्यात्मप्रतीतिसंज्ञं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥५॥
त्वदीयसत्ताधरमेकदन्तं गुणेश्वरं यं गुणबोधितारम्।
भजन्तमत्यन्तमजं त्रिसंस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥६॥
ततस्त्वया प्रेरितनादकेन सुषुप्तिसंज्ञं रचितं जगद् वै।
समानरूपं ह्युभयत्र संस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥७॥
तदेकविश्वं कृपया प्रभूतं द्विभावमादौ तमसा विभान्तम्।
अनेकरूपं च तथैकभूतं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥८॥
ततस्त्वया प्रेरितनादकेन बभूव सूक्ष्मं जगदेक संस्थम्।
सुसात्त्विकं स्वप्नमनन्तमाद्यं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥९॥
तदेव स्वप्नं तपसा गणेश सुसिद्धरूपं विविधं बभूव।
सदैकरूपं कृपया च तेऽद्य तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१०॥
त्वदज्ञया तेन त्वया हृदिस्थं तथा सुसृष्टं जगदंशरूपम्।
विभिन्नजाग्रन्मयमप्रमेयं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥११॥
विभिन्नजाग्रद्रजसां विभान्तं विलोकितं तत्कृपया स्मृतेन।
बभूव भिन्नं च सदैकरूपं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१२॥
सदेव सृष्टा प्रकृतिस्वभावात्तदन्तरं त्वं च विभाति नित्यम्।
धियः प्रदाता गणनाथ एकं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१३॥
त्वदज्ञया भान्ति ग्रहाश्च सर्वे प्रकाशरूपाणि विभान्ति खे वै।
भ्रमन्ति नित्यं स्वविहारकार्याः तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१४॥
त्वदज्ञया सृष्टिकरो विधाता त्वदज्ञया पालक एव विष्णुः।
त्वदज्ञया संहरको हरोऽपि तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१५॥
यदज्ञया भूमि जलेऽत्र संस्थे यदाज्ञया यः प्रवहन्ति नित्यम्।
स्वतीर्थसंस्थश्च कृतः समुद्रः तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१६॥
यदाज्ञया देवगणा दिविस्था ददन्ति वै कर्मफलानि नित्यम्।
यदाज्ञया शैलगणाः स्थिरा वै तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१७॥
यदाज्ञया शेषधराधरो वै यदाज्ञया मोहप्रदश्च कामः।
यदाज्ञया कालधराऽर्यमा च तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१८॥
यदज्ञया वाति विभाति वायुः यदाज्ञयाऽग्निर्जठरादिसन्स्थः।
यदाज्ञयेदं सचराचरं च तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१९॥

यदन्तरे सन्स्थितमेकदन्तं तदज्ञया सर्वमिदं विभाति।
अनन्तरूपो हृदिबोधकं यः तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥२०॥
सुयोगिनो योगबलेन साध्यं प्रकुर्वते कः स्तवनेन स्तौति।
अतः प्रणामेन सुसिद्धदोऽस्तु तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥२१॥

फलश्रुतिः

एकदन्त उवाच

भवत्कृतं मदीयं यत् स्तोत्रं प्रीतिप्रदं च यत्।
भविष्यति न सन्देहः सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥१॥
यं यमिच्छति तं तं वै दास्यामि स्तोत्रपाठतः।
पुत्रपौत्रादिकं सर्वं कलत्रं धनधान्यकम्॥२॥
गजाश्वादिकमत्यन्तं राज्यभोगादिकं ध्रुवम्।
भुक्तिं मुक्तिञ्च योगं वै लभते शान्तिदायकम्॥३॥
मारणोच्चाटनादीनि राजबन्धादिकम् च यत्।
पठतां शृण्वतां नृणां भवेन्न बन्धनादिकम्॥४॥
एकविंशति वारं यः श्लोकानैवेक विंशतीन्।
पठेच्च हृदि मां स्मृत्वा दिनानि त्वेकविंशतीन्॥५॥
न तस्य दुर्लभं किंचित् त्रिषु लोकेषु वै भवेत्।
असाध्यं साधयेन्मर्त्यः सर्वत्र विजयी भवेत्॥६॥
नित्यं यः पठति स्तोत्रं ब्रह्मभूतः स वै नरः।
तस्य दर्शनतः सर्वे देवाः पूता भवन्ति च॥७॥

त्रैलोक्यमोहनं नामश्रीगणेशस्तोत्रं परिपूर्णम्

◆

विषयानुक्रमणी

स्वस्तितिलकधारणम् १
पञ्चगव्यप्राशनम् १
त्रिराचमनम् १
पवित्रिधारणम् १
पवित्रिकरणम् १
यज्ञभूमिपूजनम् २
शिखास्पर्शनम् २
गुरुस्मरणम् २
वैदिकस्वस्तिवाचनम् २
पौराणिकस्वस्तिवाचनम् ३
प्रधानसङ्कल्पः ५
गणेशाम्बिकापूजनम् ६
गणेशाथर्वशीर्षः २०
गणेशाथर्वशीर्षमाहात्म्यम् २२
देव्याथर्वशीर्षः २४
देव्याथर्वशीर्षमाहात्म्यम् २८
स्वस्तिकलशस्थापनम् ३०
स्वस्तिकलशपूजनम् ३२
पुण्याहवाचनम् ४०
पुण्यकारकमन्त्राः ४३
अभिषेकः ४९
षोडशमातृकास्थापन-पूजनम् ५२
सप्तघृतमातृकास्थापन-पूजनम् ६६
आयुष्यमन्त्रपाठः ७७
साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दिश्राद्धम् ७९
आचार्यादिवरणम् ८५
दिग्रक्षणम् ८८
पञ्चगव्यकरणम् ९०
सर्वतोभद्रचक्रः ९१
सर्वतोभद्रदेवतास्थापनम् ९१
सर्वतोभद्रदेवतापूजनम् ९८
अन्तःपूजनम् १०६
पीठदेवतापूजनम् १०८
पीठशक्तिपूजनम् १११
प्रधानकलशस्थापनम् ११३
अग्न्युत्तारणविधिः ११७
श्रीमहाविद्यापूजनम् ११८
श्रीमहाविद्यासहस्रनामार्चनम् १२७
दैनिकबलिदानम् १६२
वटुकबलिः १६३
योगिनीबलिः १६४
गणेशबलिः १६५
क्षेत्रपालबलिः १६७
राजराजेश्वरबलिदानम् १६८
दिग्पालादिबलिदानम् १७०
भूतादिबलिः १७२
अखण्डदीपपूजनम् १७४
पुस्तकपूजनम् १७५
महाविद्यामातृकान्यासः १७६
अन्तर्मातृकान्यासः १७७
चक्रन्यासः १७७
बहिर्मातृकान्यासः १७९
सृष्टिन्यासः १८२
स्थितिन्यासः १८४
संहारन्यासः १८६
तत्त्वन्यासः १८८
महाविद्यामूलमन्त्रजपविधिः १८८
मालाविसर्जनम् १९१

महाविद्यामूलमन्त्रजपोत्तरन्यासः	१९१
महाविद्यामालामन्त्रप्रयोगः	१९३
महाविद्याविधिदिग्बन्धनम्	१९९
महाविद्याविधिदिग्पिशाचबन्धनम्	२०१
नृसिंहमन्त्रप्रयोगविधिः	२०४
नृसिंहमन्त्रन्यासः	२०४
नृसिंहप्रतिष्ठाविधिः	२०७
नृसिंहपूजनम्	२०७
नृसिंहमूलमन्त्रजपः	२१३
जपार्थमालासंस्कारविधिः	२१४
मालापञ्चगव्यकरणम्	२१४
महाविद्यामालायां मातृकाविन्यासः	२१५
नृसिंहमालायां मातृकाविन्यासः	२२२
महाविद्यामालाप्रतिष्ठाविधिः	२२९
नृसिंहमालाप्रतिष्ठाविधिः	२३२
श्रीमहाविद्यास्तोत्रम्	२३३
श्रीमहाविद्याकवचम्	२३७
श्रीमहाविद्याकालिकाकवचम्	२३८
श्रीमहाविद्याक्षमापनस्तोत्रम्	२४२
श्रीमहाविद्यानाममालाजपम्	२४७
श्रीमहादेवीस्तवेन्द्रम्	२४९
ब्रह्मगाथास्तवः	२५५
श्रीमहाविद्याष्टकम्	२५७
कालिस्तवनम्	२५९
कालीमहाविद्यासहस्त्रनामस्तोत्रम्	२६०
अमोघशिवकवचम्	२७६
महाभैरवप्रयोगः	२८४
महाभैरवमातृकान्यासः	२८४
महाभैरवअन्तर्मातृकान्यासः	२८५
महाभैरवबहिर्मातृकान्यासः	२८६
महाभैरवनामावलीन्यासः	२८९
महाभैरवध्यानम्	२९१
महाभैरवसात्त्विकध्यानम्	२९२
महाभैरवराजसध्यानम्	२९२
महाभैरवतामसध्यानम्	२९२
महाभैरवमन्त्रशापविमोचनम्	२९३
मालाप्रार्थना	२९३
महाभैरवमूलमन्त्रः	२९३
महाभैरव अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	२९३
अग्निस्थापनम्	२९५
पञ्चभूसंस्कारविधिः	२९६
अग्निसंस्कारः	२९६
ग्रहमण्डलचक्रः	२९९
ग्रहमण्डलदेवतास्थापनपूजनम्	३००
असङ्ख्यातरुद्रपूजनम्	३०७
असङ्ख्यातरुद्रकलशस्थापनम्	३०७
असङ्ख्यातरुद्रप्रतिष्ठा	३२१
कुशकण्डिकाविधिः	३२७
हवनप्रकरणम्	३३१
सूर्यादिग्रहेभ्यः हवनम्	३३१
असङ्ख्यातरुद्र हवनम्	३३४
प्रधानदेवतानांहवनम्	३३४
शताक्षरागायत्रीमन्त्रप्रयोगः	३५६
शताक्षरागायत्रीन्यासः	३५६
शताक्षरागायत्रीहवनम्	३६८
महाभैरवहवनम्	३७१
आवाहितदेवानां हवनम्	३७२
अग्निपूजनम्	३७९
स्विष्टकृद्धोमः	३७९
भूरादिनवाहुतिः	३८०
कुमारीसुवासिनीपूजनम्	३८०
कूष्माण्डबलिदानविधिः	३८५
बलिदानगायत्री	३८७
दिग्पालादिबलिदानम्	३९३
इन्द्राय बलिदानम्	३९३
अग्नये बलिदानम्	३९४
यमाय बलिदानम्	३९४
निर्ऋतये बलिदानम्	३९५

वरुणाय बलिदानम् ३९५
वायवे बलिदानम् ३९६
सोमाय बलिदानम् ३९६
ईशानाय बलिदानम् ३९७
ब्रह्मणे बलिदानम् ३९७
अनन्ताय बलिदानम् ३९७
ग्रहाणां बलिदानम् ३९८
पञ्चलोकपालादिबलिदानम् ४०३
गणेशाय बलिदानम् ४०४
दुर्गायै बलिदानम् ४०४
वायवे बलिदानम् ४०५
आकाशाय बलिदानम् ४०५
अश्विनीकुमारेभ्यः बलिदानम् ४०६
वास्तुपुरुषाय बलिदानम् ४०६
क्षेत्रपालाय बलिदानम् ४०६
पूर्णाहुतिः ४०९
वसोर्द्धाराहोमः ४१०
हवनीयकुण्डभस्मधारणम् ४११
विभिन्नदानादिसङ्कल्पः ४११
आवाहितदेवतानामुत्तरपूजनम् ४१४
गणपतिपूजनम् ४१४
महागौरीपूजनम् ४१४
स्वस्तिकलशस्थदेवतानां पूजनम् ४१४
षोडशमातृकानां पूजनम् ४१४
सप्तघृतमातृकानां पूजनम् ४१५
सर्वतोभद्रदेवतानामुत्तरपूजनम् ४१५
प्रधानकलशस्थदेवानामुत्तरपूजनम् ४१५
महाविद्यामुत्तरपूजनम् ४१६
महाभैरवमुत्तरपूजनम् ४२५
ग्रहमण्डलदेवतानामुत्तरपूजनम् ४२५
असंख्यातरुद्राणां पूजनम् ४२५
नीराजनविधिः ४२५
देवीपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् ४२८
अपराधक्षमापनस्तोत्रम् ४३१
भवानीस्तुतिः ४३३
देवीस्तुतिः ४३३
आवाहितदेवतानां विसर्जनम् ४३४
आचार्याय प्रधानपीठादिदानम् ४३५
सपरिवारयजमानस्य अभिषेकः ४३६
छायापात्रदानम् ४३७
अपराधक्षमापनम् ४३७
यजमानरक्षावन्धनम् ४३८
यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम् ४३८
यजमान-आशीर्वादः ४३८
यजमानपत्नि-आशीर्वादः ४३८

परिशिष्ट भाग-१

महाविद्यामातृका-होमसामग्रीः ४३९
ब्राह्मणवरणसामग्रीः ४३९
पूजनादिसामग्रीः ४३९
महाविद्यामातृका-होमः ४३९
महाविद्याप्रयोगः ४४०

परिशिष्ट भाग-२

सप्रयोगमहाविद्यास्तोत्रम् ४३९
दिग्बन्धनम् ४४६
दिग्पिशाचानां बन्धनम् ४४८
सर्वमन्त्रकीलनम् ४५०
महाविद्यामन्त्रः ४५०
महाविद्याकवचम् ४५३

परिशिष्ट भाग-३

पूजनसामग्रीसूची: ४५४

●

तन्त्रशास्त्र के महत्वपूर्ण ग्रन्थ - मूल संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित

- **तन्त्रसार :** परमहंस मिश्र (1-2 भाग)
- **कुलार्णवतन्त्रम् :** परमहंस मिश्र
- **नित्योत्सव :** (श्रीविद्याविमर्शकसद्ग्रन्थ) परमहंस मिश्र
- **त्रिपुरारहस्यम् :** (ज्ञान एवं महात्म्य खण्ड)
- जगदीशचन्द्र मिश्र (1-2 भाग)
- **तन्त्रालोक :** राधेश्याम चतुर्वेदी (1-5 भाग)
- **स्वच्छन्दतन्त्रं :** राधेश्याम चतुर्वेदी (1-2 भाग)
- **नेत्रतन्त्रम् :** राधेश्याम चतुर्वेदी
- **कामाख्यातन्त्रम् :** राधेश्याम चतुर्वेदी
- **महाकालसंहिता :** (कामकला-कालीखण्ड) राधेश्याम चतुर्वेदी
- **महाकालसंहिता :** (गुह्यकाली-खण्ड) राधेश्याम चतुर्वेदी (1-5 भाग)
- **रुद्रयामलम् :** सुधाकर मालवीय (1-2 भाग)
- **शारदातिलकम्**-सुधाकर मालवीय (1-2 भाग)
- **मन्त्रमहोदधि :** सुधाकर मालवीय
- **लक्ष्मीतन्त्रम् :** कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- **तन्त्रराजतन्त्रम्**-कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- **महानिर्वाणतन्त्रम् :** कपिलदेवनारायण
- **कामकलाविलास :** श्यामाकान्त द्विवेदी
- **वरिवस्यारहस्यम् :** श्यामाकान्त द्विवेदी
- **स्पन्दकारिका :** श्यामाकान्त द्विवेदी
- **सर्वोल्लासतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **नीलसरस्वतीतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **भूतडामरतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **सिद्धनागार्जुनतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **अन्नदाकल्पतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **त्रिपुरार्णवतन्त्रम् :** एस. खण्डेलवाल
- **विज्ञानभैरव :** बापूलाल अँजना
- **अहिर्बुध्न्यसंहिता :** सुधाकर मालवीय (श्रीपाञ्चरात्रागमान्तर्गता) (1-2 भाग)
- **देवीरहस्यम् :** (रुद्रयामलतन्त्रोक्तम्)
- कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- **स्वर्णतन्त्र :** भाषा टीका
- **महानिर्वाणतन्त्रम् :** कपिलदेवनारायण
- **बृहत्तन्त्रसार :** कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- **सौन्दर्यलहरी :** लक्ष्मीधरी टीका सहित
- सुधाकर मालवीय
- **सिद्धसिद्धान्तपद्धति :** द्वारकादास शास्त्री

◆◆◆

डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी द्वारा हिन्दी में लिखित

तंत्र विषयक महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ

- **श्रीविद्या-साधना :** (श्रीविद्या-उपासना का साङ्गोपाङ्ग शास्त्रीय विवेचन)
- **भारतीय शक्ति-साधना :** (शक्ति-विज्ञानः स्वरूप एवं सिद्धान्त का शास्त्रीय विवेचन)
- **ब्रह्मास्त्रविद्या एवं बगलामुखी-साधना :** (महाविद्याबगला-उपासना का शास्त्रीय विवेचन)
- **काश्मीर शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र :** (शिवसूत्र, शक्तिसूत्र एवं स्पन्दसूत्र के सन्दर्भ में शास्त्रीय विवेचन)
- **मुद्राविज्ञान एवं साधना :** (नित्यकर्मीय एवं तान्त्रिक मुद्राओं का सर्वाङ्गपूर्ण, सचित्र एवं शास्त्रीय विवेचन)

◆◆◆

☐ प्राप्ति स्थान ☐

चौखम्बा पब्लिशिंग हाऊस
4697/2, 21-ए, अंसारी रोड़,
दरियागंज नई दिल्ली - 110002
फोन न. 011-23286537, 32996391

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
के - 37/117 गोपाल मंदिर लेन
वाराणसी-221001
फोन न. 0542-2335263, 2335264

।।श्रीः।।

श्रीमहाविद्यापुरश्चरणपद्धतिः

सर्वप्रथम यजमान अपनी पत्नी के साथ शुभमुहूर्त में शुभासन पर बैठ करके तिलक करने के बाद शरीरशुद्ध्यर्थ तथा कर्माधिकारप्राप्त्यर्थ पञ्चगव्य का प्राशन अधोलिखित मन्त्र द्वारा करे। तीन बार केशव, नारायण और माधव इन तीनों नामों से अलग-अलग आचमन करे। शरीरशुद्ध्यर्थ तथा कर्माधिकारप्राप्त्यर्थ पञ्चगव्य का प्राशन अधोलिखित मन्त्र द्वारा करे।

स्वस्तितिलकधारणम्—अधोलिखित मन्त्र से तिलक धारण करे—

ॐ यु॒ञ्जन्ति॑ब्ब्र॒ध्ध्नम॑रु॒षञ्चर॑न्त॒म्परि॑त॒स्त्थुष॑÷॥ रोच॑न्तेरोच॒नादि॒वि॥ यु॒ञ्जन्त्य॑स्य॒ काम्म्या॒हरी॒व्विप॑क्षसार॑थे॥ शोणा॑धृ॒ष्ण्णूनृ॒वाह॑सा॥

तिलक करने के बाद पञ्चगव्यप्राशन करे।

पञ्चगव्यप्राशनम्—अधोलिखित मन्त्र पाठ करते हुए प्राशन करे।

ॐ यत्वगस्थि गतं पापं देहे तिष्ठति मामकीम्।
प्राशनात्पञ्चगव्यस्य पिबेत्यग्निरिवेन्धनम्॥

जो त्वचा और अस्थि में रहनेवाले पाप हमारे शरीर में स्थित हैं, वे समस्त पाप जैसे इन्धन को अग्नि भस्म कर देता है, उसी प्रकार इस पञ्चगव्य के पीने से भस्म हो जायँ।

प्रार्थनापूर्वक पञ्चगव्यप्राशन के पश्चात् तीन बार आचमन करे।

त्रिराचमनम्—ॐ केशवाय नमः॥ ॐ नारायणाय नमः॥ ॐ माधवाय नमः॥

ॐ हृषीकेशाय नमः॥ मन्त्र बोलकर हाथ धोये।

पवित्रिधारणम्—अधोलिखित मन्त्र से पवित्री धारण करे।

ॐ प॒वित्त्रे॑स्त्थोव्वैष्ण्ण॒व्व्यौ॑सवि॒तुर्व्व॑÷प्प्रस॒वऽउत्पु॑ना॒म्म्यच्छि॑द्द्रेणप॒वित्त्रे॑ण॒सूर्य्य॑स्य र॒श्मिम्भि॑÷॥ तस्य॑तेप॒वित्त्र॑पतेप॒वित्त्र॑पूतस्य॒यत्का॑म÷पु॒नेतच्छ॑केयम्॥

पवित्रिकरणम्—पवित्री धारण के पश्चात् तीन बार पुनः आचमन करे। आचमन करने के पश्चात् समन्त्रक प्राणायाम करे तथा अधोलिखित मन्त्र से अपने ऊपर जल छिड़के।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥ ॐ केशवः पुनातु॥ ॐ नारायणः पुनातु॥

यज्ञभूमिपूजनम्—हाथ में पुष्पाक्षत लेकर भूमि पूजन करे।

पृथ्वि त्वया धृता लोका, देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

ॐ यज्ञभूम्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शिखास्पर्शनम्—हाथ से शिखास्पर्श करे।

ऊर्ध्वकेशे विरूपाक्षि मांस-शोणित-भोजने।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते॥

श्रीगुरुस्मरणम्—अपने श्रीगुरु का ध्यान करे।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

ॐ गुरुभ्यो नमः॥ ॐ परमगुरुभ्यो नमः॥ परात्परगुरुभ्यो नमः॥ ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः॥ ॐ मानवौघगुरुभ्यो नमः॥ ॐ सिद्धौघगुरुभ्यो नमः॥ ॐ दिव्यौघगुरुभ्यो नमः॥ सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि॥

हाथ मे अक्षतपुष्प लेकर भद्रसूक्तमन्त्रों का पाठ करे।

वैदिकस्वस्तिवाचनम्

यजमान हाथ में पुष्प लेकर स्वस्तिमन्त्रों का पाठ करे अथवा ब्राह्मणों के द्वारा कृत स्वस्तिमन्त्रों के पाठ को ध्यानपूर्वक सुने।

ॐ आनोभद्राꣳक्रतवोयन्तुविश्श्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः॥ देवानो
यथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे॥१॥ देवानाम्भद्रासुमतिर्ऋजूय
तान्देवानाꣳरातिरभिनोनिवर्तताम्॥ देवानाꣳसक्ख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुꣳ
प्प्रतिरन्तुजीवसे॥२॥ तान्पूर्व्वयानिविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्॥
अर्य्यमणंव्वरुणꣳसोममश्श्विनासरस्वतीनꣳसुभगामयस्करत्॥३॥ तन्नोव्वातोमयोभु
व्वातुभेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः॥ तद्ग्रावाणःसोमसुतोमयोभुवस्तदश्श्विना
श्शृणुतन्धिष्ण्ण्यायुवम्॥४॥ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसे
हूमहेव्वयम्॥ पूषानोयथाव्वेदसामसंद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये॥५॥
स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाꣳस्वस्तिनःपूषाविश्श्ववेदाꣳ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टने
मिꣳस्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्दधातु॥६॥ पृषदश्श्वामरुतꣳपृश्निमातरꣳशुभंय्यावानोविदथेषु
जग्मयꣳ॥ अग्ग्निजिह्वामनवꣳसूरचक्षसोविश्श्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह॥७॥

भद्द्रङ्कर्ण्णेभिꣳ श्शृणुयामदेवाभद्द्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राꣳ॥ स्स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः॥८॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्श्चक्राजरसन्तनूनाम्॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोः॥९॥ अदितिर्द्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्रः॥ व्विश्वेदेवाऽअदितिꣳपञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्त्वम्॥१०॥ ॐ द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापꣳशान्तिरोषधयꣳशान्तिः॥ व्वनस्प्पतयꣳ शान्तिर्व्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्ब्रह्म शान्तिꣳसर्व्वꣳशान्तिꣳशान्तिरेवशान्तिꣳसामाशान्तिरेधि॥ यतोयतःसमीहसेततो नोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नःकुरुप्प्रजाब्भ्योभयन्नꣳप्पशुब्भ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

पौराणिकस्वस्तिवाचनम्

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशींगुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥१॥

विश्वेश (काशी विश्वनाथ), माधव (विष्णु), ढुण्ढि (ढुण्ढिराज गणेश), दण्डपाणि (दण्ड को हाथ में धारण करनेवाले महाकालभैरव), काशी, गुहागंगा, भवानी एवं मर्णिकर्णिका देवी की सदैव वन्दना करता हूँ॥१॥

वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥२॥

सूर्य के समान प्रभावाले महाकाय वक्रतुण्ड महागणेश देवता सर्वदा हमारे सभी कार्यो को निर्विघ्न करे॥२॥ (कोटिः श्रेणिः कोटि शब्द का अर्थ यहाँ श्रेणि या स्तर से है न कि करोड़ों संख्या से है।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥३॥

सुन्दर मुखवाले, एक दाँतवाले, कपिल वर्णवाले, हाथी के कान के समान कानवाले, लम्बे पेटवाले, विकट शरीरवाले, सभी विघ्नों के नाशक, विनायक गणेश हमारे समस्त विघ्नों का विनाश करें॥३॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥४॥

धूम्रकेत्वादि गणों के अध्यक्ष, ललाट पर चन्द्रमा धारण करनेवाले, हाथी के शिरवाले, गणेशजी के इन बारह नामों का जो पाठ करता है, अथवा सुनता है, उसके समस्त विघ्नों का विनाश हो जाता है॥४॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥५॥

विद्याध्ययन के समय, विवाह-कार्य के समय, गृहप्रवेश के समय तथा यात्रा के प्रस्थान-काल में, संग्राम में, विकट संकट उपस्थित होने पर जो व्यक्ति गणेशजी के बारह नामों का पाठ करता है अथवा स्मरण करता है, उसके कार्य में विघ्न कभी नहीं होते हैं। उसका कार्य सरलतापूर्वक सम्पन्न हो जाता है॥५॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥६॥

सफेद वस्त्र धारण करनेवाले, चन्द्रमा के समान वर्णवाले, चार भुजाओंवाले, प्रसन्न मुखमुद्रावाले महागणेश का सभी विघ्नों की उपशान्ति के लिए ध्यान करता हूँ॥६॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥७॥

अपने अभीष्ट कार्य की पूर्ति के लिए जिसको देवता तथा दानव दोनों पूजते हैं, उन महागणाधिपति का सभी विघ्नों के हरण के लिए नमस्कार है॥७॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥८॥

सभी प्रकार के विवाहादि मङ्गल कार्यों में मङ्गल के लिए सभी कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, शिव की पत्नी, शरण में आये हुए भक्तों की रक्षा करनेवाली, तीन नेत्रोंवाली महागौरी नारायणी को स्तुतिपूर्वक नमस्कार है॥८॥

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥९॥

जिसके स्मरण करने से सर्वदा सभी कार्यो में किसी भी प्रकार का अमङ्गल नही होता उस मङ्गलशरीरवाले मङ्गलमूर्ति भगवान् श्रीहरि का सर्वत्र मङ्गल के लिए हृदय में सदैव स्मरण करता हूँ॥९॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि॥१०॥

जिनके स्मरण से कार्यारम्भ काल (लग्न) सुदिन (मनोनुकूल) हो जाता है, उसके समस्त नक्षत्रगण बलवान् हो जातें हैं तथा उसे चन्द्रबल प्राप्त हो जाता है, उसे विद्याबल तथा दैवबल प्राप्त हो जाता हैं, उन लक्ष्मीपति श्रीहरि का अपने समस्त शुभ के लिए अपने हृदय में सदैव स्मरण करता हूँ॥१०॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥११॥

जिसके स्मरण से सदैव लाभ तथा जय होता है, स्मरण करनेवाले भक्त की कभी पराजय नही होती, उन इन्दीवरश्यामल जनार्दन का हृदय में सदैव ध्यान करता हूँ॥११॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥१२॥

जहाँ योगेश्वर कृष्ण हों तथा धनुर्धर पार्थ (अर्जुन) हों, वहीं विजयश्री होती है। यह हमारी ध्रुवनीति और दृढ़मति (निश्चय=दृढ़, मति=बुद्धि) है। अर्थात् निश्चय ही विजय होती है॥१२॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥१३॥

जो भक्तजन अनन्य भाव से श्रीहरि को नित्य भजते हैं, उन भक्तों का योग क्षेम का वहन श्रीहरि स्वयं करते हैं (ऐसा गीता में श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है)॥१३॥

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥१४॥

समस्त प्रकार के कल्याण (हित) के लिए जिनका स्मरण किया जाता है, जिनके स्मरण करने से समस्त प्रकार का हित होता है, उन अजन्मापुरुष श्रीहरि का अपने हृदय में नित्य ध्यान करता हूँ॥१४॥

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥१५॥

सभी कार्यों के आरम्भ काल में तीनों भुवन भूलोकभुवर्लोकस्वर्लोक के तीनों स्वामी ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर तथा दिशाओं के अधिपति के स्मरण करने से समस्त कार्यों की सदैव ही सद्यः सिद्धि होती है।

श्रीमन्महागणधिपतये नमः॥ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः॥ उमामहेश्वराभ्यां नमः॥ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः॥ शचीपुरन्दराभ्यां नमः॥ मातापितृभ्यां नमः॥ इष्टदेवताभ्यो नमः॥ कुलदेवताभ्यो नमः॥ ग्रामदेवताभ्यो नमः॥ वास्तुदेवताभ्यो नमः॥ स्थानदेवताभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥

प्रधानसङ्कल्पः

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्निद्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुक संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे**

अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादिसकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्ठद्वादशस्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकल-अशुभदृष्टिसमस्तदुःखञ्च निवृत्तिपूर्वकसकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादि-पीड़ादिनां निवृत्तिपूर्वकत्रिविधतापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृत सर्वेषामन्यानांकृत यन्त्रमन्त्रतन्त्रदिकृत समस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मत्गृहे वास्त्वादि-दोषानां उपशान्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धिसमस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्तिपूर्वकसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीसदाशिवकालिकादेवताप्रीत्यर्थं श्रीमहाविद्याप्रयोगब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।

पुनः हाथ में जल लेकर—**तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारा-पूजनं आयुष्यमन्त्रजपं साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं आचार्यादि वरणानि च करिष्ये।**

पुनः हाथ में जल लेकर—**तत्राऽऽदौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।**

सङ्कल्प करने के बाद गणेशाम्बिका का पूजन करे, दो पात्रों में अक्षत भरकर अष्टदल कमल निर्मित करके उस पर गोमयमय लिंगरूप गौरी तथा फलमय लिंगरूप गणेश की स्थापना करके हाथ में पुष्प लेकर महागणपति का ध्यान करे, आदरात्मक समर्पणादि समस्त कर्म दोनों हाथों से ही किया जाता है।

गणेशाम्बिकापूजनम्

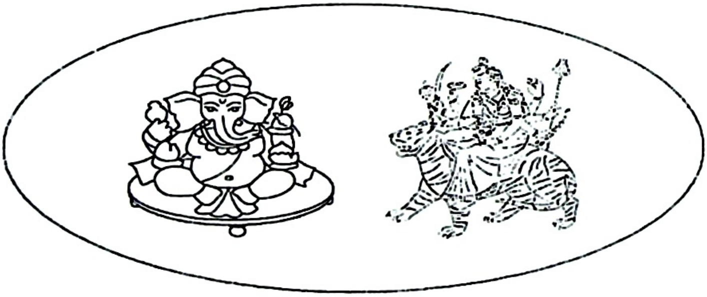

हाथ में अक्षत लेकर महागणपति का आवाहन करे।

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नमः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतिं ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत्सिद्धिविनायकम्॥१॥

एक दाँतवाले, शूप के आकार के कानवाले, हाथी के सिर के समान सिरवाले, चार भुजाओं को धारण करनेवाले, पाश-अंकुश धारण करनेवाले, समस्त सिद्धियों को प्रदान करनेवाले सिद्धिविनायक श्रीगणेश का ध्यान करता हूँ॥१॥

ध्यायेत्गजाननं देवं तप्तकाञ्चनसन्निभम्।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम्॥२॥

हाथी के मुख के समान मुख वाले, तपे हुए सोने के समान आभावाले, चार भुजाओं वाले, महान् शरीरवाले, सभी आभूषणों से सुशोभित गजानन देवता का ध्यान करता हूँ॥२॥

हे हेरम्ब! त्वमेह्येहि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः॥३॥

हे हेरम्ब! अम्बिका और त्र्यम्बक के पुत्र सिद्धि तथा बुद्धि के पति, तीन नेत्रोंवाले, समस्त लक्ष तथा लाभ के स्वामी महागणेश का ध्यान करता हूँ॥३॥

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितंस्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरस्वधैः॥४॥

नाग के समान मुखवाले, नाग (नागसंज्ञक पवित्रक=यज्ञोपवीत) धारण करनेवाले, गणों के मालिक, चार भुजाओंवाले, दिव्य आयुधों से विभूषित, पाश तथा अंकुश को धारण किये हुए महागणेश का ध्यान करता हूँ॥४॥

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजायागं च रक्ष मे॥५॥

हे देव! अपने यज्ञ की रक्षा के लिए तथा पूजा करने के लिए आवाहन करता हूँ, यहाँ आकर पूजा ग्रहण करें तथा हमारे यज्ञ की रक्षा करें॥५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नमः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतिमावाहयामि, आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

हाथ में पुष्प लेकर महागौरी का ध्यान करे।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्व॒कः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः महागौरी ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

हाथ में अक्षत लेकर महागौरी का आवाहन करे।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

हिमालय की पुत्री, वर प्रदान करनेवाली शङ्कर की प्रिया (अर्द्धाङ्गिनी) देवी, लम्बोदर गणेश की जननी, भगवती महागौरी का मै आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवःस्वः महागौर्यै नमः महागौरीमावाहयामि, आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ सें स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ म॒नो॑जू॒तिर्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टं॒य्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु॥ व्विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३॒म्प्रति॑ष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते है, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, मेरे लिए इससे इतर कुछ नहीं है।

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्॥

गणेशाम्बिका सुप्रतिष्ठित तथा वर प्रदान करनेवाले हो।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भव।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे।

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒पुरु॑षःसहस्रा॒क्षःस॒हस्र॑पात्॥ सभूमि॑ꣳस॒र्व्वत॑स्पृ॒त्वात्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे।

ॐ पुरु॑षऽए॒वेदꣳसर्व्वं॒य्यद्भू॒तंयच्च॒भाव्य॒म्॥ उ॒ता॒मृ॑त॒त्त्वस्येशा॑नो॒यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति॥

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित!॥

विचित्र रत्नों से जटित तथा दिव्य कलाकृतियों से संयुक्त स्वर्णनिर्मित दिव्य रुचिकर सिंहासन देवताओं के द्वारा अग्रपूजित गणेश ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र ग्रहणकर समर्पित करे।

ॐ ए॒तावा॑नस्यमहि॒मातो॒ज्ज्याया॑ँश्च॒पूरु॑षः॥ पादो॑ऽस्य॒व्विश्वा॑भू॒तानि॑त्रि॒पाद॑स्या॒मृत॑न्दि॒वि॥

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
विघ्नराज गृहाणेदं भगवान् भक्तवत्सल!॥

हे भक्तवत्सल विघ्नराज भगवान् गणेश! सभी तीर्थों से लाये गये इस गन्धादि से युक्त पाद्य को आप ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ त्रि॒पादू॒र्द्ध्वऽउदै॒त्पुरु॑षः॒पादो॑ऽस्ये॒हाभ॑व॒त्पुनः॑॥ ततो॒व्विष्व॒ङ्व्य॒क्रामत्साशनानश॒नेऽअ॒भि॥

गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

हे करुणाकर गणाध्यक्ष! गन्ध-माला-अक्षत से युक्त फल के सहित अर्घ्य को ग्रहण करें, आपको नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ ततो॑व्वि॒राड॑जायतव्वि॒राजो॒ऽअधि॒पूरु॑षः॥ सजा॒तोऽअत्य॑रिच्च्यतप॒श्चाद्भूमि॒मथो॑पु॒रः॥

विनायकं नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

देवताओं से अभिवन्दित देवेश विनायक को नमस्कार है, हे प्रभु विनायक गणेश! आचमन करने के लिए गङ्गा का जल आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्त्स॑र्व्व॒हुतः॒सम्भृ॑तम्पृषदा॒ज्ज्यम्॥ प॒शूँस्ताँश्च॑क्रेव्वाय॒व्या॒नार॒ण्याग्रा॒म्म्याश्च॒ये॥

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के पापों को हरनेवाला, सभी प्रकार का शुभ करनेवाला, मन्दाकिनी का जल आपके सम्मुख कल्पित (समर्पित) है, हे देव! स्नान के लिए आप ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे॥ छन्दाꣳसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्म्मादजायत॥

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वमलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्॥

सभी प्रकार के मल को पूर्ण नष्ट करने में जो गङ्गाजल समर्थ है, वह जल यहाँ पुनः आचमन करने के लिए अपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पयः पात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पयः पृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तुमह्य्यम्॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गो से समुत्पन्न, सभी को परम जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ कारक, परम पवित्र दूध हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ दधिक्क्राव्ण्णोऽअकारिषंजिष्ण्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से समुत्पन्न (निर्मित) मीठा-अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही मेरे द्वारा आपके स्नान के लिए लाया गया है, हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

नवनीत (मक्खन) से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी हे देव! आपको समर्पित करता हूँ, स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्प कणों से उत्पन्न, सुन्दर मधुर स्वादवाला, पुष्टि तथा दिव्य तेज प्रदान करनेवाला, शहद स्नान के लिए अपके सम्मुख समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अपाꣳरसमुद्द्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तंव्वो गृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ईख के रस से निर्मित, सभी प्रकार के मल को नष्ट करनेवाला, शुभ और पुष्टि को प्रदान करनेवाला, दिव्यशर्करा आपके प्रति स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध-दही-घृत-मधु और शर्करा से निर्मित पञ्चामृत स्नान के लिए मैं लाया हूँ, हे देव! स्नान के लिए ग्रहण करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ शुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय

पशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्ज्जन्न्याः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों का दिव्य जल स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्मादश्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः॥

ॐ युवासुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउत्श्रेयान्भवतिजायमानः।
तंधीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शीतल और उष्ण वायु के ताप और शैत्य से रक्षा के लिए तथा परमलज्जा के रक्षार्थ, शरीर को अलंकृत करने के लिए वस्त्र समर्पित है, हे देव! यह वस्त्र आपको प्रसन्न करे, आप हमें शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे।

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्च्ये॥ ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ व्वासोअग्ग्नेव्विश्श्वरूपꣳ संव्ययस्वव्विभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत पकड़कर समर्पित करे।

ॐ यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽ

उच्च्येते॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्यैतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्त्तः॥ आवोर्व्वाची सुमतिर्व्ववृत्त्यादृꣳहोश्चिद्याव्वरिवोवित्त्तरासदादित्त्येब्भ्यस्त्वा॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

पूर्व काल में प्रजापति ब्रह्मा ने सहज ही परम पवित्र यज्ञोपवीत का निर्माण किया था, वह शुभ्र यज्ञोपवीत शरीर में बल, मन में तेज तथा ओज और सबसे पहले आयुष्य प्रदान करता है, वह यज्ञोपवीत हे देव! आपको प्रसन्नता के लिए समर्पित है।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण गणनायक॥

नव तन्तुओं से निर्मित, त्रिगुण (त्रिरावृत्तिवाला) देवतामय यज्ञ में पहने जानेवाला उपवीत मैं आपको समर्पित करता हूँ, हे गणनायक! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपोजनयथाच नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे।

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

दिव्य सुमनोहर सुगन्धित श्रीखण्ड से युक्त चन्दन लेप आपके विलेपन के लिए है, यह आपके प्रसन्नता के लिए अपको समर्पित है, हे देवश्रेष्ठ! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे।

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभानवोव्विप्प्रानविष्ठयामती योजान्विन्द्रतेहरी॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

कुङ्कुम से सुशोभित अक्षत आपको निवेदित करता हूँ, हे सुरश्रेष्ठ परमेश्वर गणेश! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे।

ॐ ओष॑धीः॒प्प्रति॑मोदद्ध्वं॒पुष्प्प॑वतीःप्र॒सूव॑रीः॥ अश्श्वा॑ऽइवस॒जित्त्व॑रीर्व्वी॒रुध॑ः पारयि॒ष्ण्णव॒ः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मालती आदि के सुगन्धित पुष्पों के द्वारा निर्मित माला आपकी पूजा के लिए लाया हूँ, हे देव! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे।

ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षःपरु॒षष्प्परि॑॥ ए॒वानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नुस॒हस्रे॑णश॒तेन॑ च॥

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥

अमृतरूपी मङ्गल प्रदान करनेवाले सुन्दर हरे-हरे दूर्वा के अङ्कुर आपकी पूजा के लिए लाया हूँ, हे गणनायक देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे।

ॐ अहि॑रिवभो॒गैःपर्य्ये॑तिबा॒हुंज्याया॑हे॒तिंप्परि॒बाध॑मानः॥ ह॒स्त॒घ्नोविश्श्वा॑व॒युना॑निवि॒द्वान्पुमा॒न्पुमा॑ꣳसं॒परि॑पातुवि॒श्वत॑ः॥

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देवमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥
नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥२॥

शान्ति प्रदान करनेवाला अबीर-गुलाल चन्दनादि से निर्मित विभिन्न सुगन्धित द्रव्य नाना प्रकार के दिव्य द्रव्यों से निर्मित उत्तम अबीर नाम का सुगन्धित सुरुचिकर चूर्ण समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे।

ॐ सिन्धो॑रिवप्प्राद्ध्व॒नेशू॒घ॒नासो॒व्वात॑प्प्रमियःपतय॑न्तिय॒ह्वाः। घृ॒तस्य॒धारा॑ऽअरु॒षोनव्वा॒जीकाष्ठा॑भि॒न्दन्नू॒र्म्मिभि॒ःपिन्व॑मानः॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्व शोभायमान रक्तसिन्दूर, सभी सौभाग्य तथा सुख का वर्धन करनेवाला, सभी प्रकार के शुभ की कामना के लिए सिन्दूर समर्पित करता हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। धूपदीप जला करके नैवेद्य समर्पित करे।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखंमासीद्बाहूराजन्न्यःकृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्याꣳ शूद्रोऽअजायत॥ ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंय्योऽस्मान्धूर्व्वतितंधूर्व्वयंव्वयंधूर्व्वामः॥ देवानामसि वह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमंजुष्ट्टतमंदेवहूतमम्॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न वनस्पतियों के रसों से निर्मित गन्धो में अत्युत्तम गन्धयुक्त धूप सभी देवताओं को सुगन्धि प्रदान के लिए है, हे देव! अपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत॥ ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निःस्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिःसूर्य्यः स्वाहा॥ अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहा॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यःसूर्य्योज्ज्योतिःस्वाहा॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥१॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥२॥

तीनों लोकों के अन्धकार को दूर करनेवाला, घृतयुक्त बत्तियों को अग्नि से प्रज्वलित किया है, हे देवेश! प्रसन्नता के लिए ग्रहण करें, भक्तिपूर्वक परमात्मदेव आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करके इस घोरतम अज्ञानान्धकार से हमारी रक्षा करें, दीपज्योति को नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपज्योतिः समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशःश्रोत्रा

त्तथालोकाँ२॥ऽअंकल्प्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यंशुष्मिमणंः॥ पप्र दातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥१॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥२॥

शर्कराखण्ड खाद्य दधि-दूध एवं घृत से युक्त भक्ष्य-भोज्य आहाररूपी नैवेद्य ग्रहण करके हमारी भक्ति को अचल करें और हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करे तथा अन्त में परमगति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे।

ॐ अद्दशुनातेअद्दशुःपृच्च्यतांपरुंषापरुंः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽ अच्च्युतः॥

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!॥

मलयाचल में उत्पन्न श्वेत चन्दन कस्तूरी इत्यादि गन्धों से युक्त हाथों को शुद्ध करने के लिए उद्वर्तन के रूप में ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे।

ॐ यत्पुरुंषेणहुविषादेवायज्ञमतंतन्वत॥ व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंग्गीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

महादिव्य पूगीफल (सुपाड़ी) नागवल्लीदल (पान के पत्ते से) युक्त एलादिचूर्ण (इलाइची इत्यादि) से सम्पृक्त ताम्बूल ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादि-सहित ताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्यायाश्श्चपुष्प्पिणींः॥ बृहस्प्पतिंप्प्रसूतास्तानो मुञ्चत्वंहसः॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

हे देव! हमने यह फल आपके सम्मुख स्थापित किया है, जिसे ग्रहण करके जन्म-जन्मान्तरों तक हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करें तथा हमें यज्ञफलवान् करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे।

ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्ब्भःसम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑भू॒तस्य॑जा॒तःपति॒रेक॑ऽआसीत्॥ सदा॑धारपृथि॒वीं-द्यामु॒तेमांकस्मै॑दे॒वाय॑ह॒विषा॑विधेम्॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

हिरण्यगर्भ से निकले हेमबीज के समान (सुवर्ण के सदृश) शोभायमान अनन्त पुण्य फल को प्रदान करनेवाला, शान्ति प्रदान करनेवाली, सुवर्णमयी दक्षिणा ग्रहणकर शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये।

ॐ आरा॑त्रि॒पार्थि॑व॒ꣳरजः॑पि॒तुर॑प्प्रायि॒धाम॑भिः॥ दि॒वःसदा॑ꣳसिबृह॒तीवि॒तिष्ठ॒स॒ऽआत्त्वे॒षंब्बर्त्तते॒तमः॑॥ ॐ इ॒दꣳह॒विःप्र॒जन॑नंमे॒ऽअस्तु॒दश॑वीर॒ꣳसर्व्व॑गण॒ꣳस्व॒स्तये॑॥ आ॒त्म॒सनि॑प्प्रजा॒सनि॑पशु॒सनि॑लोक॒सन्न्य॑भय॒सनि॑॥ अ॒ग्निःप्प्र॒जांब॑हु॒लांमे॑करो॒त्वन्नं॒पयो॒रेतो॑ऽअ॒स्मासु॑धत्त॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केला) के गर्भ से उत्पन्न (निर्मित) कर्पूर (जलता हुआ) से आरती करता हूँ, हमें कृपापूर्वक दृष्टि से देख करके वर प्रदानकर्ता बनें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ य॒ज्ञेन॑य॒ज्ञम॑यजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्मा॑णिप्प्रथ॒मान्न्या॑सन्॥ तेह॒नाक॑म्महि॒मानः॑ सचन्त॒यत्र॒पूर्व्वे॑सा॒द्ध्याःसन्ति॑दे॒वाः॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्त गृहाण परमेश्वर!॥

अपने-अपने ऋतुओं में उत्पन्न नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों से युक्त पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वर! ग्रहणकर प्रसन्न हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों सें पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ स॒प्तास्या॑सन्परि॒धय॒स्त्रिःस॒प्तस॒मिधः॑कृ॒ताः॥ दे॒वायद्य॒ज्ञन्त॑न्वा॒नाऽअब॑ध्न॒न्पुरु॑षम्प॒शुम्॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे॥१॥

जन्म-जन्मान्तर में किये हुए सभी प्रकार के पाप एक-एक कदम देव प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते है॥१॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥२॥

पूजन करने के बाद एक-एक कदम जो यज्ञकर्ता देव की परिक्रमा करता है, वह निश्चय ही अश्वमेधादि यज्ञों का फल प्राप्त करता है। अतः अपने जन्म-जन्मान्तरकृत समस्त पापों के क्षय के लिए आपकी परिक्रमा करता हूँ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत्, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथों में विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे।

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥१॥

हे गणों के अध्यक्ष! रक्षा करें-रक्षा करें, हे त्रिलोकी के रक्षक! हमारी रक्षा करें, भक्तों को अभय प्रदान करनेवाले हमारे लिए इस भवसागर से त्राता हो जायें॥१॥

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वांच्छितं वांच्छितार्थद॥२॥

हे कृपासिन्धु, दो माताओं से उत्पन्न, हे छः माताओं वाले स्कन्द के अग्रज! वर प्रदान करने वाले वरदाता! हमारी वांछित कामनाओं के लिए वांछित वर प्रदान करें॥२॥

अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।

इस प्रकार फल के सहित अर्घ्य ग्रहण करके कामनापूर्ति रूपी फलप्रदाता सदा हमारे लिए हो जायें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों सें पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥१॥

हे विघ्नों को नष्ट करनेवाले विघ्नेश्वर! वरप्रदान करनेवाले वरदाता, देवताओं के प्रिय, लम्बे पेटवाले लम्बोदर, समस्त जगत् का हित करनेवाले, हाथी के आनन (सिर) वाले, श्रुतियों में वर्णित यज्ञवाले श्रुतियज्ञ, विभिन्न शोभाओ से विभूषित, गौरी के पुत्र गणों के स्वामी आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है॥१॥

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय,
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय,
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥२॥

भक्तों के आर्त (दीनता) को नाश करनेवाले, परब्रह्म गणेश्वर, सर्वेश्वर, समस्त शुभों के प्रदाता, देवताओं के ईश्वर, समस्त विद्याओं को धारण करनेवाले विद्याधर, विकट वामस्वरूप, भक्तों पर प्रसन्न रहने वाले वर प्रदान करनेवाले गणेश्वर आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है॥२॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥३॥

हे गणेश्वर! आपको ब्रह्मरूप में नमस्कार है, विष्णुरूप में नमस्कार है, रुद्ररूप में नमस्कार है तथा हस्तिमुखरूप (हाथी के मुख के रूप) में नमस्कार है॥३॥

विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!॥४॥

विश्वरूप के स्वरूपवाले गणेश आपको नमस्कार, ब्रह्मचारी रूपवाले गणेश आपको नमस्कार, भक्तों का प्रिय करनेवाले देव, विनायक गणेश आपको नमस्कार है॥४॥

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥५॥

सदैव मोदकप्रिय (खाने में लड्डू से प्रेम करनेवाले) लम्बोदर गणेश नमस्कार है, आप सदैव सभी कार्यों में सर्वदा हमें निर्विघ्न करें॥५॥

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति,
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति,
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥६॥

हे गणेश! आप विघ्नों का विनाश करनेवाले हैं, शत्रुओं का दलन करनेवाले हैं, सुन्दरों में सुन्दर, भक्तों का प्रिय करनेवाले हैं, भक्तों को सदैव सुख प्रदान करनेवाले हैं,

समस्त यज्ञफलों को प्रदान करनेवाले हैं, विद्या (ज्ञान) प्रदान करने वाले हैं, समस्त अघों का हरण करनेवाले हैं, आपका जो स्तवन करते हैं, उनको नित्य ही वर प्रदान करनेवाले होते हैं॥६॥

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम॥७॥

गणेश के पूजन में जो कर्म कम अथवा अधिक किया गया हो, उन सभी कर्मों से सर्वात्मा गणेश हमारे ऊपर सदैव प्रसन्न हो।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि! चराचरस्य॥१॥

शरण में आये हुए भक्तों के पीड़ा का निवारण करनेवाली देवी हमारे ऊपर प्रसन्न होइये, सम्पूर्ण जगत् की जननी हम पर प्रसन्न हो जाइये। हे विश्वेश्वरी! विश्व का त्राण करें। हे देवी! तुम्हीं चराचर विश्व की अधिष्ठात्री हो॥१॥

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा, यत्राऽरयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाऽब्धिमध्ये, तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥२॥

हे देवी! जहाँ दैत्य, भयंकर विषधर सर्प, शत्रुओं, लुटेरों के समुदाय और दावाग्नि हो, वहाँ तथा समुद्र के बीच मे नित्य निरन्तर साथ रहकर निरन्तर कल्याण करती हो, वैसे ही हमारा कल्याण करो॥२॥

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।
स्फुरत्काञ्ची-शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी,
भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्॥३॥

मुख में ताम्बूल, दोनों आँखों में काजल धारण की हुई, गले में मौक्तिक मणि की माला धारण की हुई, सुवर्ण के समान साड़ी धारण की हुई, कमर में करधनी शोभित करती हुई, पर्वत की पुत्री महागौरी को सतत (बिना विराम किये) भजता हूँ॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थनापूर्वकस्तुतिपाठं समर्पयामि।

पूजन समर्पण के बाद अथर्वशीर्ष का पाठ करे।

गणेशाऽथर्वशीर्षः

ॐ लँ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षदात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानम्। अव शिष्यम्। अव

पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयः। त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयः। त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलोनभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा। त्वं विष्णुः। त्वं रुद्रः। त्वं इन्द्रः। त्वं अग्निः। त्वं वायुः। त्वं सूर्यः। त्वं चन्द्रमा। त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्य रूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिः देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। अभयं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये। नमो गणपतये। नमः प्रमथपतये। नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनासिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः॥

ॐ लँ (पृथ्वीतत्त्व) स्वरूपवाले गणपति के लिए नमस्कार है, तुम्हीं प्रत्यक्ष तत्त्व स्वरूप हो, एक तुम्हीं संसार के कर्त्ता हो, एक तुम्हीं संसार के धर्ता हो, एक तुम्हीं संसार का संहार करनेवाले हो, एक तुम्हीं सभी में ब्रह्मरूप हो, एक तुम्हीं साक्षात् आत्मस्वरूप हो। एक तुम्हीं नित्य हो, ऋत कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, तुम ही मुझमें हो, तुम ही वक्त्र में हो। तुम ही श्रोत्र में हो, तुम ही दाता हो, तुम ही धारण करते हो, तुम ही नीचें में हो, तुम ही शिष्य में हो, तुम ही बाद में हो, तुम ही चारो तरफ हो, तुम ही उत्तर दिशा में हो। तुम ही दक्षिण दिशा में हो, तुम ही उपर की तरफ हो, तुम ही आधार में हो, सर्वत्र सभी तरफ से हमारी रक्षा करो, पूर्णरूप से रक्षा करो, तुम ही वाणीरूप हो, तुम ही चिन्मय रूप हो, तुम ही आनन्दस्वरूप हो, तुम ही ब्रह्मस्वरूप हो, तुम हीं अद्रितीय सच्चिदानन्द स्वरूप हो, तुम ही प्रत्यक्ष ब्रह्मा हो, तुम ही ज्ञानस्वरूप, विज्ञानस्वरूप हो, तुम से ही समस्त जगत् तत्त्वस्वरूप से उत्पन्न होता है, तुममें ही समस्त जगत् अवस्थित है, तुममें ही समस्त जगत् का लय होता है, समस्त जगत् तुममें ही प्रतीत होता है, तुम ही भूमि, जल, अग्नि, वायु तथा आकाशस्वरूप हो, तुम ही परा-पश्यन्ती-मध्यमा-वैखरी—चार वाणी स्वरूप हो, तुम ही सत्त्व-रज-तम तीनों गुणों से अतीत (त्रिगुणों के पूर्व के) हो,

तुम ही काल से भी (अतीत) पहले के हो, तुम ही तीनों शरीर (सूक्ष्म, कारण, स्थूल) से (अतीत) पहले के हो, तुम ही नित्य मूलाधार में स्थित हो, तुम ही तीन प्रकार की शक्तियाँ सत्त्व-रज-तमात्मक महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यात्मक तथा ओज, तेज, बलस्वरूप हो, तुम्हारा ही योगीजन नित्य ध्यान करते हैं, तुम ही ब्रह्मा हो, तुम ही विष्णु हो, तुम ही रुद्र हो, तुम ही इन्द्र हो, तुम ही अग्नि हो, तुम ही वायु हो, तुम ही सूर्य हो, तुम ही चन्द्रमा हो, तुम ही ब्रह्म भूर्भुवः स्वः हो, तुम ही गणों में पूर्व उच्चार्य हो (वर्णों में सर्व प्रथम उच्चारण होता है अर्थात् ॐकारस्वरूप), तुम ही अनुस्वार तथा अनुस्वार के बाद आने वाले विसर्ग स्वरूप हो, तुम ही अर्धेन्दु से लसित (अर्धचन्द्र स्वरूप से युक्त अर्द्धचन्द्र अर्थात् सानुनासिकानुस्वार) हो, तुम ही तार (प्रणव) से रुद्ध (युक्त) हो, इस प्रकार तुम ही मनुष्य स्वरूप हो, गं बीज में तुम ही गकार वर्णरूपी पूर्व (आगे आनेवाले प्रथम वर्ण) स्वरूप हो, गं बीज में तुम ही अकारस्वरूप मध्यम वर्णरूप हो, गं बीज में अनुस्वार वर्णरूपी तुम ही अनुस्वारस्वरूप (अन्त्य में आने वाला वर्ण) हो, तुम ही उत्तररूप विन्दु स्वरूप हो, तुम ही नादस्वरूप सन्धानयोग्य हो, तुम ही संहिता में सन्धिस्वरूप हो, तुम ही वह इस प्रकार की गणेश विद्या हो, तुम ही गणकसंज्ञक ऋषि हो, तुम ही निचिद् गायत्री (गायत्री छन्द से पहले का छन्द) स्वरूप हो, तुम ही महागणपति देवता हो, तुम ही ॐ गं गणपतये मन्त्रस्वरूप हो, तुम ही एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् गायत्री मन्त्रस्वरूप हो, तुम ही एकदन्त (एक दाँतवाले अर्थात् एक वचनवक्ता), चतुर्हस्त (चार हाथों-वाले) हो, तुम ही चारों हाथों में पाश, अंकुश, अभय और वरद धारण करनेवाले हो, तुम ही मूषक ध्वजा से शोभायमान हो, तुम ही लाल, लम्बे उदरवाले, सूप के समान कर्ण वाले और लाल वस्त्र धारण करने वाले हो, तुम ही अंगों में रक्त गन्ध का अनुलेपन करने-वाले हो, तुम ही रक्त पुष्पों से सुपूजित हो, तुम ही भक्तों पर अनुकम्पा करनेवाले हो, तुम ही जगत्कारणस्वरूप अच्युत देव हो, तुम ही सर्वप्रथम सृष्टि के आदि में आविर्भूत होकर प्रकृति-पुरुष स्वरूप हो, इस प्रकार जो योगी नित्य ध्यान करता है, वह योगी योगियों में वरण योग्य होता है, व्रतों (तपस्या के नियमों) के पति तुम्हें नमस्कार है, गणों के स्वामी तुम्हें नमस्कार है, प्रमथादि गणों के मालिक तुम्हें नमस्कार है, लम्बोदर को नमस्कार है, एकदन्त को नमस्कार है, हे विघ्नों के विनाशक शिव के पुत्र श्रीवरदमूर्ति नमस्कार है, पुनः नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है।

पाठ के बाद फलश्रुति का पाठ अवश्य करे।

गणेशाथर्वशीर्षमाहात्म्यम्

एतदथर्वशिरो योऽधीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो

अपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थ-काम-मोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीषमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान्भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान्भवति। इत्यथर्वणमंहावाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति स भेधावान्भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद॥

इस प्रकार अथर्वशीर्ष का जो पाठ करता है, वह ब्रह्मत्व की कल्पना करके ब्रह्मरूप हो जाता है, उसे कोई भी विघ्न-बाधा नहीं पहुँचाते, वह सर्वत्र ही सुख पाता है, वह पाँच प्रकार के महापातक (महापाप), पातक (पाप), उपपातक (उपपाप) से छूट जाता है, सायंकाल पाठ करने से दिन भर का किया हुआ पाप नष्ट हो जाता है, प्रात:काल पाठ करने से रात्रिकाल में किये गये पाप नष्ट हो जाते हैं, इस अर्थर्वशीर्ष का सायंप्रान: पाठ करने से पाठकर्ता अपाप (निष्पाप) हो जाता है, सदा सर्वत्र पाठ करनेवाला सभी विघ्नों से मुक्त हो जाता है और उसे धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चारो पुरुषार्थ प्राप्त होता है, इस अथर्वशीर्ष को अशिष्य को कभी नही देना चाहिए, यदि मोहवश कोई अशिष्य को देता है तो वह पापी होता है, सहस्र आवृत्ति पाठ करने से जो-जो कामनाएँ होती हैं, उन-उन कामनाओं की पूर्ति होती है, इस प्रकार से जो महागणपति का अभिसिंचन करता है वह वाणी का पति हो जाता है, चतुर्थी तिथि को सूर्योदय से सूर्योदयपर्यन्त अनवरत जपने से जप करने वाला विद्यावान् (ज्ञानवान्) हो जाता है, इस अथर्वशीर्ष का महावाक्य-ब्रह्मविद्या (ब्रह्मत्व प्राप्ति) आचरण की विद्या है, इसमें भेद कभी नही मानना चाहिये, जो दूर्वाङ्कुरों से अर्चन करते है वे वैश्रवणोपम होते है, जो लाजा (लावा) से अर्चन करता है वह यशोवान् होता है वह मेधावान् होता है, जो सहस्र मोदक (लड्डूओं) से अर्चन करते हैं वे अपनी अभिलषित कामनाओं की पूर्ति करते हैं, जो घी के साथ समिधा से हवन करते हैं वे सभी कुछ प्राप्त कर लेते हैं, आठ ब्राह्मणों को पूर्णरूपेण ग्रहण कराने से सूर्य के वर्चस्व वाला होता है, सूर्यग्रहण के समय में महानदी में (समुद्रगामिनी नदी में) प्रतिमा (मूर्ति) के सांनिध्य में जपने से मन्त्र सिद्ध होता है, वह महाविघ्नों से छूट जाता है, वह महापापों से भी छूट जाता है, वह महादोषों से छूट जाता है, वह सर्वज्ञ हो जाता है, यही परम महाज्ञान है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय नमः स्तुतिपाठं समर्पयामि।

देव्याथर्वशीर्षः

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति॥१॥

सभी देवता देवी के समीप जाकर पूछने लगे, हे महादेवि! तुम कौन हो?॥१॥

साब्रवीत्—अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च॥२॥

इस प्रश्न के उत्तर में महादेवी ने कहा—मैं ब्रह्मस्वरूपा हूँ, मुझसे प्रकृति-पुरुषरूप सद्रूप और असद्रूप जगत् उत्पन्न हुआ है॥२॥

अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्मा ब्रह्मणीवेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्॥३॥

मैं आनन्द और अनानन्दरूपा हूँ, मैं विज्ञान और अविज्ञानरूपा हूँ, अवश्य जानने योग्य ब्रह्म और अब्रह्म (ब्रह्म से भिन्न माया) भी मैं ही हूँ, मैं ही पञ्चमहाभूत तथा विश्व में व्याप्त पञ्चभूत हूँ, मैं ही सम्पूर्ण जगत् स्वरूप हूँ॥३॥

वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्॥४॥

वेद (ज्ञान) और अवेद (अज्ञान) मैं ही हूँ, विद्या (ब्रह्मज्ञान) और अविद्यारूप (माया) भी मैं ही हूँ। मैं अजा (जन्म न लेनेवाली मूलप्रकृति) और अनजा (जन्म लेनेवाली माया) भी हूँ, नीचे ऊपर तथा अगल-बगल भी मैं ही हूँ॥४॥

अहं रुद्रेभिः वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ॥५॥

मैं रुद्रों और वसुओं के रूप में सञ्चार करती हूँ, मैं आदित्यों और विश्वेदेवों के रूपों में विचरण करती हूँ, मैं मित्र और वरुण दोनों देवताओं का भरण-पोषण करती हूँ, मैं ही इन्द्र, अग्नि तथा दोनों अश्विनीकुमारों का भी भरण-पोषण करती हूँ॥५॥

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि॥६॥

मैं सोम, त्वष्टा, पूषा और भग देवता को भी धारण करती हूँ। त्रैलोक्य को आक्रान्त करनेवाले विस्तीर्ण पादप्रच्छेप करनेवाले विष्णु, ब्रह्मदेव और प्रजापति को मैं ही धारण करती हूँ॥६॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति॥७॥

मैं ही यजमान के द्वारा अग्नि में दिये गये विधिपूर्वक हवि को तथा सोमरस निकालने

वाले यजमान के लिए धन को धारण करती हूँ, मैं ही सम्पूर्ण (राष्ट्र) जगत् स्वरूपा हूँ, वसुओं की कामनाओं से यजन करनेवालों को धन प्रदान करती हूँ, मैं ही ब्रह्मरूप और यज्ञार्हों में मुख्य रूपा हूँ, मैं ही आत्मस्वरूपपर आकाशादि निर्माण करती हूँ, मेरा स्थान आत्मस्वरूप को धारण करनेवाली बुद्धि-वृत्तियों में है, ऐसा इस प्रकार से जो जानता है, वह दैवी सम्पत्ति (समस्त सिद्धियों समस्त निधियों) को प्राप्त करता है॥७॥

ते देवा अब्रुवन्—तब उन देवताओं ने कहा—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥८॥

देवी को नमस्कार है, महादेवी को नमस्कार है, शिव की पराशक्ति शिवा को नमस्कार है, मूलप्रकृति देवी को नमस्कार है, सबका कल्याण करने वाली भद्रा देवी को नमस्कार है, नियति देवी (जगत् को नियन्त्रित करनेवाली) को नमस्कार है, सभी रूपोंवाली देवी को बारबार प्रणाम है। गुणसाम्यावस्थारूपिणी मङ्गलमयी देवी को नमस्कार है, नियमयुक्त होकर प्रणाम करते हैं॥८॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्ती वैरोचनी कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्र पद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः॥९॥

उस अग्निवर्ण वाली, तपस्या से उद्दीप्तमान दीप्तिमती कर्मफल की कामना से यजन की जानेवाली दुर्गा देवी की हम शरण में है, असुरों का नाश करनेवाली देवी को नमस्कार है॥९॥

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु॥१०॥

जिस विश्वरूपा देवी के कारण देवता लोग वाणीवान् होते हैं अर्थात् जिसे वैखरीरूप से बोलते हैं वह कामधेनुसदृश आनन्ददायक और अन्न तथा बल देनेवाली वाग्रूपिणी भगवती उत्तम स्तुति से सन्तुष्ट होकर हमारे समीप आकर दर्शन दे॥१०॥

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥११॥

काल का भी नाश करने वाली, वेदों द्वारा स्तुति की गयी विष्णुशक्ति, स्कन्दमाता (शिवशक्ति), सरस्वती (ब्रह्मशक्ति), देवमाता (अदिति) और दक्षकन्या (सती), पापनाशिनी कल्याणकारिणी भगवती को हम प्रणाम करते हैं॥११॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥१२॥

हम उस महालक्ष्मी को जानते है और उस सर्वशक्तिस्वरूपिणी का ही ध्यान करते हैं। वह ही देवी हमें उस विषय (ब्रह्मज्ञानादिध्यान) में प्रवृत्त करे॥१२॥

अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबान्धवः॥१३॥

हे दक्ष! आपकी जो कन्या अदिति है वे प्रसूता हुई और उनसे मृत्युरहित कल्याणमय देव उत्पन्न हुए हैं॥१३॥

कामोयोनिः कमला वज्रपाणिः गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्॥१४॥

काम (क), योनि (ए), कमला (ई), वज्रपाणि (ल), गुहा (ह्रीं) ह-स वर्ण, मातरिश्वा वायु (क), अभ्र (ह), इन्द्र (ल), पुनः गुहा (ह्रीं), स, क, ल, वर्ण और माया (ह्रीं) यह सर्वात्मिका जगन्माता की मूल विद्या है और वह ब्रह्मस्वरूपिणी है॥१४॥

एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति॥१५॥

इस प्रकार की यही आत्मशक्ति है, ये ही विश्वमोहिनी महामाया है, ये पाश, अंकुश, धनुष और बाण धारण करनेवाली है, ये ही श्रीसंज्ञक महाविद्या है, जो ऐसा जानता है, वह शोकों को पार कर जाता है॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः॥१६॥

हे भगवति! तुम्हें नमस्कार है, हे मातः! हम सभी की सभी प्रकार से सर्वत्र रक्षा करें॥१६॥

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरारक्षांसि पिशाचाः यक्षाः सिद्धाः। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतीषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्॥१७॥

वे ही अष्टवसु हैं, वे ही एकादशरुद्र हैं, वे ही द्वादशआदित्य हैं, वे ही विश्वेदेव हैं, वे ही सोमरस पान करनेवाले देवता हैं, वे ही सोम रस का पान न करने वाले असुर हैं, वे ही यातुधानों, असुरों, पिशाचों, यक्षों और सिद्धों से रक्षा करती हैं, वे ही सत्व-रज-तम त्रिगुणरूप हैं, वे ही ब्रह्म-विष्णु-रुद्ररूप हैं, वे ही प्रजापति, इन्द्र तथा मनु हैं, वे ही ग्रहनक्षत्रज्योतिस्वरूप हैं, वे ही कलाकाष्ठादियों में कालरूप हैं, उन सार्वभौम सर्वव्याप्त देवी को नित्य सदैव ही प्रणाम करता हूँ॥१७॥

पापापहारिर्णी देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्॥१८॥

वे ही पाप से छुटकारा दिलानेवाली हैं, वे ही देवी भुक्ति और मुक्ति दोनों को प्रदान करती हैं, उन अन्तरहित, विजयाधिष्ठात्री, निर्दोष, शरण लेने योग्य, कल्याणदात्री और मङ्गलरूपिणी देवी को नित्य सदैव ही प्रणाम करता हूँ॥१८॥

वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्॥१९॥

वियत्-आकाश (ह) तथा (ई) कार से संयुक्त वीतिहोत्र-अग्नि (र) सहित, अर्धचन्द्र (ँ) से अलंकृत जो देवी का बीज है, वह सब कामनाओं तथा मनोरथों को पूर्ण करनेवाला है॥१९॥

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः॥२०॥

इस प्रकार इस एकाक्षर (ह्रीं) स्वरूप का यतिमुनि साधक जन ध्यान करते हैं, जिनका चित्त शुद्ध है, जो निरतिशयानन्दपूर्ण और ज्ञान के सागर हैं। (यह मन्त्र देवी का प्रणव कहा जाता है। ॐकार के समान ही यह भी व्यापक है। संक्षेप में इसका अर्थ इच्छा-ज्ञान-क्रिया के आधार अद्वैत, अखण्ड, सच्चिदानन्द, समरसीभूत, शिवशक्त्यात्मक है)॥२०॥

वाङ्मया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्ताष्टात्तृतीयकः ॥२१॥
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः॥२२॥

वाणी (ऐं), माया (ह्रीं), ब्रह्मसू काम (क्लीं), इसके बाद छठवां व्यञ्जन अर्थात् (च) वर्ण, वही वक्त्र अर्थात् आकार से युक्त (चा), सूर्य (म), अवाम श्रोत्र अर्थात् दक्षिण कर्ण (उ), और विन्दु अर्थात् (आ) से मिश्रित (डा), वायु (य) अधर अर्थात् (ऐं) से युक्त (यै) और विच्चे यह नवार्ण मन्त्र उपासकों को आनन्द और ब्रह्मसायुज्य देनेवाला है। (इस मन्त्र का अर्थ यह है कि हम चित्स्वरूपिणीमहासरस्वती-सद्रूपिणीमहालक्ष्मी-आनन्दरूपिणीमहाकाली, ब्रह्मविद्या पाने के लिए सदैव समय ध्यान करते हैं। हे महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वरूपिणी चण्डिका देवी! तुम्हें नमस्कार है। अविद्यारूपी रज्जु की दृढ़ ग्रन्थि को खोलकर मुझे मुक्त करो)॥२१-२२॥

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्॥२३॥
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे।

हृत्कमल के मध्य में रहनेवाली, प्रातःकालीन सूर्य के समान प्रभाववाली, पाश और अङ्कुश धारण करनेवाली, मनोहर रूपोंवाली, वरद और अभयमुद्रा धारण किये हुए हाथों वाली, तीन नेत्रों से युक्त, रक्त वस्त्र परिधान करनेवाली और कामधेनु के समान भक्तों के मनोरथ पूर्ण करनेवाली महादेवी को भजता हूँ॥२३॥

नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्॥२४॥
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।

हे महादेवी! महाभय का नाश करने वाली, महासङ्कट को शान्त करनेवाली और महान् करुणा की साक्षात् मूर्ति को नमस्कार करते हैं।।२४।।

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोप लभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्या-जैका नैकेति।।२५।।

जिसका स्वरूप ब्रह्मादि नहीं जानते इसलिए अज्ञेया कहते हैं, जिसका अन्त कभी नही होता इसलिए जिसे अनन्ता कहते हैं, जिसका लक्ष्य दीख नहीं पाता इसलिए अलक्ष्या कहते है, जिसका जनन नही होता है इसलिये अजा कहते हैं, एक ही सर्वत्र उपस्थित है (एक ही रूप में) इसलिए एका कहते है, जो सर्वत्र अकेली ही विश्वरूप है इसलिए नैका कहते है, वह इसीलिए अज्ञेया, अनन्ता, अलक्ष्या, अजा, एका और नैका कहलाती है।।२५।।

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।।२६।।

जो महादेवी सभी मन्त्रों में मातृका रूप (मूलाक्षर) है, शब्दों मे ज्ञान (अर्थ) रूप से जो व्याप्त है, ज्ञानों में जो चिन्मयातीता है, शून्यों में शून्यसाक्षिणी हैं।।२६।।

यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।।२७।।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।

जिनसे कुछ भी अन्य श्रेष्ठ नहीं है, वही दुर्गा नाम से प्रसिद्ध हैं, उस दुर्विज्ञेय (बहुत कठिनाई से जाना जाता है), दुराचारनाशक (अव्यवहारों को नष्ट करनेवाली), संसार सागर से तारनेवाली देवी को संसार से डरे हुए हम नमस्कार करते है।।२७।।

देव्याथर्वशीर्षमाहात्म्यम्

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षंप्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति, शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।।२८।।

इस अथर्वशीर्ष का जो अध्ययन तथा पाठ करता है, वह पाँचों अथर्वशीर्ष के पाठ-जपादि का फल प्राप्त करता है। इस अथर्वशीर्ष को विना जाने जो अर्चनापूजनादि करता है, वह सैकड़ों-लाखों बार भी अर्चन-पूजन करता है तो भी उसे सिद्धि नहीं मिलती है। एक सौ आठ बार पाठ करना ही इस अथर्वशीर्ष का पुरश्चरण कहा गया है।।२८।।

दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापं प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्या प्रसादतः॥२९॥

इस अथर्वशीर्ष का दश बार पाठ जो करता है, वह पूर्ण रूप से पापों से मुक्त हो जाता है और महादेवी का कृपाप्रसाद प्राप्त करके महानतम दुर्गम कठिनाइयों को भी पार कर जाता है॥२९॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद॥२९॥

सायंकाल जो इस अथर्वशीर्ष का पाठ करता है वह दिन भर के किये गये पापों से छूट जाता है। प्रातः काल जो इस अथर्वशीर्ष का पाठ करता है वह रात्री कालीन किये गये पापों से छूट जाता है। जो इस अथर्वशीर्ष का सायंकाल तथा प्रातःकाल पाठ करता है, वह पूर्णतः पापों से हीन हो कर पुण्यवान् हो जाता है। निशाकाल में तुरीय सन्ध्या के समय (अर्धरात्रि के समय) जो इस अथर्वशीर्ष का पाठ करता है उसके वाणी की सिद्धि हो जाती है, नूतन प्रतिमा में जो इस अथर्वशीर्ष का अष्टोत्तरशत पाठ करता है वह इष्ट देवता का सानिध्य प्राप्त करता है, प्राण-प्रतिष्ठा के समय इस अथर्वशीर्ष का पाठ करने से प्राणों की प्रतिष्ठा होकर चैतन्यता आती है। भौमवार को अश्विनी नक्षत्र पड़ने पर जो लोग इस अथर्वशीर्ष का अष्टोत्तरशत पाठ करते हैं वे महामृत्यु को भी पार कर जाते हैं, वह महामृत्यु को भी पार कर जाते है, यही वेद (शाश्वत ज्ञान) है, यही ज्ञान प्राप्त करना चाहिए॥२९॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पराम्बिकायै नमः स्तुतिपाठं समर्पयामि।

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण गणेशाम्बिकापूजनेन गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम॥

श्रीगणेशाम्बिकापूजनं परिपूर्णम्

●

स्वस्तिकलशस्थापनम्

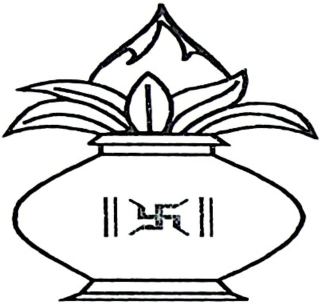

भूमिस्पर्श—**ॐ म॒हीद्यौःपृथि॒वीचन॒ऽइ॒मंय्य॒ज्ञंमिमिक्षताम्॥ पिपृतानो॒भरीमभिः॥**

सप्तधान्य बिखेरना—**ॐ ओषधय॒ःसमवदन्त॒सोमेनस॒हराज्ञा॥ यस्म्मैकृ॒णोति ब्राह्म॒णस्तꣳराजन्पारयामसि॥**

कलशस्थापन—**ॐ आजिग्घ्रक॒लशंम॒ह्यात्वाव्विश॒न्त्विन्दवः॥ पुनरू॒र्ज्जानिवर्त स्व॒सानःस॒हस्रंधुक्क्ष्वो॒रुधारा॒पयस्वती॒पुन॒र्म्माविशताद्द्रयिः॥**

कलश में जल भरना—**ॐ व्वरुणस्यो॒त्तम्भनमसि॒व्वरुणस्यस्कम्भ॒सर्ज्जनीस्त्थो॒ व्वरुणस्यऽऋत॒सदन्न्यसि॒व्वरुणस्यऽऋत॒सदनमसि॒व्वरुणस्यऽऋत॒सदनमासीद।**

कलश में गन्ध डाले—**ॐ त्वाङ्गन्ध॒र्व्वाऽअखन॒ँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृह॒स्पतिः॥ त्वामोषधे॒सोमो॒राजाव्वि॒द्वान्न्यक्ष्मादमुच्च्यत॥**

कलश में सर्वौषधी डाले—**ॐ याओषधी॒ःपूर्व्वाजा॒तादेवेब्भ्यस्त्रियु॒गंपुरा॥ मनै॒नु ब॒ब्भ्रुणाम॒हꣳश॒तंधामानि स॒प्त च॥**

कलश में दूर्वा डाले—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती॒परुषःपरु॒ष्प्परि॥ ए॒वानो दूर्व्वे॒प्प्रतनुस॒हस्रेण श॒तेन च॥**

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अ॒श्व॒त्त्थेवोनि॒षदनंप॒र्ण्णेवोव्वस॒तिष्कृ॒ता॥ गो॒भाज॒ऽइत्किलासथ॒यत्स॒नवथ॒पूरुषम्॥**

कलश में कुश डाले—**ॐ प॒वित्रैस्त्थोव्वैष्ण्ण॒व्यौसवि॒तुर्व्वःप्प्रस॒वऽउत्पुना॒म्म्यच्छिद्द्रेण प॒वित्रेण॒सूर्य्यस्य॒रश्मिम्भिः॥ तस्यतेप॒वित्रपतेप॒वित्रपूतस्य॒यत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्यो॒नापृथिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेशनी॥ यच्छान॒ः शर्म्मस॒प्प्रथाः॥**

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः फ॒लिनी॒र्य्याऽअफ॒लाऽअपु॒ष्प्पायाश्श्चपु॒ष्प्पिणीः॥ बृह॒स्प्पतिप्प्रसूता॒स्तानोमुञ्च॒त्वꣳहसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परि॒वाजपतिःक॒विर॒ग्निर्ह॒व्यान्यक्रमीत्॥ दध॒द्रत्नानि दा॒शुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभू॒तस्यजा॒तः पति॒रेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथि॒वीद्यामु॒तेमां अस्म्मैदे॒वायह॒विषाव्विधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्ज्यो॒तिषास॒हशर्म्म॒व्वरू॑थ॒मासद॒त्त्स्व॒ः॥ व्वासोअग्ग्ने व्वि॒श्श्वरूप॒ꣳसंव्ययस्वव्विभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पू॒र्ण्णादर्व्वि॒परापत॒सुपूर्ण्णा॒पुन॒रापत॥ व्व॒स्नेव॒व्विक्क्रीणावहा॒ऽ इष॒मूर्ज्जꣳशतक्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफ॒लिनी॒र्य्याऽअफ॒लाऽअपु॒ष्प्पायाश्श्चपु॒ष्प्पिणीः॥ बृह॒स्प्पतिप्प्रसूता॒स्तानोमु॒ञ्च॒त्वꣳहसः॥**

वरुण का ध्यान, आवाहन, पञ्चोपचारपूजन—**ॐ तत्त्वायामि॒ब्ब्रह्मणा॒व्वन्दमान॒स्तदा-शास्ते॒यजमानोह॒विर्ब्भिः॥ अहेडमानो व्वरुणे॒हबो॒ध्युरुशꣳस॒मान॒ऽआयु॒ःप्प्रमोषीः॥**

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषता॒माज्ज्यस्य॒बृह॒स्प्पतिर्य्य॒ज्ञमि॒मन्तनो॒त्त्वरिष्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्दधातु॥ व्विश्श्वेदे॒वासऽइ॒हमादयन्ता॒मो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते है, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। इस जल में वरुण अपने आयुधशक्तिपरिवार सहित आकर स्थित हों।

ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित होता है उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षि (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकाएँ स्थित हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तद्वीप स्थित है। अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं॥३॥

कावेरी कृष्ण वेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित है, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ है, पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित है वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित हों कर समस्त दुरित के क्षयकारक हो समस्त पापों को नष्ट करनेवाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग रूप से कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरित को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें हमारे, यज्ञ को पूर्णता प्रदान करें॥८॥

स्वस्तिकलशपूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर वरुणदि देवताओं का ध्यान करे।

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्॥ सभूमि॑ꣳ स॒र्वत॑स्पृ॒त्वात्य॑तिष्ठ द्दशाङ्गु॒लम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर, ध्यानकर आसन समर्पित करे।

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वँय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्चपूरुषः॥ पादोऽस्यव्विश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोऽस्येहाभवत्पुनः॥ ततोव्विष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्त्यरिच्च्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्चक्क्रेव्वायव्यानारण्याग्राम्म्याश्चये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयंजलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतऽऋचःसामानिजज्ञिरे॥ छन्दाꣳसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्म्मादजायत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयः पात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पयःपृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशःसन्तुमह्य्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ द॒धि॒क्राव्णो॑ऽअकारिषंजि॒ष्णोरश्व॑स्यवा॒जिन॑ः॥ सु॒र॒भिनो॒मुखा॑कर॒त्प्रण॒ऽआयू॑ꣳषितारिषत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ घृ॒तम्मि॑मिक्षेघृ॒तम॑स्य॒योनि॑र्घृ॒तेश्रि॒तोघृ॒तम्व॑स्य॒धाम॑॥ अ॒नु॒ष्ष्व॒धमाव॑हमा॒दय॑स्व स्वाहा॑कृतंवृषभवक्षिह॒व्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ मधु॒व्वाता॑ऽऋताय॒तेमधु॑क्षरन्ति॒सिन्ध॑वः॥ माद्ध्वी॑र्न्नःस॒न्त्वोष॑धीः॥ मधु॒नक्त॑मु॒तोषसो॒मधु॑म॒त्पार्त्थि॑व॒ꣳरज॑ः॥ मधु॒द्यौर॑स्तुनःपि॒ता॥ मधु॑मान्नो॒व्वन॒स्पति॒र्म्मधु॑माँऽअस्तु॑सूर्य्य॑ः॥ माद्ध्वी॒र्ग्गावो॑भवन्तुनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अ॒पाꣳरस॒मुद्व॑यस॒ꣳसूर्य्ये॒सन्त॒ꣳस॒माहि॑तम्॥ अ॒पाꣳरस॑स्य॒योरस॒स्तंव्वो॑गृह्णाम्युत्त॒मम॑मु॒पया॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑यत्त्वा॒जुष्ट॑ङ्गृह्णाम्ये॒षते॒योनि॒रिन्द्रा॑यत्वा॒जुष्ट॑तमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पञ्च॑न॒द्यः॒सर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः॥ सर॑स्वती॒तुप॑ञ्च॒धासोदे॒शेभ॑वत्स॒रित्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ शु॒द्धवा॑लःस॒र्व्वशु॑द्धवालोमणि॒वाल॒स्तऽआ॑श्वि॒नाःश्येत॑ःश्येता॒क्षो॒रु॒णस्तेरु॒द्राय॑ पशु॒पत॑येकर्ण्णा॑या॒माऽअ॑विलि॒प्तारौ॒द्रानभो॑रुपाःपार्ज्ज॒न्याः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्मा॒दश्श्वा॑ऽअजायन्त॒येकेचो॑भ॒याद॑तः॥ गावो॑हजज्ञि॒रे॒तस्मा॒त्तस्मा॑ज्जा॒ताऽअ॑जा॒वय॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे।

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्चये॥ ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः॥ व्वासोअग्ग्नेव्विश्श्वरूपꣳसंव्व्ययस्वव्विभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिव मातरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे।

ॐ यत्पुरुषंव्व्यदधुःकतिधाव्व्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोर्व्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्यादꣳहोश्श्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदादित्त्येभ्यस्त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपोजनयथा च नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे।

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्च्यत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे।

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभानवोव्विप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्न्विन्द्रतेहरी॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे।

ॐ ओष॑धीः॒प्प्रति॑मोदद्ध्वं॒पुष्प॑वतीः॒प्र॒सूव॑रीः॥ अश्श्वा॑ऽइवस॒जित्त्व॑रीर्व्वी॒रुध॑ः पार॒यि॒ष्ण्णव॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे।

ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षःपरुष॒ष्प्परि॑॥ ए॒वानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नुस॒हस्रे॑ण श॒तेन॑ च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे।

ॐ अहि॑रिवभो॒गैः पर्य्ये॑ति॒बा॒हुंज्याया॑हे॒तिंप्प॑रि॒बाध॑मानः॥ ह॒स्त॒घ्घ्नोव्विश्श्वा॑ व॒युना॑निव्वि॒द्द्वान्पुमा॒न्पुमा॑ᳪंसं॒परि॑पातुव्वि॒श्श्वत॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे।

ॐ सिन्धो॑रिवप्प्राद्ध्व॒नेशू॒घ॒नासो॒व्वात॑प्प्रमियः॒पत॑यन्ति॒य॒ह्वाः॥ घृ॒तस्य॒धारा॑ऽ अरु॒षोनव्वा॒जीकाष्ठा॑भि॒न्दन्नू॒र्म्मिभि॒ः पिन्न्व॑मानः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण के बाद नैवेद्य देवता के सामने रख करके धूपदीप प्रज्वलित करके धूप दिखाये।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ ब्ब्रा॒ह्म॒णो॒ऽस्य॒मुख॑मासीद्बा॒हूरा॑ज॒न्न्यः॒कृतः॥ ऊ॒रूतद॑स्य॒यद्वैश्यः॑ प॒द्भ्याᳪं शू॒द्द्रोऽअ॑जायत॥ ॐ धूर॑सि॒धूर्व्व॒धूर्व्व॑न्तं॒ध्धूर्व्व॒तं॒योऽस्मान्धूर्व्व॑ति॒तंधूर्व्व॒यंव्व॒यंधूर्व्वा॑मः॥ दे॒वाना॑मसि॒वह्नि॑ तम॒ᳪंसस्नि॑तमं॒पप्प्रि॑तमं॒जुष्ट॑तमंदे॒व॒हूत॑मम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ च॒न्द्रमा॒मन॑सोजा॒तश्श्चक्षोः॒सूर्य्यो॑ऽअजायत॥ श्श्रोत्रा॑द्वा॒युश्श्च॑प्प्रा॒णश्श्च॒मुखा॑ द॒ग्निर॑जायत॥ ॐ अ॒ग्निर्ज्ज्योति॒र्ज्ज्योति॑र॒ग्निः स्वाहा॒सूर्य्यो॒ज्ज्योति॒र्ज्ज्योतिः॒सूर्य्यः॒ स्वाहा॑॥ अ॒ग्निर्व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॒सूर्य्यो॒व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॑॥ ज्ज्योतिः॒ सूर्य्यः॒सूर्य्यो॒ज्ज्योतिः॒स्वाहा॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशःश्श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्प्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ पप्रदातारँतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे।

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुःपृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽअच्च्युतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे।

ॐ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमततन्वत॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंग्ग्रीष्मऽइध्मः-शरद्धविः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिसहित ताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फल लेकर समर्पित करे।

ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वꣳहसः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे।

ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये।

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजःपितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवःसदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तये॥

आ॒त्म॒सनि॑प्प्रजा॒सनि॑पशु॒सनि॑लोक॒सन्न्य॑भय॒सनि॑÷॥ अ॒ग्निःप्प्र॒जांब॑हु॒लांमे॑करो॒त्वन्नं॒ पयो॒रेतो॑ऽअ॒स्म्मासु॑धत्त॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

आरती करने के बाद हाथ धोकर दोनों हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ य॒ज्ञेन॑य॒ज्ञम॑यजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्मा॑णिप्प्रथ॒मान्न्या॑सन्॥ तेह॒नाक॑म्ममहि॒मान॑÷ सचन्त॒यत्र॒पूर्व्वे॑सा॒द्ध्याःसन्ति॑दे॒वाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ सें पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ स॒प्तास्या॑सन्न्परि॒धय॒स्त्रिःस॒प्तस॒मिध॑÷कृ॒ताः॥ दे॒वायद्य॒ज्ञन्त॑न्न्वा॒नाऽअब॑ध्न॒न्पुरु॑षम्प॒शुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे।

रक्ष रक्ष जलाध्यक्ष रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं पश्चिमाधीश! प्राणीनां जीवनं परम्॥१॥

हे जलाध्यक्ष! हमारी सभी प्रकार से रक्षा करें-रक्षा करें, हे जीवनदायक! हमारे जीवन की रक्षा करें। हे पश्चिम दिशा के स्वामी! प्राणियों को जीवन प्रदान करनेवाले! हमारी रक्षा करें॥१॥

विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतं।
विशेषार्घ्यं प्रदाष्यामि सर्वदा रक्षणं कुरु॥२॥

चन्दन, रजनी पुष्प तथा विविध द्रव्यों से संयुक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ, हमारी सर्वदा रक्षा कीजिये॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

कलशप्रार्थना—

ॐ देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

हे कुम्भ! देवताओं और दानवों के बीच समुद्र-मन्थन हुआ तब तुम उत्पन्न हुए, तुम्हें स्वयं विष्णु ने धारण किया था॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

तुम्हारे जल में सभी तीर्थों की प्रतिष्ठा है, तुममें सभी देवताओं का वास है, तुमसे ही सभी प्राणी प्रतिष्ठित हैं, तुममें ही सभी के प्राण प्रतिष्ठित है।।२।।

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेव तथा पितर हो।।३।।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनायें फलवान होती है, हे जलोद्भव कुम्भ! तुम्हारे कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ।।४।।

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करने वाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सांनिध्य प्रदान करें।।५।।

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दर श्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दरमङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले जलाधिनाथ आपको बार-बार नमस्कार है।।६।।

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

पाश को हाथ में धारण करनेवाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करने-वालों के नायक, जब तक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नही हो जाती तब तक सांनिध्य प्रदान करें।।७।।

प्रार्थनासमर्पणम्—हाथ में जल लेकर प्रार्थना समर्पण करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से जल लेकर पूजन समर्पित करे।

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावहित देवताः प्रीयन्तां न मम॥

कलशपूजनं परिपूर्णम्

●

पुण्याहवाचनम्

अवनीकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशं अञ्जलिं शिरस्याधायाऽनन्तरं दक्षिणेन पाणिना कलशं धारयित्वा आशिषः प्रार्थयेत्। जानुमण्डल को नीचे जमीन में लगाकर दक्षिण हाथ को कमल के समान अञ्जली बनाकर उसमें कलश लेकर शिर पर धारण करके आशीष-प्रार्थना करे।

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनाऽऽयुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु॥

अतिशय विस्तारित समुद्र तथा नद-नदियाँ-पर्वत तथा भगवान् विष्णु के आयु के प्रमाण का हो जाऊँ (चिरायु वाला हो जाऊ) तथा शतवर्ष पर्यन्त तथा उनके आयु के प्रमाण से आयुवाला हो जाऊँ।

ब्राह्मण बोले—**अस्तु दीर्घमायुः॥**

ॐ त्रीणि॑प॒दाव्विच॑क्क्रमे॒व्विष्ण्णु॑र्ग्गो॒पाऽअदा॑ब्भ्यः॥ अतो॒धर्म्मा॑णिधा॒रय॑न्॥

यजमान बोले—**तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुः।**

ॐ त्रीणि॑प॒दाव्विच॑क्क्रमे॒व्विष्ण्णु॑र्ग्गो॒पाऽअदा॑ब्भ्यः॥ अतो॒धर्म्मा॑णिधा॒रय॑न्॥

यजमान बोले—**तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुः।**

ॐ त्रीणि॑प॒दाव्विच॑क्क्रमे॒व्विष्ण्णु॑र्ग्गो॒पाऽअदा॑ब्भ्यः॥ अतो॒धर्म्मा॑णिधा॒रय॑न्॥

कलश को भूमि पर रख करके ब्राह्मणों का हस्त पूजन करे।

यजमान बोले—

अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु मे॥

जल में समस्त देवताओं का वास है, सभी में जल ही प्रतिष्ठित है, ब्राह्मणों के हाथ में प्रदान करने पर यह जल हमारे लिये कल्याणकारी हो।

ॐ शिवा आपः सन्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में जल दे।

ब्राह्मण बोले—**सन्तु शिवा आपः।**

यजमान बोले—

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तु नः॥

पुष्प (कमल) में लक्ष्मी का वास है, पुष्कर में भी लक्ष्मी वसती है, वे लक्ष्मी नित्य हमारे यहाँ वास करें और हमारे मन में वास करके सुन्दरता प्रदान करें।

ॐ सौमनस्यमस्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुष्प प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**अस्तु सौमनस्यं।**

यजमान बोले—

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम॥

अक्षत हमारे लिए दीर्घायु-यश-बल तथा पुण्यकारी हो और हमारे लिए सदा लोक में श्रेयस्कर हो।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चाऽस्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में अक्षत प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**अस्त्वक्षतमरिष्टं च।**

यजमान बोले—

चन्दने महदारोग्यं गन्धाः प्रीति ते यदा।
ब्राह्मणानां करे न्यस्तु माङ्गल्यं चास्तु मे सदा॥

चन्दन से आरोग्यवृद्धि होती है, गन्ध से जैसे सभी की प्रीति होती है। ब्राह्मणों के हाथ में प्रदान करने से सदा हमारे लिए मङ्गलकारी हो।

ॐ गन्धाः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में चन्दन प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**सुमङ्गल्यं चास्तु।**

यजमान बोले—

अक्षतं मे महत्पुण्यं अक्षयतृप्तिप्रदायकम्।
अक्षतं महदायुष्यं तस्मादायुष्य मे सदा॥

अक्षय तृप्ति प्रदान करनेवाला अक्षत हमारे लिए बहुत पुण्यवान् हो, अक्षत से बहुत आयु की वृद्धि होती है अतः हमे सदैव आयु प्रदान करे।

ॐ पुनरक्षताः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः अक्षत प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**आयुष्यमस्तु।**

यजमान बोले—

पुष्पे भवतु सौगन्धं पुष्पः पुष्टिप्रदायकम्।
पुष्पे वसतु श्रीवृत्तिः श्रीश्रियमस्तु मे सदा॥

पुष्पों में सुगन्धि होती है, पुष्प पुष्टि प्रदान करते है, पुष्प में श्रीवृत्ति का वास होता है अतः हमारे लिये सदा ही श्रीलक्ष्मी प्राप्त हो।

ॐ पुनः पुष्पाणि पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः पुष्प प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**सौश्रियमस्तु।**

यजमान बोले—

ऐश्वर्यं सुफलं सन्तु देवाः प्रीति भवा यदा।
ब्राह्मणानां प्रसादश्च ऐश्वर्यं मे सदाकरा॥

देवताओं में प्रीति होती है तो ऐश्वर्य सुफल होता है, ब्राह्मणों के कृपाप्रसाद से देवताओं के प्रति हमारी प्रीति तथा ऐश्वर्य प्राप्त हो।

ॐ सफलताम्बूलानि पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में सुपाड़ी सहित पान प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**ऐश्वर्यमस्तु।**

यजमान बोले—

यज्ञपुण्यस्य साफल्यं अनन्तफलदा भवा।
ब्राह्मणानां प्रसादेन दक्षिणा सफला सदा॥

ब्राह्मणों के कृपा प्रसाद से यज्ञ का पुण्य सफल होकर अनन्त फलवान हो जाता है, वैसे ही हमारे द्वारा दी गयी दक्षिणा सदैव ही यज्ञफल को प्रदान करनेवाली हो।

ॐ दक्षिणाः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**बहुदेयं चाऽस्तु।**

यजमान बोले—

हरिः जले निवसन्ति जलं वरुणरूपिणम्।
वरुणाद्यर्चितो देवः(शिवः) तस्मात्स्वर्चित ते सदा॥

जल ही वरुणरूप है, जल में ही हरि का वास है, वरुणादि (जल) से शिव का अर्चन होता है, अतः ब्राह्मण भी सदा ही जल से अर्चित होकर प्रसन्न हों।

ॐ पुनरत्राऽपः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः जल प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**स्वर्चितमस्तु।**

यजमान बोले—दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं पौत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चाऽस्तु।

ब्राह्मण बोले—**तथास्तु।**

यजमान बोले—यं कृत्वा सर्ववेद यज्ञ क्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तं अहं ओङ्कारं आदिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिः अनुज्ञातः पुण्यं पुण्याऽहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण बोले—**वाच्यन्ताम्।**

सभी ब्राह्मण मिलकर पुण्यकारक मन्त्रों का पाठ करे।

पुण्यकारकमन्त्राः

करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः।
सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्तिसर्वदा॥१॥

आपका ब्रह्मा कल्याण करें, द्विजजाति मात्र आपका कल्याण करे, सरीसृपों में जो सर्व श्रेष्ठ सरीसृप सभी आपका सदा सर्वदा कल्याण करें॥१॥

ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः।
तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः॥२॥

ययाति, नहुष, धुन्धुमार, भगीरथ इत्यादि राजर्षि भी आप पर कल्याण करनेवाले हों॥२॥

स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च।
स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा॥३॥

आपका द्विपाद कल्याण करे, चतुष्पाद कल्याण करें, अन्यान्य भी पादवान नित्य सर्वदा कल्याणकारी हों॥३॥

स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे॥४॥

स्वाहा, स्वधा, शची भी आपका सदा कल्याण करें, वेदादि भी नित्य कल्याण करनेवाले हों॥४॥

लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाङ्गिराः॥५॥

हे अनघ लक्ष्मी, अरुन्धती सदैव कल्याण करनेवाले हों, असित, देवल, विश्वामित्र तथा अङ्गिरादि महर्षि भी कल्याण करनेवाले हों॥५॥

वसिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः॥६॥

वसिष्ठ, कश्यपादि महर्षि सदैव कल्याण करनेवाले हों, धाता (विष्णु), विधाता (ब्रह्मा), लोकेश (ईश्वर), दिशाएँ सदैव ही कल्याणकारी हों॥६॥

स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्त्तिकेयश्च षण्मुखः।
विवस्वान्भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा॥७॥

षड्मुख कार्तिकेय सदैव ही कल्याणकारी हों, भगवान् विवस्वान् (सूर्य) सदैव ही कल्याणकारी हों॥७॥

दिग्गजाश्चैव चत्त्वरः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः।
अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि यः॥८॥

चारों दिशाएँ तथा आकाश में विचरण करनेवाले समस्त ग्रह, भूमि तथा भूमि के नीचे रहनेवाले नागादि जो पृथ्वी को धारण करते हैं सदैव ही कल्याण करें॥८॥

शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिव्यैर्देवदानवराक्षसाः॥९॥

शेषादि समस्त श्रेष्ठसर्प आपका सदैव ही सपरिवार कल्याण करे। अपने अपने दिव्य आयुधों से सभी देवता, सभी दानव, सभी राक्षसगण सदा रक्षा करें॥९॥

ॐ द्र॒वि॒णो॒दाःपि॑पीषतिजु॒होत॒प्रच॑तिष्ठत॥ नेष्ट्रा॒दृ॒तुभि॑रिष्यत॥ स॒वि॒तात्त्वा॑ स॒वाना॑ᳫं सुवताम॒ग्निर्गृहप॑तीना॒ᳫं॒सोमो॒वन॒स्पति॑नाम्॥ बृह॒स्पति॒र्व्वा॒चऽइन्द्रो॒ज्ज्यैष्ठ्या॑य रु॒द्रः प॒शुभ्यो॑मित्रःस॒त्त्योव्वरु॑णो॒धर्म्म॑पतीनाम्॥ नतद्रक्षा॑ᳫंसि॒नपि॑शा॒चास्त॑रन्ति दे॒वाना॒मोजः॑प्प्रथम॒जᳫं॒ह्येतत्॥ योबि॒भर्त्ति॑दाक्षाय॒णᳫं हिर॑ण्ण्य॒ᳫं सदे॒वेषु॑कृणुते दी॒र्घमायु॒ᳫं॑सम॑नु॒ष्येषुकृणुतेदी॒र्घमायुः॥ उ॒च्चाते॑जा॒तमन्ध॑सोदि॒विसद्भूम्म्याद॑दे॥ उ॒ग्रᳫंशर्म्म॒महि॒श्श्रवः॑॥ उपा॑स्मैगायतानरः॑पव॑माना॒येन्द॑वे॥ अ॒भिदे॒वाँ२॥ऽ इय॑क्षते॥

यजमान बोले—**व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।**

ब्राह्मण बोले—**समाहितमनसः स्मः।**

यजमान बोले—**प्रसीदन्तु भवन्तः।**

ब्राह्मण बोले—**प्रसन्ना स्मः।**

यजमान अधोलिखित मन्त्र बोलते हुए कलश के उपर अक्षत छोड़े तथा ब्राह्मण प्रत्युत्तर में अस्तु-आदि प्रतिवचन बोले।

ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।

बहिः—द्वितीय पात्र में।

ॐ अरिष्ट निरसनमस्तु। ॐ यत्पापं-रोगं-अशुभं-अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

अन्तः–कलश के ऊपर।

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरं अहरहमभि वृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरण-मुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा-

पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरी पुरोगाः उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वा कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्ट देवताः प्रीयन्ताम्।

बहिः—द्वितीय पात्र में।

ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।

अन्तः–कलश के उपर।

ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा नद्यः सन्तु। ॐ शिवा गिरयः सन्तु। ॐ शिवा सागराः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ नि॒का॒मेनि॑कामेनःप॒र्जन्यो॑वर्षतु॒फल॑वत्यो॑न॒ऽओष॑धयःपच्यन्तांयोगक्षे॒मोनः॑ कल्पताम्॥

ॐ शुक्राऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोमसहित-आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

यजमान बोले—**एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

ब्राह्मण बोले—**वाच्यताम्।**

यजमान बोले—

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

ब्राह्मकर्म (यज्ञ) बहुत पुण्यकारक होते हैं, जो सृष्टि की उत्पत्ति में कारक हैं, ब्राह्मकर्म

से ही वेदवृक्षादि (वेद=ज्ञानरूपी वृक्ष) नित्य उत्पन्न होते हैं। उस पुण्यकारक वाक्य का हमारे लिए वाचन कीजिये।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य महाविद्यापुरश्चरणाख्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्याहम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्याहम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्याहम्।**

ॐ पु॒नन्तु॑मादेवज॒नाःपु॒नन्तु॒मन॑सा॒धिय॑ः॥ पु॒नन्तु॒विश्वा॑भू॒तानि॒जात॑वेदः पुनी॒हिमा॑॥

यजमान बोले—

पृथिव्यामुद्धतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

ऋषियों, सिद्धों, गन्धर्वो के द्वारा पृथ्वी के उद्धार के लिए पूर्वकाल में जो कर्म वाचन किया गया था, वही कर्म हमारे कल्याण के लिए वाचन करें।

भो ब्राह्मणाः! मयाक्रियमाणस्य महाविद्यापुरश्चरणाख्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

ॐ यथे॒मांव्वाचं॑कल्या॒णीमा॒वदा॑नि॒जने॑भ्यः॥ ब्ब्र॒ह्म॒रा॒ज॒न्या॒भ्याꣳशूद्राय॒ चार्य्या॑यच॒स्वाय॒चार॑णायच॒प्प्रि॒योदे॒वानां॒दक्षि॑णायैदा॒तुरि॒हभू॑यासम॒यं मे॒ काम॒ः समृ॑द्ध्यता॒मुप॑मा॒दोन॑मतु॥

यजमान बोले—

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः॥

जिस कर्म प्रभाव से सागर में से ऋद्धिसिद्धियुक्त महालक्ष्मी की उत्पत्ति हुई, उस सम्पूर्ण प्रभाववाले ऋद्धिप्रदाता वाक्यों का वाचन करें।

भो ब्राह्मणाः! मयाक्रियमाणस्य महाविद्यापुरश्चरणाख्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

ॐ स॒त्रस्य॒ऋद्धि॒रस्यगन्म॒ज्योति॒रमृताऽअभूम॥ दिवंपृथि॒व्याऽअध्यारु॑हा॒मा विदामदे॒वान्त्स्व॒र्ज्योति॑ः॥

यजमान बोले—

स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥

जिनसे दोषों का विनाश तथा नित्य भला होता है, उन पुण्य तथा कल्याण की वृद्धि करनेवाली, विनायक गणेश की नित्यप्रिया ऋद्धिसिद्धि को प्रदान करनेवाला स्वस्तिवाक्य का वाचन आप सभी विप्रवर्ग करें।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य महाविद्यापुरश्चरणाख्य कर्मणो स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

यजमान बोले—**अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

यजमान बोले—**अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ स्व॒स्तिन॒ऽइन्द्रो॑वृ॒द्धश्र॑वाःस्व॒स्तिन॑ःपूषावि॒श्ववे॑दाः॥ स्व॒स्तिनस्तार्क्ष्यो॒ऽअरि॑ष्टनेमिःस्व॒स्तिनो॒बृह॒स्पति॑र्दधातु॥

यजमान बोले—

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥

समुद्रमन्थन से उत्पन्न, जगत् में आनन्द करनेवाली, हरि की प्रिया और मङ्गल करने वाली, श्रीः (लक्ष्मी) वृद्धि हेतु, हमारे लिए लक्ष्मीवृद्धिकारक वाक्यों का वाचन करें।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य महाविद्यापुरश्चरणाख्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

ॐ श्रीश्च॑तेल॒क्ष्मीश्च॒पत्न्या॑वहोरा॒त्रेपा॒र्श्वेनक्ष॑त्राणिरू॒पम॒श्विनौ॒व्यात्त॑म्॥ इ॒ष्णणं नि॑षाणा॒मुंम॑ऽइषाणसर्व्वलो॒कंम॑ऽइषाण॥

यजमान बोले—

मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥

मृकण्ड ऋषि के पुत्र तथा ध्रुवलोमशादि ऋषियों को जिससे दीर्घायुष्य हुआ, वैसे ही आयुष्य के लिए जिससे शतवर्षान्त जीवन हमें प्राप्त हो, उन वाक्यों को हमारे लिए वाचन करें।

ब्राह्मण बोले—**शतं जीवन्तु भवन्तः।**

ॐ श॒तमिन्नुश॒रदो॒अन्ति॑देवा॒यत्रा॑नश्च॒क्राज॒रसं॑त॒नूना॑म्॥ पु॒त्रासो॒यत्र॑पि॒तरो॒भव॑न्ति॒ मानो॑म॒ध्यारी॑रिष॒तायु॒र्गन्तोः॥

यजमान बोले—

शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि॥

जिन वाक्यों का वाचन शिव-गौरी के विवाहादि मङ्गलकृत्यों में, श्रीराम के राज्याभिषेक में तथा धनवानों के घर में होता है, उन वाक्यों का हमारे घर में श्रीवृद्धिहेतु वाचन करें।

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

ॐ मन॑सः॒काम॒माकू॑तिंवा॒चःस॒त्यम॑शीय॥ पशू॒नाꣳरू॒पमन्न॑स्य॒रसो॒यशः॒ श्रीः श्र॑यतां॒मयि॒स्वाहा॑॥

यजमान बोले—

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः॥

प्रजापति, लोकपाल, धाता (विष्णु), ब्रह्मा, देवराज इन्द्र तथा शाश्वत भगवान् शिव जिनसे नित्य हमारी रक्षा करें उन वाक्यों को हमारे लिए वाचन करें।

ब्राह्मण बोले—**ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।**

ॐ प्रजा॑पते॒नत्वदे॒तान्य॒न्योव्विश्श्वा॑रू॒पाणि॒परि॒ताब॑भूव॥ यत्का॑मास्तेजुहु॒मस्तन्नो॑ऽअस्तुव्व॒यꣳस्या॑म॒पत॑योरयि॒णाम्॥

यजमान बोले—

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥

जिन वाक्यों के वाचन से यजमान को आयुष्य और कल्याण होता है, वही वेदादि ज्ञान में पारङ्गत ऋत्विकादि ब्राह्मण हमारे लिए आशीर्वचन का वाचन करें, जिससे हमारे यहाँ सर्वविध कल्याण तथा आयुष्य की वृद्धि हो।

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ प्प्रति॒पन्था॒मप॑द्महिस्व॒स्ति॒गाम॑ने॒हस॑म्॥ येन॒व्विश्श्वा॒ःपरि॒द्विषो॑व्वृ॒णक्ति॑व्वि॒न्दते॒व्वसु॑॥

यजमान बोले—**ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु स्वस्तिवाचनसमृद्धिः।**

यजमान दक्षिणासंकल्प करे—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहं कृतस्यस्वस्तिवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं तत् सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं स्वस्तिवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थितदक्षिणां विभज्यदातुमहमुत्सृजे।**

पुण्याहवाचनं परिपूर्णम्

●

अभिषेकः

वरुणकलश का जल लेकर चार अविधुर ब्राह्मण दर्भदूर्वादि से अभिषेक करें, अभिषेक के समय यजमानपत्नी वामभाग में बैठे।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥१॥

आपका ब्रह्माविष्णुमहेश्वरादि समस्त देवता अभिषिञ्चन करें, वासुदेव, जगन्नाथ, सङ्कर्षण भगवान् विभु अभिषिञ्चन करे॥१॥

प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान्यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥२॥

प्रद्युम्न, अनिरुद्ध हमारे विजय के लिए तथा अखण्ड, अग्नि, भगवान् विष्णु, यम और निर्ऋति सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥२॥

वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्राह्मणासहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥३॥

वरुण, पवन, धनाध्यक्ष कुबेर तथा शिव समस्त ऋषियों के सहित दिग्पालादि सभी आपकी सदैव रक्षा तथा पालन करें॥३॥

कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥४॥

कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया, मति, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, कान्ति, तुष्ट्यादि मातृकाएँ सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥४॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमाभौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः॥५॥

उपर्युक्त सभी देवतादि अपनी पत्नियों के सहित रक्षार्थ आपका अभिषिञ्चन करें, आदित्यचन्द्रमाभौमबुधगुरुशुक्र तथा शनि समस्त ग्रह सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥५॥

ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥६॥

सभी ग्रह तृप्त होकर राहु, केतु के सहित आपका अभिषिञ्चन करें, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस तथा समस्त सर्प सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥६॥

ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः॥७॥

समस्त ऋषि, मुनि, गायें, समस्त देवमाताएँ, समस्त देवपत्नियाँ, वृक्ष, समस्त नाग, दैत्य, अप्सराएँ सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥७॥

अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥८॥

समस्त अस्त्र, समस्त शस्त्र, समस्त राजा, समस्त वाहन, समस्त औषधियाँ, समस्त रत्न, समस्त काल के अवयवादि सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥८॥

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये॥९॥

समस्त सरिताएँ, समस्त सागरादि, समस्त पर्वत, समस्त मेघादि, समस्त नद सभी धर्म कामना की सिद्धि के लिए आपका अभिषिञ्चन करें॥९॥

ॐ पय॑÷पृथि॒व्यांपय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः॥ पय॑स्वतीःप्प्र॒दिश॑÷ सन्तु॒मह्य॑म्॥ ॐ पञ्च॑न॒द्यः॒सर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः॥ सर॑स्वती॒तुप॑ञ्च॒धासो दे॒शेभ॑वत्स॒रित्॥ ॐ व्वरु॑णस्यो॒त्तम्भ॑नमसि॒व्वरु॑णस्यस्कम्भ॒सर्ज्जनी॑स्त्थो॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑न्न्यसि॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमसि॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमासी॑द॥ ॐ पु॒नन्तु॑मादेवज॒नाः

पुनन्तुमनसाधियं÷॥ पुनन्तुव्विश्वाभूतानिजातवेदःपुनीहिमा॥ ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्यन्त्रियेदधामि बृहस्पतेष्ट्वासाम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्यन्त्रेणाग्नेःसाम्म्राज्येनाभिषिञ्चामि॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ अश्विनो भैषज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि॥ सरस्वत्यै भैषज्येनव्वीर्यायान्नाद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेणबलायश्रियैयशसेऽभिषिञ्चामि॥ ॐ विश्वानिदेवसवि तर्द्दुरितानिपरासुव॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव॥ धामच्छदग्ग्निरिन्द्रोब्ब्रह्मादेवोबृहस्पतिः॥ सचेतसोव्विश्वेदेवायज्ञंप्रावन्तुनःशुभे॥ त्वंय्यविष्ठदाशुषोनॄःपाहिशृणुधीगिरः॥ रक्षा तोकमुतत्मना॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ प्रप्रदातारंतारिष ऊर्जंनोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिःपृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः॥ व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳशान्तिःशान्तिरेवशान्तिःसामाशान्तिरेधि॥ यतोयतः समीहसेततोनोऽ अभयङ्कुरु॥ शन्नःकुरुप्प्रजाभ्योभयन्नःप्पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

अभिषेक कर्म करने के बाद यजमान संकल्प करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दे।

यजमान दक्षिणासंकल्प करे—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः---प्रवरः---नामाऽहं कृतस्य अभिषेककर्मणः समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं अभिषेककर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थित दक्षिणां विभज्यदातुमहमुत्सृजे।**

अभिषेककर्म परिपूर्णम्

●

षोडशमातृकास्थापन-पूजनम्

कुलदेवता	लोकमातृ	देवसेना	मेधा
तुष्टि	मातृ	जया	शची
पुष्टि	स्वाहा	विजया	पद्मा
धृति	स्वधा	सावित्री	गौरी गणेश

किसी पाटे पर कपड़ा बिछाकर उस पर चित्रानुसार सोलह समान खानों को बना करके प्रथम खाने का दो भाग करके उसमें गेहूं भर करके उस पर सुपाड़ी रख करके उस सुपाड़ी के ऊपर गौरी-गणेश के सहित मातृका देवियों का आवाहन पूजन करे।

गणेशावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ गु॒णाना॑न्त्वागु॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा॑ निधि॒प॑तिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहम॑जानिगर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्ब्भ॒धम् ॥

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्॥

मातृवर्ग के समीप रहनेवाले सर्वदा सभी विघ्नों का हरण करनेवाले तीनों लोकों में जिसकी सदैव वन्दना होती है, ऐसे गणेशजी की स्थापना हम करते है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ आयङ्गौःपृश्निर॑क्रमी॒दस॑दन्मा॒तरं॑पु॒रः॥ पि॒तरं॑चप्प्र॒यन्त्स्व॑ः॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

हिमाद्रि (हिमालय) की तनया (पुत्री), वर प्रदान करनेवाली, शङ्कर की प्रिया (शङ्कर की पत्नी), लम्बोदर गणेश की माता भगवती गौरी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

पद्मामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ हि॑रण्ण्यरूपा॒ऽउ॒षसो॑व्विरो॒कऽउ॒भावि॑न्द्रा॒ऽदि॑थ॒ꣳसूर्य्य॑श्च॥ आरो॑हतंव्वरुणमि॒त्रगर्त॒न्तत॑श्श्चक्षाथा॒मदि॑तिं॒दिति॑ंचमि॒त्रो॒ऽसि॒व्वरु॑णोऽसि॥

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्॥

पद्म (कमल) की आभावाली, पद्मवदना (कमल के जैसे शरीरवाली), पद्म नाभि के ऊपर निवास करनेवाली, जगत् को प्रिय लगनेवाली, पद्म में वास करनेवाली पद्मादेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

शचीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ नि॒वेश॑नꣳस॒ङ्गम॑नो॒व्वसू॑नां॒व्विश्श्वा॑रू॒पाभिच॑ष्ट्टे॒शची॑भिः॥ दे॒वऽई॑वसवि॒तास॒त्त्यधर्म्मेन्द्रो॒नत॑स्त्थौसम॒रेप॑थी॒नाम्॥

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचिकुण्डलधारिणीम्।
रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम्॥

दिव्य रूपवाली, विशालाक्षी, पवित्र कुण्डल धारण करनेवाली, लालमुक्तामणि के अलङ्कारों से अलंकृत शचीदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि।

मेधामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ मे॒धांमे॒व्वरु॑णोददातुमे॒धाम॒ग्निः॒प्प्र॒जाप॑तिः॥ मे॒धामिन्द्र॑श्श्चव्वा॒युश्श्चमे॒धांधा॒ता द॑दातुमे॒स्वाहा॑॥

विश्वेऽस्मिन्भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।
बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्॥

इस विश्व में सर्वाधिक वरप्रदान करनेवाली, जरा और निर्जरा से सेवित, बुद्धि का विस्तार करनेवाली, सौम्य (सरल) मेधादेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

सावित्रीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ स॒वि॒तात्त्वा॑स॒वानाꣳसुवताम॒ग्निर्ग्गृ॒हप॑तिना॒ꣳसोमो॒व्वन॒स्प्पती॑नाम्॥ बृह॒स्प्पति॒र्व्वा॒चऽइन्द्रो॒ज्ज्यैष्ठ्या॑यरु॒द्द्रः॒प॒शुब्भ्यो॑मि॒त्रः॒स॒त्त्योव्वरु॑णो॒धर्म्म॑पतीनाम्॥

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्॥

जगत् में सृष्टि करनेवाली धात्रीदेवी जो प्रणव में मातृकारूपिणी हैं, वेद के भीतर रहने वाली यज्ञमयी सावित्रीदेवी की मैं स्थापना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

विजयामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ विज्ज्य॒न्धनु॑÷कप॒र्दिनो॒विश॑ल्यो॒बाण॑वाँ२॥उ॒त॥ अनै॑शन्नस्य॒याऽइष॑वऽ आ॒भुर॑स्यनिषङ्ग॒धिः॥

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम्।
सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम्॥

सभी अस्त्रों को धारण करनेवाली, सभी आभूषणों से सुसज्जित, सभी देवताओं से सदैव वन्दित, विजयादेवी की मैं स्थापना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि।

जयामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ व॒ह्वी॒नांपि॒ताब॒हुर॑स्यपु॒त्रश्चि॒श्चाकृणोति॒सम॑नाव॒गत्य॑॥ इ॒षु॒धिःसङ्काः पृत॑नाश्च॒सर्वाः॑पृ॒ष्ठेनिन॑द्धोजयति॒प्प्रसू॑तः॥

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।
त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम्॥

देवताओं के शत्रुओं का मन्थन करनेवाली, देवी जो देवताओं को अभय प्रदान करती हैं जो तीनों लोकों में वन्दिता हैं, ऐसी शुभ्र जयादेवी की मैं स्थापना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि।

देवसेनामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ इन्द्र॑ऽआसान्ने॒ताबृह॒स्पति॒र्द्दक्षि॑णाय॒ज्ञःपु॒रए॑तु॒सोम॑÷॥ दे॒व॒सेना॑नामभिभञ्जजी॒नांजय॑न्तीनांम॒रुतो॑य॒न्त्वग्र॑म्॥

मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम्।
आवाहयेत्देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्॥

मयूर जिनका वाहन है, जो खड्ग-शक्ति तथा धनुष को धारण करती हैं, तारकासुर का मर्दन करनेवाली उन देवसेनादेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

स्वधामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ पि॒तृब्भ्य॑÷स्वधा॒यिब्भ्य॑÷स्व॒धानम॑÷पिताम॒हेब्भ्य॑÷स्वधा॒यिब्भ्य॑÷स्व॒धानमः प्प्रति॑तामहेब्भ्यःस्वधा॒यिब्भ्य॑÷स्व॒धानम॑÷॥ अक्ष॑न्न्पि॒तरोऽमी॑मदन्तपि॒तरोऽती॑तृपन्त पि॒तरः॒पित॑रःशुन्ध॑द्ध्वम्॥

अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।
पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्॥

सभी देवताओं में सर्वप्रथम उत्पन्न होनेवाली, कव्य को धारण करनेवाली तथा पितरों को तृप्ति प्रदान करनेवाली, स्वधादेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

स्वाहामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ स्वाहा॑प्प्रा॒णेभ्य॒ःसाधि॑पतिकेभ्यः॥ पृ॒थि॒व्यैस्वाहा॒ग्ग्नये॒स्वाहा॒न्तरि॒क्षाय॒ स्वाहा॑व्वा॒यवे॒स्वाहा॑॥ दि॒वेस्वाहा॒सूर्य्या॑य॒स्वाहा॑॥

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्॥

हवि को ग्रहण करके देवताओं को प्रदान करनेवाली, दिव्यरूप धारण करनेवाली, वर प्रदान करनेवाली, स्वाहादेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

मातृः-आवाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ आपो॑ऽअ॒स्म्मान्मा॒तर॑÷शुन्धयन्तुघृ॒तेन॑नोघृत॒प्प्व॒÷पुनन्तु॥ विश्श्व॒ᳪ॒हिरि॒प्प्रं प्प्र॒वह॑न्तिदे॒विरु॒दिदा॑भ्य॒ःशुचि॒रापू॒तऽए॑मि॥ दी॒क्षा॒त॒पसो॑स्त॒नूर॑सि॒तांत्वा॑शि॒वाᳪ॒शग्ग्मां परि॑दधेभ॒द्द्रंव्वर्ण॑पु॒ष्य॑न्॥

आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः।
सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः॥

सर्वकल्याणरूपी, दिव्यभूषणों से विभूषित, वर प्रदान करनेवाली, सम्पूर्ण लोक में पूजित माताओं (मातृशक्तियों) का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि स्थापयामि।

लोकमातृः आवाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ र॒यिश्श्च॑मे॒राय॑श्श्चमेपु॒ष्टंच॑मे॒पुष्टि॑श्च्चमेव्वि॒भुच॑मेप्र॒भुच॑मेपू॒र्ण्णंच॑मेपू॒र्ण्णत॑रंच मे॒कुय॑वञ्चमेऽक्षि॑तञ्चमेऽन्नं॑च्चमेऽक्षुच्च॑मेय॒ज्ञेन॑कल्प्पन्ताम्॥

आवाहयेल्लोकमातृः जयन्तिप्रमुखाः शुभा।
नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः॥

विभिन्न अभीष्ट प्रदान करनेवाली, लोक में सभी का हित करनेवाली, जयन्त्यादि प्रमुख शुभ माताओ का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।

धृतिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्प्रजासु॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मंक्क्रियतेतन्न्मेमनं÷शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्॥

सभी को हर्ष प्रदान करनेवाली, देवी जो भक्तों को अभय प्रदान करनेवाली है, सदैव प्रसन्नता से प्रफुल्लित कमल पर निवास करनेवाली, धृतिदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

पुष्टिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ अङ्गान्न्यात्मन्भिषजातदश्श्विनात्मानमङ्गैःसमधात्त्सरस्वती॥ इन्द्रस्यरूपꣳ शतमानमायुश्च्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतंदधानाः॥

पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः।
शाकैः फलैर्जलैर्रत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्॥

अपने शरीर से उत्पन्न शाक, फल, जल तथा रत्नादि से समस्त जगत् का पोषण करनेवाली पुष्टिदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

तुष्टिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः॥ सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्श्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्ग्निः॥

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम्।
प्रसादसुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्॥

देवताओं की आराधिता सदैव सन्तोष प्रदान करनेवाली, प्रसन्न मुखवाली तुष्टिदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

कुलदेवतामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्श्रोत्त्रायस्वाहाव्वाचे स्वाहामनसेस्वाहा॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

पत्तन, नगर, गाँव, पर्वत तथा घरमें नाना जाति, कुलोंमें व्याप्त दुर्गादेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथों से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु।। व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३ँम्प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

इसी से प्राण प्रतिष्ठित होते है, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवतान्तावहितमातृभ्यो नमः आवाहिता प्रतिष्ठिता वरदा भव।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

हे जातवेदा अग्ने! आप सुवर्ण के समान पीतवर्णवाली, किञ्चित् हरितवर्णवाली, किञ्चित् हरिणी रूप धारण करनेवाली, सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करनेवाली, सुन्दर वर्णवाले चाँदी के समान श्वेतपुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, चन्द्रमा के समान सबको प्रसन्न करनेवाली, हिरण्यमयी रूपवाली एवं हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी का मेरे लिए आवाहन करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत् विख्यात एवं अनपगामिनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ, मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करने के लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ हैं अथवा जिनके आगे घोड़े जुटे हुए हैं, ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ, दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी का अपने घर में सर्वदा निवास करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

जिनका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्दहास्ययुक्ता हैं, जो चारों ओर सुवर्ण से वेष्टित हैं एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं, अर्थात् जो लक्ष्मीजी दया से आर्द्र होते हुए तेज से देदीप्यमान हैं, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमल के सदृश गृह में निवास करने वाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं से सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहने वाली, सबकी रक्षा करनेवाली, भक्तों को आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता रहूँ, हे लक्ष्मी! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अतः मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गादि सभी तीर्थों से प्रार्थनापूर्वक मैं जल लाया हूँ, इस जल का स्पर्श सुख प्रदान करनेवाला है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूर के समान सुगन्धित, दूध के समान धवल, स्वाद में शीतल जल आचमन के लिए प्रस्तुत है, इस आचमनीय जल को हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पय:पात्र (दूध का बर्तन) लेकर समर्पित करे।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गाय से उत्पन्न सभी को जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए अति पवित्र दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से उत्पन्न मधुर तथा अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही हे देव! हम आपके स्नान के लिए लाये हैं, इस दही को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मक्खन से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी आपको स्नान के लिए प्रदान करता हूँ, इस घृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे।

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न सुन्दर स्वादवाला मधुर शहद, तेज और पुष्टि को प्रदान करने वाला, दिव्य शहद स्नान के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे।

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुरस से उत्पन्न शर्करा शुभ पुष्टि प्रदान करनेवाली, सभी प्रकार के मल का अपहरण करनेवाली है, दिव्य स्नान के लिए इस शर्करा को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध, दही, घी, मधु और शर्करा से युक्त पञ्चामृत दिव्य स्नान के लिए आपको समर्पित है, इस पञ्चामृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों के दिव्य जल आपके स्नान के लिए समर्पित हैं, इस जल को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथविल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली देवी! आपके तेज से वनस्पति विशेष बिना पुष्प के फल देनेवाला एक वृक्ष उत्पन्न हुआ (आपके हाथ से विल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ) उस विल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर-बाहर की दरिद्रता को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

हे लक्ष्मी! देवसखा अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला के सदृश यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् कुबेर का धन और यश दोनों ही मुझे मिले, मै इस सुन्दर राष्ट्र में उत्पन्न हुआ हूँ अतः हे कुबेरदेव! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥

भूख तथा प्यासरूपी मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मीजी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ, हे लक्ष्मी! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं, धन-धान्यादि से सदा परिपूर्ण, गौ-अश्वादि पशुओं की समृद्धि को देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

हे लक्ष्मी! तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, ब्रीहि इत्यादि अन्नों के रूप अर्थात् भक्ष्य,

भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोज्यादि पदार्थों इन समस्त पदार्थों को प्राप्त करूँ, सम्पत्ति-यश मुझमें आश्रय लेकर रहे अर्थात् मै धनवान् कीर्तिमान् बनूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान्समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई है। हे कर्दम! आप मुझमें अच्छी तरह वास करे। इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे।

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणमातृक!॥

हरे-हरे दूर्वाङ्कुर जो अमृतत्व तथा मङ्गल प्रदान करनेवाले हैं, आपके पूजा के लिए मैं लाया हूँ, आप प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

जिस प्रकार कर्दम ऋषि की सन्तति (ख्याति) से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से चौदह रत्नों के बाद लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ है। उसी प्रकार जल देवता स्निग्ध एवं मनोहर पदार्थो को उत्पन्न करें (पदार्थो की सुन्दरता लक्ष्मी ही है) लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत चार पुत्र हैं, जिसमें हे चिक्लीत! तुम मेरे गृह मे निवास करो, केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयाभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे।

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

अरुणकालिक प्रकाश के समान आभावाला सिन्दूर तथा जवाकुसुम के सदृश वर्ण (रंग) वाले सिन्दूर से हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हो तथा पूजित हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित करने के बाद धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित करने के बाद सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे। दीप देवता को समर्पित किया जाता है, न कि चारो ओर घुमाया जाता है।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

दशाङ्ग, गुग्गुल, चन्दन तथा अगुरु जैसे गन्धों से युक्त धूप भक्तिपूर्वक हम समर्पित करते हैं, हे महादेवि! इस धूप को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के झुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्रशरीरवाली, पुष्टि को देने वाली, पुष्टिस्वरूपा, रक्त और पीत वर्णवाली, कमल की माला धारणकर जगत् को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

चारों प्रकार का सुन्दर सुस्वादु षड्रसों से युक्त नैवेद्य हे देवी! भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ, ग्रहण करके अपने में हमारी भक्ति को अचल करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे।

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यञ्च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य चन्दन तथा रजनी पुष्प से युक्त करोद्वर्तन हम प्रदान करते हैं, गणेश सहित मातृकाएँ प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे।

ॐ आर्द्रां यः करिर्णीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में भक्तों पर सर्वदा दयार्द्रचित्त, समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली, यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण स्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करनेवाली सूर्यज्वा अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है, उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालन-पोषण करती है, अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिसहित ताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फल लेकर समर्पित करे।

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदली पनसाऽऽम्रं कपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! द्राक्षा (किसमिस), खर्जूर (खजूर), कदली (केला), पनस (कटहल), आम्र (आम), कपित्थ (कैथ), नारिकेल (नारियल), इक्षु (गन्ना), जम्बूफल (जामुन), फलों को आपके प्रसन्नता के लिए लाया हूँ, प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे।

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्॥

पूजा के पूर्ण फल की समृद्धि के लिए स्वर्णमयी मुद्रा आपके सामने समर्पित भाव से स्थापित है, जिसे स्वीकार करके प्रसन्न मन होकर हमारे मनोरथ को पूर्ण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केले के वृक्ष के) गर्भ से उत्पन्न कर्पूर प्रदीपित करके आपकी आरती हम करते हैं, जिसे देखकर आप प्रसन्न हों तथा हमारी समस्त कामनापूर्ति के लिए वर प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे यहाँ उस जगत्विख्यात् लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कहीं न जानेवाली हों, उन लक्ष्मी को प्राप्त कराओ। जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े, और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ, अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

जो मनुष्य शुचिता को प्राप्तकर अर्थात् शुद्ध होकर लक्ष्मी की कामना से श्रद्धापूर्वक पवित्र मन और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम करे और उसके साथ लक्ष्मीसूक्त तथा श्रीसूक्त के पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन निरन्तर जप करता रहे।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—

मेधाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा,
दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा॥१॥

हे देवि! जिनसे समस्त शास्त्रों के सार का ज्ञान होता है, वह मेधाशक्ति आप ही हैं, दुर्गम भवसागर से पार उतारने वाली नौकारूपी दुर्गादेवी भी आप ही हैं, कैटभ के शत्रु भगवान् विष्णु के हृदय की एकमात्र स्वामिनी लक्ष्मी और चन्द्रमा को सिर पर धारण करनेवाले भगवान् शङ्कर की प्रिया गौरी तुम्हीं हो॥१॥

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य॥२॥

हे देवि! आप हमपर प्रसन्न हों, परमात्मस्वरूपा आपके प्रसन्न होने पर जगत् का अभ्युदय होता है और क्रोध में भर जाने पर आप तत्काल ही कितने कुलों का नाश कर डालती हैं, यह बात अभी अनुभव में आयी है; क्योंकि महिषासुर की यह विशाल सेना क्षणभर में आपके कोप से नष्ट हो गयी है॥२॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥१॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश॥२॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपः॥३॥

गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, मातृकाएँ, लोकमातृकाएँ, धृति, पुष्टि, तुष्टि तथा अपने कुल के कुलदेवी गणेश के सहित पूजित होकर हमारे घर हमें आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य सभी हे मातायें! प्रदान करे तथा हमारे समस्त पूजन-अनुष्ठान को गणेश के सहित मातृकायें निर्विघ्न करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः स्तुतिप्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे।

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण यथाज्ञानेन यथापूजनेन गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवतान्तावहित षोडशमातरः प्रीयन्तां न मम।

षोडशमातृकापूजनं परिपूर्णम्

●

सप्तघृतमातृकास्थापन-पूजनम्

किसी पाटे पर कपड़ा बिछा करके उस पर अधोलिखित चक्र सिन्दूर से सप्तविन्द्वात्मक (सबसे पहले नीचे सातविन्दु बनाकर फिर उसके ऊपर छः विन्दु फिर उसके ऊपर पाँच विन्दु उसके उपर चार विन्दु उसके उपर तीन विन्दु उसके ऊपर दो विन्दु फिर उसके ऊपर एक विन्दु चक्र) बनायें। नीचे के सात विन्दुओं पर घृत धारा करके गुड़ से एकीकरण करके उनपर आवाहन-स्थापन करके पूजन करे।

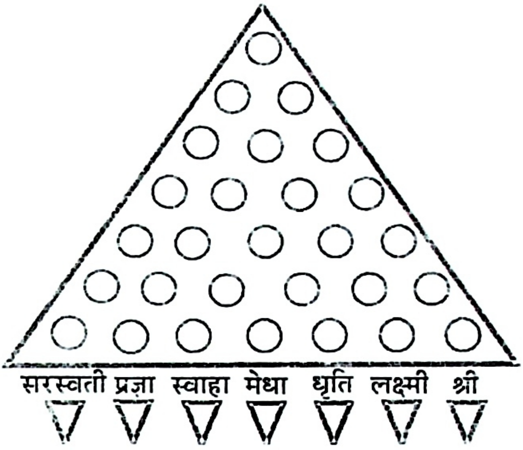

घृतधारा—घी से अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुए सप्तमातृका विन्दुओं पर घृत धारा दें पश्चात् गुड़ से एकीकरण करके प्रत्येक धाराओं पर तत्तद् देवताओं का आवाहन करे।

ॐ व्वसोः पवित्रमसिशतधारंव्वसोः पवित्रमसिसहस्रधारम्॥ देवस्त्वासवितापुनातु व्वसोः पवित्रेणशतधरिणसुप्वा॥ ॐ कामधुक्षः॥

श्र्यामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ मनसःकाममाकूतिंव्वाचःसत्त्यमशीय॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्यरसोयशःश्रीः श्रयतांमयिस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।

लक्ष्मीमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ श्रीश्च्चतेलक्ष्मीश्च्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्श्विनौव्यात्तम्॥ इष्ष्णंन्निषाणामुंमऽइषाणसर्व्वलोकंमऽइषाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

धृतिमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ भद्द्रङ्कर्ण्णेभिः श्श्रृणुयामदेवाभद्द्रम्पश्श्येमाक्षभिर्य्यजत्राः॥ स्स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

मेधामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ मेधांमेव्वरुणोददातुमेधामग्ग्निः प्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्द्रश्च्चव्वायुश्च्चमेधां धातादददातुमेस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

स्वाहामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्श्रोत्रायस्वाहा व्वाचेस्वाहामनसेस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

प्रज्ञामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ आयङ्गौःपृश्श्निरक्क्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरंचप्रयन्त्स्वः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

सरस्वतीमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ पावकानःसरस्वतीव्वाजैभिर्व्वाजिनीवतियज्ञंव्वष्टुधियावसुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथों सें स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञःसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी से प्राण प्रतिष्ठित होते है, इसी से प्राणों का क्षरण होता है, इसी से अर्चना के लिए देवत्व होता है, मेरे लिए इससे इतर कुछ नही है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आवाहिताः प्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप सुवर्ण के समान पीतवर्णवाली, किञ्चित् हरितवर्णवाली, किञ्चित् हरिणी रूप धारण करनेवाली, सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करनेवाली, सुन्दर वर्णवाले चाँदी के समान श्वेत पुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, चन्द्रमा के समान सबको प्रसन्न करनेवाली, चञ्चलता हिरण्यमयी रूपवाली एवं हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी को मेरे लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत्-विख्यात एवं अनपगामिनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ। मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करने के लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ हैं अथवा जिनके आगे घोड़े जुटे हुए हैं, ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ, दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी का अपने घर में सर्वदा निवास करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

जिनका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्द हास्ययुक्ता हैं, जो चारो ओर सुवर्ण से वेष्टित है एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं, अर्थात् जो लक्ष्मीजी दया से आर्द्र होते हुए तेज से देदीप्यमान हैं, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमल के सदृश गृह में निवास करनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं से सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहनेवाली, सबकी रक्षा करनेवाली, भक्तों को आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता

रहूँ। हे लक्ष्मी! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अत: मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गादि सभी तीर्थों से प्रार्थनापूर्वक मैं जल लाया हूँ, यह जल का स्पर्श सुख प्रदान करनेवाला है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूर के समान सुगन्धित, दूध के समान धवल, स्वाद में शीतल जल आचमन के लिए प्रस्तुत है इस आचमनीय जल को हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पय:पात्र लेकर समर्पित करे।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गाय से उत्पन्न सभी को जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए अति पवित्र दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से उत्पन्न मधुर तथा अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही हे देव! हम आपके स्नान के लिए लाये हैं, इस दही को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मक्खन से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी आपको स्नान के लिए प्रदान करता हूँ, इस घृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे।

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न सुन्दर स्वादवाला मधुर शहद, तेज और पुष्टि को प्रदान करने वाला, दिव्य शहद स्नान के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे।

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुरस से उत्पन्न शर्करा शुभ पुष्टि प्रदान करनेवाली, सभी प्रकार के मल का अपहरण करनेवाली है, दिव्य स्नान के लिए इस शर्करा को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध, दही, घी, मधु और शर्करा से युक्त पञ्चामृत दिव्य स्नान के लिए आपको समर्पित है, इस पञ्चामृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों के दिव्य जल आपके स्नान के लिए समर्पित है, इस जल को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथविल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली देवी! आपके तेज से वनस्पति विशेष बिना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष उत्पन्न हुआ (आपके हाथ से विल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ) उस विल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर-बाहर की दरिद्रता को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

हे लक्ष्मी! देवसखा अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला के सदृश यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् कुबेर का धन और यश दोनों ही मुझे मिले, मैं इस सुन्दर राष्ट्र में उत्पन्न हुआ हूँ अतः हे कुबेरदेव! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥

भूख तथा प्यासरूपी मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मीजी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मै नाश करता हूँ, हे लक्ष्मी! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं,

धन-धान्यादि से सदा परिपूर्ण, गौ-अश्वादि पशुओं की समृद्धि को देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

हे लक्ष्मी! तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप में अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, ब्रीहि इत्यादि अन्नों के रूप में अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोजयादि पदार्थो इन समस्त पदार्थो को प्राप्त करूँ। सम्पत्ति-यश मुझमें आश्रय लेकर रहे,अर्थात् मै धनवान् कीर्तिमान् बनूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई हैं। हे कर्दम! आप मुझमें अच्छी तरह वास करें। इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे।

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥

हरे-हरे दूर्वाङ्कुर जो अमृतत्व तथा मङ्गल प्रदान करनेवाले हैं, आपके पूजा के लिए मैं लाया हूँ, आप प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानःपरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

जिस प्रकार कर्दम ऋषि की सन्तति (ख्याति) से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी

प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से चौदह रत्नों के बाद लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ है। उसी प्रकार जल देवता स्निग्ध एवं मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करे (पदार्थों की सुन्दरता लक्ष्मी ही है) लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत चार पुत्र हैं। जिसमें हे चिक्लीत! तुम मेरे गृह मे निवास करो, केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयाभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे।

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

अरुणकालिक प्रकाश के समान आभावाला सिन्दूर तथा जवाकुसुम के सदृश वर्ण (रंग) वाले सिन्दूर से हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हो तथा पूजित हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित करने के बाद धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित करने के बाद सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे। दीप देवता को समर्पित किया जाता है, न कि चारो ओर घुमाया जाता है।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

दशाङ्ग, गुग्गुल, चन्दन तथा अगुरु जैसे गन्धों से युक्त धूप भक्तिपूर्वक हम समर्पित करते है, हे महादेवि! इस धूप को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के झुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्रशरीरवाली, पुष्टि को देनेवाली, पुष्टिस्वरूपा, रक्त और पीत वर्णवाली, कमल की माला धारणकर जगत् को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचला कुरु॥

चारो प्रकार का सुन्दर सुस्वादु षड्रसों से युक्त नैवेद्य हे देवि! भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ, ग्रहण करके अपने में हमारी भक्ति को अचल करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे।

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य चन्दन तथा रजनी पुष्प से युक्त करोद्वर्तन हम प्रदान करते हैं, गणेश सहित मातृकाएँ प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से ताम्बूल लेकर समर्पित करे।

ॐ आर्द्रां यः करिर्णीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में भक्तों पर सर्वदा दयार्द्रचित्त, समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली, यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण स्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करनेवाली सूर्यज्वा अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालन पोषण करती है, अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिसहित ताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फल लेकर समर्पित करे।

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाऽऽम्रं कपित्थकम् ।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! द्राक्षा (किसमिस), खर्जूर (खजूर), कदली (केला), पनस (कटहल), आम्र (आम), कपित्थ (कैथ), नारिकेल (नारियल), इक्षु (गन्ना), जम्बूफल (जामुन) आदि फलों को आपके प्रसन्नता के लिए लाया हूँ, प्रेम पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे।

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्॥

हे ईश्वरि! पूजा के पूर्ण फल की समृद्धि के लिए स्वर्णमयी मुद्रा आपके सामने समर्पित भाव से स्थापित है, जिसे स्वीकार करके जिससे प्रसन्न मन होकर हमारे मनोरथ को पूर्ण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केले के वृक्ष के) गर्भ से उत्पन्न कर्पूर प्रदीपित करके आपकी आरती हम करते हैं, जिसे देखकर आप प्रसन्न हों तथा हमारी समस्त कामनापूर्ति के लिए वर प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों सें पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे यहाँ उस जगत्विख्यात् लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कहीं न जानेवाली हों, उन लक्ष्मी को प्राप्त कराओ। जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े, और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

जो मनुष्य शुचिता को प्राप्तकर अर्थात् शुद्ध होकर लक्ष्मी की कामना से श्रद्धापूर्वक पवित्र मन और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम करे और उसके साथ लक्ष्मीसूक्त तथा श्रीसूक्त के पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन निरन्तर जप करता रहे।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना समर्पण करे।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

जो पुण्यात्माओं के घरों में लक्ष्मीरूप से, पापियों के घर में दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों के हृदय में बुद्धिरूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से, तथा कुलीन मनुष्यों में लज्जारूप से निवास करती हैं, वे श्रीस्वरूपिणी महादेवी हमारा पालन करें।

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥१॥

श्री, लक्ष्मी, धृति, मेधा, स्वाहा, प्रज्ञा तथा सरस्वती सप्तघृत सभी मातृकायें मङ्गल कार्यों में सदैव पूजित होती हैं॥१॥

यदङ्गत्वेन भो देव्या पूजितो विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥२॥

हे देवियों! अङ्ग के रूप में विधिपूर्वक पूजित होकर हमारे समस्त कार्यों को निर्विघ्न रूप से पूर्ण करानेवाली हो जाओ॥२॥

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण यथाज्ञानेन पूजनेन श्र्यादिसरस्वन्त्यन्तसप्तघृतमातरः प्रीयन्तां न मम।

सप्त घृतमातृकाओं के पूजन के बाद सभी ब्राह्मण मिलकर आयुष्यमन्त्र का पाठ करें। यजमान ध्यानपूर्वक सपरिवार सुने।

सप्तघृतमातृकापूजनं परिपूर्णम्

◆

आयुष्यमन्त्रपाठः

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम्॥१॥

जिससे लम्बी आयु प्राप्त करके देवता सप्तकल्प तक जीवित रहते हैं, उस आयुष्यकारक पुण्य को हमें प्रदान करें, जिससे हम सौ वर्ष की आयु प्राप्त करें॥१॥

दीर्घा नागा नगानद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्॥२॥

दीर्घ आयुष्य वाले समुद्रादि-पर्वतादि दिशायें अनन्त आयु प्राप्त करके जीवित रहते हैं, उन आयुष्य को प्राप्त करके सौ वर्ष पर्यन्त जीवन प्राप्त करे ॥२॥

सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्॥३॥

जिससे पञ्चभूत सत्य और विनाशरहित होते हैं, वैसे ही नष्ट न होनेवाली आयु प्राप्त करके हम सौ वर्ष तक जीवित रहें॥३॥

ॐ आयुष्यंव्वर्च्चस्यꣳरायस्प्पोषमौद्भिदम्॥ इदꣳहिरण्ण्यंव्वर्च्चस्वज्जैत्राया विशतादुमाम्॥ ॐ नतद्रक्षाꣳसिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजः प्प्रथमजꣳह्येतत्॥ योबिभर्तिदाक्षायणꣳहिरण्यꣳसदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुꣳसमनुष्ष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः॥ ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्ण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः॥ तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्य्यथासम्॥

आयुष्यमन्त्र का पाठ करते हुए यजमान को रक्षासूत्र बाँधे। आयुष्यमन्त्र के पाठ के बाद आचार्य यजमान को रक्षासूत्र बाँधे। आयुष्यमन्त्र का पाठ श्रवण करने के बाद यजमान दक्षिणा-संकल्प करके ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे।

दक्षिणासंकल्पः—**ॐ तत्सदद्यपूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य आयुष्यमन्त्रपाठकर्मणः समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं आयुष्यमन्त्रपाठकर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थितदक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।**

आयुष्यमन्त्र का पाठ करने के बाद किसी पत्तल या पाटे पर अधोलिखित आकृति के अनुसार रेखाओं को बनाकर उसपर कुश रखकर पूजन करे।

आयुष्यमन्त्रपाठः परिपूर्णम्

●

साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दिश्राद्धम्

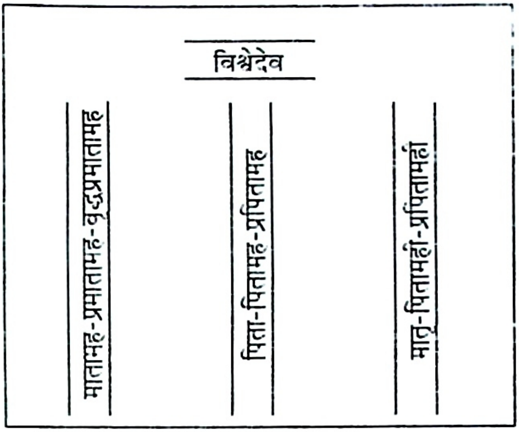

आयुष्यमन्त्र पाठ के बाद किसी पत्तल या पाटे पर आकृति के अनुसार रेखाओं को बना कर उस पर कुशनिर्मित मोटक रखकर पूजन करे, ऊर्ध्व की रेखाओं पर विश्वेदेव का तथा नीचे की दक्षिण की दोनो रेखाओं पर मातृपितामहीप्रपितामही का तथा मध्य दोनो रेखाओं पर पितृपितामहप्रपितामह एवं वाम दोनो रेखाओं पर मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामह का आवाहन पूजन करे, यह श्राद्ध सव्य हो कर ही करेगें। सर्वप्रथम विश्वेदेव के साथ पितरों का ध्यान करे, जिनके माता-पिता जीवित हों वे माता-पिता को छोड़कर ऊपर की पीढ़ी पितामहादि के लिए श्राद्ध करेंगे, विद्वान् कर्मकाण्डी तदनुसार ऊह करके श्राद्ध करायें।

विश्वेदेवावाहनम्—

ॐ व्विश्श्वेदेवासऽआगतश्रृणुतामऽइमᳬहवम्॥ एदम्बर्हिन्निषीदत॥ उपयामगृहीतोसिव्विश्श्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यऽएषतेयोनिर्व्विश्श्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यः॥ ॐ व्विश्श्वेदेवाऽअᳬशुषुन्न्युप्तोव्विष्ण्णुराप्प्रीतपाऽआप्प्याय्यमानोयमःसूयमानोव्विष्ण्णुः सम्भ्रियमाणोव्वायुःपूयमानःशुक्रःपूतःशुक्रःक्षीरश्श्रीर्म्मन्थीसक्तुश्श्रीर्व्विश्श्वेदेवाः॥ ॐ व्विश्श्वेदेवाश्श्चमसेषून्नीतोसुर्होमायोद्यतोरुद्रोहूयमानोव्वातोब्भ्यावृत्तोनृचक्षाःप्प्रतिक्ख्यातोभक्षोभक्ष्यमाणःपितरोनाराशᳬसाःसन्नःसिन्धुः॥ ॐ व्विश्श्वेदेवाःश्रृणुतेमᳬहवम्मेयेऽअन्तरिक्क्षेयऽउपद्यविष्ठ॥ येऽअग्ग्निजिह्वाऽउतवायजत्राऽआसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम्॥

पितृणां ध्यानम्—

ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तःसमिधीमहि॥ उशन्नुशतऽआवहपितृन्हविषेऽअत्तवे॥ ॐ आयन्तुनःपितरःसोम्म्यासोऽग्निष्वात्ताःपथिभिर्द्देवयानैः॥ अस्मिन्न्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्ब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान्॥

मातृपितामहिप्रपितामह्यावाहनम्—(माता-दादी और वृद्धदादी का ध्यान करे)

ॐ अत्रपितरोमादयद्ध्वँय्यथाभागमावृषायद्ध्वम्॥ अमीमदन्तपितरोयथाभागमावृषायिषत॥ ॐ नमोवःपितरोरसायनमोवःपितरःशोषायनमोवःपितरोजीवायनमोवःपितरःस्वधायैनमोवःपितरोघोरायनमोवःपितरोमन्न्यवेनमोवःपितरःपितरोनमोवोगृहान्नःपितरोदत्तसतोवःपितरोदेष्मैतद्वःपितरोव्वासः॥ आधत्तपितरोगर्ब्भङ्कुमारम्पुष्करस्रजम्॥ यथेहपुरुषोसत्॥ ऊर्ज्जंव्वहन्तीरमृतंघृतम्पयःकीलालम्परिस्रुतम्॥ स्वधास्त्थतर्प्पयतमेपितृन्॥

पितृपितामहप्रपितामहानामावाहनम्—(पिता-दादा और परदादा का ध्यान करे)

ॐ उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मद्ध्यमाःपितरःसोम्म्यासः॥ असुँय्यऽईयुरव्वृकाऽऋतज्ञास्तेनोवन्तुपितरोहवेषु॥ ॐ अङ्गिरसोनःपितरोनवग्ग्वाऽअथर्व्वाणोभृगवःसोम्म्यासः॥ तेषांव्वयꣳसुमतौयज्ञियानामपिभद्रेसौमनसेस्याम॥ ॐ आयन्तुनःपितरःसोम्म्याऽसौग्ग्निष्वात्ताःपथिभिर्द्देवयानैः॥ अस्मिन्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्ब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान्॥ ॐ ऊर्ज्जंव्वहन्तीरमृतंघृतम्पयःकीलालम्परिस्रुतम्॥ स्वधास्त्थतर्प्पयतमे पितृन्॥ ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः पितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःप्प्रपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः॥ अक्षन्न्पितरोऽमीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्॥ ॐ येचेहपितरोयेचनेहयाँश्श्चव्विद्मयाँ२॥ऽउचनप्प्रविद्म॥ ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्क्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीन्नःसन्त्वोषधीः॥ ॐ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ ॐ मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानामावाहनम्—(नाना-परनाना और वृद्धपरनाना का ध्यान करे)

ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःप्प्रपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः॥ अक्षन्न्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्॥

पाद्यसमर्पणम्—सभी के कुशाओं पर जल प्रदान करे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मत् मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।**

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।**

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।**

आसनदानम्—कुश का बना मोटक रूप आसन प्रदान करे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।**

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।**

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।**

आसनदान के बाद षोडशोपचार पूजन करे।

षोडशोपचारपूजनम्—मौन होकर सामग्री चढ़ाकर गन्धादिदान का सङ्कल्प करे।

इदं स्नानीयं सुस्नानीयम्। स्नान के लिए जल प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं वस्त्रं सुवस्त्रम्। वस्त्र प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इमे यज्ञोपवीते सुयज्ञोपवीते। यज्ञोपवीत प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। यज्ञोपवीताङ्गाचमनीय जल प्रदान करे।

एष गन्धः सुगन्धः। चन्दन प्रदान करे।

इमे तिलाक्षताः सुतिलाक्षताः। अक्षत प्रदान करे।

इदं माल्यं सुमाल्यम्। पुष्पमाला प्रदानकर नैवेद्य स्थापित करे।

एष धूपः सुधूपः। धूप आघ्रापितकर प्रदान करे।

एष दीपः सुदीपः। दीप दिखाकर प्रदान करे।

हस्तप्रक्षालनम्। दोनों हाथ प्रक्षालित करे।

इदं नैवेद्यं सुनैवेद्यम्। नैवेद्य प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं ऋतुफलं सुफलम्। ऋतुफल प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम्। ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा सुदक्षिणा। दक्षिणा प्रदान करे।

इदं पुष्पाञ्जलि सुपुष्पाञ्जलि। पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

गन्धाद्यार्चनदानम्—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

भोजननिष्क्रयदानम्—सभी के आसनों पर भोजन के निमित्त मूल्य रखे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन् मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन् मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

सक्षीरयवमुदकदानम्—अर्घ्यपात्र में दूध-जौ-जल मिश्रित करके प्रदान करे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्।**

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।**

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।**

पुनः पूजनम्—चारों जगहों पर जल, पुष्प तथा अक्षत समर्पित करे।

शिवा आपः सन्तु। बोलकर जल प्रदान करे।

सौमनस्यमस्तु। बोलकर पुष्प प्रदान करे।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। बोलकर अक्षत प्रदान करे।

अघोरकरणम्—चारों जगहों पर पूर्वाग्र जलधारा प्रदान करे।

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

दक्षिणादानम्—सभी के लिए आसनों पर दक्षिणा प्रदान करे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।**

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः कृतस्यनान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।**

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामह प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः कृतस्यनान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।**

यजमान प्रार्थना करे—यजमान अपने पितरों से हाथ जोड़ कर प्रर्थना करे।

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु॥
अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्मकञ्चन॥

गोत्रन्नो वर्धतां (हमारा कुल बढ़े), दातारो नोऽभिवर्धन्तां (उस गोत्र में दाता और भी बढ़ें), वेदाः सन्ततिरेव च (हमारी सन्तति ज्ञानवान् हो), श्रद्धा च नो मा व्यगमद् (वे सभी श्रद्धावान् हों), बहुदेयं च नोऽस्तु (उनके पास दान देने के लिए बहुत धन-धान्यादि हो), अन्नं च नो बहु भवेत् (उनके पास अन्नादि बहुत हो), अतिथींश्च लभेमहि (उनके पास दान लेने के लिए बहुत अतिथि आयें), याचितारश्च नः सन्तु (दान लेने के लिए याचक भी आयें), मा च याचिष्मकञ्चन (हमारे कुल में कोई भी याचक न हो)। (हमारा कुल बढ़े, सभी दाता हों और वें अत्यधिक बढ़े, हमारे कुल की समस्त सन्तान ज्ञानवान् हो, सभी श्रद्धावान् तथा आदर करनेवाले हो, वे कभी किसी का निरादर न करे, उनके पास अतिथि तथा याचक आयें जिन्हें दान देकर गौरव प्राप्त करें, हमारे कुल में कोई याचक न हो।)

एताः सत्या आशिषः सन्तु॥

ब्राह्मण बोलें—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।**

ॐ उपास्म्मैगायतानरः पवमानायेन्न्दवे॥ अभिदेवाँ२॥इयक्षते॥ ॐ इडामग्ग्ने पुरुदꣳसꣳसनिंगोःशश्श्वत्तमꣳहवमानायसाध॥ स्यान्नःसूनुस्तनयोव्विजावाग्ग्नेसातें सुमतिर्भूत्वस्मे॥

यजमान बोले—**नान्दीश्राद्धं सुसम्पन्नम्।**

ब्राह्मण बोलें—**सुसम्पन्नम्।**

विसर्जनम्—मातृ-पितामही-प्रपितामही, पिता-पितामह-प्रपितामह तथा सपत्नीक मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह के सहित आसन के ऊपर यवाक्षत छिड़ककर विसर्जन करे।

ॐ व्वाजेवाजेऽवतव्वाजिनोनोधनेषुविप्प्राऽअमृताऽऋतज्ञाः॥ अस्यमद्ध्वःपिबत मादयद्ध्वंतृप्तायात्तपथिभिर्देवयानैः॥ ॐ आ मा व्वाजस्यप्प्रसवोजगम्म्यादेमेद्यावा पृथिवीव्विश्श्वरूपे॥ आ मा गन्तां पितरामातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्म्यात्॥

विश्वेदेव का विसर्जजन करे—**ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।**

यजमान बोले—**मयाऽऽचरिते साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणेशप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु परिपूर्णः।**

समर्पणम्—अनेन साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दिश्राद्धकृतेन पितृस्वरूपीमहाविष्णुः प्रीयतां न मम।

नान्दीश्राद्धं परिपूर्णम्

●

आचार्यादिवरणम्

वरण-सामग्री के पूजन के साथ सर्व प्रथम आचार्य का पूजन करके उनका वरण करे पश्चात् ब्रह्मादि का पूजन-वरण करे।

ॐ वरणसामग्रीभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

एकतन्त्रेण आचार्यादिब्राह्मणानां वरणानि—यजमान बोले।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकामुकगोत्रोत्पन्नान् अमुकामुकप्रवरान्वितां शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनां अमुकामुकशर्मणां ब्राह्मणानां अस्मिन् महाविद्यापुरश्चरणकर्मणि एभिःकरोपस्थितवरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन ब्रह्मत्वेन उपद्रष्टात्वेन गाणपत्यत्वेन सदस्यत्वेन ऋत्विक्त्वेन युष्मान् वृणे।**

आचार्यादि बोले—**वृता स्मः।**

एक साथ वरण न करना चाहे तो अलग-अलग वरण करे, शास्त्रानुसार अलग-अलग ही करना चाहिए।

आचार्यवरणम्—यजमान बोले।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् महाविद्यापुरश्चरणकर्मणि एभिःकरोपस्थितवरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे।

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत!॥

जिस तरह से स्वर्ग में इन्द्रादि देवताओं के आचार्य बृहस्पति हैं उसी तरह से आप मेरे इस यज्ञ के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हों।

आचार्य बोले—**वृतोऽस्मि।**

ब्रह्मावरणम्—यजमान बोले।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् महाविद्यापुरश्चरणकर्मणि एभिःकरोपस्थितवरणद्रव्यैः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे।

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम!॥

जैसे सभी लोक के पितामह चतुर्मुख ब्रह्मा हैं, उसी प्रकार मेरे इस यज्ञ के लिए हे द्विजोत्तम! आप ब्रह्मा पद प्रतिष्ठित हों।

ब्रह्मा बोले—**वृतोऽस्मि।**

उपद्रष्टावरणम्—यजमान बोले।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् महाविद्या-पुरश्चरणकर्मणि एभिःकरोपस्थितवरणद्रव्यैः उपद्रष्टात्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे।

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज!॥

हे भगवन् हे सभी धर्म को जाननेवाले द्विजोत्तम! सभी धर्म में परायण हमारे इस यज्ञ में उपद्रष्टा पद पर प्रतिष्ठित हों।

उपद्रष्टा बोले—**वृतोऽस्मि।**

गाणपत्यवरणम्—यजमान बोले।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् महाविद्या-पुरश्चरणकर्मणि एभिःकरोपस्थितवरणद्रव्यैः गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे।

वाञ्छितार्थफलावाप्त्यै पूजितोऽसि सुराऽसुरैः।
निर्विघ्नं क्रतुसंसिद्ध्यै त्वामऽहं गणपं वृणे॥

वाञ्छित कामना के निर्विघ्नतापूर्वकफलप्राप्ति के लिए देवता-दानव सर्वप्रथम पूजा करते हैं, हे द्विजश्रेष्ठ! हम आपका गणपपद पर वरण करते हैं।

गणप बोले—**वृतोऽस्मि।**

सदस्यवरणम्—यजमान बोले।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-**

वाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् महाविद्यापुरश्चरणकर्मणि एभिःकरोपस्थितवरणद्रव्यैः सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे।

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे।

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतांवर।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् सदस्यो भव सुव्रत!॥

हे भगवन् हे सभी धर्म को जाननेवाले द्विजोत्तम! सभी धर्म में परायण हमारे इस यज्ञ में सदस्य पद पर प्रतिष्ठित हों।

सदस्य बोले—**वृतोऽस्मि।** अधिक सदस्य ब्राह्मण हों तो **वृतास्मः** बोलें।

ऋत्विक्वरणम्—यजमान बोले।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् महाविद्यापुरश्चरणकर्मणि एभिःकरोपस्थितवरणद्रव्यैः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे।

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विक्त्वं मे मखे भव॥

हे भगवन् हे सभी धर्म को जाननेवाले द्विजोत्तम! सभी धर्म में परायण हमारे इस यज्ञ में ऋत्विक् पद पर प्रतिष्ठित हों।

ऋत्विक् बोलें—**वृतोऽस्मि।**

यजमान हाथ जोड़ करके सभी ब्राह्मणों से निवेदन करें।

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा॥१॥

क्रोध का परित्याग करके, नित्य शुद्धता का आचरण करते हुए, हमेशा ब्रह्मचारी रह कर, ग्रहादि के ध्यान में सदैव रत रहते हुए, सदैव ही प्रसन्न मन रहते हुए॥१॥

अदुष्टभक्षणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
मामऽपि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि॥२॥

सदैव अपशब्द का परित्याग करके, सुन्दर मधुर भाषण करते हुए, दूसरों की निन्दादि करने की आदत का परित्याग करके, कर्म में प्रवृत्त रहने के लिए जो हमारे लिए शास्त्रीय नियम हैं, वे सभी नियम आप सभी द्विजश्रेष्ठों के लिए भी हों।२॥

ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः॥३॥

पूर्व में इन्द्रादि देवताओं के यज्ञ में ऋत्विकादि थे, वैसे ही इस यज्ञ में भी आप सभी ऋत्विक् हों॥३॥

अस्मिन् कर्मणि ये विप्राः वृता गुरुमुखादयः।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्॥४॥

इस कर्म में प्रवृत्त जो विप्रादि मेरे द्वारा नियुक्त हैं, वे जो कुछ अपने गुरुओं के मुख से सीखे जाने हैं, उसी अनुसार अपने अपने कर्म में प्रवृत्त रहकर इस यज्ञ का सम्पादन करें॥४॥

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्॥५॥

इस यज्ञकर्म के लिए हमने आपका वरण किया है, आप सुप्रसन्न मन से इस यज्ञ के कर्म को विधिपूर्वक सम्पादित करें॥५॥

यजमान बोले—**यथा विहितं कुरुध्वम्।**

विप्र बोले—**यथा ज्ञानं करवामः।**

आचार्यादि वरण के बाद आचार्य कर्म दिगरक्षण प्रोक्षण करे।

आचार्यादिवरणं परिपूर्णम्

◆

दिग्रक्षणम्

आचार्य आचमन-प्रणायाम करके सङ्कल्पपूर्वक दिग्रक्षण करे।

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशे** (वाराणसी में कर्मकाण्ड करना हो तो **वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे**) **विक्रमशके बौद्धावतारे अमुक नाम संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं अस्मिन् महाविद्यापुरश्चरणे अमुकगोत्र अमुकनामधेय यजमानेन वृतोऽहम् आचार्य कर्म करिष्ये।** आचार्य पीले सरसों से रक्षोघ्न कर्म करें।

ॐ र॒क्षो॒हणंव्वलग॒हनंव्वैष्ण॒वीमि॒दम॒हंतंव्वल॒गमुत्किरामि॒यंमे॒निष्ट्यो॒यम॒मात्यो निच॒खाने॒दम॒हंतंव्वल॒गमुत्त्किरामि॒यंमैसमा॒नोयमसमानोनिच॒खाने॒दम॒हंतंव्वल॒गमुत्किरामि॒ यंमे॒सबन्धुर्य्य॒मसबन्धुर्निच॒खाने॒दम॒हंतंव्वल॒गमुत्किरामि॒यम्मैसजा॒तोयमसजातो निच॒खानोत्कृत्यांकिरामि॥१॥ आचार्य पूर्वदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ र॒क्षो॒हणोवोव्वलग॒हन॒ᳩप्प्रोक्षामिव्वैष्ण॒वान्न्रक्षो॒हणोवोव्वलग॒हनोऽवनयामि व्वैष्ण॒वान्न्रक्षो॒हणोवोव्वलग॒हनोऽवस्तृणामिव्वैष्ण॒वान्न्रक्षो॒हणौवांव्वलग॒हना॒ऽउपदधामि व्वैष्ण॒वीरक्षो॒हणौ वां व्वलग॒हनौ॒पर्य्यूहामिव्वैष्ण॒वीव्वैष्ण॒वमसिव्वैष्ण॒वास्त्थ॥२॥ आचार्य दक्षिणदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ रक्षसांभा॒गो॒ऽसि॒निरस्त॒ᳩरक्षऽइदम॒हᳩरक्षो॒ऽभितिष्ठामी॒दमहु॒ᳩरक्षोऽवबाधऽइद म॒ᳩरक्षोऽध॒मन्तमोनयामि॥ घृतेनद्यावापृथिवी॒प्प्रोर्णुवाथां॒व्वायो॒व्वेस्तो॒कानाम॒ग्नि राज्ज्यस्यव्वे॒तुस्वाहा॒स्वाहाकृतेऽऊ॒र्ध्वनभसम्मारु॒तङ्गच्छतम्॥३॥ आचार्य पश्चिमदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ र॒क्षो॒हाव्वि॒श्श्वचर्षणिर॒भियोनि॒मयोहते॥ द्रोणेस॒धस्थ॒मासदत्॥४॥ आचार्य उत्तरदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

जो भूत-प्रेतादि इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान का परित्याग करके इधर-उधर कहीं पर भी अन्यत्र चले जायें। अग्निकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

जो भूत-प्रेतादि इस भूमि में स्थित हैं, वो सभी इस स्थान से कहीं पर भी अन्यत्र चले जाये, जो भूत-प्रेतादि विघ्न करनेवाले हैं, वे सभी भगवान् शिव की आज्ञा से अन्यत्र चले जायें; अन्यथा नष्ट हो जायें, नैर्ऋत्य कोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

इस स्थान के सभी दिशाओं में जो भूत-प्रेतादि पिशाचों का वास है, वे सभी विना विरोध के इस स्थान का परित्याग करके चले जायें, हम पूजा कर्म का प्रारम्भ कर रहे हैं। वायव्यकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पुरश्चरणं करोम्यहम्॥

जो कोई भूतगण, राक्षसगण इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी

इस स्थान को छोडकर अन्यत्र कही चले जायँ, जिससे हम निर्विघ्न पुरश्चरण करें। ईशान कोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। ऊपर ऊर्ध्वदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। अधोदिशा भूमि पर नीचे पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

चारो तरफ क्रोध मयी दृष्टि डाल कर चारो तरफ के विघ्नों का निस्सारण करे, तथा तीन बार पैर की एड़ी से भूमि पर प्रहार करके भूमिस्थित विघ्नकर्ताओं से रक्षार्थ विघ्नों का निस्सारण करें।

आचार्यकर्म रक्षोघ्नकर्मदिग्रक्षणञ्च परिपूर्णम्

●

पञ्चगव्यकरणम्

ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह॥ ब्बृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा॥ आचार्य इस मन्त्र से गोमूत्र स्थापित करें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ आचार्य इस मन्त्र से गोमय मिश्रित करें।

ॐ आप्प्यायस्वसमेतुतेव्विश्श्वतःसोमव्वृष्ण्ण्यम्॥ भवाव्वाजस्यसङ्गथे॥ आचार्य इस मन्त्र से गोदुग्ध मिश्रित करें।

ॐ दधिक्क्राब्ण्णोऽअकारिषञ्जिष्ष्णोरश्श्वस्यव्वाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रणऽ आयूꣳषितारिषत्॥ आचार्य इस मन्त्र से दही मिश्रित करें।

ॐ तेजोऽसिशुक्क्रमस्यऽमृतमसिधामनामाऽसिप्प्रियंदेवानामनाधृष्ष्टन्देवयजनमसि॥ आचार्य इस मन्त्र से गोघृत मिश्रित करें।

ॐ देवस्यत्वासवितुःप्प्रसवेऽश्श्विनोर्ब्बाहुभ्यांपूष्ष्णोहस्ताभ्याम्॥ इस मन्त्र से कुशोदक मिश्रित करके यज्ञकाष्ठ से आलोडित करें।

ॐ आपोहिष्ष्ठामयो भुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥ तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥

पञ्चगव्य निर्माण के बाद अपवित्रः पवित्रोवा० मन्त्र से तीन बार यज्ञभूमि तथा यज्ञ-सामग्री का मार्जन प्रोक्षण करें फिर अञ्जली बनाकर स्वस्त्यवाचन दो बार करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ स्वुस्तिनुऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाꣳस्वुस्तिनः पूषाविश्श्ववेदाꣳ ।। स्वुस्तिनुस्ताक्ष्योंऽ अरिंष्टनेमिꣳस्वुस्तिनोबृहुस्प्पतिर्द्दधातु।। इस मन्त्र का दो बार पाठ करें।

देवाः आयान्तु।। यातुधानाः अपयान्तु।। विष्णोर्देव भूम्यमिमं रक्षस्व।।

आचार्यकर्म पञ्चगव्यकरणं परिपूर्णम्

●

सर्वतोभद्रचक्रः

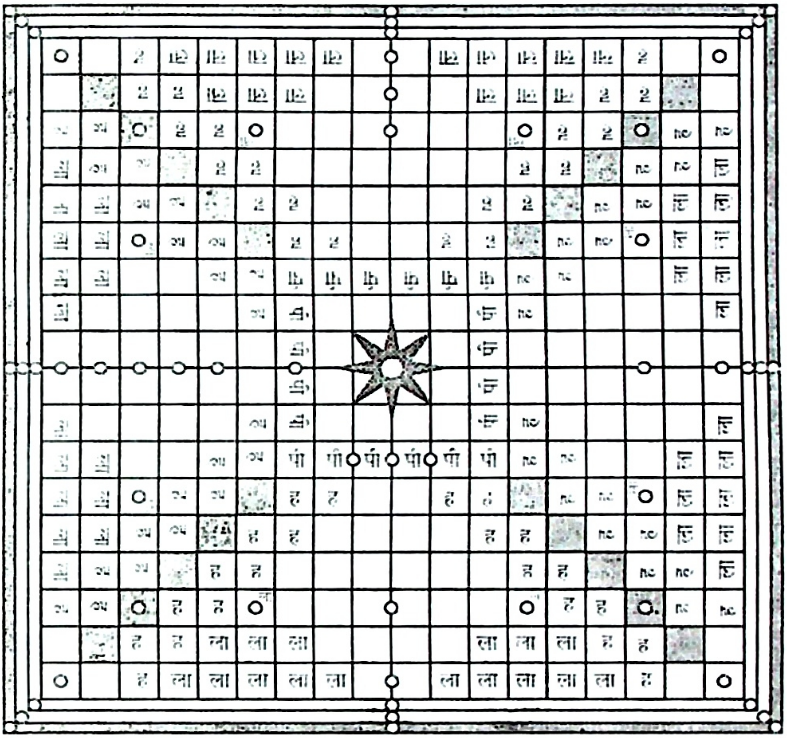

किसी चौकोर चौकी पर कपडा बिछाकर अष्टादश कोष्ठक बनाकर चित्रानुसार विभिन्न रंगों से रञ्जित चावलादि रखकर उस पर नियत स्थान पर सुपाड़ी रखकर सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं का आवाहन-पूजन करे।

सर्वतोभद्रदेवतानां स्थापनम्

ब्रह्मावाहनम्—ॐ ब्रह्मजज्ज्ञानम्प्रथुमम्पुरस्त्ताद्विसीमुतःसुरुचोंवेनऽआवः ।। सबुद्धन्या॒ऽउपुमाऽअंस्यविुष्ठाःसुतश्श्चयोनिमसंतश्श्चुविवः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

सोममावाहनम्—**ॐ व्व॒यꣳसो॑मव्व्र॒तेत॒वमन॑स्त॒नूषु॒बिब्भ्र॑तꣳ ॥ प्र॒जाव॑न्तꣳसचेमहि ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

ईशानमावाहनम्—**ॐ तमीशा॑न॒ञ्जग॑तस्त॒स्त्थुष॒स्प्पतिं॑धियञ्जि॒न्न्वमव॑सेहूमहेव्व॒यम् ॥ पू॒षानो॒यथा॒व्वेद॑सा॒मस॑द्वृ॒धेर॑क्षि॒तापा॒युरद॑ब्धये॑ ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रमावाहनम्—**ॐ त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्र॒ꣳहवे॑हवेसु॒हव॒ꣳशूर॒मिन्द्र॑म् ॥ ह्वया॑मिश॒क्रम्पु॑रुहू॒तमिन्द्र॑ꣳस्व॒स्तिनो॑म॒घवा॑धा॒त्त्विन्द्रः॑ ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्न्यामावाहनम्—**ॐ त्वन्नो॑ऽअग्ग्ने॒तव॑पा॒युभि॒र्म्म॒घोनो॑रक्षत॒न्न्व॒श्श्च॑वन्द्य ॥ त्रा॒तातो॒कस्य॒तन॑ये॒गवा॑म॒स्यनि॑मेष॒ꣳरक्ष॑माण॒स्तव॑व्व्र॒ते ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

यममावाहनम्—**ॐ य॒माय॒त्त्वाङ्गि॑रस्वतेपितृ॒मते॒स्वाहा॑ ॥ स्वाहा॑घ॒र्म्माय॒स्वाहा॑ घ॒र्म्मः॑पि॒त्रे ।**

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

निर्ऋतिमावाहनम्—**ॐ असु॑न्न्वन्त॒मय॑जमानमिच्च्छस्ते॒नस्ये॒त्यामन्न्वि॑हि॒तस्क॑रस्य ॥ अ॒न्न्यम॒स्म्मदि॑च्च्छ॒सात॑ऽइ॒त्यान॑मोदेविनिर्ऋते॒तुब्भ्य॑मस्तु ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

वरुणमावाहनम्—**ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्ब्भिः॑ ॥ अहे॑डमानोव्वरुणे॒हबो॒द्ध्युरु॑शꣳस॒मान॒ऽआयु॒ꣳप्प्रमो॑षीꣳ ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वायुमावाहनम्—**ॐ आनो॑नि॒युद्भिः॑श॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳस॑ह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहिय॒ज्ञम् ॥ व्वायो॑ऽअ॒स्म्मिन्त्सव॑नेमादयस्वयू॒यम्पा॑तस्व॒स्तिभि॒ः सदा॑नः ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

अष्टवसूनावाहनम्—**ॐ व्वसु॑ब्भ्यस्त्वारु॒द्द्रेब्भ्य॑स्त्वाऽऽदि॒त्येब्भ्य॑स्त्वा॒सञ्जा॑नाथां द्यावापृथि॒वीमि॒त्रावरु॑णौत्वा॒वृष्ट्या॑वताम् ॥ व्यन्तु॒व्वयो॒क्तꣳरिहा॑णाम॒रुता॒म्पृष॑तीर्ग्गच्छ व्व॒शापृश्श्नि॑र्ब्भू॒त्वादि॒वङ्गच्छ॒ततो॑नो॒वृष्टि॒मावह ॥ च॒क्षु॒ष्प्पाऽअ॑ग्ग्नेऽसि॒चक्षु॑र्म्मेपाहि ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुब्भ्यो नमः अष्टवसूनावाहयामि स्थापयामि।

एकादशरुद्रानावाहनम्—**ॐ नम॑स्तेरुद्रम॒न्न्यव॑ऽउ॒तोत॒ऽइष॑वे॒नमः॑ ॥ बा॒हुब्भ्या॑मु॒तते॒ नमः॑ ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि।

द्वादशादित्यनावाहनम्—**ॐ य॒ज्ञोदे॒वानां॒प्रत्ये॑तिसु॒म्नमादि॑त्यासो॒भव॑तामृड॒यन्तः॑॥ आवो॒ऽर्व्वाची॑सुम॒तिर्व्व॑वृत्याद॒ꣳहोश्श्चि॒द्याव्वरि॑वो॒वित्त॒रास॑त्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।

अश्विनीकुमार-आवाहनम्—**ॐ अ॒श्श्विना॒तेज॑सा॒चक्षुः॑प्प्रा॒णेन॒सर॑स्वतीवी॒र्य्य॑म्॥ व्वा॒चेन्द्रो॒बले॒नेन्द्रा॑यदधुरिन्द्रि॒यम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

सपैतृकविश्वान्देवानावाहनम्—**ॐ विश्श्वे॑देवास॒ऽआग॑तश्शृणु॒ताम॑ऽइ॒मꣳहव॑म्॥ एदं ब॒र्हिर्न्निषी॑दत॥ उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि॒व्विश्श्वे॑ब्भ्यस्त्वादे॒वेब्भ्य॑ऽए॒षते॒योनि॒र्व्विश्श्वे॑ब्भ्यस्त्वा दे॒वेब्भ्यः॑॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः सपैतृकविश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि।

सप्तयक्षानावाहनम्—**ॐ अ॒भित्यंदे॒वꣳस॑वि॒तार॑मो॒ण्योः॑क॒विक्क्र॑तु॒मर्च्चा॑मिस॒त्त्य स॑वꣳरत्क॒धाम॒भिप्प्रि॒यंम॒तिंक॒विम्॥ ऊ॒र्द्ध्वायस्या॒ऽमति॒र्भाऽअदि॑द्युत॒त्सवी॑मनि॒हिर॑ण्य पाणिरमिमीतसु॒क्क्रतुः॑कृ॒पास्वः॑॥ प्र॒जाब्भ्य॑स्त्वाप्प्र॒जास्त्वा॑नु॒प्प्राण॑न्तुप्र॒जास्त्वम॑नु॒ प्प्राणि॑हि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि।

सर्पानावाहनम्—**ॐ नमो॑स्तुस॒र्प्पेब्भ्यो॒येकेच॑पृथि॒वीमनु॥ येऽअ॒न्तरि॑क्षे॒येदि॒वि तेब्भ्यः॑स॒र्प्पेब्भ्यो॒नम॑ः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

गन्धर्वाऽप्सरसः-आवाहनम्—**ॐ ऋ॒ता॒षाडृ॒तधा॑मा॒ग्निर्ग्गन्ध॒र्व्वस्तस्यौष॑धयोप्प्स॒रसो॒ मुदो॒नाम॑॥ सन॑ऽइ॒दम्ब्रह्म॑क्ष॒त्रम्पा॑तु॒तस्मै॒स्वाहा॒व्वाट्ताब्भ्य॒ःस्वाहा॑॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दमावाहनम्—**ॐ यदक्क्र॑न्दःप्प्रथ॒मंजाय॑मानऽउ॒द्यन्त्स॑मुद्राद्दु॒तवा॒पुरी॑षात्॥ श्ये॒नस्य॑प॒क्षाह॑रि॒णस्य॑ बाहूऽउ॒प॒स्तुत्त्यंमहि॑जा॒तंते॑ऽअर्व्वन्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

वृषभमावाहनम्—**ॐ आ॒शुःशिशा॑नोव्वृष॒भोनभी॒मोघ॑नाघ॒नःक्षोभ॑णश्श्चर्षणी॒नाम्॥ स॒ङ्क्क्रन्द॑नेनाऽनिमि॒षऽए॑कवी॒रःश॒तꣳसेना॑ऽअजयत्त्सा॒कमिन्द्रः॑॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः वृषभमावाहयामि स्थापयामि।

शूलमावाहनम्—ॐ कार्षि॑रसिसमुद्रस्य॒त्वाक्षि॑त्या॒ऽउन्न॑यामि॥ समापो॑ऽअ॒द्भि र॑ग्ग्मत॒समोष॑धीभि॒रोष॑धीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः शूलमावाहयामि स्थापयामि।

महाकालमावाहनम्—ॐ त्र्य॑म्बकंय्यजामहेसु॒ग॒न्धिंपु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नम्॥ उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्मु॑क्षीय॒माऽमृता॑त्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि स्थापयामि।

दक्षादिसप्तगणानामावाहनम्—ॐ शु॒क्र॒ज्ज्यो॑तिश्श्च॒चि॒त्रज्ज्यो॑तिश्श्च॒स॒त्य ज्ज्यो॑तिश्श्च॒ज्ज्योति॑ष्माँश्श्च॥ शु॒क्रश्श्च॑ऽऋत॒पाश्श्चात्य॑ꣳहाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः दक्षादिसप्तगणानामावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गावाहनम्—ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्च॒कः सु॒भ॑द्रिकाङ्का॒म्पीलवा॑सिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

विष्णुमावाहनम्—ॐ इ॒दं वि॒ष्णु॒र्वि च॑क्रमे त्रे॒धा नि द॑धे प॒दम्॥ समू॑ढमस्यपाꣳ सु॒रे स्वाहा॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

स्वधामावाहनम्—ॐ पि॒तृब्भ्य॑ः स्वधा॒यिब्भ्य॑ः स्व॒धा नम॑ः पि॒ता॒म॒हेब्भ्य॑ः स्वधा॒यिब्भ्य॑ः स्व॒धा नम॑ः प्रपि॑तामहेब्भ्यः स्वधा॒यिब्भ्य॑ः स्व॒धा नम॑ः॥ अक्ष॑न्पि॒तरो॑ऽमी॑मदन्त पि॒तरो॑ऽतीतृपन्त पि॒तर॑ः पित॑रः॒ शुन्ध॑द्ध्वम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

मृत्युरोगानावाहनम्—ॐ परं॑मृत्यो॒ऽअनु॒परे॑हि॒पन्था॒न्॒य्यस्ते॒ऽअ॒न्य॒ऽइत॑रोदे॒व॒याना॑त्॥ चक्षु॑ष्मतेश्शृण्व॒तेते॑ब्ब्रवीमि॒मान॑ः प्र॒जाꣳरी॑रिषो॒मोतव्वी॒रान्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि।

गणपतिमावाहनम्—ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳ हवामहेनिधी॒नान्त्वा॑निधि॒पति॑ꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहम॑जानिगब्भ॒र्ध॒मात्त्वम॑जासि गब्भ॒र्धम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

अपामावाहनम्—ॐ अ॒प्प्स्व॒ग्ग्ने॒सधि॒ष्ट्वव॒सौष॑धी॒रनु॑रुध्यसे॥ गब्भे॒ सञ्जा॑यसे॒ पुन॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपामावाहयामि स्थापयामि।

मरुतावाहनम्—**ॐ मरुतोयस्यहिक्षयेपाथादिवोव्विमहसः॥ ससुगोपातमोजनः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः मरुतामावाहयामि स्थापयामि।

पृथ्वीमावाहनम्—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।

गङ्गादिनद्यावाहनम्—**ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः गङ्गादिनद्यावाहयामि स्थापयामि।

सप्तसागरानावाहनम्—**ॐ समुद्रोऽसिनभस्वार्द्रदानुः॥ शम्भूर्म्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहा॥ मारुतोऽसिमरुतांगणःशम्भूर्म्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहा॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि।

मेरुमावाहनम्—**ॐ प्रपर्व्वतस्यवृषभस्यपृष्ठान्नावश्श्चरन्तिस्वसिचऽइयानाः॥ ताऽआवर्व्वृत्रन्नधरागुदक्ताअहिर्म्बुध्न्यमनुरीयमाणाः॥ व्विष्णोर्व्विक्रमणमसिव्विष्णोर्व्विक्रान्तमसिव्विष्णोःक्रान्तमसि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

गदामावाहनम्—**ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोममआहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः गदामावाहयामि स्थापयामि।

त्रिशूलमावाहनम्—**ॐ त्रिꣳशद्धामव्विराजतिव्वाक्पतङ्गायधीयते॥ प्रतिवस्तोरहद्युभिः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

वज्रमावाहनम्—**ॐ महाँ२॥इन्द्रोव्वज्रहस्तःषोडशीशर्म्मयच्छतु॥ हन्तुपाप्प्मानंयोऽस्मान्द्वेष्टि॥ उपयामगृहीतोऽसिमहेन्द्रायत्त्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायत्वा॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

शक्तिमावाहनम्—**ॐ व्वसुचमेव्वसतिश्श्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्श्चमेऽर्थश्श्चमएमश्श्चमइत्याचमेगतिश्श्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

दण्डमावाहनम्—**ॐ इडऽएह्यदितऽएहिकाम्म्याऽएत॥ मयिवःकामधरणं भूयात्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

खड्गमावाहनम्—**ॐ खड्गोव्वैश्श्वदेवःश्श्वाकृष्ष्णःकर्ण्णोगर्द्दभस्तरक्षुस्तेरक्ष**

सामिन्द्रायसूकरःसिꣳहोमारुतःकृकलासःपिप्पकाशकुनिस्तेशरव्यायैविश्वेषांदेवानां पृषतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

पाशमावाहनम्—**ॐ उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमꣳश्रथायअथावय मादित्यव्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः पाशमावाहयामि स्थापयामि।

अङ्कुशमावाहनम्—**ॐ अꣳशुश्चमेरश्मिश्चमेऽदाभ्यश्चमेऽधिपतिश्चमेऽ उपाꣳशुश्चमेऽन्तर्य्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमेऽआश्विनश्चमेप्प्रति प्प्रस्थानश्चमेशुक्रश्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि।

गौतमावाहनम्—**ॐ आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः गौतममावाहयामि स्थापयामि।

भरद्वाजावाहनम्—**ॐ अयंदक्षिणाविश्वकर्म्मातस्यमनोवैश्वकर्म्मणंग्ग्रीष्मोमान सस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मीत्रिष्टुभःस्वारꣳस्वारादन्तर्य्यामोऽन्तर्य्यामात्पञ्चदशःपञ्चदश द्बृहद्भरद्वाजऽऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयामनोगृह्णामिप्रजाभ्यः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।

विश्वामित्रावाहनम्—**ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्यश्रोत्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शार द्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थीमन्थिनऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद्वैराजंविश्वामित्रऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाश्रोत्रंगृह्णामिप्प्रजाभ्यः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।

कश्यपावाहनम्—**ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेःकश्यपस्यत्र्यायुषम्॥ यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नो अस्तुत्र्यायुषम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

जमदग्न्यावाहनम्—**ॐ अयंपश्चाद्विश्वव्यचास्तस्यचक्षुर्वैश्वव्यचसंवर्षाश्चा क्षुष्योजगतीवार्षीजगत्त्याऽऋक्स्समृक्स्समाच्छुक्रःशुक्रात्सप्प्तदशःसप्प्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाचक्षुर्ग्गृह्णामिप्प्रजाभ्यः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

वसिष्ठावाहनम्—**ॐ अयंपुरोभुवस्तस्यप्प्राणोभौवनायनोवसन्तःप्प्राणयनो गायत्रीवासन्तीगायत्र्यैगायत्रंगायत्रादुपाꣳशुरुपाꣳशोस्त्रिवृत्त्रिवृतोरथान्तरंवसिष्ठऽ ऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्वयाप्प्राणंगृह्णामिप्प्रजाभ्यः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

अत्र्यावाहनम्—**ॐ अत्र॑पितरोमादयद्ध्वं॑य्यथाभा॒गमावृ॑षायद्ध्वम्॥ अमी॑मदन्त पि॒तरो॑य्यथाभा॒गमावृ॑षायिषत॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

अरुन्धत्यावाहनम्—**ॐ तंपत्नी॑भि॒रनु॑गच्छेमदे॒वाःपु॒त्रैर्भ्रातृ॑भिरु॒तवा॒हिर॑ण्ण्यैः॥ नाकं॑गृभ्णा॒नाःसु॑कृ॒तस्य॑लो॒केतृ॒तीये॑पृ॒ष्ठेऽअधिरोच॒नेदि॒वः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

ऐन्द्र्यावाहनम्—**ॐ अदि॑त्यै॒रास्न्ना॑सीन्द्रा॒ण्ण्याऽउ॒ष्ष्णीषः॑॥ पू॒षासि॑घ॒र्म्माय॑ दीष्ष्व॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

कौमार्यावाहनम्—**ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्य श्श्व॒कःसु॒भद्रि॑काङ्काम्पी॑लवा॒सिनी॑म्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै नमः कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

ब्राह्म्यावाहनम्—**ॐ इन्द्रा॑याहि॒धि॒येषि॒तोविप्प्र॑जूतःसु॒ताव॑तः॥ उप॒ब्ब्रह्मा॑णि व्वा॒ग्घतः॑॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

वाराह्यावाहनम्—**ॐ इन्द्र॑स्यक्क्रो॒डोऽअदि॑त्यैपाज॒स्यं॑दि॒शांज॒त्रवोऽदि॑त्यैभ॒सज्जी॒मूता॑न्हृदयौप॒शेना॒न्तरि॑क्षंपुरी॒तता॒नभ॑ऽउद॒र्य्ये॑णचक्क्रवा॒कौम॑तस्नाब्भ्यां॒दिवं॑वृ॒क्काब्भ्यां॑गि॒रीन्प्ला॒शिभि॒रुप॑लान्प्ली॒ह्नाव॒ल्मीका॑न्क्लो॒मभि॑र्ग्लौ॒भिर्गु॒ल्मान्हि॒राभिःस्रव॑न्तीर्ह्र॒दान्कु॒क्षिब्भ्या॑ꣳसमु॒द्रमु॒दरे॑णवैश्श्वा॒नरं॑भस्म्मना॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

चामुण्डाऽवाहनम्—**ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्य श्श्व॒कःसु॒भद्रि॑काङ्काम्पी॑लवा॒सिनी॑म्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

वैष्णव्यावाहनम्—**ॐ आप्प्या॑यस्व॒सम्मे॑तुतेवि॒श्श्वतः॒सोम॒वृष्ण्ण्य॑म्॥ भवा॒वाज॑स्य सङ्ग्थे॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

माहेश्वर्यावाहनम्—**ॐ यातेरु॒द्द्रशि॒वात॒नूरघो॒राऽपा॑पकाशिनी॥ तया॑नस्त॒न्न्वा॒ शन्त॑मया॒गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

वैनायक्यावाहनम्—**ॐ समक्ख्येदेव्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा॥ मामऽआयुः प्प्रमोषीम्मोऽअहंतवव्वीरंव्विदेयतवदेविसन्दृशि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—सर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवताओं के आवाहन करने के बाद प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु॥

सर्वतोभद्रदेवतानां स्थापनं परिपूर्णम्

●

सर्वतोभद्रदेवतापूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे।

भद्रं कल्याणकर्तृत्वं पारिषदं सर्वदेवाः।
मोदनार्थञ्च जीवानां मण्डलं परिकल्पतम्॥

सभी देवताओं के परिषद् स्वरूप, सभी का कल्याण करनेवाला, सभी जीवों को प्रसन्नता प्रदान करनेवाले भद्रसंज्ञकमण्डल की परिकल्पना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन-ध्यान कर समर्पित करे।

विचित्र-रत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित!॥

हे देवताओं के द्वारा पूजित! विचित्र रत्नों से जटित तथा दिव्य कलाकृतियों से संयुक्त स्वर्णनिर्मित दिव्य रुचिकर सिंहासन ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
त्रिगुणात्मगृहाणेदं भगवान् भक्तवत्सल!॥

सभी तीर्थों से लाये गये गन्धादि से युक्त इस पाद्य को भक्त वत्सल भगवान् त्रिगुणात्मा ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

त्रिगुणात्मन्नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

गन्ध, पुष्प, अक्षत, फलादि से युक्त अर्घ्य हे त्रिगुणात्मा करुणाकर! ग्रहण करें आपको नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

त्रिदेवञ्च नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

हे देवताओं से अभिवन्दित! त्रिदेव (ब्रह्म-विष्णु-महेश) को नमस्कार है, हे प्रभु!आचमन करने के लिए गङ्गा का जल आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे।

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के पापों को हरनेवाला, सभी प्रकार का शुभ करने वाला, मन्दाकिनी का जल आपके सम्मुख कल्पित (समर्पित) है, हे देव! स्नान के लिए आप ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वं मलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्॥

सभी प्रकार के मल को पूर्ण नष्ट करने में जो गङ्गाजल समर्थ है, वह जल यहाँ पुनः आचमन करने के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पय:पात्र लेकर समर्पित करे।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गो से समुत्पन्न सभी को परम जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए उत्पन्न, परम पवित्र दूध हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से समुत्पन्न (निर्मित) मीठा-अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही मेरे द्वारा आपके स्नान के लिए लाया गया है, हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है, ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

नवनीत (मक्खन) से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी हे देव! आपको समर्पित करता हूँ, स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे।

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न, सुन्दर मधुर स्वादवाला, पुष्टि तथा दिव्य तेज प्रदान करनेवाला, शहद स्नान के लिए अपके सम्मुख समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे।

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ईख के रस से निर्मित, सभी प्रकार के मल को नष्ट करने वाली, शुभ और पुष्टि को प्रदान करने वाली, इच्छुरसनिर्मित दिव्य शर्करा आपके प्रति स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे।

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध-दही-घृत-मधु और शर्करा से निर्मित पञ्चामृत स्नान के लिए मैं लाया हूँ, हे देव! स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा-सिन्धु-कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों का दिव्य जल स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे।

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शीतल और उष्ण वायु के ताप और शैत्य से रक्षा के लिए तथा परमलज्जा के रक्षार्थ, शरीर को अलंकृत करने के लिए वस्त्र समर्पित है, हे देव! यह वस्त्र आपको प्रसन्न करे, आप हमें शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण सुरपूजित॥

नव तन्तुओं से निर्मित त्रिगुण (त्रिरावृत्तिवाला) देवतामय यज्ञ में पहने जानेवाला उपवीत मैं आपको समर्पित करता हूँ, हे सुरपुजित! प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

दिव्य सुमनोहर सुगन्धित श्रीखण्ड से युक्त चन्दनलेप आपके विलेपन के लिए है, यह आपकी प्रसन्नता के लिए अपको समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

कुङ्कुम से सुशोभित अक्षत आपको निवेदित करता हूँ, हे सुरश्रेष्ठ परमेश्वर! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मालती आदि के पुष्पों के द्वारा निर्मित, सुगन्धित पुष्पों की माला आपके लिए लाया हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासगर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे।

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतान्स्तव पूजार्थं गृहाण सुरनायक!॥

हे सुरश्रेष्ठ! मङ्गल प्रदान करनेवाले, अमृतमय, सुन्दर दूब के हरे-हरे अङ्कुरों को मैं आपकी पूजा के लिये लाया हूँ, इन्हें ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे।

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितोदेवामतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥
नानापरिमलैर्द्रव्यै निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारुप्रगृह्यताम्॥२॥

शान्ति प्रदान करनेवाला अबीर-गुलाल चन्दनादि से निर्मित विभिन्न सुगन्धित द्रव्य नाना प्रकार के दिव्य द्रव्यों से निर्मित उत्तम अबीर नाम का सुगन्धित सुरुचिकर चूर्ण समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें और शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्व शोभायमान रक्तसिन्दूर, सभी सौभाग्य तथा सुख का वर्धन करनेवाला है, सभी प्रकार के शुभ की कामना के लिए सिन्दूर समर्पित करता हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूर समर्पण के बाद देवता के आगे नैवेद्य स्थापित करके धूपदीप प्रज्वलित करे।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न वनस्पतियों के रसों से निर्मित गन्धों में अत्युत्तम गन्धयुक्त धूप सभी देवताओं को सुगन्धि प्रदान के लिए है, हे देव! अपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

तीनों लोकों के अन्धकार को दूर करनेवाला, घृतयुक्त बत्तियों को अग्नि से प्रज्वलित किया है, हे देवेश! प्रसन्नता के लिए ग्रहण करें, भक्तिपूर्वक परमात्मादेव आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करके इस घोरतम अज्ञानान्धकार से हमारी रक्षा करें, दीपज्योति को नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

शर्कराखण्ड खाद्य दधि दूध एवं घृत से युक्त भक्ष्य भोज्य आहाररूपी नैवेद्य ग्रहण करके हमारी भक्ति को अचल करे, और हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करे तथा अन्त में परमगति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर!॥

मलयाचल में उत्पन्न श्वेत चन्दन कस्तूरी इत्यादि गन्धों से युक्त हाथों को शुद्ध करने के लिए उद्वर्तन के रूप में ग्रहण कर प्रसन्न हो।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

महादिव्य पूगीफल (सुपाड़ी) नागवल्लीदल (पान के पत्ते से) युक्त एलादिचूर्ण (इलाइची इत्यादि) से युक्त ताम्बूल ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफल-एलालवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे।

इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

हे देव! हमने यह फल आपके सम्मुख स्थापित किया है, जिसे ग्रहण करके जन्म-जन्मान्तरों तक हमारी समस्तकामनाओं की पूर्ति करें तथा हमें यज्ञफलवान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

हिरण्यगर्भ से उत्पन्न हेमबीज (सुवर्ण के सदृश) के समान शोभायमान अनन्तपुण्यफल को प्रदान करके शान्ति प्रदान करनेवाली सुवर्णमय दक्षिणा ग्रहण कर शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केला) के गर्भ से उत्पन्न (निर्मित) कर्पूर (जलता हुआ) से आरती करता हूँ, हमें कृपापूर्वक दृष्टि से देख करके वर प्रदानकर्ता बनें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर!॥

अपने-अपने ऋतुओं में उत्पन्न नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों से युक्त पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वर! ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे॥१॥

किसी भी प्रकार के जन्म-जन्मान्तर में किये हुए सभी पाप एक-एक कदम देव-प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते हैं॥१॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥२॥

पूजन करने के बाद एक-एक कदम जो यज्ञकर्ता देव की परिक्रमा करता है, वह निश्चय ही अश्वमेधादि यज्ञों का फल प्राप्त करता है, अतः जन्म-जन्मान्तरकृत समस्त पापों के क्षय के लिए आपकी परिक्रमा करता हूँ॥२॥

पूजनसमर्पणम्—दक्षिणहाथ में जल लेकर पूजन समर्पण करे।

अनया पूजया सर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवताः प्रीयन्ताम्।

सर्वतोभद्रमण्डल के पूजन के बाद प्रधान देवता का पूजन करे।

सर्वतोभद्रदेवतापूजनम् परिपूर्णम्

●

अन्तःपूजनम्

अन्त:पूजन में आचमन करके प्राणायाम करे तथा मूलाधार की कर्णिका में दीप कलिकाकार स्वयम्भू लिङ्गरूपी जीव को साढ़े तीन बार लपेटी हुई कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान कर मानसोपचार पूजन करे। क्रमश: सभी चक्रों में ले जाकर सहस्रार में महाकाल शिव के साथ स्थापन-पूजन कर अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप कर समर्पित करे।

कुण्डलिनीध्यानम्

ध्यायेत्कुण्डलिनीं सूक्ष्मां मूलाधारनिवासिनीं,
प्रसुप्तभुजगाकारां विद्युत्पटलसन्निभाम्।
तामिष्टदेवतांरूपां सार्द्धत्रिवलयान्वितां,
कोटिसौदामिनीभासां स्वयम्भूलिङ्गवेष्टिनीम्॥

मूलाधार में निवास करने वाली सूक्ष्म, सर्प की आकृतिवाली, सोई हुई, विद्युत् के समान प्रभावाली, साढ़े तीन वलयवाली, सौदामिनी के समान भासमान, स्वयंभू लिङ्ग को वेष्टित की हुई, इष्टदेवतारूपिणी कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

पैर से जानुपर्यन्त चतुष्कोण सुवर्ण के समान देदीप्यमान '**ळँ**' बीजयुक्त पृथ्वीमण्डल का पादेन्द्रिय तथा गन्धसहित घ्राणेन्द्रिय की मोक्षकलायुक्त ब्रह्ममय तथा समानवायु का ध्यान करे। फिर जानु से नाभिपर्यन्त शरीर में अर्धचन्द्राकार श्वेतवर्ण वाले '**वँ**' बीजयुक्त जलमण्डल की कल्पना कर ग्रहणक्रियायुक्त पाणीन्द्रिय तथा रसयुक्त रसनेन्द्रिय की प्रतिष्ठाकलायुक्त अकलमहाविष्णु तथा उदानवायु का ध्यान करे, फिर नाभि से हृदयपर्यन्त त्रिकोणाकृति वाले रक्तवर्ण '**रँ**' बीजयुक्त स्वस्तिकाकार तेजोमण्डल पर विसर्गक्रियायुक्त रुद्रदेवता, उपस्थेन्द्रिय तथा अपानवायु का ध्यान करे, फिर हृदय से लेकर कण्ठपर्यन्त गोलाकार धूम्रवर्ण '**यँ**' बीजयुक्त वायुमण्डल पर आनन्दक्रियायुक्त ईशानदेवता तथा अपानवायु का ध्यान करे, फिर कण्ठ से लेकर भ्रूमध्यपर्यन्त शरीर में गोलाकार स्वच्छ वर्ण वाले '**हँ**' बीजयुक्त नभोमण्डल पर वचनक्रियासहित वागेन्द्रिय का तथा शब्दसहित सदाशिव एवं प्राणवायु का ध्यान करे, तदनन्तर भ्रूमध्य से ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्त मनोबुद्धिमय चैतन्य शिवशक्तिमय ब्रह्म '**हँक्षँ**' बीज का ध्यानकर सहस्रारचक्र में शून्य सर्वचैतन्यमय

परब्रह्म शिवरूप श्रीगुरु का ध्यान करने के बाद सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल को जल में, जलमण्डल को अग्नि में, अग्निमण्डल को वायु में, वायुमण्डल को आकाश में तथा आकाशमण्डल को अहंकार में, अहंकारमण्डल को महत्तत्त्व में, महत्तत्त्व को प्रकृति में, प्रकृतितत्त्व को महाशिव में विलीन करे। '**सोऽहं हंसः**' मन्त्र से प्रसुप्त कुण्डलिनी को जगा करके मानसोपचार पूजन करके मूलाधार स्थित '**ळँ**' बीजयुक्त '**वँ शँ षँ सँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुन: स्वाधिष्ठान चक्र में ले जाकर स्थापित कर पूजन करके स्वाधिष्ठान स्थित '**वँ**' बीज के सहित '**बँ भँ मँ यँ रँ लँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुन: मणिपूर चक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर पूजन कर '**रँ**' बीज के सहित '**डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुन: तदूर्ध्व अनाहत चक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर पूजन कर '**यँ**' बीज के सहित '**कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुन: तदूर्ध्व विशुद्ध चक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर स्थापित कर पूजन करने के बाद '**हँ**' बीज के सहित '**अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये। पुन: तदूर्ध्व आज्ञाचक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर स्थापित कर पूजन करके '**हँ क्षँ**' वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुन: तदूर्ध्व आज्ञाचक्र में कुण्डलिनी शक्ति को स्थापितकर पूजनकर सहस्रार स्थित शिवरूप परब्रह्म में समस्त वर्णों के सहित जीव को '**हंसः सोऽहं**' के साथ विलीन करे तथा शिव-शिवा का मानस षोडशोपचार पूजन करके, मूल मन्त्र का मातृका वर्णों के सहित एक सहस्र जप करके महाकाल शिव-शिवारूपी श्रीगुरु को समर्पित करे, पुन: मूलाधार में लाकर ध्यानकर मानसोपचार पूजन करे।

शिवशिवाध्यानम्—

मेघाङ्गीं विगताम्बरां शिवशिवारावां त्रिनेत्रां परां,
कर्णालम्बितवालयुग्मऽभयदां मुण्डस्रजामालिनीम्।
वामाधोर्ध्वकराम्बुजे नरशिरः खड्गञ्च सव्येतरे,
दानाभीतिविमुक्तकेशनिचयां वन्दे सदाकालिकाम्॥१॥

मेघ के समान आभावाली, निरावरण (सर्वत्र पूर्ण रूप से व्याप्त), त्रिनेत्र धारण करने वाली, शिवशिवा जो कानों में लटकते हुए एक जोड़ी बालों (वालशव) को धारण किये हुए अभय प्रदान करने वाली, मुण्ड की मालाओं को धारण करनेवाली, बायें तरफ के उपर के हाथ में खड्ग तथा नीचे के हाथ में नर का शिर शोभित है, दाहिने तरफ के ऊपर के हाथ से वर तथा नीचे के हाथ से अभय प्रदान करती हुई, खुली हुई केशराशिवाली, शिव के सहित कालिका देवी की मैं सदा वन्दना करता हूँ॥१॥

षडाधारपङ्केरुहान्तर्विराजत्सुषुम्नान्तरालेऽतितेजोल्लसन्तीम् ।
सुधामण्डलं द्रावयन्तीं पिबन्तीं सुधामूर्तिमीडेऽहमानन्दरूपाम्॥२॥

षड् चक्रों कमल को आधार बनाकर विराजमान सुषुम्ना के भीतर अतितेज से उल्लसित सुधामण्ड को द्रवीभूत करती हुई अमृत मूर्ति स्वरूप ईश्वरी और आनन्द रूप ईश्वर को नमन है॥२॥

ध्यान करके मानसोपचार पूजन करके अकार से हकार और हकार से अकार तक आरोहाऽवरोह क्रम से अक्षमाला से मूल मन्त्र जप कर देवता को समर्पित करने के बाद पीठस्थ देवताओं को आवाहन कर स्थापना करने के बाद पूजन करे।

पीठदेवतापूजनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः मँ मण्डूकाय नमः मण्डूकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ कालाग्निरुद्राय नमः कालाग्निरुद्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ कच्छपाय नमः कच्छपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ आधारशक्तये नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ प्रकृतये नमः प्रकृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ कूर्माय नमः कूर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अनन्ताय नमः अनन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ पृथिव्यै नमः पृथ्वीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षँ क्षीरसमुद्राय नमः क्षीरसमुद्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः रँ रत्नद्वीपाय नमः रत्नद्वीपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ कल्पवृक्षाय नमः कल्पवृक्षशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः मँ मणिमण्डपाय नमः मणिमण्डपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः स्वर्णसिंहासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः धँ धर्माय नमः धर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्ञँ ज्ञानाय नमः ज्ञानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वँ वैराग्याय नमः वैराग्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐँ ऐश्वर्याय नमः ऐश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अधर्माय नमः अधर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अज्ञानाय नमः अज्ञानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अवैराग्याय नमः अवैराग्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अनैश्वर्याय नमः अनैश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ कल्पान्तकारायानन्ताय नमः कल्पान्तकारायानन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ पद्माय नमः पद्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ आनन्दकन्दाय नमः आनन्दकन्दशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सँ संविन्नालाय नमः संविन्नालशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः विँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः विकारमयकेशरशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः प्रकृत्यात्मकपत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः पञ्चाशद्वर्णकर्णिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पूजन करके दशकलाओं सहित वह्नि-अर्क-सोममण्डलों का पूजन करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः अग्निमण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः धूम्रार्चिषे नमः धूम्रार्चिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऊष्मायै नमः ऊष्माशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्वलिन्यै नमः ज्वलिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः विस्फुलिङ्गिन्यै नमः विस्फुलिङ्गिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सुश्रियै नमः सुश्रियाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वरूपायै नमः स्वरूपाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कपिलायै नमः कपिलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः हव्यवाहनायै नमः हव्यवाहनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः मँ द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः सूर्यमण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ भँ तपिन्यै नमः तपिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः खँ बँ तापिन्यै नमः तापिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः गँ फँ धूम्रायै नमः धूम्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः घँ पँ मरीच्यै नमः मरीचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः चँ धँ रुच्यै नमः रुचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः छँ दँ सुषुम्णायै नमः सुषुम्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः जँ थँ भोगदायै नमः भोगदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः झँ तँ विश्वायै नमः विश्वाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ञँ णँ बोधिन्यै नमः बोधिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः टँ ढँ धारिण्यै नमः धारिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ठँ डँ क्षमायै नमः क्षमाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः सोममण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अमृतायै नमः अमृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ मानदायै नमः मानदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः इँ पूषायै नमः पूषाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईँ तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः उँ पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऊँ रत्यै नमः रतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋँ शशिन्यै नमः शशिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॠँ धृत्यै नमः धृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः लृँ चन्द्रिकायै नमः चन्द्रिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः लॄँ कान्त्यै नमः कान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः एँ ज्योत्स्नायै नमः ज्योत्स्नाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐँ श्रियै नमः श्रियाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ प्रीत्यै नमः प्रीतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः औँ अङ्गदायै नमः अङ्गदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ पूर्णायै नमः पूर्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अः पूर्णामृतायै नमः पूर्णामृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सँ सत्त्वाय नमः सत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः रँ रजसे नमः रजःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः तँ तमसे नमः तमःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ आत्मने नमः आत्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अन्तरात्मने नमः अन्तरात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ परमात्मने नमः परमात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्ञाँ ज्ञानात्मने नमः ज्ञानात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः माँ मायातत्त्वाय नमः मायातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ कलातत्त्वाय नमः कलातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः विँ विद्यातत्त्वाय नमः विद्यातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ परतत्त्वाय नमः परतत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पीठस्थ देवताओं आवाहन-स्थापन के बाद पीठशक्तियों का आवाहन-पूजन करे।

पीठशक्तिपूजनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः आधारशक्तिभ्यो नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयाशक्तिभ्यो नमः जयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयाशक्तिभ्यो नमः विजयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अजिताशक्तिभ्यो नमः अजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अपराजिताशक्तिभ्यो नमः अपराजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः नित्याशक्तिभ्यो नमः नित्याशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः विलासिनीशक्तिभ्यो नमः विलासिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः दोग्ध्राशक्तिभ्यो नमः दोग्ध्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अघोराशक्तिभ्यो नमः अघोराशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलाशक्तिभ्यो नमः मङ्गलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालिकायोगपीठात्मने नमः कालिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः प्रेतासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ध्यानम्—दोनो हाथ में पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे।

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्,
शूलं कपालं दधतं कराब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवि।
पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषूच्छूलं हस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्,
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥

रक्त महासागर में अरुणकालिक सूर्य के वर्ण के समान अरुण वर्णवाले कमल पर विराजमान हाथ में पाश-अंकुश-खड्ग-शर-बाणों-शूल-कपाल धारण किये हुए तीन नेत्र वाली भगवती को प्रणाम करता हूँ। हाथों में पाशचापसृक्कपालशूल धारण किये हुए रक्तवर्ण वाली रक्तवर्ण के कमल के आसन पर बैठी हुई प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥१॥

शरण्ये वरण्ये सुकारुण्यपूर्णे हिरण्योदराद्यैरगम्येऽतिपुण्ये।
भवारण्यभीतं च मां पाहि भद्रे नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि॥२॥

शरणागत होने, वरण करने पर सुकारुण्यपूर्ण, हिरण्यगर्भ से आदि, किसी भी उपाय से न जानी जाने वाली, पुण्यस्वरूपा, भवसागर के भय से भयभीत, हमारी कल्याणकर्ता रक्षा करो, हे भवानी! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है॥२॥

मानसोपचारपूजनम्—लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करते हुए तत्तद् भावनाओं का चिन्तन करते हुए मानस पूजन करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः यँ वायवात्मकं धूपं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालिकायोगपीठात्मने नमः कालिकायोगशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ सर्वशक्तिकमलासनाय नमः कमलासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पीठ शक्तियों का पूजन करने के बाद प्रधान कलश स्थापन करे।

पीठस्थापनं परिपूर्णम्

प्रधानकलशस्थापनम्

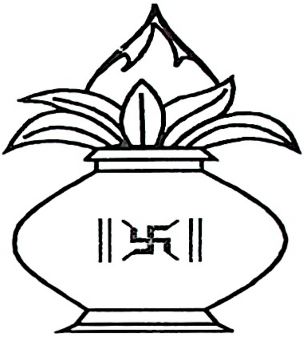

भूमिस्पर्श—ॐ म॒हीद्यौः पृ॑थि॒वीच॑नऽइ॒मंय॒ज्ञंमि॑मिक्षताम्॥ पि॒पृतानो॒भरी॑मभिः॥

सप्तधान्य विखेरना—ॐ ओष॑धयः॒सम॑वदन्त॒सोमे॑नस॒हराज्ञा॑॥ यस्म्मै॑कृ॒णोति॑ ब्राह्म॒णस्तꣳराजन्पारयामसि॥

कलशस्थापन—ॐ आजि॑घ्रक॒लशं॑म॒ह्यात्वा॑विश॒न्त्विन्द॑वः॥ पुन॑रू॒र्ज्जानिव॑र्तस्व॒सानः॑स॒हस्रं॑धुक्ष्वो॒रुधा॑रा॒पय॑स्वती॒पुन॒र्म्मावि॑शताद्र॒यिः॥

कलश में जल भरना—ॐ व्वरु॑णस्यो॒त्तम्भ॑नमसि॒व्वरु॑णस्यस्कम्भ॒सर्ज्ज॑नीस्थो॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑न्न्यसि॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमसि॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमासीद।

कलश में गन्ध डाले—ॐ त्वाङ्ग॑न्ध॒र्व्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पतिः॑॥ त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॑वि॒द्वान्न्यक्ष्मा॑दमुच्च्यत॥

कलश में सर्वौषधी डाले—ॐ याओष॑धीः॒पूर्व्वाजा॒तादे॒वेभ्य॑स्त्रियु॒गंपु॒रा॥ मनै॒नुब॒ब्भ्रुणा॑म॒हꣳश॒तंधामा॑नि स॒प्त च॥

कलश में दूर्वा डाले—ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षःपरुष॒ष्प्परि॑॥ एवानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नुस॒हस्रे॑ण श॒तेन॑ च॥

कलश में पञ्चपल्लव डाले—ॐ अ॒श्वत्त्थेवो॑नि॒षद॑नंप॒र्ण्णेवो॑व्वस॒तिष्कृ॒ता॥ गो॒भाज॒ऽइत्किला॑सथ॒यत्स॒नव॑थ॒पूरु॑षम्॥

कलश में कुश डाले—ॐ प॒वित्रे॑स्त्थोवैष्ण॒व्व्यौ॑सवि॒तुर्व्वः॑प्प्रस॒वऽउत्पु॑ना॒म्म्यच्छि॑द्द्रेण प॒वित्रे॑ण॒सूर्य्य॑स्यर॒श्मिभिः॑॥ तस्य॑तेप॒वित्र॑पतेप॒वित्र॑पूत॒स्यय॒त्कामः॑पुनेत॒च्छ॑केयम्॥

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—ॐ स्यो॒नापृ॑थिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेश॑नी॥ यच्छा॑नः॒शर्म्म॑स॒प्प्रथाः॑॥

कलश में पूंगीफल डाले—ॐ याः फ॒लिनी॒र्य्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्प्पायाश्च॑पु॒ष्प्पिणीः॑॥ बृह॒स्प्पति॑प्रसूता॒स्तानो॑मुञ्च॒त्वꣳह॑सः॥

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परि॒वाजपतिःक॒विर॒ग्निर्ह॒व्यान्यक्रमीत्॥ दध॒द्रत्नानि दा॒शुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हि॒रण्यग॒र्भःसमवर्त्त॒ताग्रेभूतस्यजा॒तः पति॒रेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथि॒वीद्यामु॒तेमां अस्मैदे॒वायह॒विषाविधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्यो॒तिषास॒हशर्म्म॒वरूथ॒मासद॒त्त्स्व॒ः॥ वासोअग्ने वि॒श्वरूप॒ꣳ संव्ययस्वविभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्वि॒परापत॒सुपूर्ण्णा॒पुन॒रापत॥ व॒स्नेव॒विक्क्रीणावहा॒ऽ इष॒मूर्ज्जꣳशतक्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफ॒लिनी॒र्य्याऽअफ॒लाऽअपु॒ष्पायाश्च॒पु॒ष्पिणीः॥ बृह॒स्पतिप्प्रसूता॒स्तानोमुञ्च॒त्वꣳहसः॥**

वरुणध्यानावाहनपञ्चोपचारपूजन—ॐ तत्त्वायामि॒ब्ब्रह्मणा॒वन्दमान॒स्तदाशास्ते॒ यजमानोह॒विर्भिः॥ अहेडमानो वरुणे॒हबो॒ध्युरुशꣳस॒मान॒ऽआयु॒ःप्प्रमोषीः॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सवाहनं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—दक्षिण हाथ के स्पर्श से आवाहन करे।

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित हुआ है उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षि (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकाएँ होती हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनीगोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा सप्तद्वीप मेदिनी स्थित है, अजुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं॥३॥

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापीगोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री, नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

इसी से विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ उत्पन्न होती हैं। पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं, वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्त दुरित के क्षय-कारक हो समस्त पापों को नष्ट करनेवाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग रूप से कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयन्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

ॐ भूभुर्वः स्वः गङ्गादिभ्यः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरित को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें॥८॥

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ सें स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषता॒माज्ज्यस्य॒बृह॒स्प्पतिर्य्य॒ज्ञमि॒मन्तनो॒त्त्वरिष्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्दधातु॥ व्विश्श्वेदे॒वासऽइहमादयन्ता॒मो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी से प्राण प्रतिष्ठित होते है, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

कलश-प्रार्थना—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे।

ॐ देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

हे कुम्भ! देवताओं और दानवों के बीच समुद्र-मन्थन से तुम उत्पन्न हुए, तुम्हे स्वयं विष्णु धारण किया॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्रांणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

जल से ही सभी तीर्थो की प्रतिष्ठा है, सभी तीर्थो के जल में देवताओं का वास है, जल ही सभी भूतों में प्रतिष्ठित है, जल ही सभी प्राणों में प्रतिष्ठित हो॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, रुद्र, वसु, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनाएँ फलवान होती है, हे जलोद्भव! कुम्भ तुम्हारी कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करनेवाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सान्निध्य प्रदान करें॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दर श्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दर मङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले जलाधिनाथ आपको बार-बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

पाश को हाथ में धारण करनेवाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करनेवालों के नायक, जबतक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नही हो जाती तब तक सानिध्य प्रदान करो॥७॥

नमः आद्याय बीजाय ज्ञानविज्ञानमूर्तये।
प्राणेन्द्रियमनोबुद्धिर्विकारैर्व्यक्तिमीयुषे ॥८॥

आदिबीज ज्ञानविज्ञानमूर्ति प्राणइन्द्रियमनबुद्धि के विकारों को समाप्त करने के लिए आपकों नमस्कार है।

कलशस्थापना के बाद देवी की सुवर्णमयी मूर्ति को पहले अग्नि में तपाकर उस पर घी का अनुलेपन करने के बाद उस पर जल की धारा गिराते हुए, अग्न्युत्तारणविधि करके वैदिक विधि से प्रतिष्ठा-स्थापना करे।

अग्न्युत्तारणविधिः

ॐ समुद्रस्यत्त्वावकयाग्ग्नेपरिव्ययामसि॥ पावकोऽअस्म्मभ्यꣳ शिवोभव॥ ॐ हिमस्यत्वाजरायुणाग्ग्नेपरिव्ययामसि॥ पावकोअस्म्मभ्यꣳ शिवोभव॥ ॐ उपज्ज्मनुपवेतसेऽवतरनदीष्ष्वा॥ अग्ग्नेपित्तमपामसिमण्डूकिताभिरागहि सेमं नो यज्ञंपावकवर्ण्णꣳ शिवंकृधि॥ ॐ अपामिदंन्ययनꣳ समुद्रस्यनिवेशनम्॥ अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्म्मभ्यꣳ शिवोभव॥ ॐ अग्ग्नेपावकरोचिषामन्द्रया देवजिह्व्वया॥ आदेवान्न्वक्षियक्षिच॥ ॐ सनःपावकदीदिवोऽग्ग्नेदेवाँ२॥ऽइहा वह॥ उपयज्ञꣳ हविश्श्चनः॥ ॐ पावकयायश्श्चितयन्त्याकृपाक्षामन्नुरुचऽउषसोन भानुना। तूर्व्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयोघृणेनततृषाणोऽअजरः॥ ॐ नमस्तेहरसे शोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे॥ अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्म्मभ्यꣳ शिवोभव॥ ॐ नृषदेव्वेडप्सुषदेव्वेड्बर्हिषदेव्वेड्वनसदेव्वेट्स्वर्व्विदेव्वेट्॥ ॐ येदेवादेवानां य्यज्ञियाय्यज्ञियानाꣳसंव्वत्सरीणमुपभागमासते। अहुतादोहविषोयज्ञेऽअस्म्मिन्त्स्वयं पिबन्तुमधुनोघृतस्य॥ ॐ येदेवादेवेष्वधिदेवत्वमायन्न्येब्रह्मणःपुरऽएतारोऽअस्य॥ येब्भ्यो नऋतेपवतेधामकिञ्चननतेदिवोनऽपृथिव्याऽअधिस्न्नुषु॥ ॐ प्राणदाऽअपानदा व्यानदाव्वर्च्चोदाव्वरिवोदाः॥ अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयपावकोऽअस्म्मभ्यꣳ शिवोभव॥ अग्न्युत्तारण के पश्चात् बीजमन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा करे।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोऽहं हंसः अस्यां सुवर्णप्रतिमायां श्रीमहाविद्याकालिकादेवताया सुवर्णप्रतिमायां प्राणाः इह प्राणाः॥

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोऽहं हंसः अस्यां सुवर्णप्रतिमायां श्रीमहाविद्याकालिकादेवताया सुवर्णप्रतिमायां जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोऽहं हंसः अस्यां सुवर्णप्रतिमायां श्रीमहाविद्याकालिकादेवताया सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राण-पाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से प्राणों का क्षरण (शरीर में प्राणों का प्रवाह-संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, मेरे लिए इससे इतर कुछ नहीं है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाविद्याकालिकादेवताः सुप्रतिष्ठिताः भवन्तु।

श्रीमहाविद्याध्यानम्—हृद् कमल पर श्रीदेवी का ध्यान करे।

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां,
वीणानागेन्द्रशंखाऽऽयुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशुनानामणियुतहृदयां सिन्धुपात्रं वहन्तिं,
वन्देऽमीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्॥

उदयकालिक शीतल चन्द्रमा के रश्मि प्रकाश के समान खिली हुई कमल पर बैठी हुई, चारों हाथों में क्रमशः वीणा, नाग, शङ्ख, आयुध, परशु धारण की हुई, हृदय पर मुक्तामणि जटित हार धारण की हुई, अमृतपात्र को धारण की हुई, प्रसन्न मन से मधुर-मधुर हास्य करती हुई, साधकों के मनोकामनाओं की पूर्ति करनेवाली भवानी की मैं वन्दना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः महाविद्यां ध्यायामि ध्यानोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ध्यान करके पुष्प चढ़ाये।

श्रीमहाविद्यापूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप सुवर्ण के समान पीतवर्णवाली, किञ्चित् हरितवर्णवाली, किञ्चित् हरिणी रूप धारण करनेवाली, सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करनेवाली, सुन्दर वर्णवाले चाँदी के समान श्वेतपुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, चन्द्रमा के समान सबकों प्रसन्न करनेवाली, चञ्चलता हिरण्यमयी रूपवाली एवं हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी को मेरे कल्याण के लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर ध्यान कर आसन समर्पित करे।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत्-विख्यात एवं अनपगामिनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ। मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करने के लिए उनका आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ हैं अथवा जिनके आगे घोड़े जुटे हुए हैं, ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ, दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी का अपने घर में सर्वदा निवास करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

जिनका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्दहास्ययुक्ता हैं, जो चारो ओर सुवर्ण से वेष्टित है एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं, अर्थात् जो लक्ष्मीजी दया से आर्द्र होते हुए तेज से देदीप्यमान है, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमल के सदृश गृह में निवास करने वाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं से सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहने वाली, सबकी रक्षा करनेवाली, भक्तों को आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता रहूँ, हे लक्ष्मी! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अतः मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गादि सभी तीर्थो से प्रार्थनापूर्वक मैं जल लाया हूँ, इस जल का स्पर्श सुख प्रदान करनेवाला है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूर के समान सुगन्धित, दूध के समान धवल, स्वाद में शीतल जल आचमन के लिए प्रस्तुत है, इस आचमनीय जल को देवि! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयः पात्र लेकर समर्पित करे।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गाय से उत्पन्न सभी को जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए अति पवित्र दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से उत्पन्न मधुर तथा अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही हे देव! हम आपके स्नान के लिए लाये हैं, इस दही को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मक्खन से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी आपको स्नान के लिए प्रदान करता हूँ, इस घृत को स्नान हेतु ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे।

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्प कणों से उत्पन्न सुन्दर स्वादवाला मधुर शहद, तेज और पुष्टि को प्रदान करने वाला, दिव्य शहद स्नान के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे।

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुरस से उत्पन्न शर्करा शुभ पुष्टि प्रदान करनेवाली, सभी प्रकार के मल का अपहरण करनेवाली है, दिव्य स्नान के लिए इस शर्करा को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध, दही, घी, मधु और शर्करा से युक्त पञ्चामृत दिव्य स्नान के लिए आपको समर्पित है, इस पञ्चामृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों के दिव्य जल आपके स्नान के लिए समर्पित है, इस जल को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथविल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली देवि! आपके तेज से वनस्पति विशेष बिना पुष्प के फल देनेवाला एक वृक्ष उत्पन्न हुआ (आपके हाथ से विल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ) उस विल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर-बाहर की दरिद्रता को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

हे लक्ष्मी! देवसखा अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला के सदृश यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् कुबेर का धन और यश दोनों ही मुझे मिले, मैं इस सुन्दर राष्ट्र में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः हे कुबेरदेव! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे।

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परं।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शीतवायु से रक्षा के लिए, लज्जा की सतत रक्षा के लिए, शरीर पर अलङ्करण के लिए, सदैव शान्ति प्रदान करने के लिए वस्त्र समर्पित करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥

भूख तथा प्यासरूपी मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मीजी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ, हे लक्ष्मी! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं, धन-धान्यादि से सदा परिपूर्ण, गौ-अश्वादि पशुओं की समृद्धि को देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

हे लक्ष्मी! तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, ब्रीहि इत्यादि अन्नो के रूप अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोज्यादि पदार्थों—इन समस्त पदार्थों को प्राप्त करूँ। सम्पत्ति-यश मुझमें आश्रय लेकर रहे अर्थात् मै धनवान् कीर्तिमान् बनूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई है। हे कर्दम! आप मुझमें अच्छी तरह वास करे। इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे।

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥

हरे-हरे दूर्वाङ्कुर जो अमृतत्व तथा मङ्गल प्रदान करनेवाले हैं आपके पूजा के लिए मैं लाया हूँ आप प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

जिस प्रकार कर्दम ऋषि की सन्तति (ख्याति) से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से चौदह रत्नों के बाद लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ है। उसी प्रकार जल देवता स्निग्ध एवं मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करे (पदार्थों की सुन्दरता लक्ष्मी ही है) लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत चार पुत्र है। जिसमें हे चिक्लीत! तुम मेरे गृह मे निवास करो, केवल तुम ही नही, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयाभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे।

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

अरुणकालिक प्रकाश के समान आभावाला सिन्दूर तथा जवाकुसुम के सदृश वर्ण (रंग) वाले सिन्दूर से हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हो तथा पूजित हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित करने के बाद धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित करने के बाद सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे। दीप देवता को समर्पित किया जाता है, न कि चारो ओर घुमाया जाता है।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

दशाङ्ग, गुग्गुल, चन्दन तथा अगुरु जैसे गन्धों से युक्त धूप भक्तिपूर्वक हम समर्पित करते है हे महादेवि! इस धूप को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के झुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्रशरीरवाली, पुष्टि को देनेवाली, पुष्टिस्वरूपा रक्त और पीत वर्णवाली, कमल की माला धारणकर जगत् को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

चारों प्रकार का सुन्दर सुस्वादु षड्रसों से युक्त नैवेद्य हे देवी! भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ, ग्रहण करके अपने में हमारी भक्ति को अचल करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे।

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य चन्दन तथा रजनी पुष्प से युक्त करोद्वर्तन हम प्रदान करते हैं, गणेश सहित मातृकाएँ प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे।

ॐ आर्द्रां यः करिर्णीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में भक्तो पर सर्वदा दयार्द्रचित्त रहें, समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली, यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण स्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करनेवाली सूर्यज्वा अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालन-पोषण करती है, अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलएलालवङ्गादिसहित-ताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाऽऽम्रं कपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! द्राक्षा (किसमिस), खर्जूर (खजूर), कदली (केला), पनस (कटहल), आम्र (आम), कपित्थ (कैथ), नारिकेल (नारियल), इक्षु (गन्ना), जम्बूफल (जामुन), आदि फलों को आपके प्रसन्नता के लिए लाया हूँ, प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे।

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्॥

पूजा के पूर्ण फल की समृद्धि के लिए स्वर्णमयी मुद्रा आपके सामने समर्पित भाव से स्थापित है, जिसे स्वीकार करके जिससे प्रसन्न मन होकर हमारे मनोरथ को पूर्ण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केले के वृक्ष के) गर्भ से उत्पन्न कर्पूर प्रदीपित करके आपकी आरती हम करते हैं, जिसे देखकर आप प्रसन्न हों तथा हमारी समस्त कामनापूर्ति के लिए वर प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः नीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे यहाँ उस जगत्विख्यात् लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कही न जानेवाली हों, उन लक्ष्मी को प्राप्त कराओ। जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े, और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ, अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

जो मनुष्य शुचिता को प्राप्तकर अर्थात् शुद्ध होकर लक्ष्मी की कामना से श्रद्धापूर्वक पवित्र मन और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम करे और उसके साथ लक्ष्मीसूक्त तथा श्रीसूक्त के पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन निरन्तर जप करता रहे।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशी फुल्लपद्मोपविष्टां,
वीणानागेन्द्रशंखाऽऽयुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशुनानामणियुतहृदयां सिन्धुपात्रं वहन्तिं,
वन्देऽभीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्॥

उदय कालिक चन्द्रमा के प्रकाश के समान खिले हुए कमल पर बैठी हुई, चारों हाथों में क्रमशः वीणा, नाग, शङ्ख, आयुध, परशु धारण की हुई, हृदय पर मुक्तामणि जटित हार धारण की हुई, अमृतपात्र को हाथ में धारण की हुई, प्रसन्न मन से मधुर-मधुर हास्य करती हुई, साधकों के मनोकामनाओं की पूर्ति करनेवाली भवानी की मैं वन्दना करता हूँ।

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनासयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बले सुविपुलं महिषासुरस्य॥२॥

हे देवि! हम पर प्रसन्न हों, परमात्मास्वरूपा आपके प्रसन्न होने पर जगत् का अभ्युदय होता है और क्रोध में भर जाने पर आप तत्काल कितने कुलों को नाश कर डालती हैं, महिषासुर की यह विशाल सेना क्षणभर में आपके कोप से नष्ट हो गयी है॥१॥

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से जल लेकर पूजन समर्पित करे।

अनेन पूजनेन श्रीमहाविद्या प्रीयतां न मम।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करे, पुष्पाञ्जलि प्रदानकर देवी के सहस्रनामों से पुष्पादिकों से अर्चन करे।

श्रीमहाविद्यासहस्रनामार्चनम्

श्रीगुरुभ्यो नमः

विनियोगः— **ॐ अस्य श्रीमहाविद्यासहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य महाकालभैरव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीमहाकालिकादेवता क्रीँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, हूँ कीलकं, श्रीमहाकालिकादेवताप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।**

देव्याध्यानम्—

शिवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्॥
मुण्डमालाधरां देवीं लोलजिह्वां दिगम्बराम्।
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं श्मशानालयवासिनीम्॥

शिव के ऊपर आरूढ, महाभीम, भयंकर दाँतों वाली, मन्द-मन्द हास्य करती हुई हास्य गुणोंवाली, चार भुजाओंवाली, चारों भुजाओं में खड्ग, मुण्ड, वर तथा अभय धारण किये हुए शिवा (शिव की शक्ति) मुण्ड की मालाओं को धारण की हुई, लटकती हुई जिह्वावाली, इस प्रकार श्मशान में निवास करनेवाली कालिका का ध्यान करता हूँ।

ॐ क्रीं महाकाल्यै नमः

१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्मशानकालिकायै नमः।

२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काल्यै नमः।

३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भद्रकाल्यै नमः।

४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कपालिन्यै नमः।

५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गुह्यकाल्यै नमः।

६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाकाल्यै नमः।

७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुरुकुल्लायै नमः।

८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विरोधिन्यै नमः।

९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कालिकाकालरात्र्यै नमः।

१०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाकालनितम्बिन्यै नमः।

११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कालभैरवभार्यायै नमः।

१२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलवर्त्मप्रकाशिन्यै नमः।

१३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामदाकामिन्यै नमः।

१४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काम्यायै नमः।

१५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कमनीयायै नमः।

१६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुभाविनीकस्तूरीरसनीलाङ्ग्यै नमः।

१७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुञ्जरेश्वरगामिन्यै नमः।

१८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ककारवर्णसर्वाङ्ग्यै नमः।

१९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामिनीकामसुन्दर्यै नमः।

२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामार्तायै नमः।

२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामरूपायै नमः।

२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामधेन्वे नमः।

२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कलावत्यै नमः।

२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कान्ताकामस्वरूपायै नमः।

२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामाख्यायै नमः।

२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलपालिन्यै नमः।

२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलीनायै नमः।

२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलवत्यम्बायै नमः।

२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुर्गायै नमः।

३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुर्गार्तिनाशिन्यै नमः।

३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कौमार्यै नमः।

३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलजायै नमः।

३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कृष्णायै नमः।

३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कृष्णदेहायै नमः।

३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कृशोदर्यै नमः।

३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कृशाङ्ग्यै नमः।

३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलिशाङ्ग्यै नमः।

३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्रीँकार्यै नमः।
३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कमलाकामकलायै नमः।
४०. ॐ ऐँ ह्रीं श्रीँ क्लीँ करालस्थायै नमः।
४१. ॐ ऐँ ह्रीं श्रीँ क्लीँ कराल्यै नमः।
४२. ॐ ऐँ ह्रीं श्रीँ क्लीँ कुलकान्तायै नमः।
४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अपराजितायै नमः।
४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ उग्रायै नमः।
४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ उग्रप्रभायै नमः।
४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दीप्तायै नमः।
४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विप्रचित्तायै नमः।
४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाबलायै नमः।
४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नीलायै नमः।
५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घनायै नमः।
५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बलाकायै नमः।
५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मात्रायै नमः।
५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मुद्रायै नमः।
५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिताऽसितायै नमः।
५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्राह्म्यै नमः।
५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नारायण्यै नमः।
५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भद्रायै नमः।
५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुभद्रायै नमः।
५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भक्तवत्सलायै नमः।
६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ माहेश्वर्यै नमः।
६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चामुण्डायै नमः।
६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वाराह्यै नमः।
६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नारसिंहिकायै नमः।
६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वज्राङ्ग्यै नमः।
६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वज्रकंकाल्यै नमः।
६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नृमुण्डायै नमः।

६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्रग्विण्यै नमः।
६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवायै नमः।
६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नरमुण्डमालिन्यै नमः।
७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गलद्रक्तविभूषणायै नमः।
७१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तचन्दनसिक्ताङ्ग्यै नमः।
७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिन्दूरारुणमस्तकायै नमः।
७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घोररूपायै नमः।
७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घोरदंष्ट्रायै नमः।
७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घोराघोरतरायै नमः।
७६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुभायै नमः।
७७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महादंष्ट्रायै नमः।
७८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महामायायै नमः।
७९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुदतीयुगदन्तुरायै नमः।
८०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुलोचनायै नमः।
८१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विरूपाक्ष्यै नमः।
८२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विशालाक्ष्यै नमः।
८३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिलोचनायै नमः।
८४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शारदेन्दुप्रसन्नास्यायै नमः।
८५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फुरत्स्मेराम्बुजेक्षणायै नमः।
८६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अट्टहासायै नमः।
८७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रसन्नास्यायै नमः।
८८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्मेरवक्त्रायै नमः।
८९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुभाषिण्यै नमः।
९०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रसन्नायै नमः।
९१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पद्मवदनायै नमः।
९२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्मितास्यायै नमः।
९३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रियभाषिण्यै नमः।
९४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कोटराक्ष्यै नमः।
९५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलश्रेष्ठायै नमः।

९६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महतीबहुभाषिण्यै नमः।

९७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुमत्यै नमः।

९८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमतिश्चण्डायै नमः।

९९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चण्डमुण्डातिवेगिन्यै नमः।

१००. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रचण्डायै नमः।

१०१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चण्डिकायै नमः।

१०२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चण्ड्यै नमः।

१०३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चर्चिकायै नमः।

१०४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चण्डवेगिन्यै नमः।

१०५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुकेश्यै नमः।

१०६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मुक्तकेश्यै नमः।

१०७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दीर्घकेश्यै नमः।

१०८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महत्कुचायै नमः।

१०९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रेतदेहायै नमः।

११०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कर्णपूरायै नमः।

१११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रेतपाण्यै नमः।

११२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुमेखलायै नमः।

११३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रेतासनायै नमः।

११४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रियप्रेतायै नमः।

११५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रेतभूमिकृतालयायै नमः।

११६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्मशानवासिन्यै नमः।

११७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुण्यापुण्यदायै नमः।

११८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलपण्डितायै नमः।

११९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुण्यालयायै-पुण्यदेहायै नमः।

१२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुण्यश्लोकपावन्यै नमः।

१२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुत्रायै नमः।

१२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पवित्रायै नमः।

१२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ परमापुरापुण्यविभूषणायै नमः।

१२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुण्यनाम्न्यै नमः।

१२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीतिहरायै नमः।
१२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वरदायै नमः।
१२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खड्गपाण्यै नमः।
१२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नृमुण्डहस्तायै नमः।
१२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शस्तायै नमः।
१३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छिन्नमस्तायै नमः।
१३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुनासिकायै नमः।
१३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दक्षिणायै नमः।
१३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्यामलायै नमः।
१३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्यामायै नमः।
१३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शान्तायै नमः।
१३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पीनोन्नतस्तन्यै नमः।
१३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दिगम्बरायै नमः।
१३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घोररावायै नमः।
१३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सृक्कान्तायै नमः।
१४०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तवाहिन्यै नमः।
१४१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घोरतरायै नमः।
१४२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवायै नमः।
१४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खड्गाविशंकायै नमः।
१४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मदनातुरायै नमः।
१४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मत्ताप्रमत्तायै नमः।
१४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रमदायै नमः।
१४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुधासिन्धुनिवासिन्यै नमः।
१४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अतिमत्तायै नमः।
१४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महामत्तायै नमः।
१५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वाकर्षणकारिण्यै नमः।
१५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गीतप्रियायै नमः।
१५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वाद्यरतायै नमः।
१५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रेतनृत्यपरायणायै नमः।

१५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चतुर्भुजायै नमः।

१५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दशभुजायै नमः।

१५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अष्टादशभुजायै नमः।

१५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कात्यायन्यै नमः।

१५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जगन्मात्रे नमः।

१५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जगत्यै नमः।

१६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ परमेश्वर्यै नमः।

१६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जगद्बन्धुजगद्धात्र्यै नमः।

१६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जगदानन्दकारिण्यै नमः।

१६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जगन्मयीहैमवत्यै नमः।

१६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महामायामहामहायै नमः।

१६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नागयज्ञोपवीताङ्ग्यै नमः।

१६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नागिन्यै नमः।

१६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नागशायिन्यै नमः।

१६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नागकन्यायै नमः।

१६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ देवकन्यायै नमः।

१७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गन्धर्व्यै नमः।

१७१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ किन्नरेश्वर्यै नमः।

१७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मोहरात्र्यै नमः।

१७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महारात्र्यै नमः।

१७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दारुणायै नमः।

१७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भासुराम्बरायै नमः।

१७६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विद्याधर्यै नमः।

१७७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वसुमत्यै नमः।

१७८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यक्षिण्यै नमः।

१७९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ योगिन्यै नमः।

१८०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जराराक्षस्यै नमः।

१८१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ डाकिन्यै नमः।

१८२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेदमय्यै नमः।

१८३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेदविभूषणायै नमः।
१८४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्रुत्यै-स्मृत्यै नमः।
१८५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाविद्यायै नमः।
१८६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गुहविद्यायै नमः।
१८७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुरातन्यै नमः।
१८८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चिन्त्याऽचिन्त्यायै नमः।
१८९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वधायै-स्वाहायै नमः।
१९०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निद्रायै-तन्द्रायै नमः।
१९१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पार्वत्यै नमः।
१९२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अपर्णायै नमः।
१९३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निश्चलायै नमः।
१९४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोलायै नमः।
१९५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वविद्यायै नमः।
१९६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तपस्विन्यै नमः।
१९७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गङ्गायै नमः।
१९८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काश्यै नमः।
१९९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शच्यै नमः।
२००. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सीतायै नमः।
२०१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सत्यै नमः।
२०२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सत्यपरायणायै नमः।
२०३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नीत्यै-सुनीत्यै नमः।
२०४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुरुच्यै नमः।
२०५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तुष्ट्यै-पुष्ट्यै नमः।
२०६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धृतिक्षमायै नमः।
२०७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वाण्यै नमः।
२०८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बुद्ध्यै नमः।
२०९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महालक्ष्म्यै नमः।
२१०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लक्ष्म्यै नमः।
२११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नीलसरस्वत्यै नमः।

२१२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्रोतस्वतीसरस्वत्यै नमः।
२१३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मातङ्ग्यै नमः।
२१४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विजयायै नमः।
२१५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जयायै नमः।
२१६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नदीसिन्धुसर्वमय्यै नमः।
२१७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ताराशून्यनिवासिन्यै नमः।
२१८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुद्धातरङ्गिण्यै नमः।
२१९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मेधायै नमः।
२२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लाकिन्यै नमः।
२२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बहुरूपिण्यै नमः।
२२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थूलायै-सूक्ष्मायै-सूक्ष्मतरायै नमः।
२२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगवत्यनुरूपिण्यै नमः।
२२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ परमाणुस्वरूपायै नमः।
२२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चिदानन्दस्वरूपिण्यै नमः।
२२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सदानन्दमय्यै नमः।
२२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सत्यायै नमः।
२२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वानन्दस्वरूपिण्यै नमः।
२२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुनन्दायै नमः।
२३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नन्दिन्यै नमः।
२३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्तुत्यायै नमः।
२३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्तवनीयायै नमः।
२३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वभाविन्यै नमः।
२३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रंगिण्यै-टंगिन्यै नमः।
२३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चित्रायै-विचित्रायै-चित्ररूपिण्यै नमः।
२३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पद्मायै-पद्मालयायै नमः।
२३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पद्ममुख्यै नमः।
२३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पद्मविभूषणायै नमः।
२३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ डाकिन्यै नमः।
२४०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शाकिन्यै नमः।

२४१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षान्तायै नमः।
२४२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राकिन्यै नमः।
२४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रुधिरप्रियायै नमः।
२४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भ्रान्त्यै नमः।
२४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भवान्यै नमः।
२४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रुद्राण्यै नमः।
२४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मृडान्यै नमः।
२४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शत्रुमर्दिन्यै नमः।
२४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ उपेन्द्राण्यै नमः।
२५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महेन्द्राण्यै नमः।
२५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्योत्स्नायै नमः।
२५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चन्द्रस्वरूपिण्यै नमः।
२५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सूर्यात्मिकायै नमः।
२५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रुद्रपत्न्यै नमः।
२५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रौद्र्यै नमः।
२५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्त्रियै नमः।
२५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रकृत्यै नमः।
२५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुमान्यै नमः।
२५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शक्तिर्मुक्तिर्मातायै नमः।
२६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भक्तिर्मुक्त्यै नमः।
२६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पतिव्रतायै नमः।
२६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वेश्वर्यै नमः।
२६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वमातासर्वाण्यै नमः।
२६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हरवल्लभायै नमः।
२६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वज्ञायै नमः।
२६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिद्धिदायै नमः।
२६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिद्धायै नमः।
२६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भव्याभव्यायै नमः।
२६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भयापहायै नमः।

२७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कर्त्रीहर्त्रीपालयित्र्यै नमः।
२७१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शर्वर्यै नमः।
२७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तामस्यै नमः।
२७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दयायै नमः।
२७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तमिस्रातामस्यै नमः।
२७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थाणुःस्थिराधीरायै नमः।
२७६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तपस्विन्यै नमः।
२७७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चार्वङ्ग्यै नमः।
२७८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चञ्चलायै नमः।
२७९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोलजिह्वायै नमः।
२८०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चारुचरित्रिण्यै नमः।
२८१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रपायै-त्रपावत्यै नमः।
२८२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लज्जायै-विलज्जायै नमः।
२८३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हरयौवन्यै नमः।
२८४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सत्यवत्यै-धर्मनिष्ठायै-श्रेष्ठायै नमः।
२८५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निष्ठुरवादिन्यै नमः।
२८६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गरिष्ठादुष्टसंहर्त्र्यै नमः।
२८७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विशिष्टाश्रेयस्यै नमः।
२८८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घृणाभीमाभयानकायै नमः।
२८९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीमनादिन्यै नमः।
२९०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीमप्रभावत्यै नमः।
२९१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वागीश्वर्यै नमः।
२९२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्रियै नमः।
२९३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यमुनायै नमः।
२९४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यज्ञकर्त्र्यै नमः।
२९५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यजुःप्रियायै नमः।
२९६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ऋक्सामाथर्वनिलयायै नमः।
२९७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रागिण्यै नमः।
२९८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शोभनायै नमः।

२९९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुरायै नमः।
३००. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कलकण्ठ्यै नमः।
३०१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कम्बुकण्ठ्यै नमः।
३०२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेणुवीणापरायणायै नमः।
३०३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वंशिन्यै नमः।
३०४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वैष्णव्यै नमः।
३०५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वेच्छायै नमः।
३०६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धात्र्यै नमः।
३०७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिजगदीश्वर्यै नमः।
३०८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मधुमत्यै नमः।
३०९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुण्डलिन्यै नमः।
३१०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ऋद्ध्यै नमः।
३११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुद्ध्यै नमः।
३१२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुचिस्मितायै नमः।
३१३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रम्भायै नमः।
३१४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ उर्वश्यै नमः।
३१५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रत्यै नमः।
३१६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रामायै नमः।
३१७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रोहिण्यै नमः।
३१८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रेवत्यै नमः।
३१९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मखायै नमः।
३२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शंखिन्यै नमः।
३२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चक्रिण्यै नमः।
३२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कृष्णायै नमः।
३२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गदिन्यै नमः।
३२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पद्मिन्यै नमः।
३२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शूलिन्यै नमः।
३२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ परिघास्त्रायै नमः।
३२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पाशिन्यै नमः।

३२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शार्ङ्गपाणिन्यै नमः।
३२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिनाकधारिण्यै नमः।
३३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धूम्रायै नमः।
३३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुरभ्यै नमः।
३३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वनमालिन्यै नमः।
३३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रथिन्यै नमः।
३३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समरप्रीतायै नमः।
३३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेगिन्यै नमः।
३३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रणपण्डितायै नमः।
३३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जडिन्यै नमः।
३३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वज्रिण्यै नमः।
३३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नीललावण्याम्बुदचन्द्रिकायै नमः।
३४०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बलिप्रियायै नमः।
३४१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सदापूज्यायै नमः।
३४२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दैत्येन्द्रमथिन्यै नमः।
३४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महिषासुरसंहर्त्र्यै नमः।
३४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामिन्यै नमः।
३४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तदन्तिकायै नमः।
३४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तपायै नमः।
३४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रुधिराक्ताङ्ग्यै नमः।
३४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तखर्परधारिण्यै नमः।
३४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तप्रियायै नमः।
३५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मांसरुच्यै नमः।
३५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वासवासक्तायै नमः।
३५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मानसायै नमः।
३५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गलच्छोणितायै नमः।
३५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मुण्डाल्यै नमः।
३५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कण्ठमालायै नमः।
३५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विभूषणायै नमः।

३५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शवासनायै नमः।
३५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चितान्तस्थायै नमः।
३५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महेश्यै नमः।
३६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वृषवाहिन्यै नमः।
३६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ व्याघ्रत्वगम्बरायै नमः।
३६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चीनचैलिन्यै नमः।
३६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिंहवाहिन्यै नमः।
३६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वामदेव्यै नमः।
३६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महादेव्यै नमः।
३६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गौर्यै नमः।
३६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वज्ञभामिन्यै नमः।
३६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बालिकायै नमः।
३६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तरुण्यै नमः।
३७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वृद्धायै नमः।
३७१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वृद्धमातायै नमः।
३७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जरातुरायै नमः।
३७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुभ्रूर्विलासिन्यै नमः।
३७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्रह्मवादिन्यै नमः।
३७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्राह्मिण्यै नमः।
३७६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सत्यै नमः।
३७७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुप्तवत्यै नमः।
३७८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चित्रलेखायै नमः।
३७९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोपामुद्रायै नमः।
३८०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुरेश्वर्यै नमः।
३८१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अमोघायै नमः।
३८२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अरुन्धत्यै नमः।
३८३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तीक्ष्णायै नमः।
३८४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भोगवत्यनुरागिण्यै नमः।
३८५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मन्दाकिन्यै नमः।

३८६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मन्दहासायै नमः।
३८७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्वालामुख्याऽसुरान्तकायै नमः।
३८८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मानदायै नमः।
३८९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मानिन्यै नमः।
३९०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मान्यायै नमः।
३९१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ माननीयायै नमः।
३९२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मदनातुरायै नमः।
३९३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मदुरामेदुरोन्मादायै नमः।
३९४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मेध्यायै नमः।
३९५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साध्यायै नमः।
३९६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रसादिन्यै नमः।
३९७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुमध्यायै-अनन्तगुणिन्यै नमः।
३९८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वलोकोत्तमोत्तमायै नमः।
३९९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जयदायै नमः।
४००. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जित्वर्यै नमः।
४०१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जैत्र्यै नमः।
४०२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जयश्रियायै नमः।
४०३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जयशालिन्यै नमः।
४०४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुखदायै नमः।
४०५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुभदायै नमः।
४०६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सत्यायै नमः।
४०७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सभासंक्षोभकारिण्यै नमः।
४०८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवदूत्यै नमः।
४०९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूतमत्यै नमः।
४१०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विभूत्यै नमः।
४११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूषणाननायै नमः।
४१२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कौमार्यै नमः।
४१३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलजायै नमः।
४१४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुन्त्यै नमः।

४१५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलस्त्रियै नमः।
४१६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलपालिकायै नमः।
४१७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कीर्त्यै नमः।
४१८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यशस्विन्यै नमः।
४१९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूषायै नमः।
४२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूष्टायै नमः।
४२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूतपतिप्रियायै नमः।
४२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुगुणायै नमः।
४२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निर्गुणायै नमः।
४२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अधिष्ठायै नमः।
४२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निष्ठायै नमः।
४२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काष्ठायै नमः।
४२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रकाशिन्यै नमः।
४२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धनिष्ठायै नमः।
४२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धनदायै नमः।
४३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धान्यायै नमः।
४३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वसुधायै नमः।
४३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुप्रकाशिन्यै नमः।
४३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ उर्व्यै नमः।
४३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गुर्व्यै नमः।
४३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गुरुश्रेष्ठायै नमः।
४३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ षड्गुणायै नमः।
४३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिगुणात्मिकायै नमः।
४३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राजामाज्ञायै नमः।
४३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाप्राज्ञायै नमः।
४४०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुगुणायै नमः।
४४१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निर्गुणात्मिकायै नमः।
४४२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाकुलिनायै नमः।
४४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निष्कामायै नमः।

४४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सकामायै नमः।
४४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामजीवनायै नमः।
४४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामदेवकलायै नमः।
४४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रामायै-अभिरामायै नमः।
४४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवनर्तक्यै नमः।
४४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चिन्तामण्यै नमः।
४५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कल्पलतायै नमः।
४५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जाग्रत्यै नमः।
४५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दीनवत्सलायै नमः।
४५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कार्तिक्यै नमः।
४५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कृत्तिकायै नमः।
४५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कृत्यायै नमः।
४५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अयोध्यायै नमः।
४५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विषमायै नमः।
४५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समायै नमः।
४५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुमन्त्रायै नमः।
४६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मन्त्रिण्यै नमः।
४६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घूर्णायै नमः।
४६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ह्लादिन्यै नमः।
४६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्लेशनाशिन्यै नमः।
४६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रैलोक्यजनन्यै नमः।
४६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हृष्टायै नमः।
४६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निर्मांसायै नमः।
४६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अमलरूपिण्यै नमः।
४६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तटाकनिम्नजठरायै नमः।
४६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुष्कमांसास्थिमालिन्यै नमः।
४७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अवन्त्यै नमः।
४७१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मधुरायै नमः।
४७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हृद्यायै नमः।

४७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रैलोक्यायै नमः।
४७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पावनक्षमायै नमः।
४७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ व्यक्तायै-अव्यक्तायै-अनेकमूर्त्यै नमः।
४७६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शारभ्यै नमः।
४७७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीमनादिन्यै नमः।
४७८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षेमंकर्यै नमः।
४७९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शाङ्कर्यै नमः।
४८०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वसम्मोहकारिण्यै नमः।
४८१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ऊद्‌र्ध्वायै नमः।
४८२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तेजस्विन्यै नमः।
४८३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्लिन्नायै नमः।
४८४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महातेजस्विन्यै नमः।
४८५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अद्वैतायै नमः।
४८६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ योगिन्यै नमः।
४८७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पूज्यायै नमः।
४८८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुरभ्यै नमः।
४८९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वमंगलायै नमः।
४९०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वप्रियंकर्यै नमः।
४९१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भोग्यायै नमः।
४९२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धनिनीपिशिताशनायै नमः।
४९३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भयंकर्यै नमः।
४९४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पापहरायै नमः।
४९५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निष्कलंकायै नमः।
४९६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वशंकर्यै नमः।
४२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ आशायै नमः।
४९८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तृष्णायै नमः।
४९९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चन्द्रकलायै नमः।
५००. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निद्राकोटिसमप्रभायै नमः।
५०१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सहस्त्रसूर्यसंकाशायै नमः।

५०२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चन्द्रकोटिसमप्रभायै नमः।
५०३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निशुम्भशुम्भसंहर्त्र्यै नमः।
५०४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तबीजविनाशिन्यै नमः।
५०५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मधुकैटभसंहर्त्र्यै नमः।
५०६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महिषासुरघातिन्यै नमः।
५०७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वह्निमण्डलमध्यस्थायै नमः।
५०८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वसत्त्वप्रतिष्ठितायै नमः।
५०९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वाचारवत्यै नमः।
५१०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वदेवकन्यायै नमः।
५११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अतिदेवतायै नमः।
५१२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दक्षकन्यायै नमः।
५१३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दक्षयज्ञनाशिन्यै नमः।
५१४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुर्गतारिण्यै नमः।
५१५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ इज्यायै नमः।
५१६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पूज्यायै नमः।
५१७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विभाभूत्यै नमः।
५१८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सत्कीर्तिर्ब्रह्मचारिण्यै नमः।
५१९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रंभोरुश्चतुरायै नमः।
५२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राकायै नमः।
५२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जयन्त्यै नमः।
५२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वरुणायै नमः।
५२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुह्वै नमः।
५२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मनस्विन्यै नमः।
५२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ देवमातायै नमः।
५२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यशस्यायै नमः।
५२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्रह्मवादिन्यै नमः।
५२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिद्धिदायै नमः।
५२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वृद्धिदायै नमः।
५३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वृद्ध्यै नमः।

५३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वाद्यायै नमः।
५३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वदायिन्यै नमः।
५३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ आधाररूपिण्यै नमः।
५३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धेयायै नमः।
५३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मूलाधारनिवासिन्यै नमः।
५३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ आज्ञायै नमः।
५३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रज्ञायै नमः।
५३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पूर्णमनायै नमः।
५३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चन्द्रमुख्यनुकूलिन्यै नमः।
५४०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वावदूकायै नमः।
५४१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निम्ननाभ्यै नमः।
५४२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सत्यसन्धायै नमः।
५४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दृढव्रतायै नमः।
५४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ आन्वीक्षिक्यै नमः।
५४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दण्डनीतिस्त्रय्यै नमः।
५४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिदिवसुन्दर्यै नमः।
५४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्वालिन्यै नमः।
५४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्वलिन्यै नमः।
५४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शैलतनयायै नमः।
५५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विन्ध्यवासिन्यै नमः।
५५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रत्ययायै नमः।
५५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खेचर्यै नमः।
५५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धैर्यायै नमः।
५५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तुरीयायै नमः।
५५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विमलातुरायै नमः।
५५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रगल्भायै नमः।
५५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वारुण्यै नमः।
५५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षमायै नमः।
५५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दर्शिन्यै नमः।

५६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः।
५६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भक्त्यै नमः।
५६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिद्ध्यै नमः।
५६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सदाप्राप्त्यै नमः।
५६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्राकाम्यायै नमः।
५६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महिमायै नमः।
५६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अणिमायै नमः।
५६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ईक्षासिद्ध्यै नमः।
५६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वशित्वायै नमः।
५६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ईशित्वायै नमः।
५७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ऊर्ध्वनिवासिन्यै नमः।
५७१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लघिमायै नमः।
५७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सावित्र्यै नमः।
५७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गायत्र्यै नमः।
५७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भुवनेश्वर्यै नमः।
५७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मनोहरायै नमः।
५७६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चित्तायै नमः।
५७७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दिव्यायै नमः।
५७८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ देव्युदारायै नमः।
५७९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मनोरमायै नमः।
५८०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिङ्गलायै नमः।
५८१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कपिलायै नमः।
५८२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जिह्वायै नमः।
५८३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रसज्ञायै नमः।
५८४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रसिकायै नमः।
५८५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रसायै नमः।
५८६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुषुम्नायै नमः।
५८७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ इडायै नमः।
५८८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ योगवत्यै नमः।

५८९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गान्धर्यै नमः।
५९०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नवकान्तकायै नमः।
५९१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पाञ्चाल्यै नमः।
५९२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रुक्मिण्यै नमः।
५९३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राधायै नमः।
५९४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ आराध्यायै नमः।
५९५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीमायै नमः।
५९६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राधिकायै नमः।
५९७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अमृतायै नमः।
५९८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तुलसीवृन्दायै नमः।
५९९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कैटभ्यै नमः।
६००. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कपटेश्वर्यै नमः।
६०१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ उग्रचण्डेश्वर्यै नमः।
६०२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वीरजनन्यै नमः।
६०३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वीरसुन्दर्यै नमः।
६०४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ उग्रतारायै नमः।
६०५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यशोदायै नमः।
६०६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ देवक्यै नमः।
६०७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ देवमानितायै नमः।
६०८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निरञ्जनायै नमः।
६०९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चित्रदेव्यै नमः।
६१०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्रोधिन्यै नमः।
६११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलदीपिकायै नमः।
६१२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलरागीश्वर्यै नमः।
६१३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्वालायै नमः।
६१४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मात्रिकायै नमः।
६१५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ द्राविण्यै नमः।
६१६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ द्रवायै नमः।
६१७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ योगीश्वर्यै नमः।

६१८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महामायै नमः।
६१९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भ्रामर्यै नमः।
६२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बिन्दुरूपिण्यै नमः।
६२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दूत्यै नमः।
६२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्राणेश्वर्यै नमः।
६२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गुप्तायै नमः।
६२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बहुलायै नमः।
६२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ डामर्यै नमः।
६२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रभायै नमः।
६२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुब्जिकायै नमः।
६२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्ञानिन्यै नमः।
६२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्येष्ठायै नमः।
६३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भुशुण्ड्यै नमः।
६३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रकटाकृतिः द्राविण्यै नमः।
६३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गोपिन्यै नमः।
६३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मायायै नमः।
६३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामबीजेश्वर्यै नमः।
६३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रियायै नमः।
६३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शाकम्भर्यै नमः।
६३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कोकनदायै नमः।
६३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुसत्यायै नमः।
६३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तिलोत्तमायै नमः।
६४०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अमेयायै नमः।
६४१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विक्रमायै नमः।
६४२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्रूरायै नमः।
६४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सम्यक्शीलायै नमः।
६४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिविक्रमायै नमः।
६४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वस्तिर्हव्यवाहायै नमः।
६४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रीतीरुक्मायै नमः।

६४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धूम्रार्चिरंगदायै नमः।
६४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तपिन्यै नमः।
६४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तापिन्यै नमः।
६५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विश्वायै नमः।
६५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भोगदायै नमः।
६५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धारिण्यै नमः।
६५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धरायै नमः।
६५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिखण्डायै नमः।
६५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रोधिन्यै नमः।
६५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वश्यायै नमः।
६५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सकलायै नमः।
६५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शब्दरूपिण्यै नमः।
६५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बीजरूपायै नमः।
६६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महामुद्रायै नमः।
६६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वशिन्यै नमः।
६६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ योगरूपिण्यै नमः।
६६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अनङ्गायै नमः।
६६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुसुमाऽनङ्गायै नमः।
६६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मेखलाऽनङ्गरूपिण्यै नमः।
६६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अनङ्गमदनायै नमः।
६६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अनङ्गरेखायै नमः।
६६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अनङ्गकुशेश्वर्यै नमः।
६६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अनङ्गमालिन्यै नमः।
६७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामेश्वर्यै नमः।
६७१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वार्थसाधिकायै नमः।
६७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वतन्त्रमय्यै नमः।
६७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वमोदिन्यायै नमः।
६७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अरानन्दरूपिण्यै नमः।
६७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वज्रेश्वर्यै नमः।

६७६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं जयिन्यै नमः।
६७७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वदुःखक्षयंकर्यै नमः।
६७८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं षडङ्गयुवत्यै नमः।
६७९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं योगयुक्तायै नमः।
६८०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ज्वालांशुमालिन्यै नमः।
६८१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं दुराशयायै नमः।
६८२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं दुराधारायै नमः।
६८३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्जयायै नमः।
६८४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गरूपिण्यै नमः।
६८५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं दुरन्तायै नमः।
६८६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं दुष्कृतिहरायै नमः।
६८७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्ध्येयायै नमः।
६८८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं दुरतिक्रमायै नमः।
६८९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हंसेश्वर्यै नमः।
६९०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिलोकस्थायै नमः।
६९१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं शाकम्भर्यनुरागिण्यै नमः।
६९२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिकोणनिलयायै नमः।
६९३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नित्यायै नमः।
६९४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं परमामृतायै नमः।
६९५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं रञ्जितायै नमः।
६९६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं महाविद्येश्वर्यै नमः।
६९७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्वेतायै नमः।
६९८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं भेरुण्डायै नमः।
६९९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कुलसुन्दर्यै नमः।
७००. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं त्वरितायै नमः।
७०१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं भक्तिसंयुक्तायै नमः।
७०२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं भक्तिवश्यायै नमः।
७०३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सनातन्यै नमः।
७०४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं भक्तानन्दमय्यै नमः।

७०५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भक्तभावितायै नमः।
७०६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भक्तशंकर्यै नमः।
७०७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वसौन्दर्यनिलयायै नमः।
७०८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वसौभाग्यशालिन्यै नमः।
७०९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वसंभोगभवनायै नमः।
७१०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वसौख्यानुरूपिण्यै नमः।
७११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमारीपूजनरतायै नमः।
७१२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमारीव्रतचारिण्यै नमः।
७१३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमारीभक्तिसुखिन्यै नमः।
७१४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमारीरूपधारिण्यै नमः।
७१५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमारीपूजकप्रीतायै नमः।
७१६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमारीप्रीतिदप्रियायै नमः।
७१७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमारीसेवकासंगायै नमः।
७१८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमारीसेवकालयायै नमः।
७१९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ आनन्दभैरव्यै नमः।
७२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बालभैरव्यै नमः।
७२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वटुकभैरव्यै नमः।
७२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्मशानभैरव्यै नमः।
७२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कालभैरव्यै नमः।
७२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुरभैरव्यै नमः।
७२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाभैरवपत्न्यै नमः।
७२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ परमानन्दभैरव्यै नमः।
७२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुरानन्दभैरव्यै नमः।
७२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ उन्मादानन्दभैरव्यै नमः।
७२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यज्ञानन्दभैरव्यै नमः।
७३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तरुणभैरव्यै नमः।
७३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्ञानानन्दभैरव्यै नमः।
७३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अमृतानन्दभैरव्यै नमः।
७३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाभयंकर्यै नमः।

७३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तीव्रातीव्रवेगायै नमः।

७३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तपस्विन्यै नमः।

७३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिपुरापरमेशान्यै नमः।

७३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुन्दरीपुरसुन्दर्यै नमः।

७३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिपुरेश्यै नमः।

७३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पञ्चदश्यै नमः।

७४०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पञ्चमीपुरवासिन्यै नमः।

७४१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महासप्तदश्यै नमः।

७४२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ षोडशीत्रिपुरेश्वर्यै नमः।

७४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महांकुशस्वरूपमहाचक्रेश्वर्यै नमः।

७४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नवचक्रेश्वर्यै नमः।

७४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चक्रेश्वर्यै नमः।

७४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिपुरमालिन्यै नमः।

७४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राजचक्रेश्वर्यै नमः।

७४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राज्ञीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।

७४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिन्दूरपूररुचिरायै नमः।

७५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः।

७५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः।

७५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तारक्तवस्त्रोत्तरीयकायै नमः।

७५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यवायावकसिन्दूररक्तप्रभायै नमः।

७५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यवायावकसिन्दूररक्तचन्दनरूपधारिण्यै नमः।

७५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चमरीबालकुटिलायै नमः।

७५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निर्मलश्यामकेशिन्यै नमः।

७५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वज्रमौक्तिकरत्नाढ्यकिरीटकुण्डलोज्ज्वलायै नमः।

७५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रत्नकुण्डलसंयुक्तायै नमः।

७५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फुरद्गण्डमनोरमायै नमः।

७६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुञ्जरेश्वरायै नमः।

७६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुम्भोत्थायै नमः।

७६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मुक्तरञ्जितनासिकायै नमः।
७६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मुक्ताविद्रुममाणिक्यहाराद्यस्तनमण्डलायै नमः।
७६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सूर्यकान्तेन्दुकान्ताढ्यायै नमः।
७६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्पर्शाश्मगलभूषणायै नमः।
७६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बीजपूरस्फुरदायै नमः।
७६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बीजदन्तपंक्तिरनुत्तमायै नमः।
७६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामकोदण्डजाभग्नायै नमः।
७६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भ्रूकटाक्षप्रवर्षिण्यै नमः।
७७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मातङ्गकुम्भवक्षोजायै नमः।
७७१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लसत्कनकदक्षिणायै नमः।
७७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मनोज्ञशष्कुलीकर्णायै नमः।
७७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हंसीगतिविडम्बिन्यै नमः।
७७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पद्मरागाङ्गदद्योतद्दोश्चतुष्कप्रकाशिन्यै नमः।
७७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कर्पूरागरुकस्तूरिकुङ्कुमद्रवलेपितायै नमः।
७७६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विचित्ररत्नपृथिवीकल्पशाखितलस्थितायै नमः।
७७७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रत्नदीपस्फुरद्रत्नसिंहासननिवासिन्यै नमः।
७७८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ षट्चक्रभेदनकरीपरमानन्दरूपिण्यै नमः।
७७९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सहस्त्रदलपद्मान्तायै नमः।
७८०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चन्द्रमण्डलवर्तिन्यै नमः।
७८१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्रह्मरूपायै नमः।
७८२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवक्रोडायै नमः।
७८३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नानासुखविलासिन्यै नमः।
७८४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हरविष्णुविरिञ्चेन्द्रगृहनायकसेवितायै नमः।
७८५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवाशैवायै नमः।
७८६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रुद्राण्यै नमः।
७८७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवनादिन्यै नमः।
७८८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महादेवप्रियादेव्यै नमः।
७८९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अनङ्गमेखलायै नमः।
७९०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ डाकिन्यै-योगिन्यै नमः।

७९१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ उपयोगिन्यै नमः।
७९२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ माहेश्वर्यै नमः।
७९३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वैष्णव्यै नमः।
७९४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भ्रामर्यै नमः।
७९५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवरूपिण्यै नमः।
७९६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अलम्बुसायै नमः।
७९७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भोगवत्यै नमः।
७९८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्रोधरूपायै नमः।
७९९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुमेखलायै नमः।
८००. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गान्धारीहस्तिजिह्वायै नमः।
८०१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ इडायै नमः।
८०२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुभङ्कर्यै नमः।
८०३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिङ्गलादक्षसूत्र्यै नमः।
८०४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुषुम्नायै नमः।
८०५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गन्धिन्यै नमः।
८०६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगात्मिकायै-भगाधारायै नमः।
८०७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगेशीभगरूपिण्यै नमः।
८०८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गाख्यकामेश्यै नमः।
८०९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिपुरभैरव्यै नमः।
८१०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गगीतिसुगीत्यै नमः।
८११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गस्थलिङ्गरूपधारिण्यै नमः।
८१२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गमालायै नमः।
८१३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गभवायै नमः।
८१४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गालिङ्गपावक्यै नमः।
८१५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगवतीकौशिक्यै नमः।
८१६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रेमरूपप्रियंवदायै नमः।
८१७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गृध्ररूपिण्यै नमः।
८१८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवारूपायै नमः।
८१९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चक्रेशीचक्ररूपधारिण्यै नमः।

८२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ आत्मयोन्यै नमः।
८२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्रह्मयोन्यै नमः।
८२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जगद्योन्यै नमः।
८२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अयोनिजायै नमः।
८२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगरूपभगस्थायै नमः।
८२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगिनीभगमालिन्यै नमः।
८२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगात्मिकाभगाधाररूपिण्यै नमः।
८२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगशालिन्यै नमः।
८२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गाभिधायिन्यै नमः।
८२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गप्रियायै नमः।
८३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गनिवासिन्यै नमः।
८३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गस्थलिङ्गिन्यै नमः।
८३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गरूपिण्यै नमः।
८३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गसुन्दर्यै नमः।
८३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गगीतिमहाप्रीत्यै नमः।
८३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगगीतिमहासुखायै नमः।
८३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गनामसदानन्दायै नमः।
८३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगनामसदागत्यै नमः।
८३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगनामसदानन्दायै नमः।
८३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गनामसदारत्यै नमः।
८४०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लिङ्गमालाकराभूषायै नमः।
८४१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगमालाविभूषणायै नमः।
८४२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगलिङ्गामृतावृतायै नमः।
८४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगलिङ्गामृतात्मिकायै नमः।
८४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगलिङ्गार्चनप्रीतायै नमः।
८४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगलिङ्गस्वरूपिण्यै नमः।
८४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगलिङ्गस्वरूपायै नमः।
८४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगलिङ्गसुखावहायै नमः।
८४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमप्रीतायै नमः।

८४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमार्चितायै नमः।
८५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमप्राणायै नमः।
८५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमोत्थितायै नमः।
८५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमस्नातायै नमः।
८५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पतर्पितायै नमः।
८५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पघटितायै नमः।
८५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पधारिण्यै नमः।
८५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पतिलकायै नमः।
८५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पचर्चितायै नमः।
८५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पनिरतायै नमः।
८५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमाग्रहायै नमः।
८६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पयज्ञेशायै नमः।
८६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुममालिकायै नमः।
८६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पनिचितायै नमः।
८६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमार्चितायै नमः।
८६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमादानायै नमः।
८६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लालसोन्मत्तमानसायै नमः।
८६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमानन्दायै नमः।
८६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लहरीस्निग्धदेहिन्यै नमः।
८६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमाधारायै नमः।
८६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमाकुलायै नमः।
८७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पनिलयायै नमः।
८७१ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पवासिन्यै नमः।
८७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमस्निग्धायै नमः।
८७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमात्मिकायै नमः।
८७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पकरिण्यै नमः।
८७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पमालिकायै नमः॥
८७६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमन्यासायै नमः।
८७७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमप्रभायै नमः।

८७८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमज्ञानायै नमः।
८७९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पभोगिन्यै नमः।
८८०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमोल्लासायै नमः।
८८१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पवर्षिण्यै नमः।
८८२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमानन्दायै नमः।
८८३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पपुष्पिण्यै नमः।
८८४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमोत्साहायै नमः।
८८५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्परूपिण्यै नमः।
८८६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमोन्मादायै नमः।
८८७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पसुन्दर्यै नमः।
८८८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमाराध्यायै नमः।
८८९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमोद्भवायै नमः।
८९०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमव्यग्रायै नगः।
८९१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपुष्पपूर्णितायै नमः।
८९२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपूजकप्राज्ञायै नमः।
८९३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूहोतृमात्रिकायै नमः।
८९४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूदातृरक्षितायै नमः।
८९५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूभक्तभाविकायै नमः।
८९६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूकुसुमप्रीतायै नमः।
८९७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूपूजकप्रियायै नमः।
८९८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूवन्दकाधारायै नमः।
८९९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूनिन्दकान्तकायै नमः।
९००. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूप्रदसर्वस्यै नमः।
९०१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूप्रदपुत्रिण्यै नमः।
९०२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूप्रदसस्मेरायै नमः।
९०३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूतशरीरिण्यै नमः।
९०४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वलोकोद्भवप्रीतायै नमः।
९०५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वलोकोद्भवात्मिकायै नमः।
९०६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वकालोद्भवोद्भवायै नमः।

९०७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वलोकोद्भवोद्भवायै नमः।
९०८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुन्दपुष्पसमाप्रीत्यै नमः।
९०९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुन्दपुष्पसमारत्यै नमः।
९१०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुन्दगोलोद्भवप्रीतायै नमः।
९११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुन्दगोलोद्भवात्मिकायै नमः।
९१२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वयम्भूर्वाशिवाशक्तापाविनीलोकपावन्यै नमः।
९१३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कीर्तिर्यशस्विन्यै नमः।
९१४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मेधाविमेधासुरसुन्दर्यै नमः।
९१५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अश्विन्यै नमः।
९१६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कृत्तिकायै नमः।
९१७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुष्यायै नमः।
९१८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तेजस्विन्यै नमः।
९१९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चन्द्रमण्डलायै नमः।
९२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सूक्ष्मासूक्ष्मप्रदायै नमः।
९२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सूक्ष्मासूक्ष्मभयविनाशिन्यै नमः।
९२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वरदाऽभयदायै नमः।
९२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मुक्तिबन्धविनाशिन्यै नमः।
९२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामुकीकामदाक्षान्तायै नमः।
९२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामाख्याकुलसुन्दर्यै नमः।
९२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुखदादुःखदामोक्षायै नमः।
९२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मोक्षादर्थप्रकाशिन्यै नमः।
९२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुष्टादुष्टमत्यै नमः।
९२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वकार्यविनाशिन्यै नमः।
९३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रधाराशुक्ररूपायै नमः।
९३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रसिन्धुनिवासिन्यै नमः।
९३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रालयाशुक्रभोगायै नमः।
९३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रपूजासदारत्यै नमः।
९३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रपूजाशुक्रदेहायै नमः।
९३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रपूजकवत्सलायै नमः।

९३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रमूर्तिःशुक्रदेहायै नमः।
९३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रपूजकपुत्रिण्यै नमः।
९३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रस्थाशुक्रिण्यै नमः।
९३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रसंस्पृहाशुक्रसुन्दर्यै नमः।
९४०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रस्नाताशुक्रकर्त्र्यै नमः।
९४१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रसेव्यातिशुक्रिण्यै नमः।
९४२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाशुक्राशुक्रभवायै नमः।
९४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रवृष्टिविधायिन्यै नमः।
९४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्राभिधेयाशुक्रार्हायै नमः।
९४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रवन्दकवन्दितायै नमः।
९४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रानन्दकर्त्र्यै नमः।
९४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रसदानन्दविधायिन्यै नमः।
९४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रोत्साहायै नमः।
९४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रपूर्णमनोरमायै नमः।
९५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रपूजकसर्वस्थायै नमः।
९५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रनिन्दकनाशिन्यै नमः।
९५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्रात्मिकाशुक्रसम्पदायै नमः।
९५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शुक्राकर्षणकारिण्यै नमः।
९५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्ताशयरक्तभोगायै नमः।
९५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तपूजासदारत्यै नमः।
९५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तपूज्यरक्तहोमायै नमः।
९५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तस्थरक्तवत्सलायै नमः।
९५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तपूर्णरक्तदेहायै नमः।
९५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तपूजकपुत्रिण्यै नमः।
९६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तख्यरक्तिन्यै नमः।
९६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तसंस्पृष्टरक्तसुन्दर्यै नमः।
९६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्ताभिदेहरक्तार्हायै नमः।
९६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तवन्दकवन्दितायै नमः।
९६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महारक्तारक्तभवायै नमः।

९६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तवृष्टिविधायिन्यै नमः।
९६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तस्नातायै नमः।
९६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तप्रीतायै नमः।
९६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तसेव्यातिरक्तिन्यै नमः।
९६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तानन्दकर्त्र्यै नमः।
९७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तसदानन्दविधायिन्यै नमः।
९७१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तारक्तारक्तपूर्णायै नमः।
९७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तसेव्यक्षिणीरमायै नमः।
९७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तसेवकसर्वस्यै नमः।
९७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तनिन्दकनाशिन्यै नमः।
९७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तात्मिकारक्तरूपायै नमः।
९७६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्ताकर्षणकारिण्यै नमः।
९७७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तोत्साहारक्तव्यग्रायै नमः।
९७८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तपानपरायणायै नमः।
९७९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शोणितानन्दजनन्यै नमः।
९८०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कल्लोलस्निग्धरूपिण्यै नमः।
९८१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकान्तर्गतदेव्यै नमः।
९८२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पार्वतीपापनाशिन्यै नमः।
९८३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधूनां हृदिसंस्थात्र्यै नमः।
९८४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकानन्दकारिण्यै नमः।
९८५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकानां जनन्यै नमः।
९८६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकप्रियकारिण्यै नमः।
९८७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकप्रचुरानन्दायै नमः।
९८८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सम्पत्तिसुखदायिन्यै नमः।
९८९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकासाधकप्राणायै नमः।
९९०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकासक्तमानसायै नमः।
९९१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकोत्तमसर्वस्यै नमः।
९९२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकाभक्तरक्तपायै नमः।
९९३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकानन्दसन्तोषायै नमः।

९९४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साधकारिविनाशिन्यै नमः।

९९५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ आत्मविद्यायै नमः।

९९६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्रह्मविद्यायै नमः।

९९७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ परब्रह्मकुटुम्बिन्यै नमः।

९९८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिकूटपञ्चकूटसर्वकूटशरीरिण्यै नमः।

९९९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्ववर्णमय्यै नमः।

१०००. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वर्णजपमालाविधायिन्यै नमः।

सहस्रार्चनसमर्पणम्—**ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः सहस्रार्चनं समर्पयामि। अनेन सहस्रार्चनेन श्रीमहाविद्या प्रीयन्तां न मम।**

सहस्रार्चन करने के बाद देवी को नारिकेल बलिदान प्रदान करने के बाद बटुकादि को पायस बलिदान प्रदान करे।

दैनिकबलिदानम्

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (** यदि वाराणसी में कर्मकाण्ड करना हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीइष्टदेवता-प्रीतये महाविद्यापुरश्चरणसिद्धये नारिकेलबलिदानं करिष्ये।**

ॐ भूर्भुवः स्वः नारिकेलदेयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः नारिकेलदेयबलिं तुभ्यं समर्पयामि।

नारिकेलबलि पूजन के बाद वीरासन मुद्रा से एक हाथ से एक ही बार में बलि का स्फोटन करे।

वटुकादिबलिदानम्—बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त, ईशान, वह्नि, निर्ऋति, वायव्य कोणात्मक

चतुरस्र युक्त मण्डल बनाकर क्रम से ईशानकोण में बटुक, अग्निकोण में योगिनी, नैर्ऋत्यकोण में गणेश तथा वायव्य में क्षेत्रपाल का पूजनकर बलिदान प्रदान करके गृहमण्डल से बाहर भूतगणों को बलि प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णु:विष्णु: विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे** (यदि वाराणसी में कर्मकाण्ड करना हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे**) **विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीमहाविद्याप्रीतये सर्वार्थसिद्धये चतुर्दिक्षुवटुकादिदेवताभ्यो पायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

वटुकबलिः—

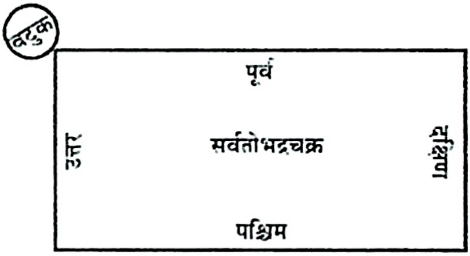

ॐ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। ईशान कोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ वँ वटुकबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पात्रपूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन करके संकल्प करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः एह्येहि देविपुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे।

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों मे कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्था वाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालों वाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित, विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करनेवाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ।

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जिलि प्रदान करे।

बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः॥

बलिदान से सभी सिद्धियों को देने वाले भूतवेतालों से सेवित बटुकभैरव प्रसन्न हो और सदैव शान्ति प्रदान करें।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन वटुकः प्रीयतां न मम।**

योगिनीबलिः—

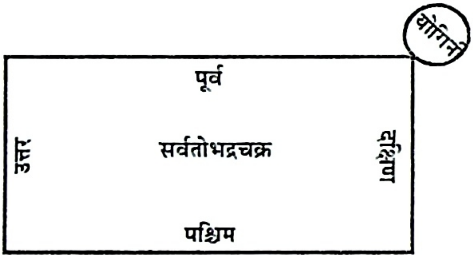

ॐ भूर्भुवः स्वः याँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। अग्निकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः याँ योगिनीबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पात्रपूजन कर वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः याँ सर्ववर्णयोगिनीभ्यो सर्वशक्तिभ्यः त्रिनेत्र सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

ॐ ऊर्ध्वब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वा स्थलेऽनले वा सलिलपवनयोर्यत्रकुत्रस्थितो वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठा दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः,
प्रीत्या देव्या सदा नः शुभविधिबलिनः पातु वीरेन्द्रवन्द्या॥

ऊपर ब्रह्माण्ड में, द्युलोक में, आकाश में, भूतल पर, निष्कल अवस्था में, जल में, स्थल पर, अनल में, पाताल में, सुन्दर शीतल पवन में जहाँ-जहाँ रहनेवाली योगिनीवर्ग, क्षेत्र, पीठ, उपपीठ, दिशाओं में रहनेवाले, धूप-दीपादि के द्वारा पूजित होकर, प्रसन्न होकर, वीरों के द्वारा पूजित योगिनी प्रसन्न हों और सभी प्रकार का शुभ प्रदान करें।

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

योगिनी योगमाया च योगिनां सिद्धिप्रदायिनी।
षड्चक्रभेदिनी देवी सर्वविघ्नविनाशिनी॥१॥

योगमाया योगिनी, योगियों को सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करनेवाली, षड्चक्रों का भेदन करनेवाली, सभी विघ्नों का विनाश करनेवाली॥१॥

योगिनी योगमाया च सर्वभैरवमोहिनी।
सर्ववीर्य महातेजाः सर्वत्र शुभदायिनी॥२॥

सभी भैरवों को मोहित करनेवाली योगमाया योगिनी, सभी प्रकार की बलशालिनी महानतम तेजवाली, सभी हमें शुभ प्रदान करे॥२॥

याकाचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोर परात्पराः।
द्युतिव्योमभूमिचारि सर्वे प्रीतास्तु मे सदा॥३॥

जो कोई योगिनी रौद्र, सौम्या, घोर, परात्परा, द्युतिव्योमचारी समस्त योगिनियाँ सभी प्रसन्न होकर हमें शुभता प्रदान करें॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—अनेन बलिदानेन वटुकः प्रीयतां न मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वेभ्यो योगिनीभ्यो फट् अनेन बलिदानेन सर्वयोगिन्यः प्रीयतां न मम।

गणेशबलिः—

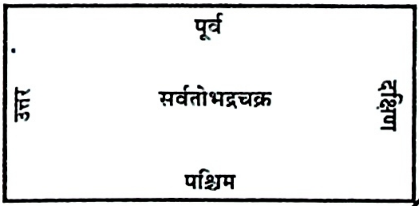

ॐ भूर्भुवः स्वः गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। नैर्ऋत्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः गँ गणेशबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पात्र पूजन कर वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः गँ गाँ गीँ गूँ गैँ गौँ गः गणेशाय सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

ॐ ॐ ॐकार रूपं त्र्यमिति च परं यत्स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेजसिन्दूरमूर्तिम्।
योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकलगुणमयं श्रीहरेन्द्रेण सङ्गं,
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति॥१॥

ओंकार त्रय रूप से परमतुरीय जो ब्रह्मरूप, सत्त्व-रज-तम तीनों गुणों से अतीत रूपों वाले, मन से भी तेज सिन्दूर के रूपवाले, जिसकी मूर्तिमान, योगियों के द्वारा वन्द्य, सकल गुणों के खान, ब्रह्मरन्ध्र में रहनेवाले, श्रीहरि के साथ गं गं गं गं रूपी गजमुखवाले व्यापक गणेश का ध्यान करता हूँ॥१॥

विदेहरूपं भवबन्धहारं सदा स्वनिष्ठं स्वसुखप्रदत्तम्।
अमेयसांख्येन च लक्ष्यमीशं गजाननं भक्तियुतं भजामः॥२॥

विदेहरूप वाले, भवसागर के बन्धन को समाप्त करनेवाले, सदा अपने (ब्रह्मभाव) में ही स्थित रहनेवाले, आत्मसुख को प्रदान करनेवाले, मायाविहीन, सांख्य के द्वारा बोधगम्य, ईश्वर गजानन का भक्तिपूर्वक भजन करता हूँ॥२॥

कल्पद्रुमाधः स्थितं कामधेनुं चिन्तामणिं दक्षिणपाणिशुण्डम्।
विभ्राणमत्यद्भुतचित्तरूपं यः पूजयेत् तस्य समस्तसिद्धिः॥३॥

कल्पवृक्ष के समान, कामधेनु के सदृश, कामनाओं की पूर्ति करने में दक्ष, चित्त में अत्यद्भुत रूप से जो पूजन करता है, उसकी समस्त कामनाएँ सिद्ध होती हैं॥३॥

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ गजाननाय पूर्णाय सांख्यरूपमयाय ते।
विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः॥१॥

सांख्यरूपमय पूर्ण ब्रह्म गजानन बिना देह के निष्कल भाव से सर्वत्र संस्थित गणेश आपको नमस्कार है, नमस्कार है॥१॥

अमेयाय च हेरम्ब परशुधारकाय ते।
मूषकवाहनायैव विश्वेशाय नमो नमः॥२॥

मायाविहीन, परशु धारण करनेवाले, हेरम्ब, मूषक जिसका वाहन है, विश्व के मालिक आपको नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है॥२॥

बलिदानसमर्पणम्—अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।

क्षेत्रपालबलिः—

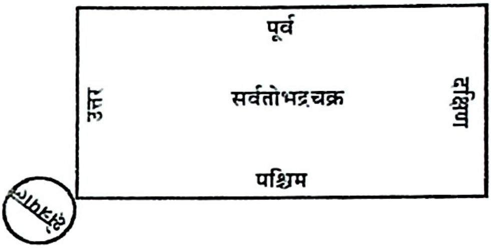

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। वायव्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पात्रपूजन कर वामाङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजनकर सङ्कल्प करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालायसर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्त्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारकौस्तुभधरं शीतांशुचण्डोज्ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥१॥

उदयकालीन सूर्य के समान प्रकाशमान, तीन नेत्र वाले,अङ्गों में रक्त अङ्गराग का अनुलेपन किये हुए, मुस्कराते हुए मुखमण्डलवाले, वर, अभय, कपाल, शूल हाथों में धारण किये हुए, नीलग्रीवा वाले, उदार, कौस्तुभमणि धारण किये हुए, शिर पर शीतल चन्द्र धारण किये हुए, बन्धूक पुष्प के रंग के समान वस्त्र धारण किये हुए, समस्त भय का हरण करनेवाले, भैरव देवता का ध्यान करता हूँ॥१॥

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं संहारमूर्तिशुभमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥२॥

यक्षरूप वदनवाले, दशों दिशाओं के भूमि को कम्पित करनेवाले, संहार के मूर्ति चन्द्रबिम्ब वाले सुन्दर शुभ मुकुट को धारण करने वाले, जटा जिसके सिर पर स्थित है, दीर्घशरीर वाले, विशाल नखमुख वाले, ऊपर की तरफ विकराल रोमों वाले, समस्त पापों का स्मरण मात्र से नष्ट करने वाले, क्षेत्रपाल भैरव को सतत प्रणाम करता हूँ॥२॥

करकलितकपालः कुण्डलीदण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती:।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥३॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों में कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्था वाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालों वाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित विघ्नों को नष्ट करने के लिए, सधकों को सिद्धि प्रदान करनेवाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ॥३॥

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जिलि प्रदान करे।

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥१॥

तीक्ष्ण दाँतों वाले, महाकाय, कल्पान्त में सृष्टि का संहार करनेवाले भैरव को नमस्कार है, हमें पूजन की अनुमति प्रदान करें तथा हमारी सर्वत्र सर्वदा रक्षा करें॥१॥

ॐ यस्मिन्क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपाल सकिंकरः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे॥२॥

इस क्षेत्र के निवासी क्षेत्रपाल के सेवक गण इस बलिदान से प्रसन्न होकर हमारी सभी तरफ से रक्षा करें॥२॥

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर बलिदान समर्पण करे।

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।

राजराजेश्वरबलिदानम्—

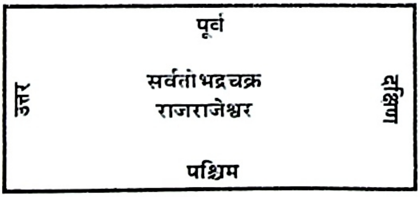

ॐ भूर्भुवः स्वः राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। मध्य में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पात्र पूजन कर वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः राजराजेश्वर! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वंजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे! स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥१॥

हे मस्तक की जटाओं में चन्द्रमा को धारण करनेवाले! हे कामदेव का दहन करने वाले! त्रिशूल धारण करनेवाले! हे स्थाणो! हे पर्वतों के ईश्वर! हे गिरिजा के पति! हे महा ईश्वर! हे समस्त भूतों का कल्याण करनेवाले! भूतगणों के मालिक! समस्त भयों का नाश करनेवाले हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥१॥

हे पार्वतीहृदय बल्लभ चन्द्रमौले! भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे! संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥२॥

हे पार्वती के हृदय में निवास करनेवाले! हे चन्द्रमौलि! भूतों के अधिपति! प्रमथादि गणों के नाथ! हे गिरीश! हे वामदेव! हे भव! हे रुद्र! हे पिनाक धनुष को हाथ में धारण करनेवाले हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥२॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र! लोकेशशेषवलयं प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे! पशुपते! गिरिजापते! मां, संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥३॥

हे नीलकण्ठ! हे वृषभध्वज! हे पञ्चवक्त्र! हे लोकों के स्वामी! हे प्रलय काल में भी शेष रहने वाले! हे प्रमथादि गणों के ईश्वर! हे शर्व! हे धूर्जटि! हे पशुपति! हे गिरिजा के पति! हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥३॥

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

गौरीविलास भुवनाय महेश्वराय पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै, दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥१॥

गौरी के साथ सम्पूर्ण भुवन में विलास करने वाले, महेश्वर, पाँच मुखोंवाले, शरण में आनेवाले भक्तों की रक्षा करने वाले, हे शर्व! समस्त जगत् के अधिपति, मैं अपने दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार करता हूँ॥१॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय, नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय, दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥२॥

रघुकुलनाथ श्रीराम को परमप्रिय लगने वाले तथा वर प्रदान करने वाले, नाग से प्रेम करने वाले तथा नरक रूपी महासमुद्र से तारने वाले, देवताओं के द्वारा सदैव अर्चित, पुण्यों में परमपुण्यस्वरूप महेश्वर का अपने दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए हे शिव! अपको नमस्कार है॥२॥

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे।

अनेन बलिदानेन श्रीराजराजेश्वरः प्रीयतां न मम।

दिग्पालादिबलिदानम्

वटुकादिबलिदान के बाद पुरश्चरणमण्डल अथवा मण्डप के बाहर चारों तरफ दिग्पालों को बलिदान प्रदान करे, पूर्वदिशा में इन्द्र, अग्निकोण में अग्नि, दक्षिणदिशा में यम, नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋति, पश्चिमदिशा में वरुण, वायुकोण में वायु, उत्तरदिशा में सोम, ईशानकोण में ईशान तथा पूर्वदिशा और ईशानकोण के बीच में ब्रह्मा तथा अन्त में नैर्ऋत्यकोण तथा पश्चिमदिशा के बीच में अनन्त के लिए बलिदान समर्पित करे। बलिदान के लिए सर्वप्रथम स्थान को जल से पवित्र करके पत्तल रखकर उस पर दधिमाषभक्त (उर्द और चवल को पका करके उसमें दही मिश्रित करके) उस पर एक बत्ती को जला करके बलिदान सङ्कल्प करे।

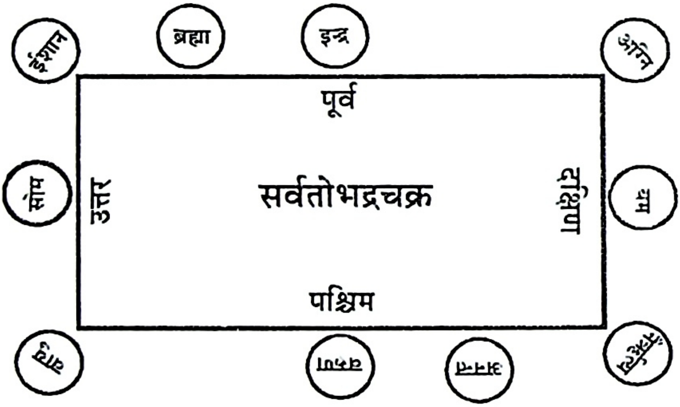

ऐरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाभिधो देवस्तस्मादिन्द्राय ते नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यो मे पूर्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्तं देवराजो

भञ्जयन्तु खञ्जयन्तु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः यो मे आग्नेयगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अग्निस्तं तेजराजो भञ्जयन्तु खञ्जयन्तु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः यो मे दक्षिणगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयन्तु खञ्जयन्तु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा निर्ऋतिस्तं रक्षराजो भञ्जयन्तु खञ्जयन्तु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः यो मे पश्चिमगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वरुणस्तं जलराजो भञ्जयन्तु खञ्जयन्तु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः यो मे वायव्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वायुस्तं प्राणराजो भञ्जयन्तु खञ्जयन्तु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः यो मे उत्तरगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा सोमस्तं ताराराजो भञ्जयन्तु खञ्जयन्तु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः यो मे ईशानगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ईशानस्तं गणराजो भञ्जयन्तु खञ्जयन्तु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः यो मे ऊर्ध्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ब्रह्मास्तं प्रजाराजो भञ्जयन्तु खञ्जयन्तु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः यो मे अधोगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अनन्तस्तं नागराजो भञ्जयन्तु खञ्जयन्तु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

प्रार्थना—

इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिः, वरुणवायुसोमेशाः।
ब्रह्माऽनन्तसहिताः, प्रसीदन्ति सदा मम॥१॥

इन्द्र-अग्नि-यम-निर्ऋति-वरुण-वायु-सोम-ईशान-ब्रह्मा तथा अनन्त सदा हमारे ऊपर प्रसन्न रहें।।१।।

पायसबलिदानेन, सन्तुष्टः सर्वदा भवेत्।
तेषां बलिं प्रयच्छामि, भवन्तु प्रीतिः सर्वदा॥२॥

पायस के बलिदान से सर्वदा सन्तुष्टि और प्रसन्नता के लिए बलि समर्पित करता हूँ इस बलिदान से सदैव प्रसन्न होकर हमारी रक्षा करे।।२।।

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन दशदिग्पालाः प्रीयन्तां न मम।**

भूतादिबलिः—

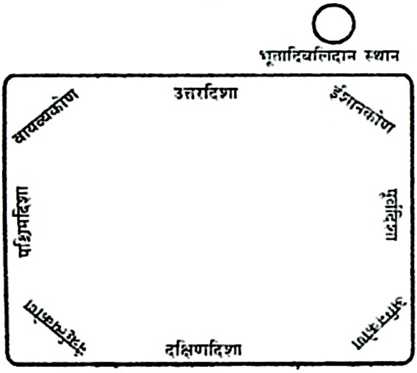

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पीठ के बाहर मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पात्र पूजन कर वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहितं इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

भूता ये च विघ्नकर्तारा: दिवि भूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थ संस्थाश्च शिवयोगेन भाविता॥१॥

जो भूतपिशाचादि विघ्न करने वाले द्युलोक-अन्तरिक्षलोक-भूलोक-पाताल में विचरण करनेवाले, सभी शिवयोग से भावित होकर (कल्याण की भावनावाले होकर)।।१।।

क्रूराद्याः शतसंख्यकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्यसंख्यांश्च इन्द्राद्याव्यवस्थिताः॥२॥

सैकड़ों क्रूरप्रकृतिवाले, पाखण्डादि में रत रहनेवाले, ध्रुवादि सैकड़ों की संख्यावाले, इन्द्रादि रूप में व्यवस्थित रहनेवाले॥२॥

तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम्।
नगरे वाऽथ संग्रामे अटव्यां वै सरित्तटे॥३॥

नगर या संग्राम-स्थल में पहाड़ों की ऊचाइयों पर, नदियों के तट पर रहनेवाले, हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥३॥

वापी कूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे।
नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये॥४॥

वापी, कूप, तडाग, वृक्षादि, श्मशानादि, चौराहों पर रहनेवाले, नानारूप को धरकर रहनेवाले, बहुत रूपोंवाले हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥४॥

यत्र तत्र विचरन्ति भूतप्रेतादि सर्वदा।
ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा॥५॥

हमेशा इधर-उधर विचरनेवाले भूतपिशाचादि सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मनवाले हों॥५॥

ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः।
मातरोप्युग्रहरूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥६॥

जो रौद्ररूप धारण करके, रौद्र कर्म में लिप्त, रौद्र स्थान में निवास करनेवाले, जो पिशाचिनी मातायें उग्ररूपों वाली, सेवकों के अधिपति, सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मनवाले हों॥६॥

भूचरा खेचराश्चैव तथा चैवान्त रक्षगा।
ते सर्वे प्रीति मनसाः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्॥७॥

भूमि पर विचरण करने वाले, आकाश में रहने वाले, सभी हमारी रक्षा करें, वे सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले होकर हमारी रक्षा करें॥७॥

पुष्पाञ्जलिः—प्रार्थना करने के बाद हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जली प्रदान करे।

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत् प्रयुक्तम्।
सन्तोषमासाद्य च व्रजन्तु सर्वे ते अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु॥

जो इस भूतल पर भूतपिशाचादि निवास करते हैं, वे विधिवत् प्रदान किये गये बलि को ग्रहण करके सन्तोष प्राप्त करके, अन्यत्र अपना वास बनायें अर्थात् हमारे पूजन-स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान में अपना निवास बनायें।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः प्रीयतां न मम।**

सर्वभूतविघ्नकृत् बलिदान प्रदान तथा पुष्पाञ्जलि प्रदान करने के बाद हाथ-पैर धोकर आचमन-प्रणायामादि करके भगवान् विष्णु के स्मरण करने के बाद आगे का कार्य करे।

दैनिकबलिदानं परिपूर्णम्

●

अखण्डदीपपूजनम्—अखण्ड दीप के आगे गन्धाक्षतपुष्प समर्पित करे। अथवा पञ्चोपचार पूजन करे।

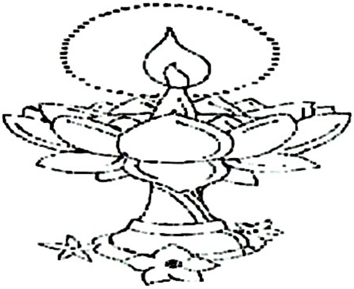

सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के अन्धकार को समाप्त करनेवाले, महादीप्त बाहर-भीतर सुन्दर प्रकाश के लिए, यह प्रदीप जलाये हैं यथाविधि पूजन-ग्रहण करके प्रसन्न होकर हमें प्रकाशित करें॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना—

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

हे देवरूप दीप! आप कर्म के साक्षी और विघ्नों का नाश करनेवाले, जब तक हमारे कर्म (यज्ञ) की परिसमाप्ति नहीं हो जाती तब तक आप विधिपूर्वक स्थिर रहे॥

अखण्डदीपपूजनं परिपूर्णम्

●

पुस्तकपूजनम्

पुस्तकपूजनम्—पूस्तक में सरस्वती का ध्यान कर गन्धाक्षतपुष्प चढ़ायें।

ॐ पा॒व॒कान॒ꣳसर॑स्वतीवाजे॑भिर्वा॑जिनी॑वती॥ य॒ज्ञं॑व॒ष्टुधि॒या॑व॑सुꣳ॥

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥१॥

जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधादि देवियों को नमस्कार है॥१॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥२॥

देवी को नमस्कार है, महादेवी को नमस्कार है, शिवा को नमस्कार है, प्रकृति देवी को नमस्कार है, भद्रा तथा नियति देवी को सतत प्रणाम है॥२॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥३॥

सफेद वर्णवाली, परब्रह्मचिन्तनरूपिणी, सर्वप्रथम रहनेवाली, जगत् में व्याप्त रहनेवाली, वीणा-पुस्तक धारण करनेवाली, अभय प्रदान करनेवाली, बुद्धि की जड़ता को हरनेवाली, हाथ में स्फटिक की माला लिए हुए, पद्मासन पर विराजमान बुद्धि प्रदान करनेवाली, परमेश्वरी भगवती शारदा की मैं वन्दना करता हूँ॥३॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा॥४॥

जो कुन्देन्दुसदृश, तुषार (ओस) के समान सफेद हार धारण की हुई, सफेद शुद्ध वस्त्र को धारण की हुई, हाथों में वीणा, वरमुद्रा और दण्ड धारण की हुई, सफेद कमल पर बैठी हुई, ब्रह्माविष्णुशङ्कर—जैसे देवताओं से वन्दित देवी भगवती सरस्वती हैं, वे हमारी बुद्धि की जड़ता को नष्ट करें॥४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाङ्मयमूर्तिस्वरूपिणीसरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पुस्तकपूजनं परिपूर्णम्

●

महाविद्यामातृकान्यासः

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वतीदेवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षँ कीलकं, श्रीमहाविद्याप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

प्रणायामः—पूरक-कुम्भक-रेचनपूर्वक प्राणायाम करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः। एक बार मन्त्र जपते हुए पूरक करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ। चार बार मन्त्र जपते हुए कुम्भक करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ। दो बार मन्त्र जपते हुए रेचने करे।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से अङ्गों का स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदये।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से अङ्गों का स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से अङ्गों का स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

प्राणायाम तथा कराङ्गन्यास करने के बाद अन्तर्लिपि न्यास करे।

अन्तर्मातृकान्यासः

ध्यानम्—हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर ध्यान करे।

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तसुखदोः यन्मध्यवक्षस्थलम्,
भस्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रसकलामापीनतुङ्गस्तनीम्।
मुद्राभक्षणगुणं सुधाढ्यकलशं व्याख्याञ्च हस्ताम्बुजेः,
बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

पचासलिपियों में विभक्त, समस्त सुख को प्रदान करनेवाली, जो वक्षस्थल (हृदय) में रहने वाली, सभी चन्द्रमौली (चन्द्रकलाओं) से निबद्ध होकर खिले हुए स्तनोंवाली, आनन्दरूपी अमृतमुद्रा भक्षण करनेवाली, हाथ में समस्त ज्ञान की व्याख्याओं को धारण किये हुए, फैले हुए प्रकाश के समान, तीन नेत्रोंवाली वाणी के देवता शारदा के रूप में स्थित सरस्वती देवी की वन्दना करता हूँ।

मानसोपचारपूजनविधिः—

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि मातृकायै नमः।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि मातृकायै नमः।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ यँ वायवात्मकं धूपं समर्पयामि मातृकायै नमः।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि मातृकायै नमः।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि मातृकायै नमः।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि मातृकायै नमः।

मानसोपचार पूजन के बाद मूलाधारादि चक्रों का न्यास करे।

चक्रन्यासः

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः धूम्राभे षोडशदलपद्मे विशुद्धचक्रे न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ नमः द्वादशदलपद्मे प्रवालसन्निभे हृदयोपर्यनाहते न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः नीलजीमूतसन्निभे दशदलपद्मे नाभ्योरुपरि मणिपुरे न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ नमः विद्युत्सन्निभे षड्दलपद्मे स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ वँ शँ षँ सँ ळँ नमः सुवर्णाभे चतुर्दलपद्मे मूलाधारे न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ हँ क्षँ नमः द्विदलपद्मे चन्द्राभे भ्रूमध्ये आज्ञायां न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सहस्रारे हिमसन्निभे सर्ववर्णविभूषिते अकखादि त्रिरेखासु आलक्षत्रर्यभूषिते ॐ परविन्दुभ्यो नमः सहस्रारे न्यस्यामि।

मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक विन्दुचिदात्मक ध्यान करके उससे टपकते हुए अमृत के द्वारा सभी मातृकाओं का तर्पण (सिंचन) करके फिर ध्यान करे।

ध्यानम्—

आधारे लिङ्गनाभे प्रगटितहृदये तालुमूले ललाटे,
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदले दशारे षड्चतुष्के।
वासन्ते बलमध्ये डफकठसहिते कंठदेशे स्वराणां,
हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥

आधारे (मूलाधार) के चार पत्रों में वस प्रत्याहार के रूप में, लिङ्ग (स्वाधिष्ठान) के छः पत्रों में बल प्रत्याहार के रूप में, नाभि (मणिपुर) के दश पत्रों में डफ प्रत्याहार के रूप में, हृदय (अनाहत) के द्वादश पत्रों में कठ प्रत्याहार के रूप में, तालुमूल (विशुद्ध) षोडश पत्रों में समस्त स्वर रूप में, ललाटे (आज्ञा) के दो पत्रों में हं, क्षं वर्ण रूप में, सहस्रार में समस्त वर्ण रूप में, सभी चक्रकमलदलों वर्णरूपी मातृकावर्णदेवी को नमस्कार करते हैं, नमस्कार है, पुनः नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है।

मानसोपचारपूजनम्—ध्यान के बाद पुनः पूर्व विधि से मानसोपचार पूजन करे।

चक्रतत्वन्यासः—मूलाधारादि चक्रों में ध्यानात्मक पूजन करे।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ लँ पृथ्वीतत्त्वाय नमः मूलाधारे न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ वँ जलतत्त्वाय नमः स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ रँ अग्नितत्त्वाय नमः मणिपूरे न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ यँ वायुतत्त्वाय नमः अनाहते न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ हँ आकाशतत्त्वाय नमः विशुद्धचक्रे न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ हँ ळँ क्षँ मनोबुद्धितत्त्वाय नमः आज्ञाचक्रे न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ चिदाहङ्कारात्मने नमः सहस्रारे न्यस्यामि।

बहिर्मातृकान्यासः—शरीर के बाहरी अङ्गों में मातृकाओं का न्यास करे।

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः गायत्री छन्दः मातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाप्तये श्रीमद्महाविद्यादेवताप्रीतये विनियोगः।**

प्राणायामः—पूर्वोल्लिखित मातृका प्राणायाम विधि से प्राणायाम करे।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से अङ्गों का स्पर्श करे।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदये।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ हल्भ्योबीजाय नमः गुह्ये।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से अङ्गों का स्पर्श करे।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से अङ्गों का स्पर्श करे।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

मातृकान्यासः—लेलिहान मुद्रा से अङ्गों का स्पर्श करे।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यान्तं न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

सृष्टि-स्थिति-संहार भेद से तीन प्रकार से मातृकान्यास करना चाहिये।

स्थित्यादौ तु गृहस्थानां सृष्ट्यादौ ब्रह्मचारिणां।
संहारादौ यतिनाञ्च मातृकान्यासमाचरेत्॥१॥

गृहस्थों को पहले स्थिति क्रम से, ब्रह्मचारियों को सृष्टि क्रम से तथा यतियों को संहार क्रम से मातृकान्यास करना चाहिये॥१॥

नाभावारभ्यते यस्तु हृदये च समाप्यते।
स्थितिन्यासः स विज्ञेयः दृष्टादृष्टफलप्रदः॥२॥

नाभि से आरम्भ करके हृदय पर परिसमाप्ति तक दृष्ट तथा अदृष्ट समस्त फल को देनेवाला स्थितिन्यास कहा गया है॥२॥

विद्याकामे योनिबीजाद्यः श्रीकामे रमाद्यस्तथा।
वश्येकामाद्यः स्तम्भने स्थिरमाद्यादि विज्ञेयः॥३॥

विद्या की कामना से योनि बीज आगे करके, श्री की कामना से श्रीबीज आगे करके तथा वशीकरण की कामना से काम बीज आगे करके, तथा स्तम्भन की कामना से हूँ बीज आगे करके न्यास करना चाहिये, इस प्रकार सृष्टिस्थितिसंहार न्यास जानना चाहिये॥३॥

विद्या की कामना से ऐं बीज लगाकर, श्री की कामना से श्रीं बीज लगाकर, वशीकरण की कामना से क्लीं बीज लगाकर, स्तम्भन कार्य मे ह्रीं बीज लगाकर अथवा सर्व कामना से त्रितारी ऐं ह्रीं श्रीं युक्त करके न्यास करना चाहिये। ब्राह्मण भक्त अपने ब्रह्मत्व की सिद्धि के लिए अपने गुरु के द्वारा बताये हुए बीजों से लगाकर न्यास करे। सम्प्रदाय के अनुसार बीजों का चयन करना चाहिए। यहाँ **ॐ हूँ श्रीं ह्रीं** लगाकर न्यास करे।

ध्यानम्—हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर ध्यान करे।

आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं,
वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयीं पुस्तकं ज्ञानगम्या।
सा वीणां वादयन्तीं स्वकरकरजपैःशास्त्रविज्ञानशब्दैः,
क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना॥

श्वेत हंस पर आरूढ, गगन में भ्रमण करती हुई, दक्षिण हाथ में अक्षसूत्र धारण की हुई, बायें हाथ में दिव्य सुवर्ण के समान ज्ञान प्रदान करनेवाली, पुस्तक धारण की हुई, वीणा बजाती हुई, शास्त्र विज्ञान के ज्ञानराशि को दिव्य रूप से व्याख्यान करती हुई भारती हम पर प्रसन्न हों।

सिन्दूरकान्तिमसिता भरणां त्रिनेत्रां, विद्याक्षसूत्रमृगपोतवरं दधाना।
पार्श्वस्थितां भगवतीमपि कांचनाङ्गीं, ध्याये कराब्जधृतपुस्तकवर्णमालाम्॥

सिन्दूर की कान्तिवाले आभूषणों से सुसज्जित, तीन नेत्रोंवाली, विद्यारूपी अक्षमाला धारण करनेवाली, वर प्रदान करनेवाली, सुवर्ण के सदृश अङ्गोवाली, हाथ में पुस्तक और वर्णमालाओं को धारण करनेवाली देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

मानसोपचारपूजन—ध्यान के बाद पुनः पूर्व विधि से मानसोपचार पूजन करे।

सृष्टिन्यासः—शरीर के तत्तदङ्गों का (लेलिहानमुद्रा) अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ लॄँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

स्थितिन्यासः—शरीर के तत्तदङ्गो का (लेलिहानमुद्रा) अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।

संहारन्यासः—शरीर के तत्तदङ्गों का (लेलिहानमुद्रा) अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्लीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ लॄँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।

महाविद्यातत्त्वन्यासः—लेलिहान मुद्रा से अङ्गों का स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्या-आत्मतत्त्वाय नमः पादादिनाभिपर्यन्तं न्यास्यामि। लेलिहान मुद्रा से पैर से नाभि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्या-विद्यातत्त्वाय नमः नाभ्यादिहृदयपर्यन्तं न्यास्यामि। लेलिहान मुद्रा से नाभि से हृदय तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्या-शिवतत्त्वाय नमः हृदयादिशिरःपर्यन्तं न्यास्यामि। लेलिहान मुद्रा से हृदय से शिर तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्यायै नमः सर्वाङ्गे व्यापकं न्यास्यामि।

मूल मन्त्र से नव बार पूरे शरीर पर स्पर्श करते हुए व्यापक न्यास करे।

न्यासविधिः परिपूर्णम्

●

महाविद्यामूलमन्त्रजपविधिः

विनियोगः—**अस्य श्रीमहाविद्यामन्त्रस्य भैरवऋषिः सम्राटछन्दः देवी महाविद्यादेवता ह्रूँ बीजं, श्रीँ शक्तिः, ह्रीँ कीलकं परकृत्यनिवारणे सर्वरोगशान्तये ममाखिलाप्तये न्यासे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ भैरवऋषये नमः शिरसि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ सम्राटछन्दे नमः मुखे।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्यादेवतायै नमः हृदि।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रूँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ श्रीँ शक्तये नमः पादयोः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रीँ कीलकाय नमः नाभौ।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्यायै नमः सर्वाङ्गे।

हृदयादिन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हृदयाय नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ हुँ शिखायै वषट्।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् कवचाय हुम्।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ अस्त्राय फट्।

करन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ हुँ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा कनिष्ठकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

वर्णन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हूँ नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ श्रीँ मुखे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ व नमः दक्षिणबाहौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ज्र नमः वामबाहौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वै नमः हृदि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ रो नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ च नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ नी नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ये नमः दक्षिणजानौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः वामजानौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः दक्षिणपादे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् नमः वामपादे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वा नमः दक्षिणपादतलयोः न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हा नमः वामपादतलयोः न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

पदन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रूँ नमः ललाटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ श्रीँ नमः दक्षनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः वामकुक्षौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः दक्षकुक्षौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् नमः उर्वोः न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा नमः पादयोः न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करे।

चतुर्भुजां महादेवां नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥१॥

चार भुजाओं को धारण करनेवाली, महादेवी, पवित्र यज्ञोपवीत को धारण करनेवाली, महाभीम (विशाल) कराल मुखोंवाली, सिद्ध विद्याधरों से पूजित तथा घिरी हुई॥१॥

मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥२॥

मुण्डमाला धारण की हुई, खुले हुए केशोंवाली, हास्यमुखवाली महादेवी का सभी कामनाओं के लिए ध्यान करता हूँ॥२॥

ध्यान करके महाविद्या से संस्कार किये हुए माला से एक अयुत जप करने के बाद जप देवी को समर्पित करके विधिपूर्वक अग्नि स्थापित करके सहस्र हवन करे। माला संस्कार विधि आगे लिखी गयी हैं।

मूलमन्त्रः—ॐ ड्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ। दस हजार जप करके दशांश हवन कंर।

मालाविसर्जनम्

जप के पश्चात् माला को सिर पर रखकर प्रार्थनापूर्वक विसर्जन करे।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा॥

हे माले! तुम सभी देवताओं के लिए सभी कार्यों में शुभ प्रदान करनेवाली हो, कल्याण करनेवाली, हमारा कल्याण करो और हमारे यश और वीर्य की वृद्धि करो।

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः। सिर से माला को हाथ में लेकर।

माला का पुनः पूजन करके, मालाधार पर माला को स्थापित करके, मूल मन्त्र से पूरक-कुम्भक-रेचनपूर्वक प्राणायामादि करके पुनः उत्तरन्यास करके पुनः ध्यान करे।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥१॥

चार भुजाओंवाली, महादेवी, पवित्रयज्ञोपवीत को धारण करनेवाली, महाभीम (विशाल) कराल मुखोंवाली, सिद्ध विद्याधरों से पूजित तथा घिरी हुई॥१॥

मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥२॥

मुण्डमाला धारण की हुई, खुले हुए केशोंवाली, हास्य मुखवाली महादेवी का सभी कामनाओं के लिए ध्यान करता हूँ॥२॥

महाविद्यामूलमन्त्रजपोत्तरन्यासः—जप के बाद उत्तर न्यास करे।

ऋष्यादिन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्लू श्रीँ ह्रीँ भैरवऋषये नमः शिरसि।

ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्रीँ सम्राटछन्दे नमः मुखे।

ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्यादेवतायै नमः हृदि।

ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्रीँ हूँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्रीँ श्रीँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्यायै नमः सर्वाङ्गे।

हृदयादिन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्रीँ ॐ ह्लूँ श्रीँ ह्रीँ हृदयाय नमः।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ हुँ शिखायै वषट्।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् कवचाय हुम्।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ अस्त्राय फट्।

करन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ हुँ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

वर्णन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रूँ नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ श्रीँ मुखे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ व नमः दक्षिणबाहौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ज्र नमः वामबाहौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वै नमः हृदि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ रो नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ च नमः दक्षरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ नी नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ये नमः दक्षिणजानौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः वामजानौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः दक्षिणपादे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् नमः वामपादे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वा नमः दक्षिणपादतलयोः न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हा नमः वामपादतलयोः न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

पदन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रूँ नमः ललाटे न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ श्रीँ नमः दक्षनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः वामकुक्षौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः दक्षकुक्षौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् नमः उर्वोः न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा नमः पादयोः न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करे।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥१॥
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥२॥

महाविद्यापूजनं परिपूर्णम्

●

महाविद्यामालामन्त्रप्रयोगः

सङ्कल्पः—हरिः ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः **श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्निद्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगेकलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे** (यदि काशी में प्रयोग करना हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे**) **विक्रमशके बौद्धावतारे -------नामसंवत्सरे-------अयने-------ऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमेमासे पुण्यपवित्रमासे----------मासे---------पक्षे-----------तिथौ--------वासरे---------नक्षत्रे---------योगे--------करणे-----------राशिस्थिते श्रीचन्द्रे------**

-----राशिस्थिते श्रीसूर्ये---------राशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ--------गोत्रः-----------प्रवरः-------------
------नामाऽहं ममात्मनः सपरिवारोपरि गृहे च उत्पन्नसकलदोष परकृत्याभिचार-जन्य-भूतप्रेतादिजन्य-ग्रहजन्य-स्थानजन्य-भूमिस्थित-गृह-निर्माणादि-दोषोपशमनपूर्वकसर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकञ्च झटिति आयुरारोग्यैश्वर्यादिप्राप्त्यर्थे श्रीकालिकादेवताकृपाप्रसादप्रसन्नता च प्राप्तये श्रीमहाविद्यास्तोत्रमालामन्त्रस्य जपपाठं करिष्ये।

विनियोगः—**अस्य श्रीमहाविद्यामन्त्रस्य भैरवऋषिः सम्राटछन्दः देवी महाविद्याकालिकादेवता हूँ बीजं, श्रीँ शक्तिः, ह्रीँ कीलकं परकृत्यनिवारणे सर्वरोगशान्तये ममाखिलाप्तये न्यासे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ भैरवऋषये नमः शिरसि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ सम्राटछन्दे नमः मुखे।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्यादेवतायै नमः हृदि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हूँ बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ श्रीँ शक्तये नमः पादयोः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रीँ कीलकाय नमः नाभौ।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्यायै नमः सर्वाङ्गे।

हृदयादिन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हृदयाय नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ हुँ शिखायै वषट्।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् कवचाय हुम्।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ अस्त्राय फट्।

करन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ हुँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

वर्णन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हूँ नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ श्रीँ मुखे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ व नमः दक्षिणबाहौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ज्र नमः वामबाहौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वै नमः हृदि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ रो नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ च नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ नी नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ये नमः दक्षिणजानौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः वामजानौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः दक्षिणपादे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् नमः वामपादे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वा नमः दक्षिणपादतलयोः न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हा नमः वामपादतलयोः न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

पदन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रूँ नमः ललाटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ श्रीँ नमः दक्षनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ह्रीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः वामकुक्षी न्यस्यामि।
ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ हुँ नमः दक्षकुक्षी न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ फट् नमः उर्वोः न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा नमः पादयोः न्यस्यामि।

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ ऐँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करे।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥१॥

चार भुजाओंवाली, महादेवी, पवित्र यज्ञोपवीत को धारण करनेवाली, महाभीम (विशाल) कराल मुखोंवाली, सिद्ध-विद्याधरों से पूजित तथा घिरी हुई॥१॥

मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥२॥

मुण्डमाला धारण की हुई, खुले हुए केशोंवाली, हास्य मुखवाली महादेवी का सभी कामनाओं के लिए ध्यान करता हूँ॥२॥

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां,
वीणानागेन्द्रशंखाऽऽयुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशुनानामणियुतहृदयां सिन्धुपात्रं वहन्तीं,
वन्देऽभीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्॥३॥

उदयकालिक चन्द्रप्रकाश के समान, खिले हुए कमल पर बैठी हुई, चारो हाथों में क्रमशः वीणा, नाग, शङ्ख, आयुध, परशु धारण की हुई, हृदय पर मुक्तामणि जटित हार धारण की हुई, अमृतपात्र को हाथ में धारण की हुई, प्रसन्न मन से मधुर-मधुर हास्य करती हुई, साधकों के मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाली भवानी की मै वन्दना करता हूँ॥३॥

ध्यान करने के बाद २१ पाठ को २१ दिन करे अथवा २१ ब्राह्मणों के द्वारा एक ही दिन में करे तथा रोगी को गङ्गाजल से पाठपूर्वक कुशादि से मार्जन करे।

ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं धनकरीं पुष्टिकरीं वृद्धिकरीं हलाकरीं सर्वशत्रुक्षयकरीं उत्साहकरीं बलवर्द्धिनीं सर्ववज्रकायारचितां सर्वग्रहोच्चाटिनीं पुत्रपौत्राऽभिवर्द्धिनीं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवर्द्धिनीं सर्वभूतस्तम्भिनीं द्राविणीं-मोहिनीं सर्वाकर्षिणीं सर्व-लोकवशङ्करीं सर्वराजवशङ्करीं सर्वयन्त्र-मन्त्र-तन्त्रप्रभेदिनीं एकाहिकं-द्वयाहिकं-त्र्याहिकं-चातुर्थिकं-पाञ्चाह्निकं-साप्ताहिकं-अर्धमासिकं-मासिकं-षाणमासिकं-साम्वत्सरिकं-वैजयन्तिकं-पैत्तिकं-वातिकं-श्लैष्मिकं-सान्निपातिकं-कुष्ठरोग-मुखरोग-गण्डरोग-प्रमेहरोग-जिगररोग-समस्तउदररोग-शूलविषक्षयकरीं-विस्फोटकादि विनाशनाय स्वाहा। प्रेतादिज्वर-वेतालादिज्वर-रात्रिज्वर-दिवसज्वर-अग्निज्वर-प्रत्यग्निज्वर-राक्षसज्वर-पिशाचज्वर-ब्रह्मराक्षसज्वर-प्रस्वेदज्वर-

विषमज्वर-त्रिपुरज्वर-मायाज्वर-अभिचारिकज्वर-दृष्टिज्वर-वृष्टिज्वर-स्मरादिज्वर-प्रयोगादिविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वशत्रूविनाशनाय स्वाहा। अक्षिशूल-कुक्षिशूल-कर्णशूल-घ्राणशूल-उदरशूल-गलशूल-गण्डशूल-दन्तशूल-पादशूल-पादार्द्धशूलविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वशत्रूविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वस्फोटक सर्वक्लेशविनाशनाय स्वाहा। ॐ आत्मरक्षा-परमात्मरक्षा-मित्ररक्षा-अग्निरक्षा-प्रत्यग्निरक्षा-परगतिवातोरक्षा तेषां सकलबन्धाय स्वाहा। ॐ हरदेहिनी स्वाहा। ॐ इद्रदेहिनी स्वाहा। ॐ स्वस्यब्रह्मदण्डं विश्रामय। ॐ विश्रामयविष्णुदण्डम्। ॐ ज्वर-ज्वरेश्वरकुमारदण्डम्। ॐ हिलि मिलि मायादण्डम्। ॐ नित्यं नित्यं विश्रामय विश्रामय वारुणी शूलिनी गारुणी रक्षा स्वाहा। ज्वल ज्वल देहस्य देहेन सकल लौहपिङ्गिलि कटिमपुरि किलि किलि महादण्डं कुमारदण्डं नित्यं नित्यं विष्णुवन्दित हंसिनी शङ्खिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी रक्ष रक्ष स्वाहा।

गङ्गादिपुलिने जाता पर्वते च वनान्तरे।
रुद्रस्य हृदये जाता विद्याऽहं कामरूपिणी॥

गङ्गादि नदियों की पवित्रता में, पर्वत में, घोर वन में तथा रुद्र के हृदय में जो विद्या रूप से रहती हैं, उन्ही कामरूपी विद्या का ध्यान करता हूँ।

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करे।

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां,
वीणानागेन्द्रशंखाऽऽयुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशुनानामणियुतहृदयां सिन्धुपात्रं वहन्तीं,
वन्देऽभीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्॥

उदयकालिक चन्द्रप्रकाश के समान खिले हुए कमल पर बैठी हुई, चारों हाथों में क्रमश: वीणा, नाग, शङ्ख, आयुध, परशु धारण की हुई, हृदय पर मुक्तामणिजटित हार धारण की हुई, अमृतपात्र को हाथ में धारण की हुई, प्रसन्न मन से मधुर-मधुर हास्य करती हुई, साधकों के मनोकामनाओं की पूर्ति करनेवाली भवानी की मै वन्दना करता हूँ।

ॐ ह्रँ स्वाहा। ॐ ह्रँ ह्रँ स्वाहा। ॐ ह्राँ स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्राँ स्वाहा। ॐ ह्रीँ स्वाहा। ॐ ह्रीँ ह्रीँ स्वाहा। ॐ ह्रूँ स्वाहा। ॐ ह्रूँ ह्रूँ स्वाहा। ॐ ह्रैँ स्वाहा। ॐ ह्रैँ ह्रैँ स्वाहा। ॐ ह्रौँ स्वाहा। ॐ ह्रौँ ह्रौँ स्वाहा। ॐ ह्रः स्वाहा। ॐ ह्रः ह्रः स्वाहा। ॐ क्रँ स्वाहा। ॐ क्रँ क्रँ स्वाहा। ॐ क्राँ स्वाहा। ॐ क्राँ क्राँ स्वाहा। ॐ क्रीँ स्वाहा। ॐ क्रीँ क्रीँ स्वाहा। ॐ क्रूँ स्वाहा। ॐ क्रूँ क्रूँ स्वाहा। ॐ क्रैँ स्वाहा। ॐ क्रैँ क्रैँ स्वाहा। ॐ क्रौँ स्वाहा। ॐ क्रौँ क्रौँ स्वाहा। ॐ क्रः स्वाहा। ॐ क्रः क्रः स्वाहा। ॐ अँ स्वाहा। ॐ अँ अँ स्वाहा। ॐ आँ स्वाहा। ॐ आँ आँ स्वाहा। ॐ

इँ स्वाहा। ॐ इँ इँ स्वाहा। ॐ ईँ स्वाहा। ॐ ईँ ईँ स्वाहा। ॐ उँ स्वाहा। ॐ उँ उँ स्वाहा। ॐ ऊँ स्वाहा। ॐ ऊँ ऊँ स्वाहा। ॐ ॠँ स्वाहा। ॐ ॠँ ॠँ स्वाहा। ॐ लृँ स्वाहा। ॐ लृँ लृँ स्वाहा। ॐ लॄँ स्वाहा। ॐ लॄँ लॄँ स्वाहा। ॐ एँ स्वाहा। ॐ एँ एँ स्वाहा। ॐ ऐँ स्वाहा। ॐ ऐँ ऐँ स्वाहा। ॐ ओँ स्वाहा। ॐ ओँ ओँ स्वाहा। ॐ औँ स्वाहा। ॐ औँ औँ स्वाहा। ॐ अँ स्वाहा। ॐ अँ अँ स्वाहा। ॐ अः स्वाहा। ॐ अः अः स्वाहा। ॐ कँ स्वाहा। ॐ कँ कँ स्वाहा। ॐ खँ स्वाहा। ॐ खँ खँ स्वाहा। ॐ गँ स्वाहा। ॐ गँ गँ स्वाहा। ॐ घँ स्वाहा। ॐ घँ घँ स्वाहा। ॐ ङँ स्वाहा। ॐ ङँ ङँ स्वाहा। ॐ चँ स्वाहा। ॐ चँ चँ स्वाहा। ॐ छँ स्वाहा। ॐ छँ छँ स्वाहा। ॐ जँ स्वाहा। ॐ जँ जँ स्वाहा। ॐ झँ स्वाहा। ॐ झँ झँ स्वाहा। ॐ ञँ स्वाहा। ॐ ञँ ञँ स्वाहा। ॐ टँ स्वाहा। ॐ टँ टँ स्वाहा। ॐ ठँ स्वाहा। ॐ ठँ ठँ स्वाहा। ॐ डँ स्वाहा। ॐ डँ डँ स्वाहा। ॐ ढँ स्वाहा। ॐ ढँ ढँ स्वाहा। ॐ णँ स्वाहा। ॐ णँ णँ स्वाहा। ॐ तँ स्वाहा। ॐ तँ तँ स्वाहा। ॐ थँ स्वाहा। ॐ थँ थँ स्वाहा। ॐ दँ स्वाहा। ॐ दँ दँ स्वाहा। ॐ धँ स्वाहा। ॐ धँ धँ स्वाहा। ॐ नँ स्वाहा। ॐ नँ नँ स्वाहा। ॐ पँ स्वाहा। ॐ पँ पँ स्वाहा। ॐ फँ स्वाहा। ॐ फँ फँ स्वाहा। ॐ बँ स्वाहा। ॐ बँ बँ स्वाहा। ॐ भँ स्वाहा। ॐ भँ भँ स्वाहा। ॐ मँ स्वाहा। ॐ मँ मँ स्वाहा। ॐ यँ स्वाहा। ॐ यँ यँ स्वाहा। ॐ रँ स्वाहा। ॐ रँ रँ स्वाहा। ॐ लँ स्वाहा। ॐ लँ लँ स्वाहा। ॐ वँ स्वाहा। ॐ वँ वँ स्वाहा। ॐ शँ स्वाहा। ॐ शँ शँ स्वाहा। ॐ षँ स्वाहा। ॐ षँ षँ स्वाहा। ॐ सँ स्वाहा। ॐ सँ सँ स्वाहा। ॐ हँ स्वाहा। ॐ हँ हँ स्वाहा। ॐ ळँ स्वाहा। ॐ ळँ ळँ स्वाहा। ॐ क्षँ स्वाहा। ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भगवते भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशक्ति भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्व-वेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमः शिवाय स्वाहा। ॐ सूँ सूर्याय स्वाहा। ॐ सोँ सोमाय स्वाहा। ॐ मँ मंगलाय स्वाहा। ॐ बुँ बुधाय स्वाहा। ॐ बृँ बृहस्पतये स्वाहा। ॐ शुँ शुक्राय स्वाहा। ॐ शँ शनैश्चराय स्वाहा। ॐ राँ राहवे स्वाहा। ॐ केँ केतवे स्वाहा। ॐ महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-वेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ सिंह-शार्दूल-गजेन्द्र-ग्राह-व्याघ्रादि-मृगान् बध्नामि स्वाहा। ॐ गतिं बध्नामि स्वाहा। ॐ आज्ञां बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वं बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वं जन्तुं बध्नामि स्वाहा। ॐ बन्ध बन्ध मोचनं कुरु कुरु स्वाहा।

महाविद्याविधिदिग्बन्धनम्

१. ॐ नमो भगवते महेन्द्रदिग्दिशायां ऐरावतारूढं वज्रहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ऐन्द्रमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ऐन्द्रमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

२. ॐ नमो भगवते अग्निदिग्दिशायां मृगारूढं शक्तिहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं अग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ अग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

३. ॐ नमो भगवते दक्षिणदिग्दिशायां महिषारूढं कृष्णवर्णं दण्डहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं बध्नामि स्वाहा। ॐ यममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

४. ॐ नमो भगवते नैर्ऋत्यदिग्दिशायां प्रेतारूढं खड्गहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं नैर्ऋत्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा।

५. ॐ नमो भगवते पश्चिमदिग्दिशायां मकरारूढं पाशहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वरुणमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ वरुणमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय

स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

६. ॐ नमो भगवते वायव्यदिग्दिशायां मृगारूढं धनुर्हस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वायव्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ वायव्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रेँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा।

७. ॐ नमो भगवते उत्तरदिग्दिशायां नरारूढं गदाहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कुबेरमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ कुबेरमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

८. ॐ नमो भगवते ईशानदिग्दिशायां वृषारूढं शूलहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ईशानमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ईशानमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

९. ॐ नमो भगवते ऊर्ध्वब्रह्मादिग्दिशायां हंसारूढं ब्रह्मास्त्रहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ब्रह्ममण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ब्रह्ममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा।

१०. ॐ नमो भगवते अधोअनन्तदिग्दिशायां लोष्ठनागारूढं चक्रहस्तं

स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं अनन्तकालाग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ अनन्तकालाग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

११. ॐ नमो भगवते विष्णुदिशायां गरुड़ारूढं गदाहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं विष्णुमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ विष्णुमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

१२. ॐ नमो भगवते पातालदिशायां कूर्मारूढं लोष्ठभागं कुपरिघहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं पातालमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ पातालमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा।

महाविद्याविधिदिग्पिशाचानां बन्धनम्

१. ॐ पूर्वदिशायां वज्रको नाम राक्षसस्तस्य वज्रकस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। पूर्वदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

२. ॐ अग्निदिशायां अग्निज्वालो नाम राक्षसस्तस्याऽग्निज्वालस्य अष्टादश कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। अग्निदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ

नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

३. ॐ दक्षिणदिशायां एकपिङ्गलिको नाम राक्षसस्तस्यैकपिङ्गलिकस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। दक्षिणदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिक भूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा।

४. ॐ नैर्ऋत्यदिशायां मरीचिको नाम राक्षसस्तस्य मरीचिकस्य अष्टादश कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। नैर्ऋत्यदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

५. ॐ पश्चिमदिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। पश्चिमदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

६. ॐ वायव्यदिशायां तक्षको नाम राक्षसस्तस्य तक्षकस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। वायव्यदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

७. ॐ उत्तरदिशायां महाभीमो नाम राक्षसस्तस्य महाभीमस्य अष्टादशकोटि-

सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। उत्तरदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा! ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

८. ॐ ईशानदिशायां भैरवो नाम राक्षसस्तस्य भैरवस्य अष्टादशकोटि सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ईशानदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

९. ॐ ऊर्ध्वदिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्य अष्टादशकोटि सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ऊर्ध्वदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

१०. ॐ अधोदिशायां नागरूपो नाम राक्षसस्तस्य नागरूपस्य अष्टादशकोटि सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। अधोदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो दुर्गे महाशान्तिकभूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

ॐ शिखायां मे ऐँ ब्रह्माणी रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ शिरो मे ह्रीँ वैष्णवी रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ ललाटे मे क्लीँ माहेश्वरी रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ भुजौ मे ह्रीँ कौमारी रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ उदरे मे ह्रीँ ऐन्द्री रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ जङ्घे मे ह्रीँ वाराही रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ

ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ पादौ मे ह्रीँ नारसिंहि रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ सर्वाङ्गं मे क्रीँ चामुण्डे रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा।

परिणामे महाविद्यां महादेवस्य सन्निधौ।
एकविंशतिवारेण पठित्वा सिद्धिमाप्नुयात्॥१॥

परिणाम की प्राप्ति के लिए इस महाविद्या को महादेव के सामने बैठकर इक्कीस बार पाठ करने से तत्सम्बन्धित समस्त कार्य की सिद्धि होती है॥१॥

स्त्रियो वा पुरुषो वाऽपि पापं भस्मं समाचरेत्।
दुष्टानां मारणं चैव सर्वग्रहनिवारणम्॥२॥

स्त्री हो या पुरुष हो सभी अपने पाप को नष्ट करके इस महाविद्या के माध्यम से दुष्टों का संहार तथा ग्रहों के खराब दशाओं का पूर्णतया निवारण कर सकतें हैं॥२॥

सर्वकार्येषु सिद्धिः स्यात् प्रेतशान्तिर्विशेषतः॥

महाविद्या के प्रयोग से सभी कार्य सिद्ध होतें है, प्रेतशान्ति विशेष रूप से होता है।

महाविद्यापूजन के बाद भयविनाश तथा कीलन के लिए नृसिंहपूजन तथा मन्त्रोपासना अवश्य ही करना चाहिए।

महाविद्यामालामन्त्रप्रयोगः परिपूर्णम्

●

नृसिंहमन्त्रप्रयोगविधिः

ॐ क्षौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम् क्षौँ ॐ॥१॥
अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य जलं पाययेत्॥

उपरिलिखित मन्त्र से जल एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके पीने से प्रेतादि तथा ग्रहादिकों की एवं रोगों की शान्ति होती है।

विनियोगः— **अस्य श्रीनृसिंहमन्त्रस्य अत्रिर्ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीनृसिंहोदेवता, क्षौँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, ॐ कीलकं ममाभीष्टसिद्धये न्यासे जपे मार्जने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षौँ अत्रिऋषये नमः शिरसि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षौँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षौँ नृसिंहदेवताय नमः हृदये।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं क्ष्रौं बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं ॐ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं नृसिंहाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं उग्रं वीरं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं महाविष्णुं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं नृसिंहं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं भीषणं भद्रं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यऽहं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं उग्रं वीरं हृदयाय नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं महाविष्णुं शिरसे स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं शिखायां वषट्।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं नृसिंहं कवचाय हुम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं भीषणं भद्रं नेत्राभ्यां वौषट्।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यऽहं अस्त्राय फट्।

मन्त्रवर्णन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं उ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं ग्रं नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं वी नमः दक्षकर्णे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं रं नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं म नमः दक्षनासायां न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं हा नमः वामनासायां न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं वि नमः दक्षनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं ष्णुं नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं ज्व नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं ल नमः कण्ठे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ न्तं नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ स नमः दक्षभुजे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ र्व नमः वामभुजे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ तो नमः दक्षहस्ते न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ मु नमः वामहस्ते न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ खं नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ सिं नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ हं नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ भी नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ ष नमः दक्षकट्यां न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ णं नमः वामकट्यां न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ भ नमः गुह्ये न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ द्रं नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ मृ नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ त्यो नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ र्मृ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ त्युं नमः दक्षगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ न नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ मा नमः दक्षपादे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ म्य नमः वामपादे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ हं नमः पदाङ्गुल्योः न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम् नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

मन्त्रपदन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ उग्रं नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ वीरं नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ महा नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ विष्णुं नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ ज्वलन्तं नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ सर्वतो नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ मुखं नमः उदरे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहं नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ भीषणं नमः गुह्ये न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ भद्रं नमः दक्षकट्यां न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ मृत्योः नमः वामकट्यां न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ मृत्युं नमः दक्षजानौ न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नमाम्यहं नमः वामजानौ न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम् नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३ँम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भवन्तु।

प्रतिष्ठा तथा स्थापना करने के बाद भगवान् नृसिंह का पूजन करे।

नृसिंहपूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे।

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्प्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे।

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ ए॒तावा॑नस्यमहि॒मातो॒ज्ज्याया॑ँश्श्च॒पूरु॑षः॥ पादो॑ऽस्य॒ब्विश्श्वा॑भू॒तानि॑त्रि॒पाद॑स्या॒मृत॑न्दि॒वि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ त्रि॒पादू॒र्द्ध्व॒ऽउदै॒त्पुरु॑षः॒पादो॑ऽस्ये॒हाभ॑व॒त्पुनः॑॥ ततो॒ब्विष्व॒ङ्व्य॑क्राम॒त्साशनानश॒नेऽअ॒भि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ ततो॑ब्वि॒राड॑जायतब्वि॒राजो॒ऽअधि॒पूरु॑षः॥ सजा॒तोऽअत्य॑रिच्च्यतप॒श्श्चाद्भूमि॒मथो॑पु॒रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्त्स॑र्व्व॒हुत॒ःसम्भृ॑तम्पृषदा॒ज्ज्यम्॥ प॒शूँस्ताँश्श्च॑क्क्रेब्वाय॒व्या॒नार॒ण्याग्रा॒म्म्याश्श्च॒ये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्त्स॑र्व्व॒हुत॒ऽऋच॒ःसामा॑निजज्ञिरे॥ छन्दा॑ꣳसिजज्ञिरे॒तस्मा॒द्यजु॒स्तस्म्मा॑दजायत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पय:पात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पय॑ःपृथि॒व्व्यांपय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः॥ पय॑स्वतीः॒प्प्र॒दिश॑ःसन्तु॒मह्व्य॑म्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ द॒धि॒क्क्राब्णो॑ऽअकारिषंजि॒ष्ष्णोरश्श्व॑स्यब्वा॒जिन॑ः॥ सु॒र॒भिनो॒मुखा॑कर॒त्त्प्रण॒ऽआयू॑ꣳषितारिषत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ घृ॒तम्मि॑मिक्षेघृ॒तम॑स्य॒योनि॑र्घृ॒तेश्रि॒तोघृ॒तम्म्व॑स्य॒धाम॑॥ अ॒नु॒ष्ष्व॒धमाव॑हमा॒दय॑स्व॒स्वाहा॑कृतंब्वृषभब्वक्षिह॒ब्व्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीन्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोव्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अपाꣳरसमुद्द्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तंव्वोगृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ शुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्ज्जन्न्याः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्मादश्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय लेकर समर्पित करे।

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्चये॥ ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्त्स्वः॥ व्वासोअग्नेव्विश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वव्विभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ योव॑ःशि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑भाजयते॒हन॑ः॥ उ॒श॒तीरि॑वमा॒तर॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे।

ॐ षत्पुरु॑षं॒व्यद॑धुःकति॒धाव्य॑कल्पयन्॥ मुख॒ङ्किम॑स्यासी॒त्किम्बा॒हूकिमू॒रू पादा॑ऽउच्च्येते॥ ॐ ष॒ज्ञोदे॒वाना॒म्प्रत्त्यै॑तिसु॒म्नमादि॑त्त्यासो॒भव॑तामृड॒यन्त॑ः॥ आवो॒ र्व्वाचीसुम॒तिर्व्व॑वृत्त्याद॒ꣳहोश्चि॒द्याव्व॑रिवो॒वित्त॒रास॑दादि॒त्त्येब्भ्य॑स्त्त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्मा॒ऽअर॑ङ्गमामवो॒षस्य॒क्षया॑य॒जिन्व॑थ॥ आपो॑ज॒नय॑था च नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे।

ॐ त्वाङ्गन्ध॒र्व्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पति॑ः॥ त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॑ वि॒द्वान्य॑क्ष्मा॑दमुच्च्यत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे।

ॐ अक्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ह्यव॑प्प्रि॒याऽअ॑धूषत॥ अस्तो॑षत॒स्वभा॑नवो॒व्विप्प्रा॒नवि॑ष्ठया म॒तीषोजा॒न्न्वि॒न्द्रते॒हरी॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे।

ॐ ओष॑धी॒ःप्प्रति॑मोदद्ध्व॒म्पुष्प्य॑वतीःप्र॒सूव॑रीः॥ अश्श्वा॑ऽइवस॒जित्त्व॑रीर्व्वी॒रुध॑ः पारयि॒ष्ण्ण॑वः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे।

ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षःपरुष॒ष्प्परि॑॥ एवानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नुस॒हस्रे॑णश॒तेन॑ च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे।

ॐ अहिंरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंप्परिबाधमानः॥ हस्तग्घ्नोविश्श्वा व्वयुनानिविद्द्वान्पुमान्पुमांꣳसंपरिपातुविश्श्वतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे।

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽ अरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्न्वमानः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ ब्ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यःकृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्याꣳ शूद्द्रोऽअजायत॥ ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंय्योऽस्मान्धूर्व्वतितंधूर्व्वयंव्वयंधूर्व्वामः॥ देवानामसि व्वह्नितमꣳसस्नितमंपप्प्रितमंजुष्ट्टतमंदेवहूतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ ॐ अग्ग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्ग्निःस्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यःस्वाहा॥ अग्ग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहा॥ ज्ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्योज्ज्योतिःस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्प्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्म्मिणः॥ प्रप्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्प्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे।

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुःपृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽ अच्च्युतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे।

ॐ यत्पुरु॑षेणह॒विषा॑दे॒वाय॒ज्ञमत॑तन्वत॥ व॒स॒न्तो॒ऽस्यासी॒दाज्ज्यं॑ग्ग्री॒ष्मऽइ॒ध्मः॒ श॒रद्ध॒विः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गिफलमेलालवङ्गादिताम्बूलपत्राणिसमर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ याः॒फ॒लिनी॒र्य्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्पायाश्च॑पु॒ष्पिणीः॑॥ बृह॒स्प्पति॑प्प्रसूता॒स्तानो॑ मु॒ञ्च॒त्वꣳह॑सः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे।

ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः॒सम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑भू॒तस्य॑जा॒तः॒पति॒रेक॑ऽआसीत्॥ सदा॑धारपृथि॒वी द्यामु॒तेमांकस्म्मै॑दे॒वाय॑ह॒विषा॑व्विधेम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये।

ॐ आरा॑त्रि॒पार्थि॑व॒ꣳरजः॑पि॒तुर॑प्प्रायि॒धाम॑भिः॥ दि॒वः॒सदा॑ꣳसिबृह॒तीव्वि॑तिष्ठ॒सऽआत्त्वे॒षंव्व॑र्त्तते॒तमः॑॥ ॐ इ॒दꣳह॒विः॒प्र॒जन॑नंमेऽअस्तु॒दश॑वीर॒ꣳसर्व्व॑गणꣳस्व॒स्तयै॑॥ आ॒त्म॒सनि॑प्प्रजा॒सनि॑पशु॒सनि॑लोक॒सन्न्य॑भय॒सनिः॑॥ अ॒ग्ग्निः॒प्प्र॒जांब॑हु॒लांमे॑ क॒रो॒त्वन्न॒ंपयो॒रेतो॑ऽअ॒स्म्मासु॑धत्त॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ य॒ज्ञेन॑य॒ज्ञम॑यजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्मा॑णिप्प्रथ॒मान्न्या॑सन्॥ तेह॒नाकं॑म्महि॒मानः॑ सचन्त॒यत्र॒पूर्व्वे॑सा॒द्ध्याः॒सन्ति॑दे॒वाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ सें पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ स॒प्प्तास्या॑सन्न्परि॒धय॒स्त्रिः॒स॒प्प्तस॒मिधः॑कृ॒ताः॥ दे॒वायद्य॒ज्ञन्त॑न्न्वा॒नाऽअब॑ध्न॒न्पुरु॑षम्प॒शुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे।

रक्ष रक्ष नरसिंह रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं शत्रुसंहर्ता! प्राणीनां जीवनं परम्॥
विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतं।
विशेषार्घ्यं प्रदाष्यामि रक्षणं सर्वदा कुरु॥

हे नरसिंह! रक्षा करें रक्षा करें, जीवनदायक रक्षा करें, शत्रुओं का संहार करनेवाले प्राणियों को परम जीवन प्रदान करनेवाले, अपनी रक्षा के लिए विविध द्रव्यों से मिश्रित चन्दन तथा रजनी इत्यादि पुष्पों से युक्त, विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ, हमारी सदैव रक्षा करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौं नृसिंहाय नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ अनया पूजया क्ष्रौं नृसिंहदेवताः प्रीयन्तां न मम॥

नृसिंहमन्त्रप्रयोगविधिः परिपूर्णम्

●

नृसिंहमूलमन्त्रजपः

ध्यानम्—दोनों हाथों में पुष्प लेकर ध्यान करे।

तपनसोमहुताशनलोचनं घनविराममहिमांशुसमप्रभम्।
अभयचक्रपिनाकवरान्करैर्दधतमिन्दुधरं नृहरिं भजे॥

अग्नि-सूर्य-सोम के नेत्रवाले, आकाश के सदृश विशाल सूर्य जैसे प्रभावाले, अभय, चक्र, पिनाक और वर हाथों में धारण करनेवाले चन्द्र को धारण किये हुए नरसिंह का भजन करता हूँ।

मूलमन्त्रः—

ॐ क्ष्रौं उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम् क्ष्रौं ॐ॥

न्यासादि करने के बाद अयुत जप करके सहस्र आहुतियों से हवनकर सहस्र आवृत्ति जल से मार्जन करे तथा एक सहस्र आवृत्ति से जल को अभिमन्त्रित करके रोगी को पीने के लिए द, जप करने के लिए सर्वप्रथम विधिपूर्वक माला संस्कार कर ले, संस्कार करने के बाद ही कोई भी माला जप के योग्य होता है तथा जप का फल प्रदान करता है।

नृसिंहजपं परिपूर्णम्

●

जपार्थमालासंस्कारविधिः

एक समान सुन्दर रुद्राक्ष के १०८ दाने को और एक दाना सुमेरु के लिए समान सूत्र में पिरोकर प्रत्येक मणि के बीच एक एक गाठ देते हुए तैयार कर उसमें सुमेरुगुम्फित माला को परिपूर्ण कर, माला को पीपल के नवपत्रों को अष्टपद्मवत् रखकर उस पर माला स्थापित कर, पञ्चगव्यादि से प्रक्षालित कर पञ्चामृत से प्रक्षालितकर शुद्धोदक से अच्छी तरह धोकर संस्कार करे।

मालापञ्चगव्यकरणम्

ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह॥ वृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा॥ पञ्चगव्य से माला को प्रक्षालित करे।

ॐ पयःपृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥ दूध से माला को प्रक्षालित करे।

ॐ दधिक्राब्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्राणऽ आयूꣳषितारिषत्॥ दही से माला को प्रक्षालित करे।

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्म्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥ घृत से माला को प्रक्षालित करे।

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥ मधु से माला को प्रक्षालित करे।

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तंवो गृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम॥ शर्करा से प्रक्षालित करे।

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ पञ्चामृत से माला को प्रक्षालित करे।

ॐ शुद्धवालःसर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्ते रुद्रायपशुपतयेकर्ण्णायामाऽअविलिप्तारौद्रानभोरुपाःपार्ज्जन्याः॥ ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥महेरणायचक्षसे॥ शुद्ध जल से माला को प्रक्षालित करे।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः॥ भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥ जल से माला को प्रक्षालित करे।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ माला पर अष्टगन्ध लेपन करे।

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।। सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। धूपादि से माला को धूपित करे।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।। माला को दीपक दिखा प्रदीप्त करे।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानाम्।। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमेऽअस्तु सदाशिवोऽम्।। माला के प्रत्येक दानों को मन्त्र से अभिमन्त्रित करे।

अलग-अलग मन्त्रजप के लिए अलग-अलग ही मालाओं का संस्कार किया जाता है। एक ही माल से समस्त मन्त्रों का जप निषिद्ध है। अत: यहाँ दोनों प्रकार का संस्कार दिया गया है। दो अलग-अलग मालाओं में अलग-अलग संस्कार करे। ईशान मन्त्र से प्रत्येक मणियों को १०८ बार अभिमन्त्रित करके महाविद्या जप के लिए महादेवी सहित मातृका विन्यास करे तथा नृसिंह जप के लिए नृसिंहमन्त्र के साथ मातृका विन्यास करे।

महाविद्यामालायां मातृकाविन्यासः—

ॐ अँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ आँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ इँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ईँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ उँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ऊँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ऋँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ॠँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ऌँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ लॄँ ॐ ह्रूँ श्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ एँ ॐ ह्रूँ श्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऐँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ओँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ औँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अः ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ कँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ खँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ गँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ घँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ङँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ चँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ छँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ जँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ झँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ञँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ टँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ठँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ डँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ढँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ णँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ तँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ थँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ दँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ धँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ नँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ पँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ फँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ बँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ भँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापथामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ मँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ यँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ रँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ शँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ षँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ सँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ळँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ हँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ हँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ळँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ सँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ षँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ शँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ रँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ यँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ मँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ भँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ बँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ फँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ पँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ नँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ धँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ दँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ थँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ तँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ णँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ढँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ डँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ठँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ टँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ञँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ झँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ जँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ छँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ चँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ङँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ घँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ गँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ खँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ कँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अः ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ औँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ओँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऐँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ एँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लॄँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लृँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ॠँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऋँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऊँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ उँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ईँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ इँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ आँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ चँ छँ जँ झँ ञँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ तँ थँ दँ धँ नँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ पँ फँ बँ भँ मँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ यँ रँ लँ वँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ शँ षँ सँ हँ ळँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्षँ ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

नृसिंहमालायां मातृकाविन्यासः—

ॐ अँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ आँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ इँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ईँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ उँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ऊँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ऋँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ॠँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ऌँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ॡँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ एँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ऐँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ओँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ औँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ अँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ अः क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ कँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ खँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ गँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ घँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ङँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ चँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ छँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ जँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ झँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ञँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ टँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ठँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ डँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ढँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ णँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ तँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ थँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ दँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ धँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ नँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ पँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ फँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ बँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ भँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ मँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ यँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ रँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ शँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ षँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ सँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ळँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ हँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ हँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ळँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ सँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ षँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ शँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ लँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ रँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ यँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ मँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ भँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ बँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ फँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ पँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ नँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ धँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ दँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ थँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ तँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ णँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ढँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ डँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ठँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ टँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ञँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ झँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ जँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ छँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ चँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ङँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ घँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ गँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ खँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ कँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अः क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ औँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ओँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ऐँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ एँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ लॄँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ लृँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ॠँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

ॐ ह्रौँ ऋँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ऊँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ उँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ ईँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ इँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ आँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ अँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ चँ छँ जँ झँ ञँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ टँ ठँ डँ ढँ णँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ तँ थँ दँ धँ नँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ पँ फँ बँ भँ मँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ यँ रँ लँ वँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्षँ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

महाविद्या तथा नृसिंह के मालाओं में अलग-अलग महाविद्या के माला में महाविद्या का तथा नृसिंह के माला में नृसिंह की प्रतिष्ठा करे।

महाविद्यामालप्रतिष्ठाविधिः

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुस्सामानिछन्दान्सि, प्राणशक्तिर्देवता प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋग्यजुस्सामानि छन्देभ्यो नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्राणशक्तिर्देवतायै नमः हृदि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रौँ प्राणशक्तिर्देवतायै नमः सर्वाङ्गे।

कराक्षरन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ आकाशवायवाग्न्यपभूम्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ छँ जँ झँ ञँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ ठँ डँ ढँ णँ श्रोत्रत्वक्नयनजिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ थँ दँ धँ नँ वाक्पाणिपायुलिङ्गोपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नपः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ फँ बँ भँ मँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ बुद्धिमनोहङ्कारचित्तात्मने करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयाद्याक्षरन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ आकाशवायवाग्न्यपभूम्यात्मने हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ छँ जँ झँ ञँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ ठँ डँ ढँ णँ श्रोत्रत्वक्नयनजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ थँ दँ धँ नँ वाक्पाणिपायुलिङ्गोपस्थात्मने कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ फँ बँ भँ मँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ बुद्धिमनोहङ्कार चित्तात्मने अस्त्राय फट्।

व्यापकाक्षरन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ नाभ्यारभ्यपादान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ हृदयारभ्यनाभ्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रोँ मस्तकारभ्यहृदयान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ त्वगात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ असृगात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ मांसात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ मेदात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ मज्जात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ शुक्रात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हौँ ओजात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्राणात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ जीवात्मने नमः न्यस्यामि। लेलिहान मुद्रा से हृदय पर न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि। माला के मणियों में न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मण्डूकादिपरतत्त्वान्तं पीठदेवताभ्यो नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जयादिशक्तिभ्यो नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ पीठाय नमः।

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करे।

ॐ पाशाश्चापासृक्कपालेऋणीषूञ्छूलहस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां, देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥

पाश-चाप-सृक्-कपाल धारण किये हुए हाथ में त्रिशूल की शोभा से विभूषित रक्तवर्णात्मिका रक्त मय दिशाओं से युक्त रक्त कमल पर आसीन देवी प्राण शक्ति का ध्यान करता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् माले महाविद्यादेवताया प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् माले महाविद्यादेवताया जीव इह स्थितः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् माले महाविद्यादेवताया सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनस्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अस्मिन् मालस्था महाविद्यादेवताया गर्भानादि पञ्चदश संस्कारान् सम्पादयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य्बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्ट्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्यायै सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्॥

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्यायै नमः प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भव।

नृसिंहमालाप्रतिष्ठाविधिः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् माले नृसिंहदेवताया प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् माले नृसिंहदेवताया जीव इह स्थितः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् माले नृसिंहदेवताया सर्वेद्रियाणिवाङ्मनस्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अस्मिन् मालस्थ नृसिंहदेवताया गर्भानादि पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्स्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्ष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३ँम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्ष्रौँ नृसिंहदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु॥

ॐ क्ष्रौँ नृसिंहाय नमः प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भवन्तु।

मालाप्रार्थना—हाथ में माला ग्रहण करके प्रार्थना करे।

ॐ मां माले माहामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥

हे माले! सर्वशक्तिस्वरूपिणी, महामाया चतुर्वर्ग के लिये न्यस्त हमारे लिए सिद्धि प्रदान करनेवाली हो जाइये॥१॥

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥२॥

हे माले! हमें निर्विघ्न करो, दक्षिण हाथ में तुम्हें धारण करते हैं, जपकाल में सिद्धि

के लिए हमारे ऊपर प्रसन्न होकर सिद्धि प्रदान करो॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अक्षमालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

जपार्थमालासंस्कारं परिपूर्णम्

●

श्रीमहाविद्यास्तोम्

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करे।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥१॥

चार भुजाओंवाली, महादेवी, नाग (पवित्रकसंज्ञक) यज्ञोपवीत को धारण की हुई, महा विशाल शरीरवाली, विकराल मुखवाली, सिद्धों एवं विद्याधरादिकों से सेवित तथा गणों से युक्त॥१॥

मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥२॥

मुण्डमालावली को धारण की हुई, खुले हुए केशवाली, हास्य मुखवाली महादेवी का सभी कामनाओं की सिद्धि के लिए ध्यान करता हूँ॥२॥

शिव उवाच

दुर्लभं तारिणीमार्गं दुर्लभं तारिणीपदम्।
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं दुर्लभं शवसाधनम्॥३॥

इस संसार में तारणी का मार्ग अतिदुर्लभ है, तारिणी का पद जानना भी अतिदुर्लभ है, मन्त्रों के अर्थ भी जानना अतिदुर्लभ है तथा शवसाधन भी अतिदुर्लभ है॥३॥

श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम्।
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम्॥४॥

श्मशान का साधन करना, योनि का साधन करना, ब्रह्म का साधन करना, क्रियायोग का साधन करना, भक्ति का साधन करना तथा मुक्ति का साधन करना इस संसार में अत्यन्त दुर्लभ तथा दुरूह है॥४॥

तव प्रसादाद् देवेशि! सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः।
नमस्ते चण्डिके चण्डि! चण्डमुण्डविनाशिनी!॥५॥

हे देवताओं की ईश्वरी! आप के ही प्रसाद पूर्वक कृपा से सभी सिद्ध लोग समस्त सिद्धि पाते हैं, चण्ड-मुण्ड असुरों का संहार करनेवाली चण्डिका, महामहाचण्डी देवी आपको नमस्कार है॥५॥

नमस्ते कालिके! काली महाभयविनाशिनि!।
शिवे रक्ष जगद्धात्रि! प्रसीद हरवल्लभे!॥६॥

हे कालिकादेवी! कालरूपी महाभय का विनाश करनेवाली, आपको नमस्कार है, हे शिव की अर्धाङ्गिनी! हे जगत् को धारण करनेवाली भगवती शिवे! रक्षा करो, हे हर की वल्लभा! प्रसन्न होकर, हमारी रक्षा कीजिये॥६॥

प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्।
जगत् क्षोभकरी विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्॥७॥

जगत् का धारण तथा पालन करनेवाली, आपको प्रणाम है। जगत् का संहार करने वाली महाविद्यारूपिणी देवी, जगत् की सृष्टि करनेवाली महादेवी आपको प्रणाम है॥७॥

करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्।
हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्॥८॥

हे महादेवी! कराल, विकट, घोर, मुण्डमाला से विभूषित, हर के द्वारा अर्चित, हर के द्वारा आराधित, हर की प्राणवल्लभा देवी आपको नमस्कार है॥८॥

गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालङ्कारभूषिताम्।
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्॥९॥

हे गौरी! गुरु (भगवान् शङ्कर) की प्रिया, गौर वर्णवाली, विभिन्न आभूषणों से विभूषित, हरि की प्रिया, महामाया, ब्रह्म की पूजिता आपको नमस्कार है॥९॥

सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्।
मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिङ्गशोभिताम्॥१०॥

साधनाओं से सिद्ध होनेवाली, सिद्धों की ईश्वरी, सिद्धविद्याधरगणों से युक्त, मन्त्रों की सिद्धि प्रदान करनेवाली, योनिसिद्धि प्रदान करनेवाली, लिङ्ग (निष्कलरूप) से सुशोभित महादेवी आपको नमस्कार है॥१०॥

प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्।
उग्रामुग्रमयीमुग्र तारामुग्रगणैर्युताम्॥११॥

सभी दुर्गति का नाश करनेवाली, उग्रों में उग्र तथा उग्रताराओं से और उग्र गणों से युक्त हे महामाया दुर्गादेवी! आपको नमस्कार है॥११॥

नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्।
श्यामाङ्गीं श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्॥१२॥

हे नीला देवी! नीलप्रभा से विभूषित श्यामा, नीलसुन्दरी देवी को नमस्कार है, श्याम वर्ण के अङ्गोंवाली, श्याम घटाओं के सदृश, श्याम वर्ण से विभूषित देवी आपको नमस्कार है॥१२॥

प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्।
विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्॥१३॥

जगत् को धारण करनेवाली, सभी साधनों की साधिका, विश्व की ईश्वरी, महा विशाल, विकट तथा भयङ्कर नाद करनेवाली देवी आपको नमस्कार है॥१३॥

आद्यामाद्या गुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम्।
श्रीदुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्॥१४॥

हे आद्या महामाया! आदि गुरु, आदिनाथ भगवान् शङ्कर से प्रपूजित श्रीदुर्गा, धन प्रदान करनेवाली, धनदा देवी, अन्नपूर्णा, कमलदलनिवासिनी, देवताओं की स्वामिनी आपको नमस्कार है॥१४॥

प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्।
त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्॥१५॥

हे चन्द्रशेखर शङ्कर की वल्लभा! सम्पूर्ण जगत् को धारण करनेवाली देवी, त्रिपुरसुन्दरी अबलागण से विभूषित बाला भगवती को प्रणाम है॥१५॥

शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्।
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्॥१६॥

हे शिव को दूत बनानेवाली शिवदूती! शिव की आराध्या, शिव की ध्येया, सनातनी सुन्दरी, तारिणी सभी शिवागणों से विभूषित देवी को नमस्कार है॥१६॥

नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्।
सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम्॥१७॥

हे नारायणी! विष्णु की पूज्या ब्रह्म-विष्णु-हर की प्रिया, सभी सिद्धि को प्रदान करनेवाली, नित्या (सदासर्वदा रहनेवाली) अनित्य गुणोंवाली देवी आपको नमस्कार है॥१७॥

सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम्।
दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्॥१८॥

सगुण तथा निर्गुण रूपोंवाली, सभी सिद्धि को प्रदान करने वाली, दिव्य रूपों वाली दिव्य सिद्धि को प्रदान करनेवाली, महाविद्या महामहेश्वरी आपको नमस्कार है॥१८॥

महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्॥१९॥

महेश की भक्ति से भक्तिमान, महा ईश्वरी महाकाल के द्वारा विधिपूर्वक पूजित, जगत् को धारण करनेवाली, शुम्भासुर का संहार करनेवाली देवी आपको सतत नमस्कार है॥१९॥

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्।
भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्॥२०॥

हे रक्त प्रिया! रक्त वर्णोवाली, रक्तबीज असुर का संहार करनेवाली, सम्पूर्ण भुवन की अधिष्ठात्री, भुवनों में व्याप्त भैरवी देवी, लोलजिह्वावाली देवताओं की ईश्वरी आपको सतत नमस्कार है॥२०॥

चतुर्भुजां दशभुजां अष्टादशभुजां शुभाम्।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्॥२१॥

चारभुजा-दशभुजा-अट्ठारह भुजाओं से शोभायमान, त्रिपुर की ईश्वरी, विश्वनाथ की प्रिया, विश्व की ईश्वरी शिवा आपको प्रणाम है॥२१॥

अट्टहासां अट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।
कमलां छिन्नभालां च मातङ्गीं सुरसुन्दरीम्॥२२॥

मुख से सदैव अट्टहास करनेवाली, अट्टहास को प्रेम करने वाली, धूम्रासुर का विनाश करनेवाली, कमला, छिन्नमस्तिका, मातङ्गी तथा त्रिपुरसुन्दरी रूपिणी आपको नमस्कार है॥२२॥

षोडशीं विजयां भीमां धूम्रां च बगलामुखीम्।
सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्॥२३॥

षोडशी, विजया, भीमा, धूम्रा, बगलामुखी, समस्त सिद्धियों को देनवाली, सभी मन्त्रों का शोधन करनेवाली महादेवी आपको नमस्कार है॥२३॥

प्रणमामि जगत्तारां सारां च मन्त्रसिद्धये।
इत्येवं च वरारोहं स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्॥२४॥

जगत् को तारनेवाली, सभी मन्त्रों की सारभूता मन्त्रसिद्धि प्रदान करनेवाली आपको प्रणाम है, वर को प्रदान करनेवाली देवी सभी सिद्धियों को प्रदान करनेवाला आपका स्तोत्र सभी सिद्धियों को देनेवाला है॥२४॥

पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि!।
कुजवारे चतुर्दश्यां अमायां जीववासरे॥२५॥

चतुर्दशी के दिन मङ्गलवार होने पर तथा अमावस्या को गुरुवार होने पर इस स्तोत्र का पाठ करने से निश्चय ही बाधाओं तथा दुःखों से छुटकारा मिल जाता है॥२५॥

शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्।
त्रिपक्षे मन्त्रसिद्धिः स्यात् स्तोत्रपाठाद्धि शङ्करि!॥२६॥

हे शङ्करी! शुक्रवार को अर्धरात्रि में इस स्तोत्र का पाठ करने से निश्चय ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। तीन पक्ष (पैंतालिस दिन) तक इसका पाठ करने से मन्त्र की अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है॥२६॥

चतुर्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा।
निशामुखे पठेत् स्तोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्॥२७॥

चतुर्दशी को शनिवार या मङ्गलवार पड़ने पर निशामुख (अर्धरात्रि) में इस स्तोत्र का पाठ करने से अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है॥२७॥

केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा।
जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद् भुजङ्गिनी॥२८॥

केवल पाठ करने मात्र से ही उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है तथा सतत निश्चय ही भुजङ्गिनी चण्डी देवी (कुण्डलिनी) जाग्रत् होती है॥२८॥

इस प्रकार से पाठ करके देवि को पाठ समर्पित करे।

अनेन स्तोत्र पाठाख्येन महाविद्याकालिका प्रीयतां न मम।

मुण्डमालातन्त्रेमहाविद्यास्तोत्रं परिपूर्णम्

●

श्रीमहाविद्याकवचम्

भैरव उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्।
आद्याया महाविद्यायाः सर्वाभीष्टफलप्रदम्॥१॥

हे देवि! सुनें, सभी सिद्धियों को प्रदान करनेवाला, सभी अभीष्ट फल को प्रदान करने वाला आदिमहाविद्याकवच बताता हूँ॥१॥

कवचस्य ऋषिर्देवि! सदाशिव इतीरितः।
छन्दोऽनुष्टुब्देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता॥२॥

हे देवि! इस कवच के ऋषि सदाशिव, अनुष्टुप्छन्द तथा महाविद्या देवता है॥२॥

धर्माऽर्थकाममोक्षाणां विनियोगश्च साधने।
ऐँकारः पातु शीर्षे मां कामबीजं तथा हृदि॥३॥

इस महाविद्या का धर्मार्थकाममोक्ष के लिए विनियोग करना चाहिये, ऐँकार हमारे शिर भाग की रक्षा करें, कामबीज (क्लीँ) हमारे हृदय की रक्षा करें॥३॥

रमाबीजं सदापातु नाभौ गुह्ये च पादयोः।
ललाटे सुन्दरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशतः॥४॥

ह्रीँबीज सदा हमारी नाभि, गुह्य तथा पैर की रक्षा करें, ललाटे में सुन्दरी (श्रीँ) रक्षा करे, उग्रा देवी (हूँ) कण्ठ की रक्षा करें॥४॥

भगमाला सर्वगात्रे लिङ्गे चैतन्यरूपिणी।
पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा॥५॥

भगमाला देवी सम्पूर्ण शरीर की रक्षा करें, चैतन्यरूपिणी देवी लिङ्ग की रक्षा करें, पूर्व में वाराही देवी रक्षा करें, ब्रह्माणी देवी दक्षिण भाग की रक्षा करें॥५॥

उत्तरे वैष्णवी पातु चेन्द्राणी पश्चिमेऽवतु।
माहेश्वरी च आग्नेय्यां नैर्ऋत्ये कमला तथा॥६॥

उत्तर भाग में वैष्णवी देवी रक्षा करें, इन्द्राणी देवी पश्चिम में रक्षा करें, माहेश्वरी देवी अग्निकोण में रक्षा करें, नैर्ऋत्यकोण में कमला देवी रक्षा करें॥६॥

वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा ह्रीँशकेऽवतु।
इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्यां च यो जपेत्॥७॥

वायव्य कोण में कौमारी देवी रक्षा करे, ह्रीँ स्वरूपिणी चामुण्डा देवी सर्वत्र रक्षा करे, इस कवच को बिना पाठ किये ही जो महाविद्या का जप-अर्चन करते हैं॥७॥

न फलं जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि॥

उनको करोड़ों कल्प तक भी अर्चन करने पर कोई फल नहीं प्राप्त होता है॥८॥

इस प्रकार से पाठ करके देवी को पाठ समर्पित करे।

अनेन कवचपाठाख्येन महाविद्याकालिका प्रीयतां न मम।

रुद्रयामले महाविद्याकवचं परिपूर्णम्

●

श्रीमहाविद्याकालिकाकवचम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीकालिकादेवता शत्रुसंहारार्थे पाठे विनियोगः।**

अथ ध्यानम्

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां लोलजिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्॥१॥

तीन नेत्रोंवाली, लोलजिह्वा, बहुत रूपोंवाली, पूर्णचन्द्र के समान मुखोंवाली, महामाया काली का ध्यान करना चाहिये॥१॥

नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसङ्घविदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं अभयं वरदं तथा॥२॥

नीलोत्पल पद्म के पत्रों के समान श्याम, शत्रुओं के समुदाय को नष्ट करनेवाली, हाथ

में नरमुण्ड, खड्ग, अभय तथा वरमुद्राओं को धारण की हुई महामाया काली का ध्यान करना चाहिये॥२॥

निर्भयां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम्।
साट्टहासाननां देवीं सर्वदां च दिगम्बरीम्॥३॥

निर्भय, रक्तवदनवाली, विकराल दाँतोंवाली, विशाल घोर रूपवाली, नित्य अट्टहास में निमग्न तथा सदा सर्वदा दिगम्बर महामाया काली का ध्यान करना चाहिये॥३॥

शवासनस्थितां कालीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
एवं ध्यात्वा महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥४॥

शवासन पर आरूढ तथा मुण्ड की माला से विभूषित महामाया काली का समस्त कामनाओं के लिए ध्यान करना चाहिये॥४॥

अथ कवचम्

ॐ कालिका घोररूपाख्या सर्वकामफलप्रदा।
सर्वदेवस्तुता देवि! शत्रुनाशं करोतु मे॥५॥

घोर रूपवाली कालिका सभी कामनाओं की पूर्ति करनेवाली हैं, सभी देवताओं से स्तुत देवी काली हमारे समस्त शत्रुओं का नाश करें॥५॥

ॐ ह्रीं ह्रीं रूपिणी चैव ह्रां ह्रीं ह्रूं रूपिणी तथा।
ह्रां ह्रीं क्षैं क्षौंस्वरूपा सा सदा शत्रून्विदारयेत्॥६॥

ह्रीं ह्रीं रूपोंवाली, ह्रां ह्रीं ह्रूं रूपोंवाली तथा ह्रां ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपोंवाली महामाया काली सदैव हमारे समस्त शत्रुओं को नष्ट करें॥६॥

श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणीदेवी भवबन्धविमोचिनी।
ह्रूं रूपिणी महाकाली रक्षाऽस्मान्देवी सर्वदा॥७॥

श्रीं ह्रीं ऐं रूपोंवाली देवी जो भवबन्धन का विमोचन करनेवाली हैं तथा ह्रूं रूपिणी महाकाली देवी सदा सर्वदा हमारी रक्षा करें॥७॥

यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः।
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शङ्करप्रियाम्॥८॥

हे शङ्कर की परम प्रिया कालिका! जैसे आपने पूर्वकाल में शुम्भ दैत्य का बध किया, निशुम्भ महासुर का बध किया उसी प्रकार हमारे बैरियों को नष्ट करने के लिए आपकी वन्दना करता हूँ॥८॥

ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका।
कौमार्यैन्द्री च चामुण्डा खादन्तु मम विद्विषः॥९॥

ब्राह्मी, शैवी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, कौमारी, ऐन्द्री, चामुण्डा रूपोंवाली महामाया महाकालिका हमारे कालुष्य को तुरन्त नष्ट करें॥९॥

सुरेश्वरी घोररूपा चण्डमुण्डविनाशिनी।
मुण्डमालावृताङ्गी च सर्वतः पातु मां सदा॥१०॥

भयंकर रूपों वाली सुरेश्वरी, चण्डमुण्ड का विनाश करने वाली, अङ्गों में मुण्ड की माला धारण करने वाली हमारी सभी तरफ से रक्षा करें॥१०॥

क्रीँ हूँ ह्रीँ कालिके घोरे दंष्ट्रेव रुधिरप्रिये।
रुधिरापूर्णवक्त्रेण रुधिरेणावृतस्तनी॥११॥

क्रीं हूं ह्रीं रूपावाली हे कालिके! रुधिर से प्रसन्न होनेवाली! भयंकर दांतों वाली, सम्पूर्ण मुख में रक्त लगी हुई, रक्त से आवृत शरीरवाली महामाया महाकालिका हमारी सदा सर्वदा सर्वत्र रक्षा करें॥११॥

अथ मन्त्रः

ॐ क्रीँ कालिके मम शत्रून् खादय खादय हिंसय हिंसय मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटयोच्चाटय द्रावय द्रावय शोषय शोषय स्वाहा। ॐ क्रीँ हूँ ह्रीँ कालिकायै मदीयशत्रून् समर्पयामि स्वाहा।

ॐ जय जय किरि किरि किटि किटि कट कट मर्द मर्द मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंस ध्वंस भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानान् चामुण्डे सर्वजनान् राज्ञो राजपुरुषान् स्त्रियो मम वश्यान् कुरु कुरु तनु तनु धान्यं धनं मेऽश्वान् गजान् रत्नानि दिव्यकामिनीपुत्रान् राज्यश्रियं देहि देहि यच्छ यच्छ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः स्वाहा।

फलश्रुतिः

इत्येतत्कवचं दिव्यं कथितं शम्भुना पुरा।
ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति शत्रवः॥१॥

इस कवच को पूर्व काल में स्वयं शम्भु ने ही कहा है, इसका जो नियमित पाठ करता है उसके समस्त शत्रू निश्चित ही नष्ट होते हैं, यह ध्रुव सत्य है।

वैरिणं प्रलयं यान्ति व्याधिता वा भवन्ति हि।
बलहीना पुत्रहीना शत्रवस्तस्य सर्वदा॥२॥

कालिका के भक्त के समस्त वैरियों का प्रलय (नष्ट) हो जाता है, अथवा उनकी समस्त व्याधियाँ निश्चय पूर्वक नष्ट हो जाती हैं, उसके समस्त शत्रु बल तथा पुत्र से हीन हो जाते हैं॥२॥

सहस्रपठनात्सिद्धिः कवचस्य प्रसादतः।
कार्याणि सर्वसिद्ध्यन्ति यथा शङ्करभाषितम्॥३॥

इस कवच का एक हजार पाठ करने से शत्रु विनाश सम्बन्धित समस्त कार्यों की सिद्धि होती है, अन्य भी सभी कार्यों की पूर्ति होती है, यह स्वयं भगवान् शङ्कर ने दृढ़ निश्चय पूर्वक कहा है॥३॥

श्मशानाङ्गारमादाय चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः।
पादोदकेन पिष्ट्वा तल्लिखेल्लोहशलाकया॥४॥

श्मशान से अग्नि लाकर उसका प्रयत्नपूर्वक चूरा करके, अपने पैर के धोवन के जल में पीस करके उससे लोहे की कलम से शत्रु का चित्र बनाये॥४॥

भूमौ शत्रून् हीनरूपानुत्तरा शिरसस्तथा।
हस्तं दत्त्वा तु हृदये कवचं तु स्वयं पठेत्॥५॥

भूमि पर शत्रु के चित्र को उत्तर पैर दक्षिण सिर करके बनाकर उसके हृदय पर हाथ रखकर स्वयं कवच का पाठ करे॥५॥

शत्रोः प्राणप्रतिष्ठां तु कुर्यान्मन्त्रेण मन्त्रवित्।
हन्यादस्त्रप्रहारेण शत्रोः गच्छ यमच्छयम्॥६॥

शत्रु की प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से करके, उस चित्र को कवच पाठ करते हुए, अस्त्र से प्रताडित करते हुए हनन करे तो शत्रु शीघ्र ही यमलोक को चला जाता है॥६॥

ज्वलदङ्गारतापेन भवन्ति ज्वरिता भृशम्।
प्रोञ्छनैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम्॥७॥

शत्रु के उस चित्र को जलती हुई अग्नि में तपाने से शत्रु तुरन्त ही भयंकर ज्वर से ग्रस्त हो जाता है तथा शत्रु के बायें पैर का प्रोक्षण करने से वह शत्रु शीघ्र ही दरिद्र हो जाता है॥७॥

वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम्।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्रपौत्रादिवृद्धिदम्॥८॥

यह कवच वैरियों को नष्ट करनेवाला तथा समस्त जीवों को वश में करनेवाला है तथा पाठ करनेवाले को पुत्रपौत्रादि की वृद्धि तथा परम ऐश्वर्य प्रदान करनेवाला है॥८॥

प्रभातसमये चैव पूजाकाले च यत्नतः।
सायंकाले तथा पाठात्सर्वसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्॥९॥

प्रात:काल सूर्योदय के समय, पूजाकाल में यत्नपूर्वक तथा सायंकाल में जो इसका त्रिकाल पाठ करता है, उसे अवश्य ही समस्त कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है॥९॥

शत्रूरुच्चाटनं याति देशाद्वा विच्युतो भवेत्।
पश्चात्किङ्करतामेति सत्यं सत्यं न संशयः॥१०॥

त्रिकाल पाठ करनेवाले भक्तों के समस्त शत्रुओं का उच्चाटन हो जाता है और वह शत्रु देश से विच्युत हो जाता है और बाद में भिक्षु हो जाता है, इसमें कोई संशय नही है, यह सत्य, पूर्ण सत्य ही है॥१०॥

शत्रुनाशकरे देवि! सर्वसम्पत्करे शुभे।
सर्वदेवस्तुते देवि! कालिके त्वां नमाम्यहम्॥११॥

हे शुभे! यह कवच समस्त शत्रुओं का नाश करनेवाला है तथा सभी सम्पत्ति को प्रदान करने वाला है, सभी देवताओं से स्तुत देवी, हे कालिके! तुम्हें मैं नमस्कार करता हूँ॥११॥

इस प्रकार से कवच का पाठ करके देवि को पाठ समर्पित करे।

अनेन कवचपाठाख्येन महाविद्याकालिका प्रीयतां न मम।

श्रीमहाविद्याकालिकाकवचं परिपूर्णम्

श्रीमहाविद्याक्षमापनस्तोत्रम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीदक्षिणकालिकाक्षमापनस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहाकालऋषिः उष्णिक्छन्दः श्रीकालिकादेवता क्रीँ बीजं ह्रीँ शक्तिः हूँ कीलकं श्रीमहाविद्याप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।**

प्राग्देहस्थो यदाऽहं तव चरणयुगलं नाश्रितो नार्चितोऽहम्,
तेनाद्यै कीर्तिवर्गैः जठरदहनैर्बाद्ध्यमानो बलिष्ठैः।
क्षिप्त्वा जन्मान्तरान्नः पुनरिह भविता क्वाश्रयः क्वाऽपि सेवा,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥१॥

पूर्व में देह धारण (जन्म लेने) करने पर हमने तुम्हारे चरण युगल का आश्रय नहीं लिया और न ही अर्चनादि ही किया, जिससे प्रारम्भिक कर्मफल से जठर के बलवान् घोरतम ताप में पड़ गया, पुनः जठर से गिरकर इस जन्म को प्राप्त किया, इस जन्म में भी किसका आश्रय लें, किसकी सेवा करें, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥१॥

बाल्ये बालाऽभिलाषैर्जडितजडमतिर्बाललीलाप्रसक्तो,
न त्वां जानामि मातः! कलिकलुषहरां भोगमोक्षप्रदात्रीम्।
नाचारो नैव पूजा न च यजन कथा न स्मृतिर्नैव सेवा,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥२॥

इस जन्म में भी पूर्व में बाल्यकाल में बाल्यकालिक अभिलाषाओं में ही ग्रस्त रहा, कालुष्य का हरणकर भोग और मोक्ष को प्रदान करनेवाली माता तुम्हे जानता ही नहीं था, तुम्हारे आचार और पूजा तथा तुम्हारे यजन की बात तुम्हारा ध्यान और सेवा जानता ही नहीं था, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥२॥

प्राप्तोऽहं यौवनं चेद् विषधरसदृशैरिन्द्रियैर्दष्ट्रगात्रो,
नष्टप्रज्ञः परस्त्री परधनहरणे सर्वदा साऽभिलाषः।
त्वत्पादाम्भोजयुग्मं क्षणमपि मनसा नतोऽहं कदाऽपि,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥३॥

जब हमने यौवनावस्था प्राप्त की तब विषधर के सदृश इन्द्रियों के मुखस्थित दाँतों में फँसा रहा (इन्द्रिय भोग में सदैव लगा रहा) तथा बुद्धि को नष्ट करके दूसरे का धन तथा दूसरे की स्त्री हरणादि की सदा सर्वदा अभिलाषा करता रहा, तुम्हारे (दोनों पैर का) चरण का क्षण मात्र भी ध्यान कभी भी हमने नहीं किया, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।३।।

प्रौढा भिक्षाभिलाषी सुतदुहितकलत्रादिमन्नादिचेष्टः,
क्व प्राप्स्ये कुत्र यामीत्यनुदिनमनिशं चिन्तया भग्नदेहः।
न ते ध्यानं न चास्था न च भजनविधिर्नामसङ्कीर्तनं वा,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।४।।

प्रौढा अवस्था आने पर घूम-घूमकर भिक्षा मागनें की अभिलाषा करनेवाला हो गया, पुत्रदुहिता, कलत्रादि तथा अन्नादि प्राप्ति की चेष्टा में लगा रहा, हमने तुम्हारा कभी कोई ध्यानादि नही किया तथा तुम्हारे प्रति कोई आस्था भी कभी नही किया, कभी तुम्हारा भजन, कीर्तनादि भी नही किया, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालस्वरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।४।।

वृद्धत्वे बुद्धिहीनः कृशविवशतनुः श्वासकासातिसारैः,
कर्मानर्होऽक्षिहीनः प्रगलितदशनः क्षुत्पिपासाभिभूतः।
पश्चात्तापेन दग्धो मरणमनुदिनं ध्येयमात्रं न चाऽन्यत्,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।५।।

वृद्धावस्था आने पर बुद्धिहीन, अत्यन्त कृश शरीरवाला, वात-पित्त-कफ तथा अतिसारादि रोगों से ग्रस्त हो गया, कार्य करने में भी अक्षम, तथा आँखों से हीन तथा दाँतों से विहीन, भूख और प्यास से ग्रस्त होकर तड़पनेवाला होकर पश्चात्ताप की अग्निज्वाला में दग्ध होता हुआ मरण-दिन के भय से ग्रस्त होने पर आपके सिवाय कोई ध्येय नहीं है, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।५।।

कृत्वा स्नानं दिनादौ क्वचिदपि सलिलो न कृतं नैव पुष्पं,
ते नैवेद्यादिकं च क्वचिदपि न कृतं नाऽपि भावो न भक्तिः।
न न्यासो नैव पूजा न च गुणकथनं नाऽपि चाऽर्चा कृतास्ते,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।६।।

दिन के प्रातः काल में कभी स्नान नहीं किया, कभी आपके लिए सुन्दर मुलायम फूल भी नहीं लाया, कभी आपके लिए भोग भी नहीं लाया, कभी आपके प्रति भाव भक्ति भी नही किया, कभी आपकी न्यास पूजा आपके स्तोत्रों का पाठ तथा अर्चना भी नहीं किया, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।६।।

जानामि त्वां न चाऽहे भवभयहरणीं सर्वसिद्धिप्रदात्रीम्,
नित्यानन्दोदयाढ्यं त्रितयगुणमयीं नित्यशुद्धोदयाढ्यम्।
मिथ्याकर्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीडितो दुःखसङ्घैः,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥७॥

सर्व सिद्धि को प्रदान करनेवाली, भवभय का हरण करनेवाली माता तुम्हें जाना तक नही, नित्य आनन्द की, दया की वर्षा करनेवाली, तीन गुणों (सत्व-रज-तम) में अभिव्यक्त नित्य शुद्ध, दया का वर्षण करनेवाली, कभी तुम्हारे सेवा की अभिलाषा नहीं किया, हमेशा असत्य कर्म में लगा रहा तथा दुःखों के समुदाय में फसा रहा, अतः प्रकटित वदन वाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥७॥

कालाभ्रां श्यामलाङ्गी विगलितचिकुरां खड्गमुण्डाभिराभां,
त्रासत्राणेष्टदात्रीं कुणपगण शिरोमालिनीं दीर्घनेत्राम्।
संसारस्यैकसारं भवजननहरा भावितो भावनाभिः,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥८॥

मेघ के समान कृष्ण वर्णवाली, श्यामल अङ्गोंवाली, बिखरे हुए बालोंवाली, हाथों में खड्ग और मुण्ड धारण करनेवाली, दुःखों से सदैव छुटकारा करानेवाली, कुणपगण को शिर पर धारण करने वाली, दीर्घ नेत्रोंवाली, संसार की एक मात्र सारभूता, भव सागर में जन्ममृत्यु के बन्धन से छुटकारा दिलानेवाली, भावनाओं में भावित महादेवी, ध्यान मात्र से ही प्रसन्न होनेवाली माता हमने आपकी सेवा कभी नही की अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥८॥

ब्रह्माविष्णु तथेशः परिणमति सदा त्वत्पदाम्भोजयुग्मम्,
भाग्याभावान्न चाऽहं भवजननि भवत्पादयुग्मं भजामि।
नित्यं लोभप्रलोभैः कृतवशमतिः कामुकस्त्वां प्रयाचे,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥९॥

आपके दोनों चरण में ब्रह्माविष्णु तथा महेश सभी नित्य प्रणाम करते है, भाग्य से हीन होकर हमने आपकी चरण युगल की कभी सेवा नही किया, मै अत्यन्त कामुक तथा काम, क्रोध तथा लोभादि के अधीन बुद्धि वाला हूँ, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥९॥

रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुषयुततनुः कामनाभोगलुब्धः,
कार्याऽकार्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसङ्घैर्विहीनः।
क्व ध्यानं ते क्व चाऽर्चा क्व च मनु जपन्नैवकिञ्चित्कृतोऽहं,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥१०॥

मै राग-द्वेष से मदोन्मत्त, पापी, कालुष्ययुक्त शरीरवाला, निरन्तर कामादि भोगों में

लिप्त, कार्याकार्य (करने योग्य न करने योग्य) विवेक से अनभिज्ञ, अकुलीन, अपने स्वजन (कुटुम्ब) वर्ण से रहित हूँ, इसीलिए तो आपका ध्यान, पूजन, जपतपादि से हीन हूँ, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप माता महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥१०॥

रोगी दुःखी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पापचेताः,
निद्रालस्यप्रसक्तः सुजङ्गरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा।
किं ते पूजाविधानं त्वयि क्व च मनुमिति क्वानुरागः क्व चास्था,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥११॥

मैं रोगी, दुःखी, दरिद्र, दूसरों के अधीन, व्यभिचारी, पापी, निद्रा, आलस्य से युक्त, एकमात्र अपना उदर-पोषण करने में ही लगा रहता हूँ, इसलिए आपके पूजन में मेरी बुद्धि आपके प्रति प्रेम, अनुराग, भक्ति तथा आस्था नहीं है, अतः हे प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप माता महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करो॥११॥

मिथ्याव्यामोहरागैः परिवृतमनसः क्लेशसङ्घान्वितस्य,
क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरणविरहिणः पापकर्मप्रवृत्तेः।
दारिद्र्यस्य क्व धर्मः क्व च जननिरुचिः क्व स्थितः साधुसङ्गैः,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥१२॥

मिथ्या असत्य व्यामोहादि राग में पड़े हुए चित्तवाले क्लेशसमूह से पीडित क्षुधा, निद्रा से पीड़ित, आपके ध्यान से हीन, पाप कर्म में प्रवृत्त, हे जननी! ऐसे मुझ दरिद्र का न तो कोई धर्म है, न आपमें प्रेम ही है और न सज्जनों की सङ्गति ही है, अतः प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप माता महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥१२॥

मातस्तातस्य देहज्जननिजङ्गरगः संस्थितस्त्वद्वशेऽहं,
त्वं हर्ता कारयित्री करणगुणमयी कर्महेतुस्वरूपा।
त्वं बुद्धिश्चित्तसंस्थाऽप्यहमति भवती सर्वमेतत्क्षमस्व,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥१३॥

हे माता! पिता के देह द्वारा माता के उदर गर्भ में स्थित होने से आपके ही अधीन मायाग्रस्त हूँ, आप ही जगत् की हर्ता, जगत् की सृष्टि करनेवाली, त्रिगुणोंवाली कर्म की हेतुभूतरूपा हैं, यद्यपि आप मेरे बुद्धि, चित्त में स्थित हैं, तथापि आपको मै पहचान नहीं सका, अतः हे माता! प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें॥१३॥

त्वं भूमिस्त्वं जलञ्च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा,
त्वञ्चाऽऽकाशं मनश्च प्रकृतिरसि महत्पूर्विका पूर्वरूपा।
आत्मा त्वञ्चाऽसि मातः! परमसि भवती त्वत्परन्नैव किञ्चित्,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥१४॥

हे माता! आप ही भूमिरूप हैं, आप ही जलरूप हैं, आप ही अग्निरूप हैं, आप ही वायुरूप हैं तथा आप ही आकाशरूप हैं, आप ही मनरूप हैं, आप ही प्रकृतिरूप हैं, आप ही महद्रूप हैं, आप ही पूर्व तथा उत्तररूप हैं, आप ही पहले थी तथा बाद में आप ही हैं, आप ही आत्मारूप हैं, आप ही परस्थान स्थित पररूप हैं, आप ही सबसे परे हो परन्तु आपसे परे कुछ भी नहीं है, अतः हे माता! प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।१४।।

त्वं काली त्वञ्च तारा त्वमसि गिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वम्,
त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि भुवना त्वं तु लक्ष्मीः शिवा त्वम्।
धूमामातङ्गिनीस्त्वं त्वमसि च बगला मङ्गलादिस्तवाख्या,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१५।।

हे माता! काली, तारा, पार्वती, सुन्दरी, भैरवी, दुर्गा, छिन्नमस्तिका, भुवनेश्वरी, लक्ष्मी, शिवा, धूमावती, मातङ्गिनी, बगला, मङ्गला आपकी ही आख्यायें (विभूतियाँ) हैं अर्थात् आप ही के स्वरूप है, अतः हे माता! प्रकटित वदनवाली कामरूप, करालरूप महाकालिके! हमारे इस घोर अपराध को क्षमा करें।।१५।।

स्तोत्रेणाऽनेन देवीं परिणमति जनो यः सदा भक्तियुक्तो,
दुष्कृत्या दुर्गसङ्घं परितरति शतं विघ्नतां नाशमेति।
नाधिर्व्याधिः कदाचिद्भवति यदि पुनः सर्वदा सापराधः,
सर्वं तत्कामरूपे त्रिभुवनजननी क्षामये पुत्रबुध्या।।१६।।

जो साधक श्रद्धाभक्तिपूर्वक देवी के इस स्तोत्र का निरन्तर पाठ करता है, उसके समस्त दुष्कर्म तथा सैकड़ों विघ्न स्वतः नष्ट हो जाते हैं, उसे कभी भी आधि-व्याधि नहीं होती है, वह साधक सदा अपराधी होने पर भी हे कामरूपे! कराले! भगवती कालिका त्रैलोक्यजननी माँ इसे अपना पुत्र समझकर, हे त्रिभुवनजननी! समस्त अपराधों को क्षमा कर दो तथा हमारे समस्त तापों-पापों को नष्ट कर दें।।१६।।

ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा,
निष्पापी निष्कलङ्को कुलपतिकुशलः सत्यवाग्धार्मिकश्च।
नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगणविमुखः सत्पथाचारशीलः,
संसाराब्धिं सुखेन प्रतरति गिरिजापादयुग्मावलम्बात्।।१७।।

इस स्तोत्र के जाननेवाले साधक ज्ञानी, वक्ता, कवीश्वर, दयालु, दानी, धनपति, पाप-कलंक से रहित, सत्यवादी, धार्मिक, अपने कुल की रक्षा करने में कुशल कुलपति, नित्यानन्दरूप, दया की वर्षा करनेवाले, पशुबुद्धि से रहित, सन्मार्ग का आश्रय लेने वाले होते हैं, जो साधक गिरिजा पार्वती के सेवक होते हैं, वे इस संसाररूपी समुद्र को अनायास ही पार कर जाते हैं।।१७।।

वन्देऽहं कालिका देवि! सर्वज्ञानकरे शुभे।
रक्ष मां जगत् कारिणि पाहिमां जगदम्बिके॥१८॥

हे कालिका देवी! आपकी वन्दना करता हूँ, सभी प्रकार का शुभ और ज्ञान प्रदान करने वाली, जगत् का निर्माण करनेवाली हे माता! हमारी रक्षा करे, जगत् को उत्पन्न करनेवाली, हे माता! हमारा पालन करें।।१८।।

इस प्रकार से क्षमापनस्तव पाठ करके देवि को पाठ समर्पित करे।

अनेन स्तोत्रपाठाख्येन महाविद्याकालिका प्रीयतां न मम।

क्षमापनस्तवः परिपूर्णम्

●

श्रीमहाविद्यानाममालाजपम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीमहाविद्याशतनामस्तवस्य श्रीमहाकाल ऋषिः गायत्रीछन्दः श्रीमहाविद्यादेवता क्रीँ बीजं ह्रीँ शक्तिः हूँ कीलकं श्रीमहाविद्याकृपा-प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।**

काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी।
कालरात्रिः कालिका च कालभैरवपूजिता॥१॥

काली, कपालिनी, कान्ता, कामदा, कामसुन्दरी, कालरात्री, कालिका, कालभैरव-पूजिता।।१।।

कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीयस्वभाविनी।
कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्मप्रकाशिनी॥२॥

कुरुकुल्ला, कामिनी, कमनीयस्वभाविनी, कुलीना, कुलकर्त्री, कुलवर्त्म-प्रकाशिनी।।२।।

कस्तूरीरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी।
ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका॥३॥

कस्तूरीरसनीला, काम्या, कामस्वरूपिणी, ककारवर्णनिलया, कामधेनु, करालिका।।३।।

कुलकान्ता करालास्या कामार्ता च कलावती।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिका॥४॥

कुलकान्ता, करालास्या, कामार्ता, कलावती, कृशोदरी, कामाख्या, कौमारी, कुलपालिका।।४।।

कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता।
कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जरेश्वरगामिनी॥५॥

कुलजा, कुलकन्या, कलहा, कुलपूजिता, कामेश्वरी, कामकान्ता, कुञ्जरेश्वरगामिनी।।५।।

कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी।
कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता॥६॥

कामदात्री, कामहर्त्री, कृष्णा, कपर्दिनी, कुमुदा, कृष्णदेहा, कालिन्दी, कुलपूजिता॥६॥

काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशाङ्गी कला तथा।
क्रीँरूपा कुगम्या च कमला कृष्णपूजिता॥७॥

काश्यपी, कृष्णमाता, कुलिशाङ्गी, कला, क्रीँरूपा, कुगम्या, कमला, कृष्णपूजिता॥७॥

कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीवनी॥८॥

कृशाङ्गी, किन्नरी, कर्त्री, कलकण्ठी, कार्तिकी, कम्बुकण्ठी, कौलिनी, कुमुदा कामजीवनी॥८॥

कुलस्त्रीकीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका।
कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्द्धिनी॥९॥

कुलस्त्रीकीर्तिका, कृत्या, कीर्ति, कुलपालिका, कामदेवकला, कल्पलता, कामाङ्गवर्द्धिनी॥९॥

कुन्ती च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी॥१०॥

कुन्ती, कुमुदप्रीता, कदम्बकुसुमोत्सुका, कादम्बिनी, कमलिनी, कृष्णानन्दप्रदायिनी॥१०॥

कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता।
कुमारीरर्चनरता कुमारीव्रतधारिणी॥११॥

कुमारीपूजनरता, कुमारीगणशोभिता, कुमारीरर्चनरता कुमारीव्रतधारिणी॥११॥

कङ्काली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा।
कपालखट्वाङ्गधरा कालभैरवरूपिणी॥१२॥

कङ्काली, कमनीया, कामशास्त्रविशारदा, कपालखट्वाङ्गधरा, कालभैरवरूपिणी॥१२॥

कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलासवासिनी।
कात्यायनी कार्यकारी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी॥१३॥

कोटरी, कोटराक्षी, काशी, कैलासवासिनी, कात्यायनी, कार्यकारी, काव्यशास्त्रप्रमोदिनी॥१३॥

कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी।
कठिनी काकिनी क्रीडा कुत्सिता कलहप्रिया॥१४॥

कामाकर्षणरूपा, कामपीठनिवासिनी, कठिनी, काकिनी, क्रीडा, कुत्सिता, कलहप्रिया॥१४॥

कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी।
कुम्भस्तनी कटाक्षा काव्या कोकनदप्रिया॥१५॥

कुण्डगोलोद्भवप्राणा, कौशिकी, कीर्तिवर्द्धिनी, कुम्भस्तनी, कटाक्षा, काव्या, कोकनदप्रिया॥१५॥

कान्तारवासिनी कान्तिः कठिना कृष्णवल्लभा।
अथ ते कथितं देवि! गुह्याद्गुह्यतरं परम्॥१६॥

कान्तारवासिनी, कान्तिः, कठिना, कृष्णवल्लभा यह प्रसङ्गानुसार काली के अष्टोत्तरशत नाम श्रीभैरव द्वारा कहे गये हैं, ये अत्यन्त गोपनीय हैं॥१६॥

फलश्रुतिः

प्रपठेद्य इदं नित्यं कालीनामशताष्टकम्।
त्रिषु लोकेषु देवेशि! तस्याऽसाध्यं न विद्यते॥१७॥

जो इस अष्टोत्तरशतनामावली का नित्य पाठ करता है, उसके लिये तीनों लोकों में कोई कार्य असाध्य नहीं रहता है॥१७॥

प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि।
यः पठेत्परया भक्त्या कालीनामशताष्टकम्॥१८॥

प्रातः, मध्याह्न, सायं और रात्रि में जो परम भक्तिपूर्वक पाठ करता है॥१८॥

कालिका तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा।
शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः॥१९॥

उसके शरीर में कालिका स्वयं अपना निवास बनाती है। शून्यघर में, श्मशान में, पर्वत के तट पर, जल के मध्य में॥१९॥

वह्निमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये।
शताष्टकं जपेन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम्॥२०॥

अग्नि के मध्य में, संग्राम में तथा प्राण के संकट में पड़ने पर इस शताष्टक का जो जप करता है तो उसके संकटों का क्षेम शमन हो जाता है॥२०॥

कालीं संस्थाप्य विधिवत्स्तुत्वा नामशताष्टकैः।
साधकः सिद्धिमाप्नोति कालिकाया प्रसादतः॥२१॥

विधिवत् काली की स्थापना करके पूजा करके अष्टोत्तरशत नाम का पाठ करने से साधक कालिका के प्रसाद से सिद्धि प्राप्त करता है। इसमें कोई भी संशय नहीं है॥२१॥

अष्टोत्तरशतनाममालाजपं परिपूर्णम्

●

श्रीमहादेवीस्तवेन्द्रम्

नमामि ते कालिपदारविन्दं, त्वामाश्रयामि प्रणमामि नित्यम्।
ध्यायामि गायामि वदामि, नित्यमेवं कुरु त्वं मम चित्तवृत्तिम्॥१॥

हे कालिके! आपको नित्य ही नमस्कार है, आपके चरणकमलों में नित्य ही प्रणाम करता हूँ, उसी का नित्य ध्यान करता हूँ, नित्य उसका वन्दन करता हूँ, नित्य उसका गुणगान करता हूँ, आप नित्य ही हमारे चित्त में वास करें तथा हमारे ऊपर कृपा करें।।१।।

सीमन्तिनीसुन्दरि! कान्तिकम्रा कादम्बरी घूर्णितनेत्रपद्मा।
कदम्बमालाञ्चितकेशपाशा कलावती कौलिकचक्रमध्ये।।२।।

हे महाकालिके! सीमन्तिनीसुन्दरी, नम्रकान्तिवाली, कादम्बरी, नेत्र कमल में सदैव घूमनेवाली, कदम्ब के फूलों से गुथे हुए केशपाशोंवाली, कौलिक चक्र के मध्य में सदैव कलना करनेवाली, आपको शतश: नमस्कार है।।२।।

कन्दर्पदर्पोदरदीर्घबाहू, कुमुद्वती बान्धवचारुनेत्रा।
कलाकलापा कलहंसनादा, कलावती कामकलाविलासा।।३।।

हे कालिके! कन्दर्पदर्प (सर्वोच्चाभिमान) जिसके भीतर भरा है, बड़ी-बड़ी नेत्रोंवाली, कमल को धारण करनेवाली, बान्धवों भक्तों की अखिों को अच्छी लगनेवाली, कलाओं के रूप में विकसित होने वाली, कलहंस का नाद करनेवाली, कलाओंवाली, कामकला में विलास करनेवाली तुमको नित्य नमस्कार है।।३।।

यत्रैव सङ्गः कुलसुन्दरीणां, तत्रैव गङ्गा यमुना च तत्र।
वाराणसी मोक्षकरी तथा च, तत्रैव गङ्गाम्बुधिसङ्गमश्च।।४।।

हे कालिके! जहाँ कुलसुन्दरियों के बीच तुम्हारा स्थान है वहीं गङ्गा-यमुना है, वहीं वाराणसी तीर्थ है, वहीं मोक्ष करने वाला है, वहीं गङ्गाजल का सङ्गम है, वहीं अमृत प्रवाह है, तुमको नित्य नमस्कार है।।४।।

पादारविन्दं कुलसुन्दरीणां, देशान्तरे भावितसिद्धमार्गे।
विहारलोकस्तरुणानुभावं, गृहान्धकूपे विमलं विभाति।।५।।

हे कालिके! तुम्हारा जो कुलसुन्दरियों के बीच पादारविन्द है वही अन्यत्र मार्गो सम्प्रदायों में सिद्धि का मार्ग है, तुम्हारा लोक में विहार करनेवाला यौवन युक्त भाव है, वहीं इस गृह (शरीर) में अन्धकूप में विमल लगता है, तुमको नित्य नमस्कार है।।५।।

कुरङ्गनेत्रातिकुरङ्गनेत्रा, शिवाभवानीति शिवाभवानिः।
मृगेन्द्रमध्याति मृगेन्द्रमध्या, गौरीति गौरीति वचस्तु भूयात्।।६।।

हे कालिके! तुम कुरङ्गनेत्रों में अतिकुरङ्गनेत्रा हो, तुम्हीं शिवाओं में (शक्तियों) भवानियों (स्त्रीयों) में शिवा (कलिका) और भवानी (पार्वती) रूप हो, मृगेन्द्रों के मध्य मृगेन्द्रमध्या हो, तुम्हे ही गौरी, महागौरी नामों से बार-बार कहा जाता है तुमको नित्य नमस्कार है।।६।।

त्वं तारिणी नारकहारिणी त्वं, त्वं कालिकातारणकारिका त्वम्।
वैरोचिनी दुःखविमोचिनी त्वं, त्वं भैरवी त्वं भुवनेश्वरी त्वम्।।७।।

हे कालिके! तुम्ही संसार के भवसागर से तारनेवाली हो, तुम्ही नरक का हरण करने

(नरक से बाहर निकालने) वाली हो, तुम्ही तारनेवाली कालिका हो, तुम्ही भैरवी हो, तुम्ही भुवनेश्वरी हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥७॥

दिगम्बरी पीनपयोधरा सा, स्मराभिलाषा परिमुक्तकेशा।
सदा शिवाङ्कस्थितिरर्चिता सा, श्यामाभिरामा परिपूर्णकामा॥८॥

हे कालिके! तुम दिगम्बरी पीनपयोधरा हो, काम की अभिलाषा करनेवाली, खुले हुए केशोंवाली हो, सदैव शिव के ही अङ्ग में रहनेवाली हो, श्यामल प्रकाश वाली हो, समस्त कामनाओं की परिपूर्णता करनेवाली हों, तुमको नित्य नमस्कार है॥८॥

श्री सुन्दरीणां चरणारविन्दं, विना न मन्ये न च पूजयामि।
न च जल्पयामो न च कल्पयामो, न चाश्रयामो न च देवमन्यम्॥९॥

हे कालि! श्रीस्वरूपिणी त्रिपुरसुन्दरी के चरण-कमलों का कभी कोई ध्यान नहीं किया, न कभी मान ही दिया और न कभी पूजन ही किया, हे त्रिपुरसुन्दरीस्वरूपिणी कालिके! तुम्हारे विना कोई जप नहीं है न ही कोई पूजा की कल्पना ही की जा सकती है, तुम्हारे विना कोई आश्रय नहीं है, तुम्हारे से अतिरिक्त कोई देव भी नहीं है तुमको नित्य नमस्कार है॥९॥

जपावली यावकजालवर्णा, सौदामिनी दाडिमबीजवर्णा।
सुवर्णकाञ्ची परिबद्धमध्या, सिद्धार्चिता सिद्धमयी विभाति॥१०॥

हे कालिके! तुम ही जपकाल की अक्षमाला में वर्णरूपा हो, तुम ही सौदामिनी हो, तुम ही दाडिमफल में बीज के वर्णवाली हो, तुम ही सुवर्ण की आभा से युक्त हो कर मध्य में रहनेवाली हो, तुम ही सिद्धमयी तथा सिद्धों के द्वारा अर्चित हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥१०॥

कादम्बरी पानपरायणानां, कुलाङ्गनानां वदनारविन्दम्।
ध्यानं ममैतत् स सदैव भूयात्, तद्भावनाभावितभूरिभक्तिः॥११॥

हे कालिके! तुम कादम्बरी हो, तुम अमृतपानपरायणा हो, तुम ही कुलाङ्गनाओं में प्रभारूप से विराजमान हो, तुम्हारा ही रूप हमें ध्यान में सदैव प्रत्यक्ष हो, तुम्हारी ही भावना से भावित भक्ति से ओत-प्रोत रहूँ, तुमको नित्य नमस्कार है॥११॥

त्वमेव बुद्धिश्च त्वमेव वृद्धिस्त्वमेव सिद्धिश्च त्वमेव ऋद्धिः।
प्रमात्मिका त्वं परमात्मिका त्वं, प्रमाणमाता परमेश्वरी त्वम्॥१२॥

हे कालिके! तुम ही बुद्धि हो, तुम ही वृद्धि हो, तुम ही सिद्धि हो, तुम ही ऋद्धि हो, तुम ही प्रमारूपिणी हो, तुम ही परमात्मिका हो, तुम ही प्रमाण हो, तुम ही माता हो, तुम ही परमेश्वरी हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥१२॥

त्वं कार्तिकी कौतुकमूर्तिराद्या, मयूरपृष्ठार्पितपादपद्मा।
चन्द्रानना चारुचकोरनेत्रा, किं स्तौमि मातस्तव पादपद्मे॥१३॥

हे कालिके! तुम ही कार्तिकी हो, तुम ही आद्या कौतुकरूपी मूर्ति हो, तुम ही मयूर

के पीठ पर चिन्हित चरण कमल हो, तुम्हारे मुखकमल चन्द्रमा के सदृश हैं, तुम्हारे नेत्र सदैव अच्छे लगनेवाले हैं, हे माता! तुम्हारे चरणकमल से अतिरिक्त किसका पूजन करे, तुमको नित्य नमस्कार है।।१३।।

अत्युग्रदन्ताग्रधृता च नित्यं, घोरानना घोरगभीरनादा।
संहारनिस्तारविधानकर्त्री, वाराहि मातः स्तव एव सर्वम्।।१४।।

हे कालिके! तुम अति उग्र दाँतों को धारण करनेवाली हो, घोर आननवाली हो, घोर गम्भीर नाद करनेवाली हो, तुम संहार, निस्तार तथा विधान करनेवाली हो, हे माता! तुम वाराही रूपिणी हो, तुम्हारा ही सब स्तवन करते हैं तुमको नित्य नमस्कार है।।१४।।

कालस्त्वमेव त्वमपीह काष्ठा, त्वमेव चात्मा च मनस्त्वमेव।
श्रीब्रह्मशक्तिः खलुसत्यरूपा, ज्योतिःस्वरूपा जगतः करोषि।।१५।।

हे कालिके! तुम ही काल हो, तुम ही काष्ठ के सदृश जड़रूप हो, तुम ही आत्मा हो, तुम ही मनरूप हो, तुम ही श्री हो, तुम ही ब्रह्म हो, तुम ही शक्ति हो, तुम ही ब्रह्मशक्ति हो, तुम ही सत्यरूप हो, तुम ही ज्योतिस्वरूपा हो, इस संसार में तुम ही प्रकाश करने वाली हो तुमको नित्य नमस्कार है।।१५।।

त्वं वैष्णवी विष्णुस्वरूपिणी त्वं, त्रैलोक्यरक्षाकरणैकदक्षा।
खगेन्द्ररूढा घननीलवर्णा, विश्वेशरक्षानिलया त्वमेव।।१६।।

हे कालिके! तुम वैष्णवी तथा विष्णुस्वरूपिणी हो, तुम ही इस तीनों लोकों की रक्षा करने में समर्थ हो, तुम ही गरुड़ पर आरूढ़ हो, तुम ही मेघ के समान नील वर्णवाली हो, तुम ही विश्वेश की निलया, सृष्टि की रक्षा करनेवाली हो, तुमको नित्य नमस्कार है।।१६।।

नानाकलाकेलिकुलालसङ्गी, पीनस्तनी चन्द्रमुखी कदाचित्।
न विस्मरामो न च विस्मरामो, न विस्मरामः कलहंसनादाम्।।१७।।

हे कालिके! तुम ही नाना प्रकार की कलाओं से केलि करनेवाली सङ्गी हो, तुम ही पीन स्तनवाली हो, तुम ही कहीं पर चन्द्रमुखी रूप से स्थित हो, तुम्हारे यह कलहंस नाद कभी विस्मरण न हो, कभी विस्मरण न हो, कभी भी विस्मरण न हो तुमकों नित्य नमस्कार है।।१७।।

गतिस्त्वमेवासि गतिस्त्वमेव, मतिस्तवमेवासि मतिस्त्वमेत्व।
धृतिस्त्वमेवासि धृतिस्त्वमेव, श्रुतिस्त्वमेवासि श्रुतिस्त्वमेव।।१८।।

हे कालिके! तुम ही गतिरूप हो, तुम ही गति हो, तुम ही मतिरूप हो, तुम ही मति हो, तुम ही धृतिरूप हो, तुम ही धृति हो, तुम ही श्रुतिरूप हो, तुम ही श्रुति हो। तुमको नित्य नमस्कार है।।१८।।

तमाललालाञ्छितमुण्डमाला, काली करालाननलोलजिह्वा।
विमर्दयन्ति जगदादिमाता, प्रचण्डचण्डासुरमुण्डखण्डान्।।१९।।

हे कालिके! तुम लालिमायुक्त मुण्डमाला को धारण करके शोभायमान हो, तुम ही

काली हो, तुम ही कराल आनन वाली हो, तुम लोल जिह्वा हो, हे आदि माता इस जगत् का तुम ही विमर्दन करती हो, तुम ही प्रचण्डचण्डा (छिन्नमस्तिका) हो, तुम ही असुरों का मुण्ड छेदन करनेवाली चामुण्डा हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥१९॥

चतुर्भुजाप्याष्टभुजा त्वमेव, षड्बाहुका षोडशहस्तयुक्ता।
सहस्रहस्ता शतपाणिवल्ली, त्वं कालिके दशहस्तकासि॥२०॥

हे कालिके! तुम ही चार भुजाओंवाली हो, तुम ही आठ भुजाओंवाली हो, तुम ही सहस्रों हाथोंवाली हो, तुम ही शतपाणिवल्ली (सौ हाथों वाली) हो, तुम ही दश हाथों वाली कालिका हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२०॥

युगोऽपि वर्षः कल्पाश्च मासो, नक्तं दिवा त्वं प्रलयो मुहूर्तम्।
त्वं कालरात्री विरला त्वमेव राकार्णवी कालमयी च काली॥२१॥

हे कालिके! तुम ही युग, वर्ष, कल्प, मासरूप हो, तुम ही रात्रि, दिवा तथा मुहूर्तरूपिणी हो, तुम ही प्रलय करनेवाली हो, तुम ही कालरात्रि हो, तुम ही विरला हो, तुम ही आकार धारण करनेवाली हो, तुम ही कालमयी हो और तुम ही काली हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२१॥

वर्णेश्वरी त्वं पुरवासिनी त्वं, पुरान्तका त्वं परिपूर्णता त्वम्।
त्वमुग्रतारैकजटा त्वमेव, सुसम्मुखी नीलसरस्वती च॥२२॥

हे कालि! तुम ही वर्णों की ईश्वरी हो, तुम ही शरीरों में निवास करनेवाली हो, तुम ही शरीरों का अन्त करनेवाली हो, तुम ही परिपूर्णता हो, तुम ही उग्रतारा हो, तुम ही एकजटातारा हो, तुम ही सुमुखी हो, तुम ही नील सरस्वती रूपिणी हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२२॥

सर्पासना सर्पविभूषणैका, धूमावती त्वं भवसीति मातः।
मातङ्गिनी त्वं बगला च माता, त्वमेव काली करवालिनी च॥२३॥

हे कालिके! तुम सर्पासना हो, सर्परूप से विभूषित हो, तुम ही धूमावती हो, तुम ही मातङ्गिनी हो, तुम ही बगला हो, तुम ही करवालिनी काली हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२३॥

आधारलग्नं खलु मेरुदण्डं, तद्वामयुक्तापि च पिङ्गला च।
इडा च दक्षेषु निरन्तरेषु, सुषुम्नमध्या ग्रथितार्चकस्य॥२४॥

हे कालिके! तुम मेरुदण्ड में मूलाधार में निवास करनेवाली हो, तुम्हारा ही वाम धामयुक्त पिङ्गला है, दक्षिण भाग में इडा रूप से निरन्तर प्रवाहित होती हो, तुम ही मध्य में सुषुम्ना रूप से ग्रथित होकर भक्तों की अर्चना ग्रहण करती हो अर्थात् तुम ही इडा-पिङ्गला-सुषुम्ना में प्रवाहित होती हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२४॥

चित्रान्तरस्था खलुवज्रनाड़ी, मृणालतन्त्वर्धसुशूकसूक्ष्मा।
तन्मध्यगा येन विसूक्ष्मरूपा, सा ब्रह्मनाड़ी तदनन्तरेऽपि॥२५॥

हे कालिके! तुम ही अन्तस्थ चित्रा नाड़ी और वज्रा नाड़ी स्वरूपिणी हो, तुम ही मृणलतन्तु के समान अतिसूक्ष्मा हो, उसमें भी मध्य में रहनेवाली जो अतिसूक्ष्म रूप हैं, वह ब्रह्मनाड़ी तुम ही हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२५॥

सहस्त्रपत्राम्बुजमेयगात्रा, सुधासुरापानरतिप्रयुक्ता।
त्वं सर्व जीवा जननीस्वरूपा, ब्रह्मस्वरूपा भवदेहमध्या॥२६॥

हे कालिके! तुम ही इस शरीर के अन्त:करण के चिदाकाश में सहस्त्रार में सहस्त्र पत्रों के स्वरूप हो, तुम सुधारूपिणी हो, सुरा के पान में सदैव रतिप्रीति रखनेवाली हो, अमृतपान में सदैव उद्यत रहनेवाली हो, तुम सभी जीवों की जननीस्वरूपा हो, तुम ही भव के शरीर में रहनेवाली ब्रह्मस्वरूपा हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२६॥

त्वं कुण्डलिन्यर्ककोटीन्दुदीप्ता, कोटीन्दुकान्तिर्भुजगप्रमाणा।
आधारयुक्ता कुलकुण्डसुप्ताप्यर्धस्वयम्भूवदनप्रकाशी॥२७॥

हे कालिके! तुम सूर्य-चन्द्र के समान दीप्त कुण्डलिनी स्वरूपिणी हो, तुम ही चन्द्र की कान्ति के समान सर्पाकृतिवाली हो, तुम मूलाधार में रहनेवाली हो, तुम शरीररूपी कुण्ड के मूलाधार में सोई हुई हो, तुम ही स्वयंभू लिङ्गस्वरूपी शिवशरीर के आधे भाग में प्रकाश करनेवाली हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२७॥

कात्यायनी कामकला जयन्ती, सावित्री पूर्णा मधुमांसलुब्धा।
त्वमेव पूर्णा वनदुर्गका च, कामात्मिका कामवती त्वमेव॥२८॥

हे कालिके! तुम कात्यायनी हो, तुम कामकला हो, तुम जयन्ती हो, तुम ही सावित्री हो, तुम ही पूर्णा हो, तुम ही मधुरस तथा मांस का लोभ करनेवाली हो, तुम ही वनदुर्गा हो, तुम ही कामात्मिका, कामवती हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥२८॥

गणेश्वरः षड्वदनः कुबेरो, धनेशपुत्रो रविजो जयन्तः।
त्वं चित्रगुप्तश्च सुकर्मकर्ता, यतीश्वरी देवमयी त्वमेव॥२९॥

हे कालिके! तुम ही गणेश्वर, षड्वदन, कुबेर, धनेशपुत्र, रविपुत्र, जयन्त, चित्रगुप्त, सुकर्मकर्ता, यतीश्वरी तथा देवमयी हो तुमको नित्य नमस्कार है॥२९॥

त्वमेव सर्वासि वदामि तत्त्वं, त्वमेव सर्वस्तावकस्त्वमेव।
लिङ्गोऽप्यलिङ्गो यत एव सर्वे, यतस्ततः सर्वमयी त्वमेव॥३०॥

हे कालिके! तुम ही सर्वमयी तत्त्वस्वरूपिणी हो, सभी तुम्हारा ही स्तबक है, सभी लिङ्गों-अलिङ्गों में तुम ही हो, जहाँ-तहाँ सर्वत्र तुम ही हो, तुमको नित्य नमस्कार है॥३०॥

इदं स्तवेन्द्रं नित्यं च देव्या, भक्त्यैकचिह्नं सततं पठेद् यः।
पिकस्वरः सर्वजनानुरागी, दाता पुनीतो गुरुदेवभक्तः॥३१॥

यह देवी का स्तवेन्द्र भक्तिपूर्वक जो सतत मुक्त कण्ठ होकर मधुर स्वर से पाठ करता है, वह संसार में सभी लोगों को प्रिय, दाता-पुनीत तथा गुरुदेव का भक्त होता है॥३१॥

विघ्ने गणेशो भयदुर्गनाशो, भोगी सुखी पूरितलोकभर्ता।
सदामुदः सर्वगणेश्वरोऽपि, दयाचितो रत्नयुतश्चिरायुः॥३२॥

उस पाठकर्ता के विघ्नों का गणेश, भयों का दुर्गा नाश करती है, वह समस्त भोगों का भोग करनेवाला तथा सबकी पूर्ति करनेवाला भर्ता होता है, सदैव हीं प्रसन्न तथा सेवकों से युक्त होता है, दया करनेवाला, सभी रत्नों से युक्त, चिरायु होता है॥३२॥

शतावधानो रणकालरुद्रो, लोकाभिरामो भुवि सर्वदा सः।
जिह्वाग्रवाणीं युवतीं सृजन्तीं, सुशीलयन्तीं परलोकविद्यः॥३३॥

वह शतावधान, रण में महाकालरुद्र होता है, वह लोक में लोकाभिराम होकर सर्वदा विचरण करता है, उसके जिह्वा के अग्रभाग में वाणी (सरस्वती) का निवास होता है, वह युवतियों से युक्त होता है तथा सुशील परलोक का जानकार होता है॥३३॥

श्रीदेवींस्तवेन्द्रं परिपूर्णम्

◆

ब्रह्मगाथास्तवः

नमामि कृष्णरूपिणी कृशाङ्गयष्टिधारिणीम्।
समस्ततत्त्वसागरामपारगह्वरां शिवाम्॥१॥

हे कृष्णरूपिणी आपको नमस्कार है, कृश-अङ्ग वाली यष्टि (दण्ड) धारण करनेवाली नमस्कार है, समस्त तत्त्वों की अनन्त गहरे सागर के समान महादेवी शिवा को नमस्कार है॥१॥

प्रवालकन्धराञ्चितां स्फुरच्छशाङ्कशेखराम्।
ललाटनेत्रभास्वरां ज्वलत्प्रदीप्तमूर्धजाम्॥२॥

प्रवाल के समान प्रभावाली, चन्द्रमा के समान प्रकाशित, ललाट में नेत्र की शोभा वाली, जलते हुए तेजवान मूर्धावाली कालिका को नमस्कार है॥२॥

महेशकश्यपार्चितां सनत्कुमारसंस्तुताम्।
सुरासुरेन्द्रवन्दितां यथार्थनिर्मिताद्भुताम्॥३॥

महेश तथा कश्यपादि ऋषियों के द्वारा अर्चित सनत्कुमारादि के द्वारा संस्तुत सुर तथा असुरों से वन्दित यथार्थ निर्मित अद्भुत देवी कालिका को नमस्कार है॥३॥

अतर्क्यचारुवेष्टितां विकारदोषवर्जिताम्।
मुमुक्षुभिर्विचेष्टितां विशेषतत्त्वशोचिताम्॥४॥

अतर्क्य, चारुवेष्टित, विकारादि दोषों से वर्जित, मुमुक्षुओं की चेष्टाओंवाली, विशेष तत्त्वोंवाली कालिका देवी को नमस्कार है॥४॥

नरास्थिनिर्मितस्त्रजं मृगेन्द्रवाहनाग्रजाम्।
प्रदुष्टसत्त्वभीषणां सदोदितैकलक्षणम्॥५॥

नरास्थिनिर्मित मालिका धारण करनेवाली, मृगेन्द्र (सिंह) वाहना, अग्रजा, प्रदुष्टसत्त्वभीषण (भयंकर काला) सदा उदित लक्षणोंवाली कालिका को नमस्कार है॥५॥

सुलक्षणां विलक्षणां भुजङ्गहारहारिणीम्।
कपालखड्गधारिणीं सुधार्मिकोपकारिणीम्॥६॥

सुन्दर लक्षणोंवाली, विशेष लक्षणोंवाली, सर्प के हार को धारण करनेवाली, कपालखड्ग धारण करनेवाली, सद्धर्म करनेवालों का उपकार करनेवाली कालिका को नमस्कार है॥६॥

सुरेन्द्रवैरिघातिनीं कुठारचापपाशिनीम्।
कृतान्तकामवासिनीं सुधाकपालमालिनीम्॥७॥

सुरेन्द्र के शत्रुओं का घात करनेवाली, कुठार-चाप-पाश धारण करनेवाली, कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, कामवासिनी, सुधाकपाल की मालाओं को धारण करनेवाली कालिका को नमस्कार है॥७॥

श्मशानभूमिवासिनीं सुनित्यकल्पशाखिनीम्।
द्विजेन्द्रवृन्दतारिणीं सहस्त्रसूर्यसन्निभाम्॥८॥

श्मशानभूमि में वास करनेवाली, सुन्दर नित्य कल्पों का निर्माण करनेवाली, द्विज वृन्द को तारनेवाली, सहस्त्रों सूर्य की प्रभावाली कालिका को नमस्कार है॥८॥

धनञ्जयैकवत्सलामशुद्धकालचञ्चलाम् ।
सुनित्यतृप्तिमुज्ज्वलां प्रतापिनीं प्रजावतीम्॥९॥

धनञ्जयैकवत्सला, अशुद्धकालचञ्चला, सुन्दर नित्य तृप्तिप्रदायिनी, उज्वला, प्रतापिनी, प्रजावती कालिका को नमस्कार है॥९॥

नमामि मातरं सखीं सुकर्मकारणे गतिम्।
हरप्रियां च पार्वतीमनन्तशक्तिसम्पदाम्॥१०॥

हे माता! सुन्दर कर्म करने में गतिशील सखी भाव युक्त, हर की प्रिया, अनन्त शक्ति की सम्पदा पार्वती देवी को नमस्कार है॥१०॥

यशः-सुभुक्ति-मुक्तिदां नमोऽस्तु ते पराम्बिके।
शिवे द्विजेऽभयात्मिके जयेश्वरि त्रिलोचने॥११॥

यश-सुन्दर भुक्ति तथा मुक्ति देनेवाली हो, पराम्बिका हो, त्रिलोचना हो, जयेश्वरी हो, हे शिवे! द्विजमात्र को अभय प्रदान करनेवाली कालिका आपको नमस्कार है॥११॥

प्रसीद देवि पाहि मां जपन्ति च स्मरन्ति च।
स्तुवन्ति यं नरेश्वरा भवन्त्वमोघवाञ्छिताः॥१२॥

जो व्यक्ति तुम्हारा जप करता है, ध्यान करता है, स्तुति करता है, वह नरेश्वर अमोघ कामनाओं को भी पूरा कर लेता है॥१२॥

सदैव ते भवद्विषो नराः परे शिवेऽधुना।
प्रसीद मां करोमि किं नितान्तमोहितात्मना॥१३॥

इस युग में इस भवसागर में सभी जन कालुष्ययुक्त हो गये हैं, सभी शिवा से विमुख हो गये हैं, हे भगवती! मै नितान्त मोहित चित्तवाला हूँ, क्या करूँ आप प्रसन्न होइये॥१३॥

वृथा विचेष्टितस्य मे कुरु प्रसादमच्युतम्।
यदाश्रयोऽहमम्बिके लभेम सद्गतिं पराम्॥१४॥

हमारी समस्त चेष्टाएँ सभी वृथा हो गयी हैं, हमारे ऊपर अपना अच्युतकृपाप्रसाद का वर्षण करो, हम जिसका आश्रय ग्रहण करके हे अम्बिके! परम सद्गति को प्राप्त करें॥१४॥

इमां स्तुतिं मयेरितां पठन्ति देवि साधकाः।
न ते पुनः सुदुस्तरे पतन्ति मोहसागरे॥१५॥

इस मेरे द्वारा की गयी स्तुति का जो देवी का साधक नित्य पाठ करता है, वह फिर से कभी भी इस दुस्तर मोह के सागर में नही पड़ता है॥१५॥

ब्रह्मगाथापरिपूर्णम्

श्रीमहाविद्याष्टकम्

गलद् रक्तमुण्डावली कण्ठमाला, महाघोररावा सुदंष्ट्रा कराला।
विवस्त्रा श्मशानालया मुक्तकेशी, महाकालकामाकुला कालिकेयम्॥१॥

गले में रक्त प्रवाहित होते हुए मुण्डावली की कण्ठमाला धारण किये हुए, महाघोर राव (घोष) करनेवाली, बड़े-बड़े सुन्दर दाँतोंवाली, विना वस्त्र धारण किये हुए दिगम्बरी, श्मशान में रहनेवाली, खुले हुए केशोंवाली, महाकाल के साथ कामासक्त कामकला में निपुण, कालिका को नमस्कार है॥१॥

भुजे वामयुग्मे शिरोऽसी दधाना, वरं दक्षयुग्मेऽभयं वै तथैव।
सुमध्याऽपि तुङ्गस्तनभारनम्रा, लसद्रक्तसृक्कद्वया सुस्मितास्या॥२॥

दोनों बायीं भुजाओं में शिर तथा खड्ग धारण किये हुए तथा दोनों दाहिने भुजाओं में वर तथा अभय मुद्रा धारण किये हुए, मध्य में भी सुन्दर स्तन उठे भार से झुके हुए, मुख से बहते हुए रक्त की धारा से शोभायमान कालिका को नमस्कार है॥२॥

शवद्वन्द्वकर्णावतंसा सुकेशी, लसत्प्रेतपाणिप्रयुक्तैककाञ्ची।
शवाकारमञ्चाधिरूढा शिवाभिश्चतुर्दिक्षु शब्दायमानाऽभिरेजे॥३॥

सुन्दर केशोंवाली, कर्ण में दो शवों को कर्णाभूषण के रूप में धारण किये हुए, प्रेत

के हाथों से निर्मित करधनी कमर में धारण किये हुए, शवाकार मञ्च पर आरूढ, चारो दिशाओं में शिवाओं से युक्त, शब्दों से गुञ्जायमान कालिका को नमस्कार है।।३।।

विरञ्चाधिदेवास्त्रयस्तेगुणास्त्रीन्, समाराध्य कालीं प्रधाना बभूवुः।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।४।।

ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों देवता जिसके तीन गुण स्वरूप है, तीनों देवता प्रधान रूप से काली की ही आराधना करते है, हे कालिके! तुम अनादि, सुरादि, मखादि, भवादि हो, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं।।४।।

जगन्मोहनीयं तु वाग्वादिनीयं, सुहृत्योषिर्णीं शत्रुसंहारणीयम्।
वचः स्तम्भनीयं किमुच्चाटनीयं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।५।।

हे कालिका! तुम जगत् का मोहन करनेवाली हो, तुम ही वाणी रूप से वन्दनीय हो, तुम सुहृदय में रहनेवाली हो, तुम ही शत्रुओं का संहार करती हो, तुम ही वाणी का स्तम्भन करती हो, तुम ही उच्चाटन करती हो, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं।।५।।

इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली, मनोजांस्तु कामान् यथार्थं प्रकुर्यात्।
कथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।६।।

तुम ही स्वर्ग प्रदान करनेवाली हो, समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाली कल्पवल्ली हो, तुम ही कामनाओं से मन को विजय दिलानेवाली हो, तुम ही यथार्थ को प्रकट करने वाली हो, तुम्हारे कथाओं से सभी नित्य कृतार्थ होते हैं, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं।।६।।

सुरापानमत्ते! सुभक्तानुरक्ते! लसत्पूतचित्ते! सदाविर्भवस्ते।
जपध्यानपूजासुधाधौतपङ्काः, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।७।।

हे कालिका! तुम सुरापान में सदैव मत्त रहने वाली हो, सुन्दर भक्तो में अनुरक्त रहने वाली हो, तुम्हारा पवित्र चित्त में सदा आविर्भाव होता है, जप, ध्यान, पूजा सभी अमृत सागर के कमल है, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं।।७।।

चिदानन्दकन्दं हसन्मन्दमन्दं, शरच्चन्द्रकोटिप्रभापुञ्जबिम्बम्।
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतमानं स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।८।।

हे कालिका! मन्द-मन्द हास्य करती हुई चिदानन्दकन्द शरदकाल के चन्द्रमा के समान प्रभापुञ्जवाली मुनियों-कवियों के हृदय में द्योतमान तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नही जानते हैं।।८।।

महामेघकाली सुरक्ताऽपि शुभ्रा, कदाचिद्विचित्राकृतिर्योगमाया।
न बाला न वृद्धा न कामातुराऽपि, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।९।।

महामेघ के समान काली सुरक्त-शुभ्र, कभी-कभी विचित्र आकृतियोंवाली योगमाया, न बाला, न वृद्धा, न कामातुरा ही हो तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नही जानते हैं।।९।।

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं, मया लोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत्।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥१०॥

इस लोक में मेरे हृदय में महागुप्त भाव को प्रकाशित करो, आप के ध्यान करने में चपलतायुक्त भाववाला मै हूँ, हे कालिके! मेरे अपराधों को क्षमा करो, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥१०॥

यदि ध्यानयुक्तः पठेद्यो मनुष्यस्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।
गृहे चाष्टसिद्धिर्मृते चापि मुक्तिः, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥११॥

इस महास्तोत्र का यदि ध्यानयुक्त होकर जो मनुष्य पाठ करता है, वह पूरे संसार में विशाल होकर रहता है, घर में अष्टसिद्धियों को प्राप्त करता है तथा मरने के बाद मुक्ति प्राप्त करता है, तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥११॥

कालिकाष्टकं परिपूर्णम्

●

कालिस्तवनम्

उल्लसद्दनुजवृन्दखेदिनी, भूरिदुःखभवभीतिभेदिनी।
कण्ठलम्बितकपालमालिका, मङ्गलं मम करोतु कालिका॥१॥

बढ़े हुए दानव-दलों को खेद पहुँचानेवाली, दुःख-समुदाय को नष्ट करनेवाली, कण्ठ में लम्बायमान (लटकती हुई) कपाल (नरमुण्ड) की माला धारण की हुई कालिका हमारा सर्वदा मङ्गल करें॥१॥

शोणितार्द्रगजचर्मवासिनी, मत्तभैरवमहाट्टहासिनी।
दैत्यबाहुकृतकाञ्चिनालिका, मङ्गलं मम करोतु कालिका॥२॥

रक्त से रञ्जित गजचर्म धारण करनेवाली, मदमत्त भैरव के साथ महा अट्टहास करने वाली, दैत्यों के बाहुओं की करधनी बनाकर धारण करनेवाली कालिका हमारा सर्वदा मङ्गल करें॥२॥

मेरुमन्दरविन्ध्यवासिनी, संस्मृतासि दुरितौघनाशिनी।
या द्विजेति च कुमारिका, मङ्गलं मम करोतु कालिका॥३॥

सुमेरु-मन्दराचल और विन्ध्याचल पर्वत पर निवास करनेवाली, स्मरण करने मात्र से ही समस्त दुरितौघ का नाश करनेवाली, जो द्विज जातियों में कुमारिका नाम से विख्यात हैं, वे कालिका हमारा सर्वदा मङ्गल करें॥३॥

चण्डमुण्डवधकेलिकारिका, रक्तबीजरणदर्पहारिका।
कायकान्तिजितमेघमालिका, मङ्गलं मम करोतु कालिका॥४॥

चण्डमुण्ड असुरों का खेल-खेल में वध करनेवाली, रक्तबीज असुर का दर्प हरण करनेवाली, जिनकी काया की कान्ति मेघ के समान है, वे कालिका हमारा सदा-सर्वदा मङ्गल करें॥४॥

आदिशक्ति कमला सनातनी, कामक्रोधवरशूलदण्डिनी।
ब्रह्मचित्तसरसे मुरालिका, मङ्गलं मम करोतु कालिका॥५॥

सनातनी भगवती आदिशक्ति कमला नामवाली, कामक्रोध का नाश करनेवाली, हाथों में त्रिशूल और दण्ड धारण करनेवाली, ब्रह्म के चित्त में आनन्द का प्रवाह करनेवाली कालिका हमारा सदा-सर्वदा मङ्गल करें॥५॥

अदिशक्ति मनसा सनातनी, सम्मतासि गिरिकूटवासिनी।
पाहि मां भवने कुमारिका, मङ्गलं मम करोतु कालिका॥६॥

सनातनी आदिशक्ति मनसा नाम धारिणी देवी, पर्वत के शिखर पर निवास करने वाली, भवन में कुमारिका नाम धारण करनेवाली हमारी रक्षा-पालन करे तथा हमारा सदा सर्वदा मङ्गल करें॥६॥

राजसे सकलसर्गसज्जने, सात्त्विकी च जगतां सुलक्षणे।
तामसी च जगतां सुरोलिका, मङ्गलं मम करोतु कालिका॥७॥

राजस गुण के रूप में सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण करनेवाली, सात्त्विक रूप से सम्पूर्ण जगत् का हित करनेवाली, तामस गुण रूप से जगत् का लय करनेवाली कालिका हमारा सदा सर्वदा मङ्गल करें॥७॥

भक्तिनम्रमुनियक्षदेवता, सिद्धकिन्नरसमूहसेविता।
शुम्भदैत्यमकरन्दकालिका, मङ्गलं मम करोतु कालिका॥८॥

जिसे मुनि-यक्ष-देवता भक्ति पूर्वक नमन करते है, सिद्धों-किन्नरों का समूह जिनकी सेवा करता है, शुम्भ दैत्य का विनाश करके आनन्द देनेवाली कालिका हमारा सदा सर्वदा मङ्गल करें॥८॥

कालिस्तोत्रं परिपूर्णम्

◆

कालीमहाविद्यासहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीगुरुभ्यो नमः

कथितोऽयं महामन्त्रः सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमः।
यमासाद्य मया प्राप्तं ऐश्वर्यपदमुत्तमम्॥१॥

सभी मन्त्रों में उत्तमोत्तम महामन्त्र कहता हूँ, जिसका आश्रय लेकर मैंने इस उत्तम महत् ऐश्वर्य पद को प्राप्त किया है॥१॥

संयुक्तः परया भक्त्या यथोक्तविधिना भवान्।
कुरुतामर्चनं देव्याः त्रैलोक्यविजिगीषया॥२॥

इस कही हुई विधि से परम भक्ति से युक्त होकर जो कोई देवी का अर्चन करेगा, वह तीनों लोकों में विजय प्राप्त करेगा॥२॥

श्रीपरशुराम उवाच

प्रसन्नो यदि मे देवः परमेशः पुरातनः।
रहस्यं परया देव्या कृपया कथय प्रभो॥३॥

हे पुरातन परमेश देव! यदि आप हम पर प्रसन्न हों तो हे प्रभु! कृपापूर्वक परदेवी का रहस्य कथन करें॥३॥

यथार्चनं विना होमं विना न्यासं विना बलिम्।
विना गन्धं विना पुष्पं विना नित्योदिताक्रिया॥४॥

विना होम, विना न्यास, विना बलि, विना गन्धाद्युपचार, विना पुष्पदिसमर्पण, विना नित्यक्रिया के जैसे-तैसे किये गये अर्चन से ही जिससे काली प्रसन्न हो जाती हैं॥४॥

प्राणायामं विना ध्यानं विना भूतविशोधनम्।
विना जाप्यं विना दानं विना काली प्रसीदति॥५॥

विना प्राणायाम, विना ध्यान, विना भूतशुद्धि, विना जप, विना दानादि क्रिया के ही काली जिससे प्रसन्न हो जाती हैं वह उपाय कहें॥५॥

श्रीशंकर उवाच

पृष्टं त्वयोक्तं मे प्राज्ञ भृगुवंशविवर्धन।
भक्तानामपि भक्तोऽसि त्वमेवं साधयिष्यसि॥६॥

हे भृगु के वंश के विस्तारक! पूर्व में तुमने पूछा तथा हमने कहा था, तुम भक्तों में परमभक्त हो इसलिए तुम्हारी कामना के लिए कहता हूँ॥६॥

देवीं दानवकोटिघ्नीं लीलया रुधिरप्रियाम्।
सदा स्तोत्रं प्रियामुग्रां कामकौतुकलालसाम्॥७॥

रुधिर से प्रेम करनेवाली देवी करोड़ों दानवों का हनन करनेवाली, सदा ही समस्त कामनाओं की पूर्ति की लालसावालों के लिए उग्रा देवी का स्तोत्र कहता हूँ॥७॥

सर्वदानन्दहृदयां वासव्यासक्तमानसाम्।
माध्वीकमत्स्यमांसादिरागिणीं रुधिरप्रियाम्॥८॥

सर्वदा आनन्द रूप से हृदय में निवास करनेवाली, आसक्तमानस, मधु, मत्स्य, मांस, से अनुराग रखनेवाली, रुधिर से प्रेम करनेवाली॥८॥

श्मशानवासिनीं प्रेतगणनृत्यमहोत्सवाम्।
योगप्रभां योगिनीशां योगीन्द्रहृदये स्थिताम्॥९॥

श्मशान में वास करनेवाली, प्रेतगणों के नृत्यमहोत्सव में सम्मिलित, योग की प्रभा वाली, योगिनियों की अधीश्वरी, योगियों के हृदय में रहने वाली॥९॥

तामुग्रकालिकां नाम प्रसादयितुमर्हसि।
तस्याः स्तोत्रं महापुण्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम्॥१०॥

उस उग्रकालिका के नामरूपी महत् प्रसादस्वरूप स्तोत्र (जो देवी को अत्यधिक प्रसन्नता देता है। जिसे स्वयं काली ने ही प्रकाशित किया है॥१०॥

तव तत् कथयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय।
गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं परात्परम्॥११॥

उस महत् स्तोत्र को तुमसे कहता हूँ, सावधान होकर सुनकर धारण करके इसे प्रयत्न पूर्वक गोपनीय रखना तथा प्रयत्नपूर्वक पाठ करना चाहिए॥११॥

यस्यैककालपठनात् सर्वे विघ्नाः समाकुलाः।
नश्यन्ति दहने दीप्ते पतङ्गा इव सर्वतः॥१२॥

इसके एक काल (एक बार) पाठ करने मात्र से सभी विघ्नों के समुदाय जैसे अग्नि में पतङ्ग आ करके हमेशा नष्ट हो जाते हैं, उसी प्रकार से नष्ट हो जाते हैं॥१२॥

गद्यपद्यमयी वाणी तस्य गङ्गाप्रवाहवत्।
तस्य दर्शनमात्रेण वादिनो निष्प्रभा मताः॥१३॥

इस महास्तोत्र के पाठ करने मात्र से पाठ कर्त्ता की गद्यपद्यमयी वाणी गङ्गा के प्रवाह के समान हो जाती है। उसके दर्शन मात्र से वादी समुदाय निष्प्रभ हो जाता है॥१३॥

राजानोऽपि च दासत्वं भजन्ति च परे जनाः।
तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्न संशयः॥१४॥

इस महास्तोत्र के पाठ करने मात्र से ही राजा भी दास हो जाते हैं, अन्य जन तो भक्त होकर भजने लग जाते हैं तथा पाठक के हाथ में सदैव ही सभी सिद्धियाँ रहती हैं, इसमें कोई संशय नहीं है॥१४॥

निशीथे मुक्तये शम्भुर्नग्नः शक्तिसमन्वितः।
मनसा चिन्तयेत् काली महाकालीति लालिताम्॥१५॥

महानिशाकाल में दिगम्बर (निरावरण) शम्भु का शक्ति के साथ समन्वित होकर, शिवशक्ति का मेलन कर, मन में काली का ध्यान करते हुए पाठ करने से महाकाली उसका लालन करती है, अर्थात् गणेश के समान रिद्धि-सिद्धि का स्वामी हो जाता है तथा कालिका से सदैव रक्षित रहता है॥१५॥

पठेत् सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं मोक्षस्य साधनम्।
प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्रत्वेनानुकम्पते॥१६॥

इस मोक्ष का साधन सहस्रनामस्तोत्र का पाठ करनेवाले पर कालिका प्रसन्न होकर पुत्र के समान लालन करती है॥१६॥

वेधा ब्रह्मा स्मृतेर्ब्रह्मकुसुमैः पूजिता परा।
प्रसीदति तथा काली यथानेन प्रसीदति॥१७॥

सहस्रार का वेध (भेदन) करके सहस्रकमल पर ब्रह्मकुसुम से जो ब्रह्मस्वरूपिणी परादेवता का पूजा करता है उसपर काली सदा प्रसन्न रहती है। वैसे ही इस सहस्रनाम का पाठ करने से काली प्रसन्न होती है॥१७॥

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीकालिकासहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य महाकालभैरव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीमहाकालिकादेवतामहाविद्याप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।**

ध्यानम्—

शिवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्॥
मुण्डमालाधरां देवीं लोलजिह्वां दिगम्बराम्।
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं श्मशानालयवासिनीम्॥

शिव पर आरूढ़ महाभीम, घोर दंष्ट्रवाली, हँसते हुए मुखवाली, चार भुजाओं में खड्ग-मुण्ड-वर-अभय धारण किये हुए शिवा, मुण्डमाला को धारण किये हुए लोलजिह्वा (जिह्वाको को लटकाई हुई) दिगम्बर श्मशान में निवास करनेवाली काली का ध्यान करना चाहिए।

सहस्रनामस्तोत्रम्

ॐ क्रीं महाकाल्यै नमः

ॐ श्मशानकालिका काली भद्रकाली कपालिनी।
गुह्यकाली महाकाली कुरुकुल्लाऽविरोधिनी॥१॥
कालिका कालरात्रिश्च महाकालनितम्बिनी।
कालभैरवभार्या च कुलवर्त्मप्रकाशिनी॥२॥
कामदा कामिनी काम्या कमनीया सुभाविनी।
कस्तूरीरसनीलाङ्गी कुञ्जरेश्वरगामिनी॥३॥
ककारवर्णसर्वाङ्गी कामिनी कामसुन्दरी।
कामार्त्ता कामरूपा च कामधेनु कलावती॥४॥
कान्ता कामस्वरूपा च कामाख्या कुलपालिनी।
कुलीना कुलवत्यम्बा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी॥५॥

कौमारी कुलजा कृष्णा कृष्णदेहा कृशोदरी।
कृशाङ्गी कुलिशाङ्गी च क्रीँकारी कमला कला॥६॥
करालस्था कराली च कुलकान्ताऽपराजिता।
उग्रा चोग्रप्रभा दीप्ता विप्रचित्ता महाबला॥७॥
नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रासिताऽसिता।
ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्तवत्सला॥८॥
माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका।
वज्राङ्गी वज्रकंकाली नृमुण्डस्त्रग्विणी शिवा॥९॥
मालिनी नरमुण्डाली गलद्रक्तविभूषणा।
रक्तचन्दनसिक्ताङ्गी सिन्दूरारुणमस्तका।!१०॥
घोररूपा घोरदंष्ट्रा घोरा घोरतरा शुभा।
महादंष्ट्रा महामाया सुदती युगदन्तुरा॥११॥
सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी त्रिलोचना।
शारदेन्दुप्रसन्नास्या स्फुरत् स्मेराम्बुजेक्षणा॥१२॥
अट्टहासा प्रसन्नास्या स्मेरवक्त्रा सुभाषिणी।
प्रसन्नपद्मवदना स्मितास्या प्रियभाषिणी॥१३॥
कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती बहुभाषिणी।
सुमतिः कुमतिश्चण्डा चण्डमुण्डातिवेगिनी॥१४॥
प्रचण्डा चण्डिका चण्डी चर्चिका चण्डवेगिनी।
सुकेशी मुक्तकेशी च दीर्घकेशी महत्कुचा॥१५॥
प्रेतदेहा कर्णपूरा प्रेतपाणी सुमेखला।
प्रेतासना प्रियप्रेता प्रेतभूमिकृतालया॥१६॥
श्मशानवासिनी पुण्या पुण्यदा कुलपण्डिता।
पुण्यालया पुण्यदेहा पुण्यश्लोकी च पावनी॥१७॥
पुत्रा पवित्रा परमा पुरा पुण्यविभूषणा।
पुण्यनाम्नी भीतिहरा वरदा खड्गपाणिनी॥१८॥
नृमुण्डहस्ता शस्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका।
दक्षिणा श्यामला श्यामा शान्ता पीनोन्नतस्तनी॥१९॥
दिगम्बरा घोररावा सृकान्ता रक्तवाहिनी।
घोररावा शिवा खड्गा विशंका मदनातुरा॥२०॥
मत्ता प्रमत्ता प्रमदा सुधासिन्धुनिवासिनी।
अतिमत्ता महामत्ता सर्वाकर्षणकारिणी॥२१॥

गीतप्रिया वाद्यरता प्रेतनृत्यपरायणा।
चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुजा तथा॥२२॥
कात्यायनी जगन्माता जगती परमेश्वरी।
जगद्बन्धुर्जगद्धात्री जगदानन्दकारिणी॥२३॥
जगन्मयी हैमवती महामाया महामहा।
नागयज्ञोपवीताङ्गी नागिनी नागशायिनी॥२४॥
नागकन्या देवकन्या गन्धर्वी किन्नरेश्वरी।
मोहरात्री महारात्री दारुणा भासुराम्बरा॥२५॥
विद्याधरी वसुमती यक्षिणी योगिनी जरा।
राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा॥२६॥
श्रुतिः स्मृतिर्महाविद्या गुह्यविद्या पुरातनी।
चिन्त्याऽचिन्त्या स्वधा स्वाहा निद्रा तन्द्रा च पार्वती॥२७॥
अपर्णा निश्चला लोला सर्वविद्या तपस्विनी।
गङ्गा काशी शची सीता सती सत्यपरायणा॥२८॥
नीतिस्सुनीतिस्सुरुचिः तुष्टिः पुष्टिर्धृतिः क्षमा।
वाणी बुद्धिः महालक्ष्मी लक्ष्मी नीलसरस्वती॥२९॥
स्रोतस्वती सरस्वती मातङ्गी विजया जया।
नदी सिन्धुः सर्वमयी तारा शून्यनिवासिनी॥३०॥
शुद्धा तरङ्गिणी मेधा लाकिनी बहुरूपिणी।
स्थूला सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा भगवत्यनुरूपिणी॥३१॥
परमाणुस्वरूपा च चिदानन्दस्वरूपिणी।
सदानन्दमयी सत्या सर्वानन्दस्वरूपिणी॥३२॥
सुनन्दा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीयस्वभाविनी।
रंगिणी टंगिनी चित्रा विचित्रा चित्ररूपिणी॥३३॥
पद्मा पद्मालया पद्ममुखी पद्मविभूषणा।
डाकिनी शाकिनी क्षान्ता राकिनी रुधिरप्रिया॥३४॥
भ्रान्तिर्भवानी रुद्राणी मृडानी शत्रुमर्दिनी।
उपेन्द्राणी महेन्द्राणी ज्योत्स्ना चन्द्रस्वरूपिणी॥३५॥
सूर्यात्मिका रुद्रपत्नी रौद्री स्त्री प्रकृतिः पुमान्।
शक्तिर्भुक्तिर्माता भक्तिर्मुक्तिः पतिव्रता॥३६॥
सर्वेश्वरी सर्वमाता सर्वाणी हरवल्लभा।
सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्धा भव्या भाव्या भयापहा॥३७॥

कर्त्री हर्त्री पालयित्री शर्वरी तामसी दया।
तमिस्त्रा तामसी स्थाणुः स्थिरा धीरा तपस्विनी॥३८॥
चार्वङ्गी चञ्चला लोलजिह्वा चारुचरित्रिणी।
त्रपा त्रपावती लज्जा विलज्जा हरयौवनी॥३९॥
सत्यवती धर्मनिष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुरवादिनी।
गरिष्ठा दुष्टसंहर्त्री विशिष्टा श्रेयसी घृणा॥४०॥
भीमा भयानका भीमनादिनी भीः प्रभावती।
वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञकर्त्री यजुःप्रिया॥४१॥
ऋक्सामाथर्वनिलया रागिणी शोभना सुरा।
कलकण्ठी कम्बुकण्ठी वेणुवीणापरायणा॥४२॥
वंशिनी वैष्णवी स्वेच्छा धात्री त्रिजगदीश्वरी।
मधुमतिः कुण्डलिनी ऋद्धिः शुद्धिः शुचिस्मिता॥४३॥
रम्भोर्वशी रती रामा रोहिणी रेवती मखा।
शंखिनी चक्रिणी कृष्णा गदिनी पद्मिनी तथा॥४४॥
शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शार्ङ्गपाणिनी।
पिनाकधारिणी धूम्रा सुरभी वनमालिनी॥४५॥
रथिनी समरप्रीता वेगिनी रणपण्डिता।
जडिनी वज्रिणी नीललावण्याम्बुदचन्द्रिका॥४६॥
बलिप्रिया सदा पूज्या दैत्येन्द्रमथिनी तथा।
महिषासुरसंहर्त्री कामिनी रक्तदन्तिका॥४७॥
रक्तपा रुधिराक्ताङ्गी रक्तखर्परधारिणी।
रक्तप्रिया मांसरुचिः वासवासक्तमानसा॥४८॥
गलच्छोणितमुण्डाली कण्ठमालाविभूषणा।
शवासना चितान्तःस्था महेशी वृषवाहिनी॥४९॥
व्याघ्रत्वगम्बरा चीनचैलिनी सिंहवाहिनी।
वामदेवी महादेवी गौरी सर्वज्ञभामिनी॥५०॥
बालिका तरुणी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा।
सुभ्रूर्विलासिनी ब्रह्मवादिनी ब्राह्मिणी सती॥५१॥
सुप्तवती चित्रलेखा लोपामुद्रा सुरेश्वरी।
अमोघाऽरुन्धती तीक्ष्णा भोगवत्यनुरागिणी॥५२॥
मन्दाकिनी मन्दहासा ज्वालामुख्याऽसुरान्तका।
मानदा मानिनी मान्या माननीया मदातुरा॥५३॥

मदुरा मेदुरोन्मादा मेध्या साध्या प्रसादिनी।
सुमेध्याऽनन्तगुणिनी सर्वलोकोत्तमोत्तमा॥५४॥
जयदा जित्वरी जैत्री जयश्रीर्जयशालिनी।
सुखदा शुभदा सत्या सभासंक्षोभकारिणी॥५५॥
शिवदूती भूतमती विभूतिर्भूषणानना।
कौमारी कुलजा कुन्ती कुलस्त्री कुलपालिका॥५६॥
कीर्तिर्यशस्विनी भूषा भूष्टा भूतपतिप्रिया।
सुगुणा निर्गुणाऽधिष्ठा निष्ठा काष्ठा प्रकाशिनी॥५७॥
धनिष्ठा धनदा धान्या वसुधा सुप्रकाशिनी।
उर्वी गुर्वी गुरुश्रेष्ठा षड्गुणा त्रिगुणात्मिका॥५८॥
राजामाज्ञा महाप्राज्ञा सगुणा निर्गुणात्मिका।
महाकुलिना निष्कामा सकामा कामजीवना॥५९॥
कामदेवकला रामाऽभिरामा शिवनर्तकी।
चिन्तामणिः कल्पलता जाग्रती दीनवत्सला॥६०॥
कार्तिकी कृत्तिका कृत्या अयोध्या विषमा समा।
सुमन्त्रा मन्त्रिणी घूर्णा ह्लादिनी क्लेशनाशिनी॥६१॥
त्रैलोक्यजननी हृष्टा निर्मांसाऽमलरूपिणी।
तटङ्कनिम्नजठरा शुष्कमांसास्थिमालिनी॥६२॥
अवन्ती मधुरा हृद्या त्रैलोक्या पावनक्षमा।
व्यक्ताऽव्यक्ताऽनेकमूर्ती शौरभी भीमनादिनी॥६३॥
क्षेमंकरी शाङ्करी च सर्वसम्मोहकारिणी।
ऊर्ध्वा तेजस्विनी क्लिन्ना महातेजस्विनी तथा॥६४॥
अद्वैता योगिनी पूज्या सुरभी सर्वमङ्गला।
सर्वप्रियङ्करी भोग्या धनिनी पिशिताशना॥६५॥
भयङ्करी पापहरा निष्कलंका वशङ्करी।
आशा तृष्णा चन्द्रकला निद्राकोटिसमप्रभा॥६६॥
सहस्त्रसूर्यसङ्काशा चन्द्रकोटिसमप्रभा।
निशुम्भशुम्भसंहर्त्री रक्तबीजविनाशिनी॥६७॥
मधुकैटभसंहर्त्री महिषासुरघातिनी।
वह्निमण्डलमध्यस्था सर्वसत्त्वप्रतिष्ठिता॥६८॥
सर्वाचारवती सर्वदेवकन्याऽतिदेवता।
दक्षकन्या दक्षयज्ञनाशिनी दुर्गतारिणी॥६९॥

इज्या पूज्या विभा भूतिः सत्कीर्तिर्ब्रह्मचारिणी।
रंभोरुश्चतुरा राका जयन्ती वरुणा कुहूः॥७०॥
मनस्विनी देवमाता यशस्या ब्रह्मवादिनी।
सिद्धिदा वृद्धिदा वृद्धिः सर्वाद्या सर्वदायिनी॥७१॥
आधाररूपिणी धेया मूलाधारनिवासिनी।
आज्ञा प्रज्ञा पूर्णमना चन्द्रमुख्यनुकूलिनी॥७२॥
वावदूका निम्ननाभिः सत्यसन्धा दृढव्रता।
आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्त्रयीस्त्रिदिवसुन्दरी॥७३॥
ज्वालिनी ज्वलिनी शैलतनया विन्ध्यवासिनी।
प्रत्यया खेचरी धैर्या तुरीया विमलातुरा॥७४॥
प्रगल्भा वारुणी क्षामा दर्शिनी विस्फुलिङ्गिनी।
भक्तिःसिद्धिः सदाप्राप्तिः प्रकाम्या महिमाऽणिमा॥७५॥
इच्छा सिद्धिर्वशित्वा च ईशित्योर्ध्वनिवासिनी।
लघिमा चैव सावित्री गायत्री भुवनेश्वरी॥७६॥
मनोहरा चिता दिव्या देव्युदारा मनोरमा।
पिङ्गला कपिला जिह्वा रसज्ञा रसिका रसा॥७७॥
सुषुम्नेडा योगवती गान्धारी नवकान्तका।
पाञ्चाली रुक्मिणी राधाऽऽराध्या भीमा च राधिका॥७८॥
अमृता तुलसीवृन्दा कैटभी कपटेश्वरी।
उग्रचण्डेश्वरी वीरजननी वीरसुन्दरी॥७९॥
उग्रतारा यशोदाख्या देवकी देवमानिता।
निरञ्जना चित्रदेवी क्रोधिनी कुलदीपिका॥८०॥
कुलरागीश्वरी ज्वाला मात्रिका द्राविणी द्रवा।
योगीश्वरी महामारी भ्रामरी बिन्दुरूपिणी॥८१॥
दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला डामरी प्रभा।
कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशुण्डी प्रकटाकृतिः॥८२॥
द्राविणी गोपिनी माया कामबीजेश्वरी प्रिया।
शाकम्भरी कोकनदा सुसत्या च तिलोत्तमा॥८३॥
अमेया विक्रमा क्रूरा सम्यक् शीला त्रिविक्रमा।
स्वस्तिर्हव्यवहा प्रीती रुक्मा धूम्रार्चिरंगदा॥८४॥
तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणी धरा।
त्रिखण्डा रोधिनी वश्या सकला शब्दरूपिणी॥८५॥

बीजरूपा महामुद्रा वशिनी योगरूपिणी।
अनङ्गकुसुमाऽनङ्गमेखलाऽनङ्गरूपिणी ॥८६॥
अनङ्गमदनाऽनङ्गरेखानङ्गकुशेश्वरी ।
अनङ्गमालिनी कामेश्वरी सर्वार्थसाधिका॥८७॥
सर्वतन्त्रमयी सर्वमोदिन्यानन्दरूपिणी।
वज्रेश्वरी च जयिनी सर्वदुःखक्षयंकरी॥८८॥
षडङ्गयुवती योगे युक्ता ज्वालांशुमालिनी।
दुराशया दुराधारा दुर्जया दुर्गरूपिणी॥८९॥
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा।
हंसेश्वरी त्रिलोकस्था शाकम्भर्यनुरागिणी॥९०॥
त्रिकोणनिलया नित्या परमामृतारञ्जिता।
महाविद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुलसुन्दरी॥९१॥
त्वरिता भक्तिसंयुक्ता भक्तिवश्या सनातनी।
भक्तानन्दमयी भक्तभाविता भक्तवशंकरी॥९२॥
सर्वसौन्दर्यनिलया सर्वसौभाग्यशालिनी।
सर्वसंभोगभवना सर्वसौख्यानुरूपिणी॥९३॥
कुमारीपूजनरता कुमारीव्रतचारिणी।
कुमारीभक्तिसुखिनी कुमारीरूपधारिणी॥९४॥
कुमारीपूजकप्रीता कुमारीप्रीतिदप्रिया।
कुमारीसेवकासंगा कुमारीसेवकालया॥९५॥
आनन्दभैरवी बालभैरवी वटुकभैरवी।
श्मशानभैरवी कालभैरवी पुरभैरवी॥९६॥
महाभैरवपत्नी च परमानन्दभैरवी।
सुरानन्दभैरवी च उन्मादानन्दभैरवी॥९७॥
यज्ञानन्दभैरवी च तथा तरुणभैरवी।
ज्ञानानन्दभैरवी च अमृतानन्दभैरवी॥९८॥
महाभयंकरी तीव्रा तीव्रवेगा तपस्विनी।
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी॥९९॥
त्रिपुरेशी पञ्चदशी पञ्चमी पुरवासिनी।
महासप्तदशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी॥१००॥
महांकुशस्वरूपा च महाचक्रेश्वरेश्वरी।
नवचक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी॥१०१॥

राजचक्रेश्वरी राज्ञी महात्रिपुरसुन्दरी।
सिन्दूरपूररुचिरा श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरी॥१०२॥
सर्वाङ्गसुन्दरी रक्तारक्तवस्त्रोत्तरीयका।
यवा यावकसिन्दूररक्तचन्दनधारिणी॥१०३॥
यवा यावकसिन्दूररक्तचन्दनरूपधृक्।
चमरीबालकुटिला निर्मलश्यामकेशिनी॥१०४॥
वज्रमौक्तिकरत्नाढ्या किरीटकुण्डलोज्ज्वला।
रत्नकुण्डलसंयुक्ता स्फुरत् गण्डमनोरमा॥१०५॥
कुञ्जरेश्वरकुम्भोत्थ मुक्तरञ्जितनासिका।
मुक्ताविद्रुममाणिक्यहाराढ्यस्तनमण्डला ॥१०६॥
सूर्यकान्तेन्दुकान्ताढ्या स्पर्शाश्मगलभूषणा।
बीजपूरस्फुरद् बीजदन्तपंक्तिरनुत्तमा॥१०७॥
कामकोदण्डजाभग्ना भ्रूकटाक्षप्रवर्षिणी।
मातङ्गकुम्भवक्षोजा लसत्कनकदक्षिणा॥१०८॥
मनोज्ञा शष्कुलीकर्णा हंसीगतिविडम्बिनी।
पद्मरागाङ्गदद्योतद्दोश्चंतुष्कप्रकाशिनी ॥१०९॥
कर्पूरागरुकस्तूरि कुङ्कुमद्रवलेपिता।
विचित्ररत्नपृथिवी कल्पशाखितलस्थिता॥११०॥
रत्नदीपस्फुरत् रत्नसिंहासननिवासिनी।
षट्चक्रभेदनकरी परमानन्दरूपिणी॥१११॥
सहस्रदलपद्मान्ता चन्द्रमण्डलवर्तिनी।
ब्रह्मरूपा शिवक्रोडा नानासुखविलासिनी॥११२॥
हरविष्णुविरिञ्चेन्द्र गृहनायकसेविता।
शिवा शैवा च रुद्राणी तथैव शिवनादिनी॥११३॥
महादेवप्रिया देवी तथैवानङ्गमेखला।
डाकिनी योगिनी चैव तथोपयोगिनी मता॥११४॥
माहेश्वरी वैष्णवी च भ्रामरी शिवरूपिणी।
अलम्बुसा भोगवती क्रोधरूपा सुमेखला॥११५॥
गान्धारी हस्तिजिह्वा च इडा चैव शुभङ्करी।
पिङ्गला दक्षसूत्री च सुषुम्ना चैव गन्धिनी॥११६॥
भगात्मिका भगाधारा भगेशी भगरूपिणी।
लिङ्गाख्या चैव कामेशी त्रिपुरा भैरवी तथा॥११७॥

लिङ्गगीतिस्सुगीतिश्च लिङ्गस्था लिङ्गरूपधृक्।
लिङ्गमाला लिङ्गभवा लिङ्गालिङ्गा च पावकी॥११८॥
भगवती कौशिकी च प्रेमरूपा प्रियंवदा।
गृध्ररूपी शिवारूपा चक्रेशी चक्ररूपधृक्॥११९॥
आत्मयोनिः ब्रह्मयोनिः जगद्योनिरयोनिजा।
भगरूपा भगस्थात्री भगिनी भगमालिनी॥१२०॥
भगात्मिका भगाधारारूपिणी भगशालिनी।
लिङ्गाभिधायिनी लिङ्गप्रिया लिङ्गनिवासिनी॥१२१॥
लिङ्गस्था लिङ्गिनी लिङ्गरूपिणी लिङ्गसुन्दरी।
लिङ्गगीतिर्महाप्रीतिर्भगगीतिर्महासुखा ॥१२२॥
लिङ्गनामसदानन्दा भगनामसदागतिः।
भगनामसदानन्दा लिङ्गनामसदारतिः॥१२३॥
लिङ्गमालाकराभूषा भगमालाविभूषणा।
भगलिङ्गामृतवृता भगलिङ्गामृतात्मिका॥१२४॥
भगलिङ्गार्चनप्रीता भगलिङ्गस्वरूपिणी।
भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गसुखावहा॥१२५॥
स्वयम्भूकुसुमप्रीता स्वयम्भूकुसुमार्चिता।
स्वयम्भूकुसुमप्राणा स्वयम्भूकुसुमोत्थिता॥१२६॥
स्वयम्भूकुसुमस्नाता स्वयम्भूपुष्पतर्पिता।
स्वयम्भूपुष्पघटिता स्वयम्भूपुष्पधारिणी॥१२७॥
स्वयम्भूपुष्पतिलका स्वयम्भूपुष्पचर्चिता।
स्वयम्भूपुष्पनिरता स्वयम्भूकुसुमाग्रहा॥१२८॥
स्वयम्भूपुष्पयज्ञेशा स्वयम्भूकुसुमालिका।
स्वयम्भूपुष्पनिचिता स्वयम्भूकुसुमार्चिता॥१२९॥
स्वयम्भूकुसुमादानलालसोन्मत्तमानसा ।
स्वयम्भूकुसुमानन्दलहरीस्निग्धदेहिनी ॥१३०॥
स्वयम्भूकुसुमाधारा स्वयम्भूकुसुमाकुला।
स्वयम्भूपुष्पनिलया स्वयम्भूपुष्पवासिनी॥१३१॥
स्वयम्भूकुसुमस्निग्धा स्वयम्भूकुसुमात्मिका।
स्वयम्भूपुष्पकरिणी स्वयम्भूपुष्पमालिका॥१३२॥
स्वयम्भूकुसुमन्यासा स्वयम्भूकुसुमप्रभा।
स्वयम्भूकुसुमज्ञाना स्वयम्भूपुष्पभोगिनी॥१३३॥

स्वयम्भूकुसुमोल्लासा स्वयम्भूपुष्पवर्षिणी।
स्वयम्भूकुसुमानन्दा स्वयम्भूपुष्पपुष्पिणी॥१३४॥
स्वयम्भूकुसुमोत्साहा स्वयम्भूपुष्परूपिणी।
स्वयम्भूकुसुमोन्मादा स्वयम्भूपुष्पसुन्दरी॥१३५॥
स्वयम्भूकुसुमाराध्या स्वयम्भूकुसुमोद्भवा।
स्वयम्भूकुसुमाव्यग्रा स्वयम्भूपुष्पपूर्णिता॥१३६॥
स्वयम्भूपूजकप्रज्ञा स्वयम्भूहोतृमात्रिका।
स्वयम्भूदातृरक्षिता स्वयम्भूभक्तभाविका॥१३७॥
स्वयम्भूकुसुमप्रीता स्वयम्भूपूजकप्रिया।
स्वयम्भूवन्दकाधारा स्वयम्भूनिन्दकान्तका॥१३८॥
स्वयम्भूप्रदसर्वस्वा स्वयम्भूप्रदपुत्रिणी।
स्वयम्भूप्रदसस्मेरा स्वयम्भूतशरीरिणी॥१३९॥
सर्वलोकोद्भभवप्रीता सर्वलोकोद्भवात्मिका।
सर्वकालोद्भवोद्भवा सर्वलोकोद्भवोद्भवा॥१४०॥
कुन्दपुष्पसमाप्रीतिः कुन्दपुष्पसमारतिः।
कुन्दगोलोद्भवप्रीता कुन्दगोलोद्भवात्मिका॥१४१॥
स्वयम्भूर्वा शिवा शक्ता पाविनी लोकपावनी।
कीर्तिर्यशस्विनी मेधा विमेधा सुरसुन्दरी॥१४२॥
अश्विनी कृत्तिका पुष्या तेजस्वी चन्द्रमण्डला।
सूक्ष्मा सूक्ष्मप्रदा सूक्ष्मा सूक्ष्मभयविनाशिनी॥१४३॥
वरदाऽभयदा चैव मुक्तिबन्धविनाशिनी।
कामुकी कामदा कान्ता कामाख्या कुलसुन्दरी॥१४४॥
सुखदा दुःखदा मोक्षा मोक्षादर्थप्रकाशिनी।
दुष्टादुष्टमती चैव सर्वकार्यविनाशिनी॥१४५॥
शुक्रधारा शुक्ररूपा शुक्रसिन्धुनिवासिनी।
शुक्रालया शुक्रभोगा शुक्रपूज्या सदारती॥१४६॥
शुक्रपूजा शुक्रदेहा शुक्रपूजकवत्सला।
शुक्रमूर्तिः शुक्रदेहा शुक्रपूजकपुत्रिणी॥१४७॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रसंस्पृहा शुक्रसुन्दरी।
शुक्रस्नाता शुक्रकरी शुक्रसेव्यातिशुक्रिणी॥१४८॥
महाशुक्रा शुक्रभवा शुक्रवृष्टिविधायिनी।
शुक्राभिधेया शुक्रार्हा शुक्रवन्दकवन्दिता॥१४९॥

शुक्रानन्दकरी शुक्रसदानन्दविधायिनी।
शुक्रोत्साहा सदा शुक्रपूर्णा शुक्रमनोरमा॥१५०॥
शुक्रपूजकसर्वस्था शुक्रनिन्दकनाशिनी।
शुक्रात्मिका शुक्रसम्पत् शुक्राकर्षणकारिणी॥१५१॥
रक्ताशया रक्तभोगा रक्तपूजा सदारती।
रक्तपूज्या रक्तहोमा रक्तस्था रक्तवत्सला॥१५२॥
रक्तपूर्णा रक्तदेहा रक्तपूजकपुत्रिणी।
रक्ताख्या रक्तिनी रक्तसंस्पृहा रक्तसुन्दरी॥१५३॥
रक्ताभिदेहा रक्तार्हा रक्तवन्दकवन्दिता।
महारक्ता रक्तभवा रक्तवृष्टिविधायिनी॥१५४॥
रक्तस्नाता रक्तप्रीता रक्तसेव्यातिरक्तिनी।
रक्तानन्दकरी रक्तसदानन्दविधायिनी॥१५५॥
रक्तारक्ता रक्तपूर्णा रक्तसेव्यक्षिणी रमा।
रक्तसेवकसर्वस्वा रक्तनिन्दकनाशिनी॥१५६॥
रक्तात्मिका रक्तरूपा रक्ताकर्षणकारिणी।
रक्तोत्साहा रक्तव्यग्रा रक्तपानपरायणा॥१५७॥
शोणितानन्दजननी कल्लोलस्निग्धरूपिणी।
साधकान्तर्गता देवी पार्वती पापनाशिनी॥१५८॥
साधूनां हृदिसंस्थात्री साधकानन्दकारिणी।
साधकानां च जननी साधकप्रियकारिणी॥१५९॥
साधकप्रचुरानन्दसम्पत्तिसुखदायिनी ।
साधका साधकप्राणा साधकासक्तमानसा॥१६०॥
साधकोत्तमसर्वस्वा साधकाभक्तरक्तपा।
साधकानन्दसन्तोषा साधकारिविनाशिनी॥१६१॥
आत्मविद्या ब्रह्मविद्या परब्रह्मकुटुम्बिनी।
त्रिकूटस्था पञ्चकूटस्था सर्वकूटशरीरिणी॥१६२॥
सर्ववर्णमयी वर्णजपमालाविधायिनी।
इदं श्रीकालिकानाम्नां सहस्त्रं शिवभाषितम्॥१६३॥

फलश्रुतिः

गुह्यात्गुह्यतरं साक्षात्महापातकनाशनम्।
पूजाकाले निशीथे च सन्ध्ययोरुभयोरपि॥१॥

यह गुह्यात् गुह्यतर साक्षात् महापातक का नाश करनेवाला सहस्रनाम पूजाकाल में

अर्धरात्रि के समय तथा दोनों सन्ध्या के समय तथा मध्याह्न काल में पाठ करता है, उसके समस्त पातक नष्ट हो जाते हैं॥१॥

लभते गाणपत्यं स यः पठेत् साधकोत्तमः।
यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि॥२॥

जो साधकोत्तम इस सहस्रनाम का पाठ करता है अथवा पाठ कराता है, सुनता है तथा सुनाता है, वह गाणपत्य का लाभ करता है॥२॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः स याति कालिकां पदम्।
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि यः कश्चिन्मानवः पठेत्॥३॥

इस सहस्रनाम का श्रद्धा या अश्रद्धा से जो कोई मानव पाठ करता है अथवा पाठ कराता है वह सभी पापों से छूटकर कालिका के लोक में वास करता है॥३॥

दुर्गादुर्गतरं तीर्त्वा स याति कालिकां पदम्।
बन्ध्या वा काकबन्ध्या वा मृतपुत्रा च याङ्गना॥४॥

दुर्गम दुर्गमतर भी दुस्तर कठिन काल को भी पार कर जाता है और कालिका पद को प्राप्त करता है। बन्ध्या हो या काकबन्ध्या हो या मृतपुत्रा हो या हीन अङ्गना हो॥४॥

श्रुत्वा स्तोत्रमिदं पुत्रान् लभन्ते चिरजीविनः।
यं यं कामयते कामं पठन् स्तोत्रमनुत्तमम्॥५॥

इस महास्तोत्र को पाठ करने मात्र से चिरञ्जीवी पुत्र प्राप्त करती है तथा जो-जो कामना करता हैं वह इस स्तोत्र के पाठ से प्राप्त करती है॥५॥

देवीवरप्रदानेन तं तं प्राप्नोति नित्यशः।
स्वयंभूकुसुमैः शुक्लैः सुगन्धी कुसुमान्वितैः॥६॥

सुगन्धित शुक्ल स्वयंभू कुसुम से युक्त करके जो साधक पाठ करता है वह देवी के वर को प्राप्त करके तत्तद् समस्त कामनाओं को नित्य ही प्राप्त करता है॥६॥

गुरुविष्णुमहेशानामभेदेन महेश्वरी।
समन्तात् भावयेन्मन्त्री महेशो नात्र संशयः॥७॥

गुरु ब्रह्म विष्णु महेश में केवल नाम भेद है इनका महेश्वरी के साथ अभेद मानते हुए जो भक्त ध्यान करता है, वह महेश हो जाता है। इसमें कोई संशय नहीं है॥७॥

स शाक्तः शिवभक्तो च स एव वैष्णवोत्तमः।
सम्पूज्य स्तौति यः कालीमद्वैतभावमावहन्॥८॥

जो अद्वैत भाव से काली का पूजन और स्तुति करता है, वही शाक्त है, वही शिवभक्त है, वही वैष्णवों में उत्तमोत्तम है।

देव्यानन्देन सानन्दो देवीभक्त्यैकभक्तिमान्।
स एव धन्यो यस्यार्थे महेशो व्यग्रमानसः॥९॥

देवी से अनन्य भक्ति करनेवाले भक्त पर देवी प्रसन्न होकर पुत्रवत् स्नेह करती है, वह भक्त धन्य होता है जो सदैव माहेश्वरी के ध्यान में सतत निमग्न रहता है, वह शिव-भक्ति में लीन होकर मुक्त हो जाता है।

कामयित्वा यथाकामं स्तवमेनमुदीरयेत्।
सर्वरोगैः परित्यक्तो जायते मदनोपमः॥१०॥

इस स्तवन से समस्त कामनाओं की पूर्ति हो जाती है, सभी रोगों का हरण हो जाता है और साधक कामदेव के समान हो जाता है।

चक्रं वास्तवमेनं वा धारयेदङ्गसङ्गतम्।
विलिख्य विधिवत् साधुः स एव कालिकातनुः॥११॥

इस प्रकार का चक्रों में ध्यान करते हुए अथवा धारण करते हुए विधिपूवक चक्र को धारण करता है, उसके शरीर में कालिका का वास हो जाता है॥११॥

देव्यै निवेदितं यद्यत् तस्यां स भक्षयेन्नरः।
दिव्यदेहधरो भूत्वा देव्याः पार्श्वधरो भवेत्॥१२॥

देवी को निवेदित करके जो कुछ भी भोजन करता है, वह दिव्य देह धारण करके शिव स्वरूप हो जाता है अर्थात् वह रुद्र शरीरवाला हो जाता है॥१२॥

नैवेद्यनिन्दकं दृष्ट्वा नृत्यन्ती योगिनीगणाः।
रक्तपानोद्यताः सर्वा मांसास्थिचर्व्वणोद्यताः॥१३॥

काली के नैवेद्य की निन्दा करनेवाले को देख कर योगिनीगण नृत्य करती हैं तथा उसके रक्त का पान करने के लिए सदैव उद्यत रहती हैं, उसके मांस-अस्थि का चर्वण करने के लिए हमेशा तैयार रहती हैं॥१३॥

तस्मान्निवेद्यं देव्यै यद् दृष्ट्वा श्रुत्वा च मानवः।
न निन्देत् मनसा वाचा कुष्ठव्याधिपराङ्मुखाः॥१४॥

इसलिए देवी को निवेदन करके, देख करके, सुन करके मानवों को मन-वचन से भी निन्दा नही करना चाहिए॥१४॥

आत्मानं कालिकात्मानं भावयन् स्तौति यः शिवाम्।
शिवोपमं गुरुं ध्यात्वा स एव श्रीसदाशिवः॥१५॥

जो अपने आत्मा में कालिका की भावना से ध्यान करता है, स्तुति करता है, शिव का गुरु रूप से ध्यान करता है वह सदा शिव हो जाता है॥१५॥

यस्यालये तिष्ठति नूनमेतत्
स्तोत्रं भवान्या लिखितं विधिज्ञैः।
गोरोचनालक्तककुङ्कुमाक्त-
कर्पूरसिन्दूरमधुद्रवेण॥१६॥

जिसके घर में विधिपूर्वक भवानी का यह स्तोत्र लिखकर, स्थापितकर गोराचन-आलक्त-कुंकुम-कर्पूर-सिन्दूर-मधु-द्रव्यादि से पूजा जाता है।।१६।।

न तत्र चोरस्य भयं न हास्यो
न वैरिभिर्नाऽशनिवह्निभीतिः।
उत्पातवायोरपि नाऽत्र शंका
लक्ष्मीः स्वयं तत्र वसेदलोला।।१७।।

उसके घर में चौरादि भय नही होता, न शत्रुओं, शन्यादि ग्रहों, अग्न्यादि का भय ही रहता है, वाय्वादि के उत्पात की शंका भी नही रहती है, लक्ष्मी स्वयं उस गृह में स्थिर रूप से वास करती हैं।।१७।।

स्तोत्रं पठेदेतदनन्तपुण्यम्,
देवीपदाम्भोजपरो मनुष्यः।
विधानपूजाफलमेव सम्यक्,
प्राप्नोति सम्पूर्णमनोरथोऽसौ।।१८।।

इस महास्तोत्र का पाठ और महादेवी के चरण का सेवन अनन्त पुण्य प्रदान करने वाला है। विधिपूर्वक पूजा करनेवाला पूजा का सम्पूर्ण फल प्राप्त करता है और उसके समस्त मनोरथों की पूर्ति हो जाती है।।१८।

मुक्ताः श्रीचरणारविन्दनिरताः स्वर्गामिनो भोगिनो,
ब्रह्मोपेन्द्रशिवात्मकार्चनरता लोकेऽपि संलेभिरे।
श्रीमत् शंकरभक्तिपूर्वकमहादेवीपदध्यायिनो,
मुक्तिर्भुक्तिमतिःस्वयंस्तुतिपराभक्तिःकरस्थायिनी।।

जो साधक भूतभावन शिवशङ्कर का महादेवी के साथ ध्यान करता है और देवी के श्रीचरण तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव के सेवा में सतत निरत रहता है, वह समस्त भोगों को भोग करके स्वर्ग गमन करता है। जो साधक देवी की पराभक्ति में निरत रहता है, वह देवी की कृपा से मुक्ति-भुक्ति दोनों प्राप्त करता है।

कालीमहाविद्यासहस्रनामस्तोत्रं परिपूर्णम्

◆

अमोघशिवकवचम्

विनियोगः—**अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीसदाशिव रुद्रो देवता, श्री ह्रीं क्लीं बीजं, ह्रीँ शक्तिः, वं कीलकं सदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं ब्रह्मर्षये नमः शिरसि।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं श्रीसदाशिवरुद्राय नमः हृदि।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं ह्रौं बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं वँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं श्रीसदाशिवरुद्राय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः—तत्तदङ्गों का अनामिका अङ्गुलि से अङ्गुष्ठ को मिलाकर स्पर्श करे।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने शिखायै वषट्।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हुम्।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट्।

शङ्करध्यानम्

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिन्दमम्।
सहस्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्॥

कठोर दाँतोंवाले, तीन नेत्र से युक्त, कण्ठ में विष तथा हजारों तेज उग्र किरणों से युक्त उमापति शम्भु की वन्दना करते है।

अथापरं सर्वपुराणगुह्यं निःशेषपापौघहरं पवित्रम्।
जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं वक्ष्यामि शैवं कवचं हितायते॥

समस्त पुराणों में गोपनीय, सभी पापों की समस्त राशी को नष्ट करनेवाले, परम पवित्र, जय प्रदान करनेवाला, सभी विपत्तियों से छुटकारा दिलानेवाला, भक्तों के हित के लिए अमोघकवच कहता हूँ।

ध्यान करने के बाद मनोयोग से कवच का पाठ करे।

कवचम्

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापीनमीश्वरम्।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम्॥१॥

विश्वव्यापी ईश्वर महादेव को नमस्कार है, यह शिवमय वर्म सभी मनुष्यों की रक्षा करता है॥१॥

शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्॥२॥

शुद्ध होकर, शुद्ध स्थान में जाकर, शुद्ध आसन स्थापित करके, जितेन्द्रिय होकर, प्राणायाम करके, इस अव्यय शिवकवच का चिन्तन (पाठ) करना चाहिये॥२॥

हृत्पुण्डरीकान्तरसन्निविष्टं स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत्परानन्दमयं महेशम्॥३॥

हृदय में पुण्डरीक के तेज से सन्निविष्ट, अपने तेज से व्याप्त आकाश में शान्त, अतीन्द्रिय, सूक्ष्म-अनन्त और सबसे आदि परानन्दमय महेश्वर का ध्यान करता हूँ॥३॥

ध्यानावधूताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेताः।
षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेन कुर्यात्कवचेन रक्षाम्॥४॥

समस्त कर्म के बन्धन से मुक्त करनेवाले, चिर स्थिर, चिदानन्द में निमग्न चित्त,

षड्क्षर के न्यास में समाहित आत्मरूप शिव कवच के द्वारा हमारी रक्षा करें॥४॥

मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा संसारकूपे पतितं गभीरे।
तन्नाम दिव्यं परमन्त्रमूलं धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम्॥५॥

समस्त देवताओं के आत्मारूप शिवशङ्कर हमारी रक्षा करें, हम इस भयंकर संसार-रूपी कूप में गिरे हुए हैं, आपका दिव्य नाम जो परमन्त्र का मूल है उसे अपने कल्याण के लिए हृदय में ध्यान पूर्वक जप करता हूँ, जो सभी दुःखों को नष्ट करनेवाला है॥५॥

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिर्ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः स ईश्वरः पातु भयादशेषात्॥६॥

हे विश्वमूर्ति ज्योतिर्मय आनन्दघन चिदात्मा! आप सभी तरफ से हमारी रक्षा करें। अणुओं से भी सूक्ष्म आपकी एक शक्ति है वह ईश्वर रूप हमें सभी भयों से रक्षा करें॥६॥

यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं पायात्स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः।
योऽपांस्वरूपेण नृणां करोति संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः॥७॥

सम्पूर्ण सृष्टि में ईश्वर भू, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र और यजमानादि अष्टमूर्ति रूप से व्याप्त है, उसमें जो भू रूप से सम्पूर्ण पृथ्वी में व्याप्त हैं वे क्षितिमूर्ति हमारी रक्षा करें तथा जो जल रूप में मनुष्यों को जीवन प्रदान करने का कार्य करते हैं, वह जलमूर्ति हमारी सर्वत्र रक्षा करे॥७॥

कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात्॥८॥

जो कल्प के अन्त होने पर सम्पूर्ण भुवन को दग्ध करके अपनी भूरिलीला करते हुए नृत्य करते हैं वे महाकाल रुद्र हमारी रक्षा करें, आपका स्वरूप हमारी सम्पूर्ण दावाग्नि-तूफानों और तापों से रक्षा करे॥८॥

प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्त्रम्॥९॥

तपे हुए सोने के समान जिनकी आभा है, ज्ञान, वर, अभय और कुठार जिसके हाथों में हैं, जो चार मुखोंवाले हैं तथा तीन नेत्र हैं, वे पूर्व में स्थित होकर हमारी रक्षा करें॥९॥

कुठारवेदाङ्कुशपाशशूलकपालढक्काक्षगुणान् दधानः।
चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम्॥१०॥

जो हाथों में कुठार, ज्ञान, अङ्कुश, पाश, शूल, कपाल, ढक्का, अक्षमाला, तथा धनुष धारण करनेवाले है, चार मुखों, तीन नेत्रोंवाले, नील वर्णवाले शङ्कर अघोररूप दक्षिण दिशा में स्थित होकर यमराज से हमारी रक्षा करें॥१०॥

कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकावभासो वेदाक्षमालावरदाभयाङ्कः।
त्र्यक्षश्च चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम्॥११॥

शिशिर ऋतु के चन्द्रमा के सदृश, शङ्ख के समान धवल, स्फटिक के समान जिनकी प्रभा आभा है, जिनके अङ्गों में वेद (ज्ञान), अक्षमाला, वर तथा अभय स्थित है, तीन आँख तथा चार मुख जिनकें हैं, वे सद्योजात शिव पश्चिम दिशा में स्थित होकर हमारी रक्षा करें।।११।।

वराक्षमालाभयटङ्कहस्त सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः।
त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः।।१२।।

वर, अक्षमाला, अभय, धनुष हाथ में धारण किये हुए, नील कमल के समान ही जिनकी आभा हैं, तीन नेत्र और चार मुखोंवाले महारुद्र उत्तर दिशा में अवस्थित होकर उत्तर दिशा से हमारी रक्षा करें।।१२।।

वेदाभयेष्टाङ्कुशपाशटङ्ककपालढक्काक्षकशूलपाणिः ।
सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः।।१३।।

वेद (ज्ञान), अभय, अङ्कुश, पाश तथा धनुष, बाण, तथा कपाल, डमरु, अक्षमाला, त्रिशूल हाथ में धारण करनेवाले, श्वेत प्रभावाले, पाँच मुखवाले, परम प्रकाशरूप ईशान रुद्र ऊपर से हमारी रक्षा करें।।१३।।

मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिर्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः।
नेत्रे ममाव्याद्भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः।।१४।।

हमारे मूर्द्धा की अव्ययात्मा हमारी रक्षा करें, चन्द्रमौलि हमारे भाल की रक्षा करें, जिनके मस्तक पर तीननेत्र है वे मेरी सर्वदा सर्वत्र रक्षा करें, हमारे नेत्रों की भगनेत्रहारी रक्षा करें, हमारी नासिका की सदा विश्वनाथ रक्षा करें।।१४।।

पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः कपोलमव्यात्सततं कपाली।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः।।१५।।

हमारे कानों की रक्षा श्रुतिगीतकीर्ति करें, कपोल की हमेशा कपाली रक्षा करें, मुख की सदैव पञ्चवक्त्र रक्षा करें, वेदजिह्वा जिह्वा की सदैव रक्षा करें।।१५।।

कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहुर्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात्।।१६।।

हमारे कण्ठ की गिरीश नीलकण्ठ रक्षा करें, दोनों हाथों की पिनाकपाणि सदैव रक्षा करें, बाहुमूल की अव्यय धर्मबाहु रक्षा करें, वक्षःस्थल की दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने वाले रक्षा करें।।१६।।

ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी।
हेरम्बतातो मम पातु नाभिं पायात् कटी धूर्जटिरीश्वरो मे।।१७।।

हमारे उदर (पेट) की गिरीन्द्रधन्वा रक्षा करें, हमारे मध्य की मदनान्तकारी रक्षा करें, हेरम्ब के पिता भगवान् शङ्कर हमारे नाभि की रक्षा करें, हमारे कमर की धूर्जटि-ईश्वर रक्षा करें।।१७।।

ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात्।
जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात् पादौ ममाव्यात् सुरवन्द्यपादः॥१८॥

हमारे दोनों ऊरुओं की कुबेर के मित्र महारुद्र रक्षा करें, हमारे दोनों जानुओं की जगदीश्वर भगवान् शङ्कर रक्षा करें, हमारे दोनों जङ्घाओं की पुङ्गवकेतु रक्षा करें, हमारे दोनों पैरों की देवताओं के द्वारा वन्दितपाद भगवान् शङ्कर रक्षा करें॥१८॥

महेश्वरः पातु दिनादि यामे मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः।
त्रयम्बकः पातु तुरीययामे वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे॥१९॥

दिन के आदि अर्थात् प्रातः काल महेश्वर हमारी रक्षा करें, दिन के मध्य में वामदेव हमारी रक्षा करें, अर्धरात्रि में त्रयम्बक महादेव रक्षा करे तथा सायंकाल वृषभध्वज रक्षा करें॥१९॥

पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे।
गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम्॥२०॥

रात्रि के प्रारम्भ काल में शशिशेखर हमारी रक्षा करें, रात्रि में गङ्गाधर रक्षा करें, गौरीपति रात्री के अवसान काल में रक्षा करें, भगवान् महामृत्युञ्जय सर्वत्र रक्षा करें॥२०॥

अन्तःस्थितं रक्षतु शङ्करो मां स्थाणुः सदा पातु बहिःस्थितं माम्।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात्॥२१॥

हमारे अन्तः में स्थित होकर शङ्कर हमारे भीतर रक्षा करें, हमारे बाहर सदैव स्थाणु रक्षा करें, उसके बाद पशुपति रक्षा करें, हमारे नजदीक सदैव सदाशिव रक्षा करें॥२१॥

तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः।
वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः शयानम्॥२२॥

हमारे सदा सर्वत्र व्याप्त रहकर भुवननाथ रक्षा करें, हमारे पैरों में सदैव प्रमथाधिनाथ वास करके रक्षा करें, हमारे निषण्ण की वेदान्त के द्वारा ज्ञातव्य वाले भगवान् सदाशिव रक्षा करें, शयनकाल में अव्यय शिव हमारी रक्षा करें॥२२॥

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः।
अरण्यवासादिमहाप्रवारे पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः॥२३॥

मार्ग में नीलकण्ठ हमारी रक्षा करें, पत्थरों से युक्त दुर्गम पहाड़ों पर त्रिपुरारि रक्षा करें, वन में निवास के समय मृगादि शिकारियों से उदारशक्ति सदैव रक्षा करें॥२३॥

कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः।
घोरारिसेनार्णवदुर्निवारमहाभयाद्रक्षतु वीरभद्रः॥२४॥

कल्प के अन्त होने पर संहार करने में पटु महारुद्र हमारे ऊपर पड़नेवाले समस्त प्रकोपों से रक्षा करें, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जो कोश रूप से व्याप्त है, वे मार्ग में चलते समय रक्षा करें, घोर सेनानियों से घिर जाने पर भहाभय से वीरभद्र रक्षा करें॥२४॥

पात्वश्वमातङ्गघटावरूथसहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम् ।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां छिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया॥२५॥

हजारों-लाखों-करोड़ों मतङ्गों के घटाओं के घिर जाने पर, सैकड़ों अक्षौहिणी सेनानियों से घिर जाने पर हमारी महारुद्र अपने कठोर कुठार की धार से रक्षा करें॥२५॥

निहन्तु दस्यून्प्रलयानलार्चिर्ज्वलत्त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य।
शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान्संत्रासयत्वीशधनुः पिनाकम्॥२६॥

दस्युओं से घिरने पर प्रलयकाल में प्रयोग किये जानेवाले त्रिशूल से त्रिपुरान्तक रुद्र हमारी रक्षा करें, शार्दूल, सिंह, ऋक्ष, वृकादि हिंसकों से संत्रास के समय शिव अपने पिनाक धनुष से हमारी रक्षा करें॥२६॥

दुःस्वप्नदुःशकुनदुर्गतिदौर्मनस्य दुर्भिक्षदुर्व्यसनदुःसहदुर्यशांसि।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिव्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः॥२७॥

दुःस्वप्न, दुःशकुन, दुर्गति, दौर्मनस्य, दुर्भिक्ष, दुर्व्यसन, दुःसह, दुर्यश, उत्पात, तापादि, विषादि, ग्रहादि से उत्पन्न समस्त व्याधियों से जगत् के अधीश्वर भगवान् शङ्कर हमारी सदैव रक्षा करें॥२७॥

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सकलतत्त्वविहाराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्त्तिभञ्जनाय सकलजगद्भयङ्कराय सकललोकैकशङ्कराय शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरुपमाय नीरूपाय निराभासाय निष्प्रपञ्चाय निष्कलङ्काय निर्द्वन्द्वाय निस्सङ्गाय निर्मलाय निराभासाय निरामयाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय जय जय महरुद्र-महारौद्र-भद्रावतार-दुःखदावदारण-महाभैरव-कालभैरव कल्पान्तभैरव-कपालमालाधर-खट्वाङ्ग-खड्ग-चर्म-पाशाङ्कुश-डमरु-शूल-चाप-बाण-गदा-शक्ति-भिन्दिपाल-तोमर-मुसल-मुद्गर-पट्टिश-परशु-परिघ-भुशुण्डि-शतघ्नी-चक्राद्यायुध-भीषणकर-सहस्रमुख-दंष्ट्राकराल-विकटाट्टहास-विस्फारित ब्रह्माण्डमण्डल-नागेन्द्रकुण्डल-नागेन्द्रहार-नागेन्द्रवलय-नागेन्द्रचर्मधर-मृत्युञ्जय त्र्यम्बक-त्रिपुरान्तक-विरूपाक्ष-विश्वेश्वर-विश्वरूप-वृषभवाहन-विषभूषण-विश्वतोमुख-सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभयं अपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चौरभयं मारय मारय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः संताडय संताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्ड-

वेताल-मारीगण-ब्रह्मराक्षसान् सन्त्रासय सन्त्रासय मामभयं कुरु कुरु वित्रस्तं ममाश्वासयाश्वासय नरकभयान्मामुद्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्यायाप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते॥ १०८ पाठ करे।

फलश्रुतिः

ऋषभ उवाच

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया।
सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम्॥२८॥

सभी शरीरधारियों के लिए रहस्यस्वरूप इस वरदायी शिवकवच का वर्णन हमने किया, यह सभी बाधाओं को दूर करनेवाला है॥२८॥

यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम्।
न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात्॥२९॥

जो इस अति उत्तम कवच को सदा धारण (पाठ) करता है, उसको भगवान् शम्भु की कृपा से कभी कोई भय नहीं होता है।॥२९॥

क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतोऽपि वा।
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति॥३०॥

क्षीणायु होने पर भी, शरीर में रोग व्याप्त होने की दशा में भी जो नियमित इस कवच का पाठ करता है, उसे हमेशा सुख ही होता है तथा वह दीर्घायु होता है॥३०॥

सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम्।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते॥३१॥

जो भक्त इस कवच को धारण (पाठ) करता है, नियमित पाठ करता है, उसकी सभी प्रकार की दरिद्रता का शमन होता है तथा सभी प्रकार के सौभाग्य का वर्धन होता है, वह शैव हो जाता है और देवताओं का भी पूज्य हो जाता है॥३१॥

महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपपातकैः।
देहान्ते शिवमाप्नोति शिववर्मानुभावतः॥३२॥

इस कवच का नियमित पाठ करनेवाला शिवभक्त महापातकों-उपपातकों के संघों से छूट जाता है तथा शरीर छूटने पर इस शिवकवच के प्रभाव से शिव के लोक की प्राप्ति करता है।

त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम्।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि॥३३॥

हे वत्स! तुम भी श्रद्धापूर्वक मेरे द्वारा प्रदत्त इस अति-उत्तम शिव कवच को धारण करों और श्रेयोवान हो जाओ।

अनेन शिवकवचपाठाख्येन साम्बसदाशिवमहारुद्रः प्रीयन्तां न मम।

अमोघशिवकवचं परिपूर्णम्

◆

महाभैरवप्रयोगः

महाभैरवमातृकान्यासः—

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः, गायत्रीछन्दः, मातृकासरस्वतीदेवता, हलोबीजानि, स्वराःशक्तयः, विन्दुःकीलकं, श्रीमहाभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

प्राणायामः—मातृकावर्णों से प्राणायाम करे।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः। पूरक करे।

ॐ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ नमः। कुम्भक करे।

ॐ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः। रेचन करे।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ गायत्रीछन्देभ्यो नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ विन्दुः कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सरस्वतीदेवतायै नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ एँ तँ थँ दँ धँ णँ ऐँ कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

चक्रन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लँ नमः चतुर्दलकमलात्मकमूलाधारचक्रः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ वँ नमः षड्दलकमलात्मकस्वाधिष्ठानचक्रः लिङ्गमूले।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ रँ नमः दशदलकमलात्मकमणिपूरचक्रः नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ यँ नमः द्वादशदलकमलात्मकअनाहतचक्रः हृदये।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हँ नमः षोडशदलकमलात्मकविशुद्धचक्रः कण्ठे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हँ क्षँ नमः द्विदलकमलात्मकआज्ञाचक्रः भ्रूमध्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ नमः सहस्रदलकमलात्मकसहस्रारचक्रः कपाले।

अन्तर्मातृकान्यासः—

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्त सुखदोः यन्मध्यवक्षःस्थलां,
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रसकलामापीनस्तुङ्गस्तनीम् ।
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं व्याख्याञ्च हस्ताम्बुजे,
विभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

पचास लिपियों में विभक्त होकर, सुखपूर्वक वक्षस्थल के मध्य में सकल पूर्ण चन्द्र की कलाओं से युक्त, स्तनभाग उभरे हुए, हाथ में अक्षमाला, मुद्रा और अमृत से भरे हुए कलश को लिए हुए, शास्त्रों की व्याख्यान सहित, विशद प्रभावाली, तीन नेत्रों वाली, वाग्देवता सरस्वती की हम वन्दना करते है।

महाभैरवषड्चक्रमातृकान्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः धूम्राभे षोडशदले कण्ठे विशुद्धचक्रे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ नमः द्वादशदले प्रवालसन्निभे हृदयोपर्यनाहते।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः नीलजीमूतसन्निभे दशदले नाभ्येरुपरि मणिपूरे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ नमः विद्युत्सन्निभे षड्दले लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ वँ शँ षँ सँ लँ नमः सुवर्णाभे चतुर्दले मूलाधारे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हँ क्षँ नमः द्विदले चन्द्राभे भ्रूमध्ये आज्ञायां।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ नमः हिमसन्निभे अनन्तचन्द्राभे सहस्रदले कपाले सहस्रारचक्रे।

सहस्रारे हिमसन्निभे सर्ववर्णविभूषिते।
अकखादि त्रिरेखासु आ ल क्ष त्रयभूषिते॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ परबिन्दुभ्यो नमः सहस्रारे।

मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा से ब्रह्मरन्ध्र तक विन्दु चिदात्मक ब्रह्मस्वरूपिणी कुण्डलिनी शक्ति को अपनी आत्मा सदाशिव के साथ ध्यान करके उन दोनों के पाद तल से टपकते हुए अमृतरस के द्वारा सभी मातृकाओ का तर्पण करके, तृप्त करने के बाद मानसोपचार पूजन करे।

आधारे लिङ्गनाभे प्रगटितहृदये तालुमूले ललाटे,
द्वेपत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासन्ते बालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां,
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥

मूलाधार के चार पत्रों पर वस प्रत्याहार रूप में, लिङ्गमूल स्थित स्वाधिष्ठान के षड् पत्रों पर बल प्रत्याहार के रूप में, नाभिस्थित मणिपुर के दश पत्रों पर डफ प्रत्याहार के रूप में, हृदयस्थित अनाहत के द्वादश पत्रों पर कठ प्रत्याहार के रूप में, तालु के मूल कण्ठ स्थित विशुद्ध के षोडश पत्रों पर अ: प्रत्याहार के रूप में और ललाट के भ्रू मध्यस्थित आज्ञा के दो पत्रों पर ह और क्ष रूप में सभी दलगत पत्रों पर वर्णरूप वाग्देवी को नमस्कार है।

महाभैरवबहिर्मातृकान्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ डँ नमः दक्षजङ्घयां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ यँ नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ रँ नमः दक्षांशे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लँ नमः ककुदि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ वँ नमः वामांशे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ शँ नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ षँ नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सँ नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हँ नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ळँ नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्षँ नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

न्यास करने के बाद हाथ में जल लेकर विनियोग करे।

विनियोगः—**अस्य श्रीवटुकभैरव अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रमन्त्रस्य वृहदारण्यकऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीभैरवोदेवता, कं बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीं कीलकं ममेष्टसिद्धये न्यासे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ वृहदारण्यकऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीमहाभैरवाय नमः हृदये।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ कँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीँ वटुकाय शक्तये नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्री भैरवाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रां वां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रैं वैं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रौं वौ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रां वां हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रूं वूं शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रैं वैं कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रौं वौ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रः वः अस्त्राय फट् नमः।

महाभैरवनामावलीन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ ह्रीँ अँ भैरवाभूतनाथाभ्यां नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ आँ भूतात्माभूतभावनाभ्यां नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ इँ क्षेत्रज्ञक्षेत्रपालाभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ईँ क्षेत्रदक्षत्रियोविराट्भ्यो नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ उँ श्मशानवासीमांसाशीभ्यां नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऊँ खर्पराशीस्मरान्तकाभ्यां नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऋँ रक्तपपानपाभ्यां नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ॠँ सिद्धसिद्धिदसिद्धसेवितेभ्यो नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लृँ कङ्कालकालशमनाभ्यां नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ॡँ कलाकाष्ठातनुकविभ्यां नमः वामकपोले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ एँ त्रिनेत्रोवहुनेत्रपिङ्गललोचनेभ्यो नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऐँ नमः शूलपाणिखड्गपाणिभ्यां अधरोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ओँ कङ्कालीधूम्रलोचनाभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ औँ अभिरुभैरविनाथाभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ भूतपोयोगिनीपतिभ्यां नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अः धनदोऽधनहारीभ्यां नमः कण्ठे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ कँ धनवानप्रतिभावानाभ्यां नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ खँ नागहारोनागपाशेभ्यो नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ गँ व्योमकेशकपालभृद्भ्यां नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ घँ कालकपालमालीभ्यां नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ङँ कमनीयकलानिधीभ्यां नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ चँ त्रिलोचनोज्वलनेत्राभ्यां नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ छँ त्रिशिखित्रिलोकपाभ्यां नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ जँ त्रिनेत्रतनयडिम्भशान्तशान्तजनप्रियेभ्यो नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ झँ वटुकोवहुभेषखट्वाङ्गवरधारकेभ्यो नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ञँ भूताध्यक्षपशुपतिभ्यां नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ टँ भिक्षुकपरिचारकेभ्यो नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ठँ धूर्तोदिगम्बराभ्यां नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ डँ शौरिर्हरिणाभ्यां नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ढँ पाण्डुलोचनप्रशान्ताभ्यां नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ णँ शान्तिदशुद्धाभ्यां नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ तँ शङ्करप्रियबान्धवअष्टमूर्तिभ्यां नमः वामोरुं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ थँ निधीशज्ञानचक्षुतपोमयाभ्यां नमः वामजानुनि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ दँ अष्टाधारषडाधाराभ्यां नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ धँ सर्पयुक्तशिखीसखाभ्यां नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ नँ भूधरभूधराधीशाभ्यां नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ पँ भूपतिर्भूधरात्मजाभ्यां नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ फँ कङ्कालधारीमुण्डीभ्यां नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ बँ नागयज्ञोपवीतकज्जृम्भणाभ्यां नमः पृष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ भँ मोहनस्तम्भाभ्यां नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ मँ मारणक्षोभणाभ्यां नमः उदरे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ यँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्यदैत्यहाभ्यां नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ रँ मुण्डभूषितबलिभुग्बलिभुंनाथाभ्यां नमः दक्षांशे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लँ अबालबालपराक्रमसर्वापत्तारणाभ्यां नमः ककुदि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ दुर्गदुष्टभूतनिषेविताभ्यां नमः वामांशे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँशँ कामीकलानिधिकान्तेभ्यो नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ षँ कामिनीवशकृद्वशीभ्यां नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ सँ जगद्रक्षाकराऽनन्ताभ्यां नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ हँ मायामन्त्रौषधीमयसर्वसिद्धिप्रदेभ्यो नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्षँ वैद्यप्रभुर्विष्णुभ्यां नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

महाभैरवध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करे।

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों मे कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्थावाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालोंवाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करनेवाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ।

शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥१॥

शुद्ध स्वच्छ स्फटिक के सदृश भासमान, सहस्रों सूर्य के समान तेजवाले, नीले बादल के समान श्याम वर्णवाले, नील अञ्जन के समान कान्तिवाले॥१॥

अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम्॥२॥

आठ भुजाओंवाले, चार भुजाओंवाले और दो भुजाओंवाले, बड़े-बड़े दाँतोंवाले, नूपुर के शब्द से गुञ्जायमान॥२॥

भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥३॥

सर्प की मेखलावाले, अग्नि के समान वर्णवाले, शिर पर शिखावाले, दिगम्बर, कुमारियों के स्वामी, अतुलित बलशाली॥३॥

खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥४॥

खट्वाङ्ग, असि, पाश, शूल, वामदक्षिण दोनों हाथो में धारण किये हुए, डमरू, कपाल और सर्प से युक्त, वरदाता॥४॥

अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।

अग्निवर्णस्वरूप, कुत्ते को वाहन के रूप में साथ रखनेवाले, भैरव देवता का सभी कामनाओं की पूर्ति के लिए ध्यान करता हूँ॥

महाभैरवसात्त्विकध्यानम्—

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥

स्वच्छ स्फटिक के सदृश, कुण्डल से सुशोभित, दिव्यमणियों से बने हुए नूपुर और किंकिणी से सुशोभित, प्रसन्न, शिव की भाँति पुलकित मुखवाले, कमलवत् करों में सदा शूल और तलवार धारण करनेवाले, बालस्वरूप बटुक भैरवजी का ध्यान करता हूँ।

महाभैरवराजसध्यानम्—

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥

उदयकालीन सूर्य के समान लाल कान्तिवाले, तीन नेत्रोंवाले, रक्त पुष्पमाला से युक्त, पुलकित मुखवाले, वरदाता, कपाली, निर्भय, हाथ में शूल धारण करनेवाले, नीलग्रीवा वाले, आभूषणों से युक्त, खण्ड चन्द्रमा के समान उज्ज्वल, मधूक पुष्प के समान लाल वस्त्र धारण किये हुए, भय को दूर भगानेवाले बटुक भैरव का ध्यान करता हूँ।

महाभैरवतामसध्यानम्—

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपूराढ्यम्॥

त्रिलोक के स्वामी, द्वितीया के चन्द्रकला को धारण करनेवाले, मुण्डमाला पहने हुए, महेश्वर, दिगम्बर, पीत केशवाले, हाथ में डमरु, शूल, खड्ग, पाश और अभय धारण करनेवाले, तथा नाग, घण्टा, कपाल हाथ में सुशोभित, विशाल दाँतोंवाले, दिव्य आभूषणों से सुसज्जित, त्रिनेत्र तथा नाना मणियों से जटित किंकिणी और नूपूर धारण किये हुए बटुक भैरव का ध्यान करता हूँ।

शापविमोचनम्—वटुक मन्त्र शापविमोचन के लिए अधोलिखित मन्त्र का जप करे।

ॐ ह्रीँ वटुकं शापं विमोचय विमोचय ह्रीं क्लीं। मन्त्र का २१ बार जप करने के बाद माला प्रार्थना करे।

मालाप्रार्थना—हाथ में माला ग्रहण करके प्रार्थना करे।

महामाले महामाये! सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥
अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥२॥

महाभैरवमूलजपमन्त्रः—

ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

एक माला जप करके माला प्रार्थना कर यथा स्थान माला रखे।

त्वं माले! सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे! यशोवीर्यञ्च देहि मे॥

जप श्रीभैरव को समर्पित करे तथा समर्पण के बाद स्तोत्र पाठ करे।

अनेन श्रीवटुकभैरवमन्त्रजपाख्येन श्रीवटुकभैरवः प्रीयताम्।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्॥१॥
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः॥२॥
कङ्कलः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो वहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचन॥३॥
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्कली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः॥४॥
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्॥५॥
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलनेत्रः त्रिशिखिः च त्रिलोकपः॥६॥

त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनः प्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्ग वरधारकः॥७॥
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः॥८॥
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः शङ्करः प्रिय बान्धवः।
अष्टमूर्तिनिधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः॥९॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः॥१०॥
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा॥११॥
शुद्धो नीलांजनः प्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुंनाथो बालो बालपराक्रमः॥१२॥
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी॥१३॥
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो मायामन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ॥१४॥

पाठ करने के बाद मूल मन्त्र का एक माला जप करे, पुनः प्रार्थना करके श्रीभैरव को पाठ समर्पित करे।

प्रार्थना—हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करे।

शान्तं पद्मासनस्थं शशिमुकुटधरं मुण्डमालं त्रिनेत्रम्,
शूलं खड्गं च वज्रं परशुमुसलके दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं घण्टां कपालं नलिनकरयुतं सांकुशं पाशमन्ये,
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं नौमि बालं शिवाख्यं॥१॥

शान्त भाव में स्थित होकर पद्मासन पर विराजमान, चन्द्रमा को मुकुट में धारण किये हुए, मुण्डमाला पहने हुए, तीन नेत्रवाले, शूल, खड्ग, वज्र, परशु, मुसल दक्षिण हाथ में धारण किये हुए, नाग, घण्टा, कपाल, कमल, पाश और अंकुश वायें हाथ में धारण किये हुए, तरह-तरह के अलङ्कारों से सजे हुए, स्फटिक मणि के समान वर्णवाले बाल शिव को नमस्कार है॥१॥

वारं वारं भुवनजननी प्रोच्यते साधुवादः,
सत्यं सन्यं जगति सकले भैरवो देव एकः।
यां यां सिद्धिं भुवनजठरे कामयेन्मानवो यः,
तां तां सिद्धिं वितरति सदा भैरवः सुप्रसन्नः॥२॥

बार-बार सम्पूर्ण संसार की जननी साधुवाद करती है कि इस संसार में एकमात्र देवता भैरव ही हैं, इस संसार में मनुष्य जिस-जिस कामना से भैरवोपासना करता है उस-उस कामना की पूर्ति भैरव प्रसन्न होकर सदा प्रदान करते हैं॥२॥

भक्त्या नमामि बटुकं तरुणं त्रिनेत्रं,
कामप्रदान् वरकपालत्रिशूलदण्डान्।
भक्तार्तिनाशकरणे दधतं करेषु,
तं कौस्तुभाभरणभूषितदिव्यदेहम्॥३॥

समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाले, वे भक्तों के कष्टों को पूर्ण रूप से नाश करने के लिए हाथ में वर, कपाल, त्रिशूल, दण्ड धारण किये हुए, कौस्तुभ मणि से विभूषित दिव्य शरीर वाले, तरुण तीन नेत्रवाले बटुक को नमस्कार है॥३॥

फणिवर फणिनाथो देव देवाधिनाथः,
क्षितिपतिवरनाथो वीर-वेतालनाथः।
निधिपति निधिनाथो योगिनी योगनाथो,
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥४॥

फणिवर (फणिधर सर्प को धारण करनेवाले), समस्त देवताओं के स्वामी, सम्पूर्ण आकाश में स्थित नक्षत्रादि के स्वामी, वीर वेतालों के स्वामी, सम्पूर्ण निधियों के स्वामी, योगिनियों के स्वामी, योग के परम ज्ञानी, साधकों को सिद्धि प्रदान करनेवाले, स्वामी बटुक भैरव की जय हो॥४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वटुकभैरवाय नमः स्तुतिप्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे।

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण यथा ज्ञानेन यथा पूजनेन वटुकभैरवः प्रीयन्तां न मम।

श्रीमहाभैरवप्रयोगः परिपूर्णम्

◆

अग्निस्थापनम्

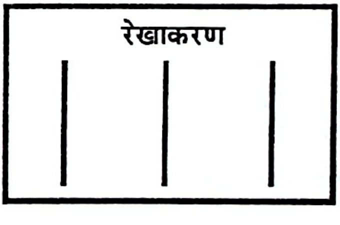

सङ्कल्पः—**ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः ------प्रवरः---------नामाऽहं अस्मिन् महाविद्यापुरश्चरणकर्मणि पञ्चभूः संस्कारपूर्वकं अग्निस्थापनं करिष्ये।**

पञ्चभूःसंस्कार—चतुरस्र वेदी का निर्माण करके पञ्चभूःसंस्कार करे।

कुशैः परिसमुह्य। कुशाओं से भूमि को झाड़ दे।

तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य। उन कुशाओं को ईशान कोण मे फेंक दे।

गोमयोदकेनोपलिप्य। गाय के गोबर और जल से लेपन करे।

स्रुवमूलेन त्रिः उल्लिखय। स्रुवा के मूल से तीन रेखा खींचे।

अनामिकाङ्गुष्ठेन मृदमुद्धृत्य। अनामिका और अङ्गुष्ठ से रेखा के उपर की मिट्टी को ग्रहण कर ईशानकोण में फेंक दे।

जलेनाऽभ्युक्ष्य। जल से सिंचन करे।

पञ्चभूःसंस्कार के बाद अग्निस्थापन करे।

अग्निसंस्कारः

ॐ अ॒ग्निंदू॒तंपु॒रोद॑धेहव्य॒वाह॒मुप॑ब्रुवे॥ दे॒वाँ२॥आसा॑दयादि॒ह॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरदानामाग्नये नमः स्थापयामि ।

अग्निस्थापन करने के बाद अग्नि का पञ्चदश संस्कार करने के पश्चात् ग्रहमण्डल का निर्माण करके ग्रहमण्डलस्थदेवताओं का स्थापन-पूजन करे।

अग्निसंस्कारः—अधोलिखित मन्त्र बोलते हुए अक्षत-प्रक्षेपपूर्वक संस्कार करे। संस्कार मे सर्वत्र आज्य से आठ आहुति प्रदान करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः गर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः पुंसवनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः सीमन्तोन्नयनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः जातकर्म सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः नालच्छेदनं सम्पादयामि स्वाहा।

मन्त्र से आज्यसम्प्लुत पञ्च समिधा का हवन करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः सूतकं शोधयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः त्वं वरदनामासि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः नामकरणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः निष्क्रमणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः अन्नप्राशनं सम्पादयामि स्वाहा।

शाकल्य की आहुति प्रदान करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः चूडाकरणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः उपनयनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः महानाग्न्यव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः महाव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः उपनिषद्व्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः गोदानव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः समावर्तनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेः विवाहं सम्पादयामि स्वाहा।

प्रतिष्ठा—अग्नि में इष्टदेवता का ध्यानपूर्वक प्रतिष्ठा करे।

ॐ पाशाश्चापासृक्कपालेऋणीषूञ्छूलहस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां, देवीं ध्यायेप्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥

हाथों में पाश-चाप-सृक्-कपाल-शूलादि धारण किये हुए, रक्त वर्णवाली, रक्त समुद्र में रक्त पोत के समान कमल पर के उपर रक्त सिंहासन पर आसीन तीन नेत्रवाली प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥१॥

ज्वलत्कोटिबालार्कभासारुणाङ्गीं सुलावण्यशृङ्गारशोभाभिरामाम्।
महापद्मकिञ्जल्कमध्ये विराजत्त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्रीभवानीम्॥२॥

बाल सूर्य के समान, अरुण प्रकाश जैसे अङ्गोंवाले, सुन्दर लावण्य शृङ्गार से शोभायमान, महापद्म सहस्त्रार के मध्य कर्णिका स्थित त्रिकोण में उल्लसित श्रीभवानी का ध्यान करता हूँ॥२॥

कणत्किंकिणीनूपुरोद्भासिरत्न, प्रभालीढलाक्षार्द्रपादारविन्दाम्।
अजेशाच्युताद्यैःसुरैःसेव्यमानां महादेवि मन्मूर्ध्नि ते भावयाम॥३॥

रत्नजटित कङ्कण तथा नुपूर से शोभायमान, लाक्षा के समान प्रभावान युगल चरण कमल, ब्रह्मा, विष्णु तथा महेशादि देवताओं से सेव्यमान, हमारे अघों का नाश करनेवाली महादेवी का ध्यान करता हूँ॥३॥

सुशोणाम्बराबद्धनीवीविराजन् महारत्नकाञ्चीकलापं नितम्बम्।
स्फुरद्दक्षिणावर्तनाभिं च तिस्रो बली रम्यते रोमराजीं भजे हम्॥४॥

सुन्दर सुवर्ण की करधनी कमर में धारण की हुई, महानतम रत्नों से युक्त काञ्ची नितम्ब पर शोभायमान, नाभि प्रदेश पर दक्षिणावर्त तीन वलयों से शोभायमान महादेवी का ध्यान करता हूँ॥४॥

ध्यान के बाद अग्नि में देवता की प्रतिष्ठा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नेः महाविद्याया प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नेः महाविद्याया जीव इह स्थितः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नेः महाविद्याया सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अस्मिन् अग्नेः महाविद्यादेवताया गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषता॒माज्ज्यस्य॒बृह॒स्प्पतिर्य्य॒ज्ञमि॒मन्तनो॒त्त्वरिष्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द धातु॥ विश्श्वेदे॒वासऽइ॒हमादयन्ता॒मोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ महाविद्यायै नमः प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भव।

अग्निस्थापनं परिपूर्णम्

●

ग्रहमण्डलचक्रः

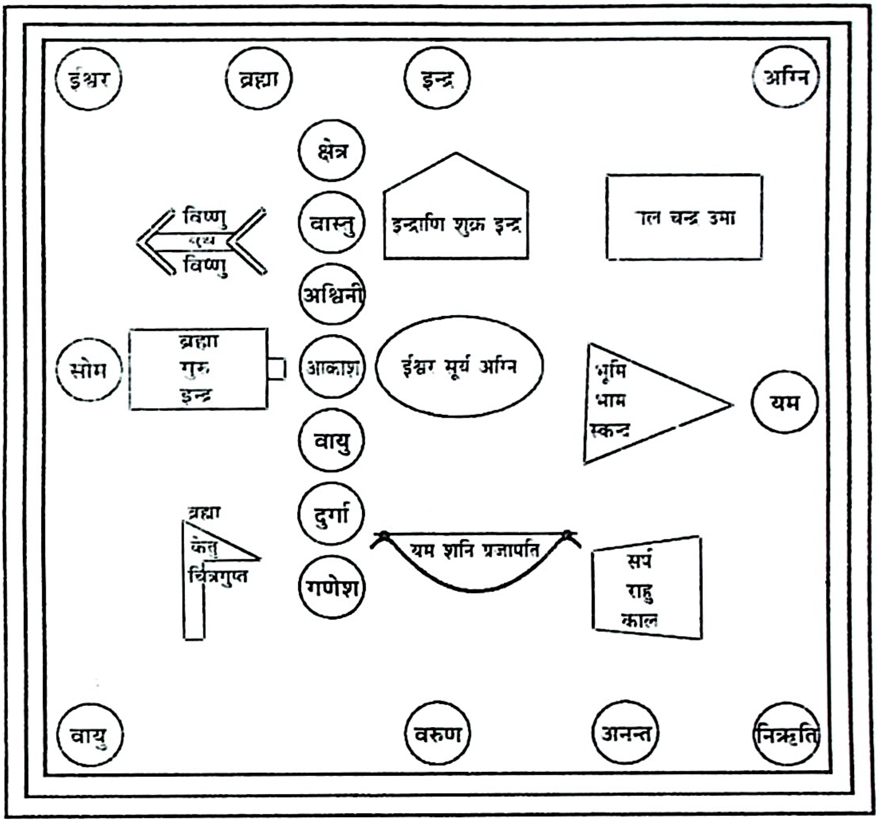
ईश्वर
ब्रह्मा
इन्द्र
अग्नि
क्षेत्र
विष्णु
बुध
विष्णु
वास्तु
इन्द्राणि शुक्र इन्द्र
जल चन्द्र उमा
अश्विनी
सोम
ब्रह्मा
गुरु
इन्द्र
आकाश
ईश्वर सूर्य अग्नि
भूमि
भौम
स्कन्द
यम
वायु
ब्रह्मा
केतु
चित्रगुप्त
दुर्गा
यम शनि प्रजापति
सर्प
राहु
काल
गणेश
वायु
वरुण
अनन्त
निर्ऋति

एक चौकी पर सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर रोली से नौ खाना बनाकर चित्रानुसार नवों खानों के बीच के खाने में सूर्य के लिए लाल चावल से गोलआकृति, चन्द्र के लिए अग्निकोण में सफेद चावल से चौकोरआकृति, भौम के लिए दक्षिणदिशा के खाने में लालचावल से त्रिकोणआकृति, बुध के लिए ईशानकोण के खाने में हरेचावल से बाण के सदृशआकृति, गुरु के लिए उत्तरदिशा के खाने में पीलेचावल से पट्टिशाकार आकृति, शुक्र के लिए पूर्व के खाने में पञ्चकोण की सफेदचावल से आकृति, शनि के लिए पश्चिमदिशा के खाने में कालेरंग के चावल से धनुषाकार आकृति, राहु के लिए नैर्ऋत्यकोण के खाने में कालेचावल सें सूर्पाकृति तथा केतु के लिए कालेचावल से पताका-आकृति चित्रानुसार बनाकर उस पर तत्तद स्थानों पर सुपाड़ी रखकर उस पर समस्त देवताओं का आवाहन करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः**

-----प्रवरः------नामाऽहं अस्मिन् महाविद्यापुरश्चरणकर्मणि ग्रहाणां अधिदेवता प्रत्यधिदेवतापञ्चलोकपालानाञ्च स्थापनपूजनञ्च करिष्ये।

सर्व प्रथम ग्रहमण्डल का निर्माण करके, उसपर सुपाड़ी रखकर उस पर ग्रहमण्डल के देवताओं की स्थापना कर षोडशोपचार पूजन करे।

सूर्यावाहनम्—सूर्यपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ आकृ॒ष्णेन॒रज॑सा॒वर्त॑मानोनिवे॒शय॑न्न॒मृतं॒मर्त्त्यं॑च।। हि॒रण्यये॑नसवि॒तारथे॒नादे॒वो याति॒भुव॑नानि॒पश्य॑न्।।

जवाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्।।

जवाकुसुम के समान लाल वर्णवाले, कश्यप गोत्र, महाप्रकाशमान, अन्धकार का नाश करनेवाले, सभी पापों का नाश करनेवाले सूर्य का आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

सोमावाहनम्—चन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ इ॒मंदे॑वाऽअसप॒त्नꣳसु॑वद्ध्वंमह॒तेक्ष॒त्राय॑मह॒तेज्यै॑ष्ठ्याय॑मह॒तेजान॑राज्ज्या॒स्येन्द्रि॒याय॑।। इ॒मम॒मुष्ष्य॑पु॒त्रम॒मुष्ष्यै॑पु॒त्रम॒स्यैवि॒शऽए॒षवो॑ऽमी॒राजा॒सोमो॒ऽस्माकं॑ब्ब्राह्मणाना॒ꣳ राजा॑।।

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्।।

दही तथा शङ्ख के समान श्वेत वर्णवाले, क्षीर समुद्र से उत्पन्न, ज्योत्स्ना के पति, रात्रि के स्वामी, सोम (चन्द्र) का आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

भौमावाहनम्—भौमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ अ॒ग्निर्म्मू॒र्द्धादि॒वःक॒कुत्पतिः॑पृथि॒व्याऽअयम्।। अ॒पाꣳरेता॑ꣳसिजिन्वति।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्।।

पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न, विद्युत् के समान तेजवाले, शक्ति हाथ में लिए हुए कुमार भौम का आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकादेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि।

बुधामावाहनम्—बुधपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ग्नेप्रतिजागृहि॒त्वमिष्टापूर्त्तेसꣳसृजेथाम॒यञ्च॥ अ॒स्मिन्त्स॒धस्थे॒ऽअध्युत्त्तरस्मि॒न्विश्श्वेदेवा॒यजमानश्च्चसीदत॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

प्रियंगु की कलियों के समान आभावाले, अप्रतिम रूपवाले, सौम्य स्वभाव तथा सौम्य गुणोंवाले बुध का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छ, इह तिष्ठ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि।

बृहस्पत्यावाहनम्—बृहस्पतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ बृहस्पते॒ऽअति॒दु॒र्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभाति॒क्क्रतु॒म॒ज्जनेषु॥ यद्दीदय॒च्छवसऽऋतप्प्रजापत॒तद॒स्म्मासु॒द्द्रविणंधेहिचित्रम्॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥

सुवर्ण के वर्ण के समान पीले रंगवाले, देवताओं तथा मुनियों के गुरु, त्रिलोक में वन्दित गुरु का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ, इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

शुक्रमावाहनम्—शुक्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ अन्नात्परि॒स्रुतो॒रसं॒ब्ब्रह्मणा॒व्व्य॒पिबत्क्षत्रंपयꣳसोमंप्प्र॒जापतिꣳ॥ ऋ॒तेनस॒त्त्यमिन्द्रि॒यंव्वि॒पानꣳशुक्क्रमन्धस॒ऽइन्द्रस्येन्द्रि॒यमि॒दंपयो॒ऽमृत॒ंमधु॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥

हिमकुन्द मृणाल की आभावाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के प्रवक्ता, शुक्र का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ, इह तिष्ठ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।

शन्यावाहनम्—शनिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ शंन्नोदे॒वीर॒भिष्टय॒ऽआपोभवन्तुपी॒तये॥ शंय्योर॒भिस्स्रवन्तुनꣳ॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

नीलकमल के समान आभावाले, रवि के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता, छायामार्तण्ड सम्भूत शनि का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ, इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि।

राह्वावाहनम्—राहुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखा।। कयाशचिष्ठयाऽवृता।।

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्।।

महापराक्रमी, आधे शरीरवाले, चन्द्र तथा सूर्य का विमर्दन करनेवाले, सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न राहु का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः वैराठिनपुरोदेशोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहु! इहागच्छ, इह तिष्ठ राहवे नमः राहुमावाहयामि स्थापयामि।

केत्वावाहनम्—केतुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ केतुंकृण्णवन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे।। समुषद्भिरजायथाः।।

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
राद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्।।

पलाश के धूम के समान, तारका ग्रह के मस्तक, भयंकर आकृतिवाले केतु का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ, इह तिष्ठ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि।

ग्रहाणां दक्षिणपार्श्वे अधिदेवतास्थापनम्

शङ्करावाहनम्—शङ्करपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्।। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो ईश्वर! इहागच्छ, इह तिष्ठ ईश्वराय नमः ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

उमा-आवाहनम्—उमापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्।। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो उमे! इहागच्छ, इह तिष्ठ उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दावाहनम्—स्कन्दपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ यदक्क्रन्दःप्प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्द्रादुतवापुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमहिजातंतेऽअर्व्वन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो स्कन्द! इहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

विष्ण्वावाहनम्—विष्णुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ इदंव्विष्ष्णुर्व्विचक्क्रमेत्त्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णो! इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मावाहनम्—ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ आब्ब्रह्मन्ब्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्न्यꣳशूरऽइषव्व्योतिव्व्याधीमहारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्व्वोढानड्वानाशुःसप्प्तिꣳपुरन्धिर्य्योषाजिष्ष्णूरथेष्ठाःसभेयोयुवास्ययजमानस्यावीरोजायतान्निकामेनिकामेनःपर्ज्जन्न्योवर्षतुफलवत्त्योनओऽषधयꣳपच्च्यन्तांय्योगक्षेमोनःकल्प्पताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मा! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मामावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिःसोमंपिबवृत्त्रहाशूरविद्वान्॥ जहिशत्रूँ२॥रपमृधोनुदस्वाथाभयंकृणुहिविश्श्वतोनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्र! इहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

यममावाहनम्—यमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्त्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो यम! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

कालावाहनम्—कालपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ कार्षिरसिसमुद्द्रस्यत्त्वाऽक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो काल! इहागच्छ इह तिष्ठ कालाय नमः कालमावाहयामि स्थापयामि।

चित्रगुप्तावाहनम्—चित्रगुप्तपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ चित्रा॑वसोस्व॒स्तिते॑पा॒रम॑शीय॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो चित्रगुप्त! इहागच्छ इह तिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।

ग्रहाणां वामपार्श्वे प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

अग्न्यावाहनम्—अग्निपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ अ॒ग्निंदूतंपुरोद॑धेहव्य॒वाह॒गुप॑ब्रुवे॥ दे॒वाँ२॥आसा॑दयादि॒ह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो अग्ने! इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

अपावाहनम्—अपपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ आपो॒हिष्ठाम॑यो॒भुव॒स्तान॑ऽऊर्जेद॑धातन॥ म॒हेरणा॑य॒चक्ष॑से॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो! अप इहागच्छ इह तिष्ठ अद्भ्यो नमः अप-आवाहयामि स्थापयामि।

पृथिव्यावाहनम्—पृथिवीपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ स्यो॒नापृथिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेशनी॥ यक्षान॒ःशर्म्मस॒प्प्रथा॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो पृथ्वी! इहागच्छ इह तिष्ठ पृथिव्यै नमः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

विष्ण्वावाहनम्—विष्णुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ व्विष्णो॑र॒राट॑मसि॒व्विष्णो॒ःश्नप्त्रे॑स्त्थो॒व्विष्णो॒ःस्यूर॑सि॒व्विष्णो॑र्ध्रु॒वो॒सि॥ व्वैष्ण॒वम॑सि॒व्विष्ण॑वेत्त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णो! इहागच्छ इहतिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ इन्द्र॑ऽआसांने॒ताबृह॒स्प्पति॒र्द्दक्षि॑णाय॒ज्ञःपु॒रऽए॑तु॒सोम॑ः॥ दे॒व॒से॒नाना॑मभिभञ्जती॒नांजय॑न्तीनांम॒रुतो॑य॒न्त्वग्ग्रम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्राय! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्राण्यावाहनम्—इन्द्राणिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ आदि॑त्त्यै॒रास्स्ना॑सीन्द्रा॒ण्ण्याऽउ॒ष्ण्णीष॑ः॥ पू॒षासि॑घ॒र्म्माय॑दीष्ष्व॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्राणि! इहागच्छ, इह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रजापत्यावाहनम्—प्रजापतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्न्यन्न्योविश्श्वारूपाणिपरिताबभूव॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुव्वयꣳस्यामपतयोरयीणाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो प्रजापते! इहागच्छ, इह तिष्ठ प्रजापतये नमः प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि।

सर्पानावाहनम्—सर्पपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ नमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यःसर्प्पेब्भ्योनमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो सर्पान्! इहागच्छ, इह तिष्ठ सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मा-आवाहनम्—ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनआवः॥ सबुद्ध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्श्चयोनिमसतश्श्चव्विवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मन्! इहागच्छ, इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

पञ्चलोकपालादिस्थापनम्

गणेशावाहनम्—गणेशपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो गणपतये! इहागच्छ, इह तिष्ठ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गा-आवाहनम्—दुर्गापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो दुर्गे! इहागच्छ, इह तिष्ठ दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—वायुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ व्वायोयेतेसहस्स्रिणोरथासस्तेभिरागहि॥ नियुत्त्वान्त्सोमपीतये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो! वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

आकाशावाहनम्—आकाशपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ घृ॒तंघृ॑तपावानःपिबत॒वसाँ॑वसापावानःपिबन्ता॒न्तरि॑क्षस्यहु॒विर॑सि॒स्वाहा॑॥ दिशः॑प्र॒दिश॑ऽआ॒दिशो॑वि॒दिश॑ऽउ॒द्दिशो॑दिग्ग्भ्यःस्वाहा॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो आकाश! इहागच्छ इह तिष्ठ आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि स्थापयामि।

अश्विनीकुमारावाहनम्—अश्विनीकुमार पिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ यावां॑कशा॒मधु॑मत्याश्वि॑नासूनृता॑वती॥ तया॑य॒ज्ञंमि॑मिक्षतम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो अश्विनौ! इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

वास्तोस्पत्यावाहनम्—वास्तोस्पतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्वशंनोभवद्विपदेशंचतुष्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वास्तोष्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

क्षेत्रपालावाहनम्—क्षेत्रपालपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ न॒हिस्प्पश॒मवि॑दन्न॒न्न्यम॒स्म्माद्वै॑श्वान॒रात्पु॒रऽए॒तार॑म॒ग्नेः॥ एमे॑नमवृधन्न॒मृता॒ऽ अम॑र्त्यंवैश्वान॒रंक्षैत्र॑जित्त्यायदे॒वाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो क्षेत्राधिपते! इहागच्छ इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दशदिक्पालानां स्थापनम्

इन्द्रावाहनम्—पूर्व में इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्र॒ꣳहवे॑हवेसु॒हव॒ꣳशूर॒मिन्द्र॑म्॥ ह्वया॑मिश॒क्रंपु॒रुहूत मिन्द्र॑ꣳस्व॒स्तिनो॑म॒घवा॑धा॒त्त्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्र! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्न्यावाहनम्—अग्निकोण में अग्निपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ त्वन्नो॑ऽअग्ने॒तव॑पा॒युभि॒र्म्मघो॑नोरक्षत॒न्न्व॒श्श्चवन्द्य॥ त्रा॒तातो॒कस्य॒तन॑ये॒गवा॑म॒स्य निमे॑ष॒ꣳरक्ष॑माण॒स्तव॑व्व्र॒ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो अग्ने! इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

यममावाहनम्—दक्षिणदिशा में यमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ य॒माय॒त्त्वाङ्गि॑रस्वतेपितृ॒मते॒ स्वाहा॑।। स्वाहा॑घ॒र्म्माय॒स्वाहा॑घ॒र्म्मःपि॒त्रे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो यम! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

निर्ऋत्यावाहनम्—नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ असु॑न्न्वन्त॒मय॑जमानमिच्च्छ॒स्ते॒नस्ये॒त्यामन्न्वि॑हि॒तस्क॑रस्य।। अ॒न्न्यम॒स्म दि॑च्च्छ॒सात॑ऽइ॒त्या नमो॑ देवि निर्ऋते॒ तुब्भ्य॑मस्तु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो निर्ऋतिः! इहागच्छ इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

वरुणावाहनम्—पश्चिमदिशा में वरुणपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑माना॒स्त्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्ब्भिः॑।। अहे॑डमानो व्वरुणेह॒बोद्ध्युरु॑शꣳस॒मान॒ऽआयुः॒प्प्रमो॑षीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—वायुकोण में वायुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ आनो॑नि॒युद्भिः॑श॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳस॑ह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहिय॒ज्ञम्।। व्वायो॑ऽअ॒स्स्मिन त्सव॑नेमादयस्वय॒यूयंपा॑तस्व॒स्तिभिः॒सदा॑नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वायो! इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

सोमआवाहनम्—उत्तरदिशा में सोमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ व्व॒यꣳसो॑मव्व्र॒तेतव॒मन॑स्त्त॒नूषु॒बिब्भ्र॑तः।। प्र॒जाव॑न्तःसचेमहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

ईशानावाहनम्—ईशानकोण में ईशानपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ तमीशा॑न॒ञ्जग॑तस्त॒स्त्थुष॒स्प्पतिं॑धियञ्जि॒न्न्वमव॑सेहूमहेव्व॒यम्।। पू॒षानो॒यथा॒व्वेद॑सा॒म सद्वृ॒धेर॑क्षि॒तापा॒युरद॑ब्धःस्व॒स्तये॑।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो! ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्माआवाहनम्—ईशानपूर्व के मध्य ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्व्वतासोव्वृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः॥ यःशꣳसंतेस्तुवतेधायि पज्ज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्म्माँ२॥ऽअवन्तुदेवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मा! इहागच्छ, इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

अनन्तावाहनम्—नैर्ऋत्यपश्चिम के मध्य में अनन्तपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े।

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यक्षानःशर्म्मसप्प्रथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो अनन्त! इहागच्छ, इह तिष्ठ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ सें स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३ँम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

सूर्याद्यनन्तादेवताः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिता स्थापिताः वरदाः भवन्तु॥

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे।

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्प्पृत्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन का ध्यानकर समर्पित करे।

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्श्चपूरुषः॥ पादोऽस्यविश्श्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ त्रि॒पादू॒र्द्ध्वऽउदै॒त्पुरु॑षः॒पादो॑ऽस्ये॒हाभ॑व॒त्पुन॑ः॥ ततो॒व्विष्व॒ङ्व्य॒क्रामत्साशनानश॒नेऽअ॒भि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ ततो॑व्वि॒राड॑जायतव्वि॒राजो॒ऽअधि॒पूरु॑षः॥ सजा॒तोऽअत्य॑रिच्च्यतप॒श्श्चाद्भूमि॒मथो॑पु॒रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व्व॒हुत॒ःसम्भृ॑तम्पृषदा॒ज्ज्यम्॥ प॒शूँस्ताँश्श्च॑क्रेव्वाय॒व्या॒नार॒ण्याग्रा॒म्म्याश्श्च॒ये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व्व॒हुत॒ऽऋच॒ःसामा॑निजज्ञिरे॥ छन्दा॑ꣳसिजज्ञिरे॒तस्मा॒द्यजु॒स्तस्मा॑दजायत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पय॑पृथि॒व्यांपय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः॥ पय॑स्वतीः॒प्प्र॒दिश॑ःसन्तु॒मह्य्य॑म्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ द॒धि॒क्राब्णो॑ऽअकारिषंजि॒ष्णोरश्व॑स्यव्वा॒जिन॑ः॥ सु॒र॒भिनो॒मुखा॑कर॒त्प्रण॒ऽआयू॑ꣳषितारिषत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ घृ॒तम्मि॑मिक्षेघृ॒तम॑स्य॒योनि॑र्घृ॒तेश्रि॒तोघृ॒तम्व॑स्य॒धाम॑॥ अ॒नु॒ष्ष्व॒धमाव॑हमा॒दय॑स्व॒ स्वाहा॑कृतंव्वृषभव्वक्षिह॒व्यम्॒॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ मधु॒व्वाता॑ऽऋताय॒तेमधु॑क्षरन्ति॒सिन्ध॑वः॥ माद्ध्वी॑र्न्नः॒सन्त्वोष॑धीः॥ मधु॒नक्त॑मु॒तोषसो॒मधु॑म॒त्पार्त्थि॑व॒ꣳरजः॑॥ मधु॒द्यौर॑स्तुनः॒पि॒ता॥ मधु॑मान्नो॒व्वन॒स्पति॒र्म्मधु॑माँ॒ऽअस्तु॒ सूर्य्यः॑॥ माद्ध्वी॒र्ग्गावो॑ भवन्तु नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अ॒पाꣳरस॒मुद्व॑यस॒ꣳसूर्य्ये॒सन्त॒ꣳस॒माहि॑तम्॒॥ अ॒पाꣳरस॑स्य॒योरस॒स्तंव्वो॑ गृह्णाम्म्युत्त॒मम॑ुपया॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑यत्त्वा॒जुष्ट॑ङ्गृह्णाम्म्ये॒षते॒योनि॒रिन्द्रा॑यत्वा॒जुष्ट॑तमम्॒॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पञ्च॑न॒द्यः॒सर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः॥ सर॑स्वती॒तुप॑ञ्च॒धासोदे॒शेभ॑वत्स॒रित्॒॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ शु॒द्धवा॑लः॒सर्व॑शुद्धवालोमणि॒वाल॒स्तऽआ॑श्श्विनाः॒श्श्येतः॑श्श्येता॒क्षो॒रु॒णस्तेरु॒द्द्राय॑ पशु॒पत॑येकर्ण्णा॒या॒माऽअ॑विलि॒प्तारौ॒द्द्रानभो॑रूपाः॒पार्ज्ज॒न्न्याः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्मा॒दश्श्वा॑ऽअजायन्त॒येकेचो॑भ॒याद॑तः॥ गावो॑हजज्ञि॒रे॒तस्म्मा॒त्तस्म्मा॑ज्जा॒ता॒ऽ अ॒जा॒वय॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ आपो॒हिष्ठाम॑यो॒भुव॒स्तान॑ऽऊ॒र्ज्जे॑दधातन॥ म॒हेरणा॑य॒चक्ष॑से॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्चये॥ ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः॥ व्वासोअग्ग्रेव्विश्श्वरूपꣳसंव्व्ययस्वव्विभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे।

ॐ यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्व्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्प्रत्त्यैतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोर्व्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्यादꣳहोश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदादित्त्येब्भ्यस्त्त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय लेकर समर्पित करे।

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपोजनयथा च नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे।

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्च्यत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे।

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभानवोव्विप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे।

ॐ ओषधीःप्प्रतिमोदध्ध्वंपुष्प्पवतीःप्रसूवरीः॥ अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधःपारयिष्ण्णवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्प्परि॥ एवानोदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्स्रेण शतेन च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे।

ॐ अहिंरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंप्परिबाधमानः॥ हस्तग्घ्नोव्विश्श्वाव्वयुनानिव्विद्द्वान्पुमान्पुमाꣳसंपरिपातुव्विश्श्वतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नानापरिमल-द्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे।

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः ॥ घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्न्वमानः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ व्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्वाहूराजन्न्यःकृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्श्यःपद्भ्याꣳ शूद्रोऽअजायत॥ ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंठ्वोऽस्मान्धूर्व्वतितंधूर्व्वयंव्वयंधूर्व्वामः॥ देवानामसिव्वह्नितमꣳसस्नितमंपप्प्रितमंजुष्ट्टतमंदेवहूतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्श्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्श्रोत्राद्वायुश्श्चप्प्राणश्श्चमुखा

दुग्निरंजायत॥ ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा॥ अग्निर्वर्च्चोज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहासूर्य्योवर्च्चोज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्ज्योतिः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दीपज्ज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्प्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ प्र प्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे।

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुः पृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽअच्च्युतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे।

ॐ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंग्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्राणि पूङ्गीफलमेलालवङ्गादि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्श्चपुष्पिणीः॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चत्वꣳहसः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधारपृथिवी द्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये।

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजःपितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवःसदाꣳसिबृहतीव्वितिष्ठसऽ आत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविःप्प्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि॥ अग्निःप्प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ सें पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः॥ देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत्, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि सभी द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे।

रक्ष रक्ष ग्रहा सर्वे अधिप्रत्यधिदेवता।
दिग्पालाश्चयुतादेवाः लोकपालदेवाश्तथा॥१॥
कुर्वन्तु सर्व कार्याणि मङ्गलानि पदे पदे।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं सर्वदा मया॥२॥
मोदनार्थाय दाष्यामि समर्थं सग्रहाधिपाः।
विविधद्रव्यसंयुतं विशेषार्घ्यं समर्पितम्॥३॥

दिग्पाल-लोकपाल, अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता के साथ समस्तग्रह हमारी सदैव रक्षा करें, सभी कार्यो में पद-पद पर हमारा मङ्गल करें, हमें सर्वदा आयु-आरोग्य तथा ऐश्वर्य प्रदान करें, ग्रहों के प्रसन्नता के लिए विविध द्रव्यों से युक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथो में पुष्प लेकर प्रार्थना करे।

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे रविः॥१॥

ग्रहों में सर्वप्रथम रहनेवाले आदित्य, संसार की रक्षा के हेतु, हे सूर्य! विषमस्थान से होनेवाले हमारे पीड़ाओं को नष्ट करें।॥१॥

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे विधुः॥२॥

रोहिणी के पति, अमृतमूर्ति, अमृत शरीरवाले तथा निरन्तर अमृत का पान करनेवाले हे चन्द्र! जन्म के विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥२॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतोभयकृत्सदा।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां दहतु मे कुजः॥३॥

भूमि के पुत्र महान् तेजस्वी, संसार को सदैव अभय प्रदान करनेवाले भद्र करनेवाले, भद्रा को नष्ट करनेवाले हे भौम! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥३॥

उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥४॥

संसार में उत्पात रूपवाले, महान् प्रकाशवाले चन्द्र के पुत्र, सूर्य का प्रिय करनेवाले हे बुध! विषमस्थान से होनेवाले हमारे पीड़ाओं को नष्ट करें॥४॥

देवमन्त्री विशालाक्षो सदा लोकहिते रतः।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां दहतु मे गुरुः॥५॥

विशाल नेत्रों वाले देवताओं के मन्त्री, सदैव लोकहित में संलग्न, अनेको शिष्यों से परिपूर्ण हे गुरु! विषमस्थान से होनेवाले हमारे पीड़ाओं को नष्ट करें॥५॥

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्रणवश्च महाद्युतिः।
पभुस्ताराग्रहाणां च पीडां दहतु मे भृगुः॥६॥

दैत्यदानवों के मन्त्री तथा गुरु, प्रणव के समान महाप्रकाशवान्, ताराओं के स्वामी, हे शुक्र! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥६॥

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु मे शनिः॥७॥

सूर्य के पुत्र, विशाल शरीर वाले, विशाल नेत्रों वाले, शिव के प्रिय, मन्द-मन्द गमन करनेवाले, हे शनि! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥७॥

महाशीर्षी महावक्त्रो महादंष्ट्रो महायशाः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां दहतु मे तमः॥८॥

महान् शिरवाले, महान् वक्त्रवाले, महान् दाँतोंवाले, महान् यशवाले, शरीरविहीन, ऊर्ध्वकेश हे राहु! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥८॥

अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्त्रशः।
उत्पातरूपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिखी॥९॥

सैकड़ों-हजारों अनेकोनेक रूपों वाले धूमकेतु के समान भयंकर हे केतु! विषमस्थान से होनेवाले हमारे पीड़ाओं को नष्ट करें॥९॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ ग्रहा॒ऽऊर्ज्जाहुतयो॒व्यन्तो॒विप्प्राय॒मतिम्॥ तेषा॒ंविशिप्प्रियाणांवो॒ऽहमिष॒मूर्ज्ज॒ꣳ समग्ग्रभमुपया॒मगृहीतो॒ऽसीन्द्रायत्त्वा॒जुष्टंगृह्णाम्म्ये॒षते॒योनि॒रिन्द्रायत्त्वा॒जुष्टतमम्॥

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहा शान्तिकरा भवन्तु॥

ब्रह्मा-विष्णु-महेश-सूर्य-चन्द्र-भौम-बुध-गुरु-शुक्र-शनि-राहु तथा केतु सभी ग्रह तथा देवता हमारे लिए शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

अनया पूजया आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम्॥

ग्रहमण्डलस्थदेवानां पूजनं परिपूर्णम्

●

असङ्ख्यातरुद्रपूजनम्

असङ्ख्यातरुद्रकलशस्थापनम्—विधिपूर्वक कलश स्थापन करे।

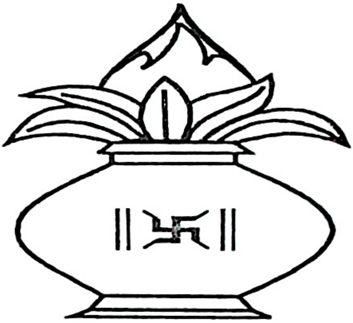

ग्रहमण्डलस्थ देवताओं के आवाहन-स्थापन-पूजन के पश्चात् सर्वप्रथम ग्रहवेदी के मध्य में अक्षत रखकर उस अक्षत के मध्य में रोली से अष्टदल निर्मित कर उसके उपर कलश स्थापित करके, असङ्ख्यातरुद्र के लिए नारियल स्थापित करे, कलशपूजन करने के बाद उस पर असंख्यातरुद्र के लिए प्रतिमा पर अग्न्युत्तारण विधि करके प्रतिष्ठाकर पूजन करे अथवा ईशान कोण की दिशा में भूमि पर अथवा अन्य वेदी पर असङ्ख्यातरुद्र के लिए कलश रखकर वरुणादि स्थापना के पश्चात् उसके ऊपर नारियल अथवा मूर्ति रखकर पूजन करे।

भूमिस्पर्श—**ॐ महीद्यौःपृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्॥ पिपृतान्नोभरीमभिः॥**

सप्तधान्य विखेरना—**ॐ ओषधयःसमवदन्तसोमेनसहराज्ञा॥ यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि॥**

कलशस्थापन––**ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्विन्दवः॥ पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानःसहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः॥**

कलश में जल भरना—**ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।**

कलश में गन्ध डाले—**ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥**

कलश में सर्वौषधी डाले—**ॐ याओषधीःपूर्व्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा॥ मनैनु बब्भ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च॥**

कलश में दूर्वा डाले—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि॥ एवानो दूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥**

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अ॒श्व॒त्त्थेवो॑नि॒षद॑नंपु॒र्ण्णेवो॑व्वस॒तिष्कृ॒ता॥ गो॒भाज॒ऽइत्किला॑सथ॒यत्स॒नव॑थ॒पूरु॑षम्॥**

कलश में कुश डाले—**ॐ प॒वित्त्रे॑स्त्थोव्वैष्ण॒व्व्यौ॑सवि॒तुर्व्वः॑प्प्रस॒वऽउत्पु॑ना॒म्म्यच्छि॑द्द्रेण प॒वित्त्रे॑ण॒सूर्य्य॑स्यर॒श्मिभिः॑॥ तस्य॑तेप॒वित्त्रपतेप॒वित्त्रपूतस्य॒यत्का॑मःपुनेतच्छ॑केयम्॥**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्यो॒नापृ॑थिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेश॑नी॥ यच्छा॑नः॒ शर्म्म॑स॒प्प्रथाः॑॥**

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः॒ फ॒लिनी॒र्य्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्प्पायाश्च॑पु॒ष्प्पिणीः॑॥ बृह॒स्प्पति॑प्प्रसूता॒स्तानो॑मु॒ञ्च॒त्वꣳह॑सः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परि॒वाज॑पतिःक॒विर॒ग्निर्ह॒व्यान्य॑क्रमीत्॥ दध॒द्रत्ना॑नि दा॒शुषे॑॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑भू॒तस्य॑जा॒तः पति॒रेक॑ऽआसीत्॥ सदा॑धारपृथि॒वीद्यामु॒तेमांकस्म्मै॑दे॒वाय॑ह॒विषा॑व्विधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सु॒जा॑तोज्ज्यो॒तिषा॑स॒हशर्म्म॒व्वरू॑थ॒मास॑दत्त्स्वः॥ व्वासो॑अग्ग्ने व्वि॒श्वरू॑प॒ꣳसंव्व्य॑यस्वव्विभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पू॒र्ण्णाद॑र्व्वि॒परा॑पत॒सुपू॑र्ण्णा॒पुन॒राप॑त॥ व॒स्नेव॒व्विक्री॑णावहा॒ऽ इष॒मूर्ज्ज॑ꣳशतक्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याः॒फ॒लिनी॒र्य्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्प्पायाश्च॑पु॒ष्प्पिणीः॑॥ बृह॒स्प्पति॑प्प्रसूता॒स्तानो॑मु॒ञ्च॒त्वꣳह॑सः॥**

वरुण का ध्यान, आवाहन और पञ्चोपचारपूजन—**ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्भिः॑॥ अहे॑डमानोव्वरुणे॒हबो॒ध्युरु॑शꣳस॒मान॒ऽआयुः॑ प्प्रमो॑षीः॥**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सवाहनं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। कलशे वरुणाद्यावाहितविष्णवादिदेवताः प्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके यह निर्मित होता है इसी लिए उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षि (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकाएँ स्थित हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तद्वीप स्थित है। अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित है।३॥

कावेरी कृष्ण वेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित है, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री नर्मदादि नदियाँ स्थित है॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ है, पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित है वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्त दुरित के क्षयकारक हो समस्त पापों को नष्ट करने वाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्गरूप से कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरित को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें हमारे यज्ञ को पूर्णता प्रदान करें॥८॥

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्तां न मम॥

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ सें स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी से प्राण प्रतिष्ठित होते है, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

पञ्चोपचार पूजनकर प्रार्थना करे।

कलशप्रार्थना—

ॐ देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

देवताओं और दानवों के बीच समुद्र-मन्थन से कुम्भ उत्पन्न हुआ, जिसे स्वयं विष्णु धारण किये थे॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

तुम्हारे जल में सभी तीर्थो की प्रतिष्ठा है, सभी तीर्थो के जल में देवताओं का वास है, जल ही सभी भूतों में प्रतिष्ठित है, सभी प्राणों में प्रतिष्ठित हो॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, रुद्र, वसु, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनाएँ फलवान् होती है, हे जलोद्भव कुम्भ! तुम्हारे कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करनेवाले! आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सान्निध्य प्रदान करे॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दरश्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दरमङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले जलाधिनाथ आपको बार-बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

हे पाश को हाथ में धारण करनेवाले! आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करने-वालों के नायक, जब तक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नही हो जाती तब तक सान्निध्य प्रदान करें॥७॥

कलश के ऊपर नारियल रखकर उस पर असंख्यातरुद्रों की प्रतिष्ठा करे।

असंङ्ख्यातरुद्रावाहनम्—**ॐ असंङ्ख्यातासहस्राणियेरुद्राऽअधिभूम्म्याम्॥ तेषांसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः असंख्यातरुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्राः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु॥

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे।

ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन का ध्यान कर समर्पित करे।

ॐ यातेरुद्द्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिंशन्ताभिचाकशीहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्त्तेबिभर्ष्य्यस्त्तवे॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीःपुरुषञ्जगत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ शिवेनव्वचसात्त्वागिरिशाच्छावदामसि॥ यथानःसर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽअसत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर आचमनीय जल समर्पित करे।

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्क्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक्।। अहींश्च्चँसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च्च यातुधान्न्योधराचीःपरासुव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर स्नानीय जल समर्पित करे।

ॐ असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुःसुमङ्गलः।। येचैनꣳरुद्द्राऽअभितोदिक्क्षु श्श्रिताःसहस्स्रशोवैषाꣳहेडऽईमहे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः स्नानीयंजलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोव्विलोहितः।। उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पयःपृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः।। पयस्वतीःप्प्रदिशः सन्तुमह्य्यम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ दधिक्क्राव्णोऽअकारिषंजिष्ष्णोरश्वस्यव्वाजिनः।। सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽ आयूꣳषितारिषत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्स्ययोनिर्घृतेश्श्रितोघृतम्वस्स्यधाम।। अनुष्ष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंव्वृषभव्वक्षिहव्व्यम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः।। माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः।। मधुनक्त मुतोषसोमधुमत्त्पार्थिवꣳरजः।। मधुद्यौरस्तुनःपिता।। मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्य्यः।। माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अपाᳫंरसमुद्वयसᳬं सूर्य्येसन्तᳬं समाहितम्॥ अपाᳫंरसस्ययोरसस्तंव्वोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्ण्णायामाऽअविलिप्तारौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ नमोस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्क्षायमीढुषे॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानोहन्तेब्भ्योकरन्नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असं ख्यातरुद्रेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय लेकर समर्पित करे।

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम्॥ याश्चतेहस्तऽइषवः पराताभगवोव्वप॥ ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः॥ व्वासोअग्नेव्विश्वरूपᳬं संव्ययस्वव्विभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे।

ॐ विज्ज्यन्धनुःकपर्द्दिनोविशल्ल्योबाणवाँ२॥ऽउत॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽ इषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्यैतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवता मृडयन्तः॥ आवो र्वार्चीसुमतिर्वृत्त्यादꣳहोश्चिद्याववरिवोवित्तरासदादित्त्येभ्यस्त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल समर्पित करे।

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे।

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्य क्ष्मादमुच्च्यत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे।

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठयामती योजान्विन्द्रतेहरी॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे।

ॐ ओषधीःप्प्रतिमोद्दध्वंपुष्प्पवतीःप्रसूवरीः॥ अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्णवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि॥ एवानोदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेणशतेन च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे।

ॐ अहिंरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंप्परिबाधमानः॥ हस्तग्घ्नोविश्श्वा-वयुनानिविद्द्वान्पुमान्पुमाꣳसंपरिपातुविश्श्वतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे।

ॐ सिन्धौ॑रिवप्प्राद्ध्व॒नेशू॑घ॒नासो॒व्वात॑प्प्रमियꣳपतयन्ति॒य॒ह्वाः॥ घृ॒तस्य॒धारा॑ऽअरु॒षोनव्वा॒जीकाष्ठा॑भि॒न्दन्नू॒र्म्मिभि॒ꣳपिन्न्व॑मानꣳ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ यातें॑हे॒तिर्म्मी॑ढुष्ट्टम॒हस्त्तें॑बभूव॑ते॒धनुः॑॥ तया॒स्म्मान्व्वि॒श्श्वत॒स्त्त्वम॑य॒क्ष्मया॒परि॑भुज॥ ॐ धूर॑सि॒धूर्व्वधूर्व॑न्त॒न्धूर्व्वतं॒योऽस्मान्धूर्व॑ति॒तंधूर्व्व॒यंव्व॒यंधूर्व्वा॑मः॥ दे॒वाना॑मसि॒वह्नि॑तम॒ꣳसस्नि॑तमं॒पप्प्रि॑तमं॒जुष्ट्ट॑तमंदेव॒हूत॑मम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ परि॑ते॒धन्न्व॑नोहे॒तिर॒स्म्मान्व्वृ॑णक्तुवि॒श्श्वतः॑॥ अथो॒यऽइ॑षु॒धिस्त्तवा॒रेऽअ॒स्म्मन्निधे॑हि॒तम्॥ ॐ अ॒ग्ग्निर्ज्ज्योति॒र्ज्ज्योति॑र॒ग्ग्निः स्वाहा॒सूर्य्यो॒ज्ज्योति॒र्ज्ज्योतिः॒ सूर्य्यः॒ स्वाहा॑॥ अ॒ग्ग्निर्व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॒सूर्य्यो॒व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॑॥ ज्ज्योतिः॒सूर्य्यः॒ सूर्य्यो॒ज्ज्योतिः॒स्वाहा॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अ॒व॒तत्त्य॒धनु॒ष्ट्ट्वꣳसह॑स्राक्ष॒शते॑षुधे॥ नि॒शीर्य्य॑श॒ल्ल्याना॒म्मुखा॑शि॒वोनः॑ सु॒मना॑भव॥ ॐ अन्न॑प॒तेऽन्न॑स्यनोदेह्यनमी॒वस्य॑शु॒ष्म्मिणः॑॥ प्रप्र॑दा॒तारं॑तारिष॒ऊर्ज्जन्नो धेहि॒द्विप॑दे॒चतु॑ष्प्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे।

ॐ अ॒ꣳशुना॑तेअ॒ꣳशुः पृ॑च्च्यतां॒परु॑षा॒परुः॑॥ ग॒न्धस्ते॒सोम॑मवतु॒मदा॑य॒रसो॒ अच्च्यु॑तः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे।

ॐ नम॑स्त्तु॒ऽआयु॑धायाना॑ततायधृ॒ष्ण्णवे॑॥ उ॒भाभ्या॑मु॒तते॒नमो॑बा॒हुभ्या॒न्तव॒ धन्न्व॑ने॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्राणि पूङ्गिफल-मेलालवङ्गादिकं समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ याःफ॒लिनी॒र्य्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्पायाश्च॑पु॒ष्पिणीः॥ बृह॒स्पति॑प्रसूता॒स्तानो॑ मु॒ञ्चन्त्व॒ꣳहसः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे।

ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्ब्भःसम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑भू॒तस्य॑जा॒तःपति॒रेक॑ऽआसीत्॥ सदा॑धारपृथि॒वी-द्यामु॒तेमांकस्मै॑दे॒वाय॑ह॒विषा॑व्विधेम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये।

ॐ आरा॑त्त्रि॒पार्थि॑वꣳरजः॑पि॒तुर॑प्प्रायि॒धाम॑भिः॥ दि॒वःसदाꣳसिबृह॒तीव्वि॒तिष्ठ॒सऽ आत्त्वे॒षंब्ब॑र्त्तते॒तमः॑॥ ॐ इ॒दꣳह॒विःप्र॒जन॑नंमेऽअस्तु॒दश॑वीर॒ꣳ सर्व्व॑गणꣳस्व॒स्तये॑॥ आ॒त्म॒ स॒निप्प्र॑जा॒सनि॑पशु॒सनि॑लोक॒सन्न्य॑भय॒सनि॑॥ अ॒ग्ग्निःप्प्र॒जांब॑हु॒लांमे॑करो॒त्वन्न॒म्पयो॒ रेतो॑ऽअ॒स्म्मासु॑धत्त॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ मान॑स्तो॒केतन॑ये॒मान॒ऽआयु॑षि॒मानो॒गोषु॒मानो॒ऽअश्श्वे॑षुरीरिषः॥ मानो॑व्वी॒रान्न्रु॑द्र भा॒मिनो॑व्वधीर्ह॒विष्म॑न्तः॒सद॒मित्त्वा॑हवामहे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ सें पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ मानो॑म॒हान्त॑मु॒तमानो॑ऽअर्ब्भ॒कम्मान॒ऽउक्क्षन्त॑मु॒तमान॑ऽउक्क्षि॒तम्॥ मानो॑व्वधीः पि॒तरम्मोतमा॒तर॒म्मान॑ःप्प्रि॒यास्त॒न्न्वो॑रुद्ररीरिषः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे।

करचरणकृतं वाकायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वा पराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेत् क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—

न तापस्त्रिविधस्तेषां न शोको न रुजादयः।
ग्रहगोचरपीडा च तेषां क्वाऽपि न विद्यते॥१॥
श्रीः प्रज्ञाऽऽरोग्यमायुष्यं सौभाग्यं भाग्यमुन्नतिम्।
विद्यां धर्मे मतिः शम्भोर्भक्तिस्तेषां न संशयः॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे।

अनया पूजया असंख्यातरुद्राः प्रीयन्तान्न मम् ॥

असंख्यातरुद्राणां पूजनं परिपूर्णम्

◆

कुशकण्डिकाविधिः

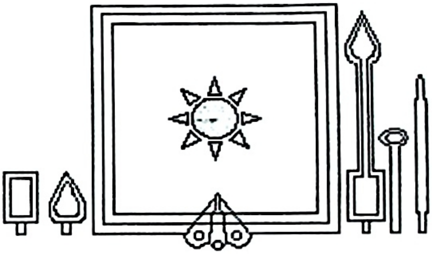

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मणः स्थापनार्थं ब्रह्मासनम्।

अग्नि के दक्षिण ब्रह्मा के लिए आसन रखे।

अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्।

अग्नि के उत्तर प्रणीताप्रोक्षणी के लिए दो आसन रखे।

ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्।

ब्रह्मासन पर ब्रह्मा को स्थापित करे।

यजमान बोले—**यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव।**

ब्रह्मा पद पर वृणीत ब्रह्मा बोले—**भवामि।**

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्।

ब्रह्मा के आदेश से प्रणीताप्रणयन करे।

तद्यथा—प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, द्वितीयासने निदध्यात्।

प्रणीतापात्र में जल भर करके, कुशाओं से ढ़क करके, पहले प्रथम आसन पर रख कर, ब्रह्मा का मुख देख करके, दूसरे आसन पर रखें।

ईशानादिपूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्।

ईशानकोण तथा पूर्व की तरफ कुश का अग्रभाग करके कुण्ड के चारो तरफ परिस्तरण करे।

तद्यथा—ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय। आग्नेयादीशानान्तम्, उदगग्रैर्वा। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः, इतरथा वृत्तिः।

जैसे—बर्हिमात्र कुशा का चतुर्थ भाग लेकर पूर्व दिशा में आग्नेयकोण से ईशानकोण तक उत्तराग्र कुश बिछाये, उत्तरदिशा में अग्निकोण से प्रणीतापात्र के बीच में पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाये, पश्चिम दिशा में नैर्ऋत्यकोण से वायव्यकोण तक उत्तराग्र कुशा बिछाये, दक्षिण में नैर्ऋत्यकोण से ब्रह्मा के बीच पूर्वाग्र तथा ब्रह्मा से अग्निकोण तक पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाये इसी प्रकार पुनः दूसरी आवृत्ति से परिस्तरण करे।

पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमन कुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानि वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

पात्रासादन—पवित्री बनाने के लिए तीन कुशा तथा दो कुशा रखे, प्रोक्षणीपात्र, घृतपात्र, चरुपात्र, सम्मार्जन के लिए पाँच कुशा, उपयमन के लिए सात कुशा, तीन सीधी वितस्त मात्र समिधा, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्णपात्र, कल्पित बैल का मूल्य, अन्य हवनीय पदार्थ सभी क्रम से रखे।

पवित्रच्छेदनाति—द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्वौ मेलेन प्रदक्षिणी कृत्य, सर्वान् युगपदनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा। त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः। प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्णं, पवित्राभ्यामुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोद्दिङ्गनम्।

पवित्रीछेदन—दो कुशा पर तीन कुशा को रखकर, दो कुशा को मिला कर प्रदक्षिणा क्रम से घुमाकर सभी को अनामिका, अङ्गुष्ठ से पकड़कर तीन कुशा का छेदन कर,तीन कुशा का त्याग कर,दो कुशा का ग्रहण कर पवित्री बना कर पवित्री से प्रणीता के पात्र से प्रोक्षणीपात्र का तीन बार सिंचन कर जल भर कर उसमें पवित्री रख दें। प्रोक्षणीपात्र को वायें हाथ में रख कर दाहिने हाथ से ढ़ककर यथा स्थान रखें।

ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधानां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणी निधाय।

प्रणीता के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण कर, प्रोक्षणीपात्र में प्रणितापात्र से जल ग्रहण कर प्रोक्षणीपात्र के जल से पवित्री के द्वारा घृतपात्र, चरुस्थाली, सम्मार्जन कुशा, उपयमन कुशा, समिधा, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्णपात्र, तथा अन्य सभी सामग्रियों का प्रोक्षण करके प्रोक्षणीपात्र को यथा स्थान रखें।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकात्सेचनपूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणोदक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोस्पर्शः। अर्धश्रिते चरौः, अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवस्य समृज्य। प्रणीतोदकेनाऽभ्युक्षणम्। सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः।

घृतपात्र में घृत निकाल लें, चरुस्थाली को प्रणीता के जल से सिंचन करके उसमें खीर बनाने के लिए चावल निकालें, ब्रह्मा के दक्षिण से लाकर घृत को अग्नि के दक्षिण रखें, चरु को पकने के लिए अग्नि पर रखें, जलती हुई लकड़ी लेकर ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशान पर्यन्त घुमाकर पुनः विपरीत क्रम से घुमाकर अग्नि में डाल दें, आधे पके चरु को चलाये, स्रुवा को नीचे की तरफ मुख करके तपाकर, आधे पके चरु को चलाये, सम्मार्जन कुशा के द्वारा प्रणीता के जल से ऊर्ध्वमुख स्रुवा का मार्जन कर, स्रुवा के अग्रभाग को कुशाग्र से तथा स्रुवमूल का कुशमूल से मर्दन कर प्रणीता के जल से अभ्युक्षण कर फिर से तपा कर अग्नि ब्रह्मा के मध्य रखें तथा सम्मार्जन कुशा का अग्नि में प्रक्षेप करे।

पुनः प्रतपनं, दक्षिणदेशे निधानम्। आज्यस्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य, आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्।

घृत को लाकर अग्नि के उत्तर में रखें, चरु को अग्नि से उतार कर अग्नि की प्रदक्षिणा करते हुए दक्षिण में रखे तथा घृत को भी प्रदक्षिणा क्रम से लाकर चरु के उत्तर रखे।

आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्य निरसनम्। पुनः प्रोक्षुण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशामादाय। उत्तिष्ठन् समिधोभ्यादाय, घृताक्ताः समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम्।

इतरथावृतिः। पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिणं जान्वाच्य, ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः। समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्यहोमः।

घृतपात्र में घृत निकाले तथा निरीक्षण कर अपद्रव्य निकाले, पुनः प्रोक्षणी के जल से सिंचन करे। बायें हाथ मे उपयमन कुशा लेकर, खड़े होकर तीन समिधाओं को घृत में बोर कर मौन ही अग्नि मे प्रक्षेप करे, पवित्री के सहित प्रोक्षणी को लेकर जल गिराते हुए ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशानपर्यन्त घुमाकर पुनः विपरीत क्रम से घुमाकर यथा स्थान रखे, पवित्री को प्रणीता मे रखे, दक्षिण जानू को भूमि पर रख कर, ब्रह्मा को कुशाओं से स्पर्श कर स्रुवा से घृत आहुति प्रदान करे।

अग्नेरुत्तरभागे—अग्नि के उत्तरभाग में आहुति प्रदान करे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा।

इदं प्रजापतये न मम। एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र मे प्रक्षेप करे।

अग्नेर्दक्षिणभागे—अग्नि के दक्षिणभाग में आहुति प्रदान करे।

ॐ इन्द्राय स्वाहा।

इदं इन्द्राय न मम। एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र मे प्रक्षेप करे।

समिद्धतमे—अग्नि के मध्य समिधा में आहुति प्रदान करे।

ॐ अग्नये स्वाहा।

इदमग्नये न मम॥ एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र मे प्रक्षेप करे।

ॐ सोमाय स्वाहा।

इदं सोमाय न मम। एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र मे प्रक्षेप करे।

ततः सूर्यादिग्रहाणां तथा च अधिदेवताप्रत्याधिदेवतापञ्चलोकपालवास्तोष्पति-क्षेत्रपालदेवतानां इन्द्रादिदशदिक्पालदेवतानां प्रधानदेवतां तथा च आवाहितदेवतानां प्रत्येकं सम्मिलिततिलादिद्रव्यैः जुहुयात्। कुशकण्डिका करने के बाद सूर्यादि ग्रहों तथा अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, पञ्चलोकपाल, वास्तोष्पति, क्षेत्रपालादि देवताओं के साथ प्रधान देवता के लिए तिलादिमिश्रित द्रव्य से हवन करे।

सङ्कल्पः—**अस्मिन् श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणि इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम।**

यजमान बोले—**यथा दैवतानि सन्तु।**

कुशकण्डिकाकर्मं परिपूर्णम्

●

हवनप्रकरणम्

सर्व प्रथम गणेश तथा महागौरी को घी से आहुति प्रदान करे।

ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा॑ निधि॒पति॑ꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहम॑जानिगर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्ब्भ॒धम्॥ स्वाहा॥

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बालिके॒नमा॑नयति॒कश्च॒न॥ सस॑स्त्यश्व॒कःसुभ॑द्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्॥ स्वाहा॥

सूर्यादिग्रहानांहवनम्

ॐ आकृ॒ष्णे॒नर॑जसा॒व्वर्त॑मानोनिवे॒शय॑न्नमृतं॒मर्त्त्यं॑च॥ हि॒रण्ययेन॑सवि॒तार॑थे॒नादे॒वो याति॒भुव॑नानि॒पश्य॑न्॥ सूर्याय स्वाहा॥

ॐ इ॒मंदे॑वाऽअसप॒त्कꣳसु॑वद्ध्वंमह॒तेक्ष॒त्राय॑मह॒तेज्यैष्ठ्या॑यमह॒तेजान॑राज्ज्या॒स्येन्द्रि॒याय॑॥ इ॒मम॒मुष्य॑पु॒त्रम॒मुष्यै॑पु॒त्रम॒स्यैव्वि॒शऽए॒षवो॑ऽमी॒राजा॒सोमो॒ऽस्माक॑ं ब्ब्रा॒ह्मणाना॒ꣳ राजा॑॥ सोमाय स्वाहा॥

ॐ अ॒ग्निर्म्मू॒र्द्धादि॒वःक॒कुत्पतिः॑पृथि॒व्व्याऽअयम्॥ अ॒पाꣳरेता॑ꣳसिजिन्न्वति॥ भौमाय स्वाहा॥

ॐ उद्बु॑ध्यस्वाग्ने॒प्रति॑जागृहि॒त्वमि॑ष्टापू॒र्त्तेसꣳसृ॑जेथाम॒यञ्च॥ अ॒स्मिन्त्स॒धस्थे॒ऽ अध्युत्त॑रस्मि॒न्विश्वे॑देवा॒यज॑मानश्चसीदत॥ बुधाय स्वाहा॥

ॐ बृह॑स्पते॒ऽअति॒द॒र्य्यो॑ऽअर्हा॑द्द्युमद्विभाति॒क्क्रतु॑म॒ज्जने॑षु॥ यद्दि॒दय॒च्छव॑सऽऋत प्प्रजात॒तद॒स्मासु॒द्द्रवि॑णंधेहिचि॒त्रम्॥ बृहस्पतये स्वाहा॥

ॐ अन्ना॑परि॒स्रुतो॒रसं॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्व्य॒पिबत्क्ष॒त्रंपयः॒सोमं॑प्प्र॒जाप॑तिः॥ ऋ॒तेन॑स॒त्त्यमि॑न्द्रि॒यं व्वि॒पान॑ꣳशु॒क्रमन्ध॑स॒ऽइन्द्र॑स्येन्द्रि॒यमि॒दंपयो॒ऽमृतं॒मधु॥ शुक्राय स्वाहा।

ॐ शंन्नो॑दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ऽआपो॑भवन्तुपी॒तये॑॥ शंय्यो॒र॒भिस्र॑वन्तुनः॥ शनैश्चराय स्वाहा॥

ॐ कया॑नश्चि॒त्रऽआभु॑वदू॒तीस॒दावृ॑धः॒सखा॑॥ कया॒शचि॑ष्ठयाऽवृ॒ता॥ राहवे स्वाहा॥

ॐ के॒तुंकृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒पेशो॑मर्य्याऽअपे॒शसे॑॥ समु॒षद्भि॑रजायथाः॥ केतवे स्वाहा॥

ॐ त्र्यम्ब॑कंय्यजामहेसु॒गन्धिं॑पुष्टि॒वर्द्ध॑नम्॥ उ॒र्व्वा॒रु॒कमि॑व॒बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्मु॑क्षीय माऽमृता॑त्॥ ईश्वराय स्वाहा॥

ॐ श्रीश्च॑तेल॒क्ष्मीश्च॒पत्न्या॑वहोरा॒त्रेपा॒र्श्वेनक्ष॑त्राणिरू॒पम॒श्विनौ॒व्यात्त॑म्॥ इ॒ष्णमन्नि॑षाणा॒मुम्म॑ऽइषाणसर्व्वलो॒कम्म॑ऽइषाण॥ उमायै स्वाहा॥

ॐ यदक्क्रन्दः प्प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्द्रादुतवापुरीषात्॥ श्श्येनस्यपक्षाहरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्त्यंमीहजातंतेऽअर्व्वन्॥ स्कन्दाय स्वाहा॥

ॐ इदंव्विष्ण्णुर्व्विचक्क्रमेत्त्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ॐ आब्ब्रह्मन्ब्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्न्यः शूरऽइषव्योतिव्याधी महारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्प्तिः पुरन्धिर्य्योषाजिष्ण्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्ययजमानस्यव्वीरोजायतान्निकामेनिकामेनः पर्ज्जन्न्योव्वर्षतुफलवत्त्योनओऽषधयः पच्च्यन्तांय्योगक्षेमोनः कल्प्पताम्॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिः सोमंपिबव्वृत्त्रहाशूरव्विद्वान्॥ जहिशत्रूँ२॥रपमृधो नुदस्वाथाभयंकृणुहिव्विश्श्वतोनः॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मः पित्रे॥ यमाय स्वाहा॥

ॐ कार्षिरसिसमुद्द्रस्यत्त्वाऽक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधी भिरोषधीः॥ कालाय स्वाहा॥

ॐ चित्त्रावसोस्वस्तितेपारमशीय॥ चित्रगुप्ताय स्वाहा॥

ॐ अग्ग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्ब्रुवे॥देवाँ२॥ आसादयादिह॥ अग्नये स्वाहा॥

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ अद्भ्यः स्वाहा॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यक्षानः शर्म्मसप्प्रथाः॥ पृथिव्यै स्वाहा॥

ॐ व्विष्ण्णोररराटमसिव्विष्ण्णोः श्श्नप्त्रेस्त्थोव्विष्ण्णोः स्यूरसिव्विष्ण्णोर्द्ध्रुवोसि॥ व्वैष्ण्णवमसिव्विष्ण्णवेत्त्वा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ॐ इन्द्रऽआसांनेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः॥ देवसेनानामभि भञ्जतीनांजयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ अदित्त्यैरास्स्नासीन्द्राण्ण्याऽउष्ण्णीषः॥ पूषासिघर्म्मायदीष्ष्व॥ इन्द्राण्यै स्वाहा॥

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्न्यन्न्योव्विश्श्वारूपाणिपरिताबभूव॥ यत्कामास्तजुहुमस्तन्नोऽ अस्तुव्वयꣳस्यामपतयोरयीणाम्॥ प्रजापतये स्वाहा॥

ॐ नमोस्त्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः॥ सर्पेभ्यः स्वाहा॥

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्प्रथमम्पुरस्त्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनआवः॥ सबुध्न्न्याऽउपमाऽ अस्यव्विष्ठाः सतश्श्चयोनिमसतश्श्चव्विवः॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ओ३म् ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा॑नि॒धि॒प॑तिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहम॑जानिगर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्ब्भ॒धम्॥ गणपतये स्वाहा॥

ओ३म् अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्च॒कः सु॒भ॑द्द्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्॥ दुर्गायै स्वाहा॥

ओ३म् व्वायो॒येतैं॑सह॒स्रिणो॒रथा॑स॒स्तेभि॒राग॑हि॥ नि॒युत्त्वा॒न्त्सोम॑पीतये॥ वायवे स्वाहा॥

ओ३म् घृतंघृ॒तपावानः पिबत॒व्वसां॑व्वसापावानः पिबन्ता॒न्तरि॑क्षस्यह॒विर॑सि॒स्वाहा॑॥ दिशः प्प्र॒दिश॑ऽआ॒दिशो॑व्वि॒दिश॑ऽउ॒द्दिशो॑दि॒ग्ग्भ्यः स्वाहा॑॥ आकाशाय स्वाहा॥

ओ३म् यावां॒कशा॒मधु॑मत्याश्श्विना॑सूनृता॑वती॥ तया॑य॒ज्ञंमि॑मिक्षतम्॥ अश्विभ्यां स्वाहा॥

ओ३म् वास्तोष्प्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशंनोभवद्विपदेशंचतुष्प्पदे॥ वास्तोष्प्पतये स्वाहा॥

ओ३म् न॒हिस्प्पश॒मवि॑दन्न॒न्न्यम॒स्म्माद्वै॒श्श्वान॒रात्पु॒रऽए॒तार॑म॒ग्नेः॥ एमै॑नमवृधन्न॒मृता॒ऽअम॑र्त्त्यंव्वैश्श्वान॒रंक्षैत्र॑जित्त्यायदे॒वाः॥ क्षेत्राधिपतये स्वाहा॥

ओ३म् त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्र॒ꣳहवे॑हवेसु॒हव॒ꣳशूर॒मिन्द्र॑म्॥ ह्वया॑मिश॒क्रंपु॑रुहूतमिन्द्र॑ꣳस्व॒स्तिनो॑म॒घवा॑धा॒त्त्विन्द्रः॥ इन्द्रायस्वाहा॥

ओ३म् त्वन्नो॑ऽअग्ग्ने॒तव॑पा॒युभि॒र्म्म॒घोनो॑रक्षत॒न्न्व॒श्श्चव॑न्द्य॥ त्रा॒ता॒तो॒कस्य॒तन॑ये॒गवा॑म॒स्यनिमे॑ष॒ꣳरक्ष॑माण॒स्तव॑व्व्र॒ते॥ अग्ग्नये स्वाहा॥

ओ३म् य॒माय॒त्त्वाङ्गि॑रस्वतेपि॒तृम॑ते॒स्वाहा॑॥ स्वाहा॑घ॒र्म्माय॒स्वाहा॑घ॒र्म्मः पि॒त्रे॥ यमाय स्वाहा॥

ओ३म् असु॑न्न्वन्त॒मय॑जमानमिच्च्छस्ते॒नस्ये॒त्यामन्न्वि॑हि॒तस्क॑रस्य॥ अ॒न्न्यम॒स्म्मदि॑च्च्छ॒सात॑ऽइ॒त्या नमो॑ देवि निर्ऋ॑ते॒ तुभ्य॑मस्तु॥ निर्ऋतये स्वाहा॥

ओ३म् तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्ब्भिः॥ अहे॑डमानोव्वरुणेह॒बोद्ध्युरु॑शꣳस॒मान॒ऽआयुः॒प्प्रमो॑षीः॥ वरुणाय स्वाहा॥

ओ३म् आनो॑नि॒युद्भिः॑श॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳसह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहिय॒ज्ञम्॥ व्वायो॑ऽअ॒स्मिनत्सव॑नेमादयस्वयू॒यंपा॑तस्व॒स्तिभिः॒सदा॑नः॥ वायवे स्वाहा॥

ओ३म् व्व॒यꣳसो॑मव्व्र॒तेतव॒मन॑स्त॒नूषु॒बिब्भ्र॑तः॥ प्र॒जाव॑न्तःसचेमहि॥ सोमाय स्वाहा॥

ओ३म् तमीशा॑न॒ञ्जग॑तस्त॒स्थुष॒प्पतिं॑धियञ्जि॒न्न्वम॑वसेहूमहेव्व॒यम्॥ पू॒षानो॒यथा॒व्वेद॑सा॒मस॒द्वृधे॑र॒क्षिता॑पा॒युरद॑ब्धःस्व॒स्तये॑॥ ईशानाय स्वाहा॥

ओ३म् अ॒स्मेरु॒द्रामे॒हना॒पर्व॑तासोव्वृत्र॒हत्ये॒भर॑हूतौस॒जोषाः॥ यःशꣳस॑तेस्तुव॒तेधायि॑प॒ज्ज्रऽइन्द्र॑ज्ज्येष्ठाऽअ॒स्म्माँ२॥ऽअ॒वन्तुदे॒वाः॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ स्यो॒नापृ॑थिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेशनी॥ यक्षान॒ःशर्म्मस॒प्प्रथाः॑॥ अनन्ताय स्वाहा॥

अनेन हवानाख्येन सूर्याद्यनन्तान्त देवताः प्रीयन्तां न मम।

हाथ में जल लेकर मन्त्र बोलकर गिरायें।

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।
तथा दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिणा॥

सूर्याद्यनन्तान्तहवनं परिपूर्णम्

●

असंख्यातरुद्रहवनम्

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः स्वाहा॥ १०८ आहुति हवन करे। असंख्यातरुद्र के लिए हवन के पश्चात् प्रधान देवता के लिए अहुतियाँ प्रदान करे।

अनेन हवानाख्येन असंख्यातरुद्राः प्रीयन्तां न मम।

हाथ में जल लेकर मन्त्र बोलकर गिरायें।

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।
तथा दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिणा॥

असंख्यातरुद्रहवनं परिपूर्णम्

●

प्रधानदेवतानां हवनम्

ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा॑ नि॒धिप॑तिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहम॑जानिगर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्ब्भ॒धम्॥ गणपतये स्वाहा॥ १०८ आहुति हवन करे।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ स॑स्त्यश्व॒कः॒सुभ॑द्रिकाङ्काम्पील वासिनी॑म्॥ महागौर्यै स्वाहा॥ १०८ आहुति हवन करे।

ॐ इ॒दं व्विष्ण्णु॒र्व्विच॑क्रमेत्त्रे॒धानिद॑धेप॒दम्॥ समू॑ढमस्यपाꣳसु॒रेस्वाहा॑॥ विष्णवे स्वाहा॥ १०८ आहुति हवन करे।

ॐ उदु॒त्त्यञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वंव्वहन्तिके॒तवः॑॥ दृ॒शेव्विश्श्वा॑य॒सूर्य्य॑म्॥ आदित्याय स्वाहा॥ १०८ आहुति हवन करे।

ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः शिवाय स्वाहा॥ १०८ आहुति हवन करे।

उपरिलिखित पञ्चदेवों को आहुतियाँ प्रदान करने के बाद मूल मन्त्र से हवन करे।

ॐ हूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ ॥ १००८ आहुति हवन करे।

ॐ क्ष्रौँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ १००८ आहुति हवन करे।

उपरिलिखित आहुतियाँ प्रदान करने के बाद अधोलिखित मन्त्रों से अलग-अलग विहित पदार्थों का हवन करे।

१.**ॐ हँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

२.**ॐ हँ हँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

३.**ॐ हाँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

४.**ॐ हाँ हाँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

५.**ॐ हीँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

६.**ॐ हीँ हीँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

७.**ॐ हूँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

८.**ॐ हूँ हूँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

९.**ॐ हेँ स्वाहा।**गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

१०.**ॐ हेँ हेँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

११.**ॐ हौँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

१२.**ॐ हौँ हौँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

१३.**ॐ हः स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

१४.**ॐ हः हः स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

१५.**ॐ क्रँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

१६.**ॐ क्रँ क्रँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

१७.**ॐ क्राँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

१८.**ॐ क्राँ क्राँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

१९.**ॐ क्रीँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

२०.**ॐ क्रीँ क्रीँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

२१.**ॐ क्रूँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

२२.**ॐ क्रूँ क्रूँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
२३.**ॐ क्रैं स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
२४.**ॐ क्रैं क्रैं स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
२५.**ॐ क्रौं स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
२६.**ॐ क्रौं क्रौं स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
२७.**ॐ क्रः स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
२८.**ॐ क्रः क्रः स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
२९.**ॐ अँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
३०.**ॐ अँ अँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
३१.**ॐ आँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
३२.**ॐ आँ आँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
३३.**ॐ इँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
३४.**ॐ इँ इँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
३५.**ॐ ईँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
३६.**ॐ ईँ ईँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
३७.**ॐ उँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
३८.**ॐ उँ उँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
३९.**ॐ ऊँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
४०.**ॐ ऊँ ऊँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
४१.**ॐ ॠँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
४२.**ॐ ॠँ ॠँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
४३.**ॐ लृँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
४४.**ॐ लृँ लृँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
४५.**ॐ लॄँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
४६.**ॐ लॄँ लॄँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
४७.**ॐ एँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
४८.**ॐ एँ एँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
४९.**ॐ ऐँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
५०.**ॐ ऐँ ऐँ स्वाहा।** गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।

५१.ॐ औँ स्वाहा। गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
५२.ॐ औँ औँ स्वाहा। गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
५३.ॐ औँ स्वाहा। गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
५४.ॐ औँ औँ स्वाहा। गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
५५.ॐ अँ स्वाहा। गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
५६.ॐ अँ अँ स्वाहा। गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
५७.ॐ अः स्वाहा। गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
५८.ॐ अः अः स्वाहा। गाय के घी तथा तिल राजिका से हवन करे।
५९.ॐ कँ स्वाहा। गाय के घी तथा अयुग्मछद्म (छितवनपुष्प) से हवन करे।
६०.ॐ कँ कँ स्वाहा। गाय के घी तथा अयुग्मछद्म (छितवनपुष्प) से हवन करे।
६१.ॐ खँ स्वाहा। गाय के घी तथा उदुम्बर (गूलर) से हवन करे।
६२.ॐ खँ खँ स्वाहा। गाय के घी तथा उदुम्बर (गूलर) से हवन करे।
६३.ॐ गँ स्वाहा। गाय के घी तथा अपामार्ग (चिचिड़ि) से हवन करे।
६४.ॐ गँ गँ स्वाहा। गाय के घी तथा अपामार्ग (चिचिड़ि) से हवन करे।
६५.ॐ घँ स्वाहा। गाय के घी तथा खदिर (खैर) से हवन करे।
६६.ॐ घँ घँ स्वाहा। गाय के घी तथा खदिर (खैर) से हवन करे।
६७.ॐ ङँ स्वाहा। गाय के घी तथा प्लक्ष (पाकड़) से हवन करे।
६८.ॐ ङँ ङँ स्वाहा। गाय के घी तथा प्लक्ष (पाकड़) से हवन करे।
६९.ॐ चँ स्वाहा। गाय के घी तथा न्यग्रोध (वट) से हवन करे।
७०.ॐ चँ चँ स्वाहा। गाय के घी तथा न्यग्रोध (वट) से हवन करे।
७१.ॐ छँ स्वाहा। गाय के घी तथा अश्वत्थ (पीपल) से हवन करे।
७२.ॐ छँ छँ स्वाहा। गाय के घी तथा अश्वत्थ (पीपल) से हवन करे।
७३.ॐ जँ स्वाहा। गाय के घी तथा पलाश (पलाश) से हवन करे।
७४.ॐ जँ जँ स्वाहा। गाय के घीं तथा पलाश (पलाश) से हवन करे।
७५.ॐ झँ स्वाहा। गाय के घी तथा अर्क (मदार) से हवन करे।
७६.ॐ झँ झँ स्वाहा। गाय के घी तथा अर्क (मदार) से हवन करे।
७७.ॐ ञँ स्वाहा। गाय के घी तथा आम्र (आम) से हवन करे।
७८.ॐ ञँ ञँ स्वाहा। गाय के घी तथा आम्र (आम) से हवन करे।
७९.ॐ टँ स्वाहा। गाय के घी तथा कुशा (कुश) से हवन करे।

८०.**ॐ टँ टँ स्वाहा**। गाय के घी तथा कुशा (कुश) से हवन करे।

८१.**ॐ ठँ स्वाहा**। गाय के घी तथा दूर्वा (दूब) से हवन करे।

८२.**ॐ ठँ ठँ स्वाहा**। गाय के घी तथा दूर्वा (दूब) से हवन करे।

८३.**ॐ डँ स्वाहा**। गाय के घी तथा माष (उर्द) से हवन करे।

८४.**ॐ डँ डँ स्वाहा**। गाय के घी तथा माष (उर्द) से हवन करे।

८५.**ॐ ढँ स्वाहा**। गाय के घी तथा बिल्वपत्र (बेल का पत्ता) से हवन करे।

८६.**ॐ ढँ ढँ स्वाहा**। गाय के घी तथा बिल्वपत्र (बेल का पत्ता) से हवन करे।

८७.**ॐ णँ स्वाहा**। गाय के घी तथा अर्कपत्र (मदार के पत्ते) से हवन करे।

८८.**ॐ णँ णँ स्वाहा**। गाय के घी तथा अर्कपत्र (मदार के पत्ते) से हवन करे।

८९.**ॐ तँ स्वाहा**। गाय के घी तथा पलाशपुष्प (पलाश के फूल) से हवन करे।

९०.**ॐ तँ तँ स्वाहा**। गाय के घी तथा पलाशपुष्प (पलाश के फूल) से हवन करे।

९१.**ॐ थँ स्वाहा**। गाय के घी तथा कृष्णतिल (काला तिल) से हवन करे।

९२.**ॐ थँ थँ स्वाहा**। गाय के घी तथा कृष्णतिल (काला तिल) से हवन करे।

९३.**ॐ दँ स्वाहा**। गाय के घी तथा माषवटक (उर्दबड़ा) से हवन करे।

९४.**ॐ दँ दँ स्वाहा**। गाय के घी तथा माषवटक (उर्दबड़ा) से हवन करे।

९५.**ॐ धँ स्वाहा**। गाय के घी तथा तण्डुलचूर्ण (चावल का आटा) से हवन करे।

९६.**ॐ धँ धँ स्वाहा**। गाय के घी तथा तण्डुलचूर्ण (चावल का आटा) से हवन करे।

९७.**ॐ नँ स्वाहा**। गाय के घी तथा गोधूमचूर्ण (गेंहू का आटा) से हवन करे।

९८.**ॐ नँ नँ स्वाहा**। गाय के घी तथा गोधूमचूर्ण (गेंहू का आटा) से हवन करे।

९९.**ॐ पँ स्वाहा**। गाय के घी तथा लवण (नमक) से हवन करे।

१००.**ॐ पँ पँ स्वाहा**। गाय के घी तथा लवण (नमक) से हवन करे।

१०१.**ॐ फँ स्वाहा**। गाय के घी तथा कदलीफल (केला) से हवन करे।

१०२.**ॐ फँ फँ स्वाहा**। गाय के घी तथा कदलीफल (केला) से हवन करे।

१०३.**ॐ बँ स्वाहा**। गाय के घी तथा माष (उर्द) से हवन करे।

१०४.**ॐ बँ बँ स्वाहा**। गाय के घी तथा माष (उर्द) से हवन करे।

१०५.**ॐ भँ स्वाहा**। गाय के घी तथा सर्षपसमिधा (सरसों की लकड़ी) से हवन करे।

१०६.**ॐ भँ भँ स्वाहा**। गाय के घी तथा सर्षपसमिधा (सरसों की लकड़ी) से हवन करे।

१०७.ॐ मँ स्वाहा। गाय के घी तथा जम्बिरसमिधा (नींबू की लकड़ी) से हवन करे।

१०८.ॐ मँ मँ स्वाहा। गाय के घी तथा जम्बिरसमिधा (नींबू की लकड़ी) से हवन करे।

१०९.ॐ यँ स्वाहा। गाय के घी तथा माषसमिधा (उर्द की लकड़ी) से हवन करे।

११०.ॐ यँ यँ स्वाहा। गाय के घी तथा माषसमिधा (उर्द की लकड़ी) से हवन करे।

१११.ॐ रँ स्वाहा। गाय के घी तथा माष (उर्द) से हवन करे।

११२.ॐ रँ रँ स्वाहा। गाय के घी तथा माष (उर्द) से हवन करे।

११३.ॐ लँ स्वाहा। गाय के घी तथा यव (जौ) से हवन करे।

११४.ॐ लँ लँ स्वाहा। गाय के घी तथा यव (जौ) से हवन करे।

११५.ॐ वँ स्वाहा। गाय के घी तथा लवण (नमक) से हवन करे।

११६.ॐ वँ वँ स्वाहा। गाय के घी तथा लवण (नमक) से हवन करे।

११७.ॐ शँ स्वाहा। गाय के घी तथा गुड (गुड़) से हवन करे।

११८.ॐ शँ शँ स्वाहा। गाय के घी तथा गुड (गुड़) से हवन करे।

११९.ॐ षँ स्वाहा। गाय के घी तथा सर्षप (सरसों) से हवन करे।

१२०.ॐ षँ षँ स्वाहा। गाय के घी तथा सर्षप (सरसों) से हवन करे।

१२१.ॐ सँ स्वाहा। गाय के घी तथा माष (उर्द) से हवन करे।

१२२.ॐ सँ सँ स्वाहा। गाय के घी तथा माष (उर्द) से हवन करे।

१२३.ॐ हँ स्वाहा। गाय के घी तथा कृष्णतिल (काला तिल) से हवन करे।

१२४.ॐ हँ हँ स्वाहा। गाय के घी तथा कृष्णतिल (काला तिल) से हवन करे।

१२५.ॐ लँ स्वाहा। गाय के घी तथा यव (जौ) से हवन करे।

१२६.ॐ लँ लँ स्वाहा। गाय के घी तथा यव (जौ) से हवन करे।

१२७.ॐ क्षँ स्वाहा। गाय के घी तथा गुड (गुड़) से हवन करे।

१२८.ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा। गाय के घी तथा गुड (गुड़) से हवन करे।

१२९.ॐ सर्वभूतपिशाचं निःसारय निःसारय मारय मारय भक्षय भक्षय स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१३०.ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्वभूतपिशाचं छिन्धि छिन्धि स्वादय स्वादय स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१३१.ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ सर्वभूतपिशाचं मारय मारय स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१३२. ॐ हैं हैं हैं सर्वभूत पिशाचमुच्चाटयोच्चाटय स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१३३. ॐ हूँ हूँ हूँ सर्वभूतपिशाचं मोहय मोहय निःसारय निःसारय स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१३४. ॐ अँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१३५. ॐ आँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१३६. ॐ इँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१३७. ॐ ईँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१३८. ॐ उँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१३९. ॐ ऊँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१४०. ॐ ऋँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१४१. ॐ ॠँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१४२. ॐ लृँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१४३. ॐ लॄँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१४४. ॐ एँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१४५. ॐ ऐँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१४६. ॐ ओँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१४७. ॐ औँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१४८. ॐ अँ स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१४९. ॐ अः स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१५०. सर्वभूतपिशाचं निःसारय निःसारय स्वाहा। तिलराजिका (तिल और राई) से हवन करे।

१५१. ॐ महाविद्यायै स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१५२. ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१५३. ॐ नमो भगवते भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१५४.ॐ नमो भगवते गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१५५.ॐ दुर्गे महाशक्ति भूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षससर्ववेतालवृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१५६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१५७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१५८.ॐ नमः शिवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१५९.ॐ सूँ सूर्याय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१६०.ॐ सौँ सोमाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१६१.ॐ मँ मंगलाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१६२.ॐ बुँ बुधाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१६३.ॐ बृँ बृहस्पतये स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१६४.ॐ शुँ शुक्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१६५.ॐ शँ शनैश्चराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१६६.ॐ राँ राहवे स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१६७. ॐ कँ केतवे स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१६८. ॐ महाशन्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसवेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१६९. ॐ सिंहशार्दूलगजेन्द्रग्राहव्याघ्रादिमृगान् बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१७०.ॐ गतिं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१७१.ॐ आज्ञां बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१७२.ॐ सर्वं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१७३.ॐ सर्वजन्तुं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१७४.ॐ बन्ध बन्ध मोचनं कुरु कुरु स्वाहा।गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१७५.ॐ नमो भगवते महेन्द्रदिग्दिशायां ऐरावतारूढं वज्रहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमैन्द्रमण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१७६.ॐ ऐन्द्रमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१७७.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१७८.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१७९.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१८०.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१८१.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१८२.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१८३.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१८४.ॐ नमो भगवते अग्निदिग्दिशायां मृगारूढं शक्तिहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं अग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१८५.ॐ अग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१८६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१८७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैं क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१८८.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१८९.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१९०.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१९१.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१९२.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१९३. ॐ नमो भगवते दक्षिणदिग्दिशायां महिषारूढं कृष्णवर्णं दण्डहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१९४.ॐ यममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१९५.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१९६.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैं क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१९७.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१९८.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

१९९.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२००.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२०१.ॐ दुर्गे महाशान्तिक भूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२०२.ॐ नमो भगवते नैर्ऋत्यदिग्दिशायां प्रेतारूढं खड्गहस्तं स्वपरिवार-सहितं दिग्देवताधिपतिं नैर्ऋत्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२०३.ॐ नैर्ऋत्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२०४.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२०५.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैं क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२०६.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२०७.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२०८.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२०९.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२१० ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२११.ॐ नमो भगवते पश्चिमदिग्दिशायां मकरारूढं पाशहस्तं स्वपरिवार-सहितं दिग्देवताधिपतिं वरुणमण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२१२.ॐ वरुणमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२१३.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी,जौ तथा खीर) से हवन करे।

२१४.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैं क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२१५.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२१६.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२१७.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२१८.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२१९.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२२०.ॐ नमो भगवते वायव्यदिग्दिशायां मृगारूढं धनुर्हस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वायव्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२२१.ॐ वायव्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२२२.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२२३.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२२४.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२२५.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२२६.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२२७.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२२८.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२२०.ॐ नमो भगवते उत्तरदिग्दिशायां नरारूढं गदाहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कुबेरमण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२३०.ॐ कुबेरमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२३१.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२३२.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२३३.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२३४.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२३५.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२३६.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२३७.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२३८.ॐ नमो भगवते ईशानदिग्दिशायां वृषारूढं शूलहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ईशानमण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२३९.ॐ ईशानमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२४०.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२४१.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२४२.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२४३.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२४४.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२४५.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२४६.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करें।

२४७.ॐ नमो भगवते ऊर्ध्वब्रह्मदिग्दिशायां हंसारूढं ब्रह्मास्त्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ब्रह्ममण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२४८.ॐ ब्रह्ममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२४९.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२५०.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२५१.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२५२.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२५३.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२५४.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२५५.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२५६. ॐ नमो भगवते अध:अनन्तदिग्दिशायां लोष्ठनागारूढं चक्रहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं अनन्तकालाग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२५७.ॐ अनन्तकालाग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२५८.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२५९.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२६०.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२६१.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२६२.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२६३.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२६४.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२६५.ॐ नमो भगवते विष्णुदिशायां गरुड़ारूढं गदाहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं विष्णुमण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२६६.ॐ विष्णुमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२६७.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२६८.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२६९.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२७०.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२७१.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२७२.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२७३.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२७४. ॐ नमो भगवते पातालदिशायां कूर्मारूढं लोष्ठभागं कुपरिघहस्तं

स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं पातालमण्डलं बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२७५.ॐ पातालमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तशा खीर) से हवन करे।

२७६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी. जौ तथा खीर) से हवन करे।

२७७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२७८.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२७९.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२८०.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२८१.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२८२.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२८३.पूर्वदिशायां वज्रकोनाम राक्षसस्तस्य वज्रकस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२८४.पूर्वदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२८५.ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२८६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२८७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२८८.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२८९.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर)से हवन करे।

२९०.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२९१.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२९२.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२९३.ॐ अग्निदिशायां अग्निज्वालोनाम राक्षसस्तस्याऽग्निज्वालस्य अष्टादश कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२९४.अग्निदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२९५.ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२९६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२९७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२९८.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

२९९.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३००.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३०१.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३०२.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३०३.ॐ दक्षिणदिशायां एकपिङ्गलिको नाम राक्षसस्तस्यैकपिङ्गलिकस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३०४.दक्षिणदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३०५.ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३०६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३०७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३०८.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३०९.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३१०.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३११.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३१२.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३१३.ॐ नैर्ऋत्यदिशायां मरीचिकोनाम राक्षसस्तस्य मरीचिकस्य अष्टादश-कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३१४.नैर्ऋत्यदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३१५.ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३१६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३१७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३१८.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३१९.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३२०.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३२१.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३२२.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३२३.ॐ पश्चिमदिशायां मकरोनाम राक्षसस्तस्य मकरस्य अष्टादशकोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३२४.पश्चिमदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३२५.ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३२६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३२७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३२८.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३२९.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३३०.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३३१.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३३२.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३३३.ॐ वायव्यदिशायां तक्षको नाम राक्षसस्तस्य तक्षकस्य अष्टादशकोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३३४.वायव्यदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३३५.ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३३६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३३७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३३८.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३३९.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३४०.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३४१.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३४२.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३४३.ॐ उत्तरदिशायां महाभीमोनाम राक्षसस्तस्य महाभीमस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३४४.उत्तरदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३४५.ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३४६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३४७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३४८.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३४९.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३५०.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३५१.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३५२.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३५३.ॐ ईशानदिशायां भैरवोनाम राक्षसस्तस्य भैरवस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३५४.ईशानदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३५५.ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३५६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३५७.ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३५८.ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३५९.ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३६०.ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३६१.ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३६२.ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३६३.ॐ ऊर्ध्वदिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३६४. ऊर्ध्वदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३६५.ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३६६.ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३६७.**ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३६८.**ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३६९.**ॐ नमो भैरवाय स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३७०.**ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३७१.**ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।** गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३७२.**ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३७३.**ॐ अधोदिशायां नागरूपो नाम राक्षसस्तस्य नागरूपस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३७४.**अधोदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३७५.**ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३७६.**ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३७७.**ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३७८.**ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३७९.**ॐ नमो भैरवाय स्वाहा।** गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३८०.**ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा।** गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३८१.**ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।** गोघृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

३८२.**ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा।** गाय के घृतयवपायस (घी, जौ तथा खीर) से हवन करे।

महाविद्या हवनादि के बाद सद्यः प्रेतादि दोष निवृत्ति के लिए शताक्षरा गायत्री मन्त्र प्रयोग करे।

प्रधानदेवतानां हवनं परिपूर्णम्

●

शताक्षरागायत्रीमन्त्रप्रयोगः

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीशताक्षरागायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचीकश्यपवसिष्ठाऋषयः गायत्रीगनुष्टुब्छन्दाः सविताजातवेदत्र्यम्बकदेवताः गायत्र्यक्षराणिबीजानि त्रिष्टुबक्षराणिशक्तये अनुष्टुबक्षराणिकीलकं सर्वारिष्टशान्तये सर्वाभ्युदयप्राप्तये जपेहवने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्रमरीचिकश्यपवसिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ भूर्भुवः स्वः गायत्रीत्रष्टुबनुष्टुब्छन्देभ्यो नमः मुखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः सविताजातवेदस्त्रम्बकदेवेभ्यो नमः हृदि।

ॐ भूर्भुवः स्वः गायत्र्यक्षराणि बीजानि नमः गुह्ये।

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रष्टुबक्षराणि शक्तये नमः पादयोः।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनुष्टुबक्षराणि कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ भूर्भुवः स्वः शताक्षरागायत्रये नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः धियो यो नः प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः शिखायै वषट्।

ॐ भूर्भुवः स्वः सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवंसिन्धुंदुरितात्यग्निः कवचाय हुम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्।

कराङ्गन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः धियो यो नः प्रचोदयात् तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवंसिन्धुंदुरितात्यग्निः अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनं नेत्रत्रयाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

मातृकान्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

विनियोगः— **ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वतीदेवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं कीलकं, श्रीशताक्षरा-गायत्रीदेवताप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

प्राणायामः—पूर्ववत् मातृका प्राणायाम करे।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।

ॐ भूर्भुवः स्वः इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदये।

ॐ भूर्भुवः स्वः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।

ॐ भूर्भुवः स्वः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

प्राणायाम तथा कराङ्गन्यास करने के बाद अन्तर्लिपि न्यास करे।

अन्तर्मातृकान्यासः

ध्यानम्—

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तसुखदो यन्मध्यवक्षस्थलम्,
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रसकलामापीनतुङ्गस्तनीम् ।
मुद्राभक्षणगुणं सुधाढ्यकलशं व्याख्याञ्च हस्ताम्बुजेः,
बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

मानसोपचारपूजनविधि—पूर्ववत् मानसोपचार पूजन करे।

चक्रन्यासः

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः धूम्राभे षोडशदलपद्मे विशुद्धचक्रे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ नमः द्वादशदलपद्मे प्रवालसन्निभे हृदयोपर्यनाहते न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः नीलजीमूतसन्निभे दशदलपद्मे नाभ्योरुपरि मणिपूरे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः बँ भँ मँ यँ रँ लँ नमः विद्युत्सन्निभे षड्दलपद्मे स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वँ शँ षँ सँ ळँ नमः सुवर्णाभेचतुर्दलपद्मे मूलाधारे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः हँ क्षँ नमः द्विदलपद्मे चन्द्राभे भ्रूमध्ये आज्ञायां न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सहस्रारे हिमसन्निभे सर्ववर्णविभूषिते अकखादि त्रिरेखासु आलक्षत्रयभूषिते ॐ पर विन्दूभ्यो नमः सहस्रारे न्यस्यामि।

मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक विन्दुचिदात्मक ध्यान करके उससे टपकते हुए अमृत के द्वारा सभी मातृकाओ का तर्पण (सिंचन) करना चाहिये। फिर ध्यान करे।

ध्यानम्—

आधारे लिङ्गनाभे प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे,
द्वेपत्रे षोडशारे द्विदशदले दशारे षड्चतुष्के।
वासन्ते बलमध्ये डफकठसहिते कंठदेशे स्वराणां,
हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥

मानसोपचारपूजनम्—ध्यान के बाद पुनः पूर्व विधि से मानसोपचार पूजन करे।

चक्रतत्त्वन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः लँ पृथ्वीतत्त्वाय नमः मूलाधारे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वँ जलतत्त्वाय नमः स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः रँ अग्नितत्त्वाय नमः मणिपुरे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः यँ वायुतत्त्वाय नमः अनाहते न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः हँ आकाशतत्त्वाय नमः विशुद्धचक्रे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः हँ ळँ क्षँ मनोबुद्धितत्वाय नमः आज्ञाचक्रे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ चिदाहङ्कारात्मने नमः सहस्रारे न्यस्यामि।

बहिर्मातृकान्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

विनियोगः— ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वतीदेवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाप्तये श्रीमद्गायत्रीदेवताप्रीतये विनियोगः।

प्राणायामः—पूर्वोल्लिखित मातृका प्राणायाम विधि से प्राणायाम करे।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।

ॐ भूर्भुवः स्वः इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदये।

ॐ भूर्भुवः स्वः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ भूर्भुवः स्वः उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ भूर्भुवः स्वः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ भूर्भुवः स्वः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।
ॐ भूर्भुवः स्वः इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।
ॐ भूर्भुवः स्वः उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।
ॐ भूर्भुवः स्वः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ भूर्भुवः स्वः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

मातृकान्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः लॄँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः खँ नमः दक्षिणकूपरि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः छँ नमः वामकूपरि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यान्तं न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

सृष्टि-स्थिति-संहार भेद से तीन प्रकार से मातृकान्यास करना चाहिये।

स्थित्यादौ तु गृहस्थानां सृष्ट्यादौ ब्रह्मचारिणां।
संहारादौ यतीनाञ्च मातृकान्यासमाचरेत्॥
नाभावारभ्यते यस्तु हृदये च समाप्यते।
स्थितिन्यासः स विज्ञेयः दृष्टादृष्टफलप्रद॥
विद्याकामे योनिबीजाद्यः श्रीकामे रमाद्यस्तथा।
वश्येकामाद्यः स्ताम्भने स्थिरमाद्यादि विज्ञेयः॥

सम्प्रदाय के अनुसार बीजों का चयन करना चाहिए। यहाँ **ॐ भूर्भुवः स्वः** लगाकर न्यास करे।

ध्यानम्—

सिन्दूरकान्तिमसिता भरणां त्रिनेत्रां
विद्याक्षसूत्रमृगपोतवरं दधाना।
पार्श्वस्थितां भगवतीमपि कांचनाङ्गी
ध्याये कराब्जधृतपुस्तकवर्णमालाम्॥

मानसोपचारपूजम्—ध्यान के बाद पुनः पूर्व विधि से मानसोपचार पूजन करे।

सृष्टिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः लॄँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

स्थितिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुव: स्व: णँ नम: दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: तँ नम: वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: थँ नम: वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: दँ नम: वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: धँ नम: वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: नँ नम: वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: पँ नम: दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: फँ नम: वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: बँ नम: पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: भँ नम: नाभौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: मँ नम: उदरे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: यँ त्वगात्मने नम: हृदये न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: रँ असृगात्मने नम: दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: लँ मांसात्मने नम: ककुदि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: वँ मेदात्मने नम: वामांसे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: शँ अस्थ्यात्मने नम: हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: षँ मज्जात्मने नम: हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: सँ शुक्रात्मने नम: हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: हँ आत्मने नम: हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ळँ परमात्मने नम: हृदयादिकट्यान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नम: हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: अँ नम: शिरसि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: आँ नम: मुखे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: इँ नम: दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ईँ नम: वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: उँ नम: दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ऊँ नम: वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ऋँ नम: दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ॠँ नम: वामनासापुटे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः लॄँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः एँ नमः ऊध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।

संहारन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः लॄँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुव: स्व: एँ नम: ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ऐँ नम: अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ओँ नम: ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: औँ नम: अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: अँ नम: जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: अ: नम: कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: कँ नम: दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: खँ नम: दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: गँ नम: दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: घँ नम: दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ङँ नम: दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: चँ नम: वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: छँ नम: वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: जँ नम: वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: झँ नम: वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ञँ नम: वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: टँ नम: दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ठँ नम: दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: डँ नम: दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: ढँ नम: दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: णँ नम: दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: तँ नम: वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: थँ नम: वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: दँ नम: वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: धँ नम: वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: नँ नम: वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: पँ नम: दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: फँ नम: वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: बँ नम: पृष्ठे न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः मँ नमः उदरे न्यस्यामि।

तत्त्वन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवंसिन्धुंदुरितात्यग्निः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ आत्मतत्त्वाय नमः पादादिनाभिपर्यन्तं न्यस्यामि। लेलिहान मुद्रा से पैर से नाभि तक स्पर्श करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवंसिन्धुंदुरितात्यग्निः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ विद्यातत्त्वाय नमः नाभ्यादिहृदयपर्यन्तं न्यस्यामि। लेलिहान मुद्रा से नाभि से हृदय तक स्पर्श करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवंसिन्धुंदुरितात्यग्निः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ शिवतत्त्वाय नमः हृदयादि शिरः पर्यन्तं न्यस्यामि। लेलिहान मुद्रा से हृदय से शिर तक स्पर्श करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवंसिन्धुंदुरितात्यग्निः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ नमः सर्वाङ्गे व्यापकं न्यस्यामि। मूल मन्त्र से नव बार पूरे शरीर पर स्पर्श करते हुए व्यापक न्यास करे।

श्रीशताक्षरागायत्रीन्यासविधिः परिपूर्णम्

●

शताक्षरागायत्रीहवनम्

ध्यानम्—

स्मर्तव्याखिललोकवर्तिसततं यज्जङ्गमस्थावरम्,
व्याप्तं येन च यत्प्रपञ्चविहितं मुक्तिश्चयत्सिद्धति।
यद्वास्यात्प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यद्गीयते,
तद्वत्कृद्धितिसिद्धयेऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः॥

मूलमन्त्र—

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवंसिन्धुंदुरितात्यग्निः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥

शताक्षरागायत्रीहवनम्—मूल अक्षरों से घृत हवन के बाद मूल मन्त्र लाल अपामार्ग की समीधा में एक वर्ष के भीतर की बछियाँ की कण्डी को गाय के घी में भिगों कर शाकल्य के साथ हवन करे।

१.ॐ भूर्भुवः स्वः तत् स्वाहा।
२.ॐ भूर्भुवः स्वः स स्वाहा।
३.ॐ भूर्भुवः स्वः वि स्वाहा।
४.ॐ भूर्भुवः स्वः तुर् स्वाहा।
५.ॐ भूर्भुवः स्वः व स्वाहा।
६.ॐ भूर्भुवः स्वः रे स्वाहा।
७.ॐ भूर्भुवः स्वः णि स्वाहा।
८.ॐ भूर्भुवः स्वः यम् स्वाहा।
९.ॐ भूर्भुवः स्व भर् स्वाहा।
१०.ॐ भूर्भुवः स्वः गो स्वाहा।
११.ॐ भूर्भुवः स्वः दे स्वाहा।
१२.ॐ भूर्भुवः स्वः व स्वाहा।
१३.ॐ भूर्भुवः स्वः स्य स्वाहा।
१४.ॐ भूर्भुवः स्वः धी स्वाहा।
१५.ॐ भूर्भुवः स्वः म स्वाहा।
१६.ॐ भूर्भुवः स्वः हि स्वाहा।
१७.ॐ भूर्भुवः स्वः धि स्वाहा।
१८.ॐ भूर्भुवः स्वः यो स्वाहा।
१९.ॐ भूर्भुवः स्वःयो स्वाहा।
२०.ॐ भूर्भुवः स्वः नः स्वाहा।
२१.ॐ भूर्भुवः स्वः प्र स्वाहा।
२२.ॐ भूर्भुवः स्वः चो स्वाहा।
२३.ॐ भूर्भुवः स्वः द स्वाहा।
२४.ॐ भूर्भुवः स्वः यात् स्वाहा।
२५.ॐ भूर्भुवः स्वः जा स्वाहा।
२६.ॐ भूर्भुवः स्वः त स्वाहा।
२७.ॐ भूर्भुवः स्वः वे स्वाहा।
२८.ॐ भूर्भुवः स्वः द स्वाहा।
२९.ॐ भूर्भुवः स्वः से स्वाहा।
३०.ॐ भूर्भुवः स्वः सु स्वाहा।
३१.ॐ भूर्भुवः स्वः न स्वाहा।
३२.ॐ भूर्भुवः स्वः वा स्वाहा।
३३.ॐ भूर्भुवः स्वः म स्वाहा।
३४.ॐ भूर्भुवः स्वः सो स्वाहा।
३५.ॐ भूर्भुवः स्वः म स्वाहा।
३६.ॐ भूर्भुवः स्व म स्वाहा।
३७.ॐ भूर्भुवः स्वः रा स्वाहा।
३८.ॐ भूर्भुवः स्वः ती स्वाहा।
३९.ॐ भूर्भुवः स्वः य स्वाहा।
४०.ॐ भूर्भुवः स्वः तो स्वाहा।
४१.ॐ भूर्भुवः स्वः नि स्वाहा।
४२.ॐ भूर्भुवः स्वः द स्वाहा।
४३.ॐ भूर्भुवः स्वः हा स्वाहा।
४४.ॐ भूर्भुवः स्वः ति स्वाहा।
४५.ॐ भूर्भुवः स्वः वे स्वाहा।
४६.ॐ भूर्भुवः स्वः दः स्वाहा।
४७.ॐ भूर्भुवः स्वः स स्वाहा।
४८.ॐ भूर्भुवः स्वः नः स्वाहा।
४९.ॐ भूर्भुवः स्वः पर् स्वाहा।
५०.ॐ भूर्भुवः स्वः ष स्वाहा।

५१.ॐ भूर्भुवः स्वः द स्वाहा।
५२.ॐ भूर्भुवः स्वः ति स्वाहा।
५३.ॐ भूर्भुवः स्वः दुर् स्वाहा।
५४.ॐ भूर्भुवः स्वः गा स्वाहा।
५५.ॐ भूर्भुवः स्वः णि स्वाहा।
५६.ॐ भूर्भुवः स्वः वि स्वाहा।
५७.ॐ भूर्भुवः स्वः श्वा स्वाहा।
५८.ॐ भूर्भुवः स्वः ना स्वाहा।
५९.ॐ भूर्भुवः स्वः वे स्वाहा।
६०.ॐ भूर्भुवः स्वः वं स्वाहा।
६१.ॐ भूर्भुवः स्वः सिन् स्वाहा।
६२.ॐ भूर्भुवः स्व धु स्वाहा।
६३.ॐ भूर्भुवः स्वः दु स्वाहा।
६४.ॐ भूर्भुवः स्वः रि स्वाहा।
६५.ॐ भूर्भुवः स्वः ता स्वाहा।
६६.ॐ भूर्भुवः स्वः त्य स्वाहा।
६७.ॐ भूर्भुवः स्वः ग्निः स्वाहा।
६८.ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्य स्वाहा।
६९.ॐ भूर्भुवः स्वः य स्वाहा।
७०.ॐ भूर्भुवः स्वः म्ब स्वाहा।
७१.ॐ भूर्भुवः स्वः कं स्वाहा।
७२.ॐ भूर्भुवः स्वः य स्वाहा।
७३.ॐ भूर्भुवः स्वः जा स्वाहा।
७४.ॐ भूर्भुवः स्वः म स्वाहा।
७५.ॐ भूर्भुवः स्वः हे स्वाहा।
७६.ॐ भूर्भुवः स्वः सु स्वाहा।
७७.ॐ भूर्भुवः स्वः गन् स्वाहा।
७८.ॐ भूर्भुवः स्वः धिम् स्वाहा।
७९.ॐ भूर्भुवः स्वः पु स्वाहा।
८०.ॐ भूर्भुवः स्वः ष्टि स्वाहा।
८१.ॐ भूर्भुवः स्वः वर् स्वाहा।
८२.ॐ भूर्भुवः स्वः ध स्वाहा।
८३.ॐ भूर्भुवः स्वः नम् स्वाहा।
८४.ॐ भूर्भुवः स्वः उर् स्वाहा।
८५.ॐ भूर्भुवः स्वः व्वा स्वाहा।
८६.ॐ भूर्भुवः स्वः रु स्वाहा।
८७.ॐ भूर्भुवः स्वः क स्वाहा।
८८.ॐ भूर्भुवः स्वः मि स्वाहा।
८९.ॐ भूर्भुवः स्वः व स्वाहा।
९०.ॐ भूर्भुवः स्वः बन् स्वाहा।
९१.ॐ भूर्भुवः स्वः ध स्वाहा।
९२.ॐ भूर्भुवः स्वः नान् स्वाहा।
९३.ॐ भूर्भुवः स्वः मृत् स्वाहा।
९४.ॐ भूर्भुवः स्वः योर् स्वाहा।
९५.ॐ भूर्भुवः स्वः मु स्वाहा।
९६.ॐ भूर्भुवः स्वः क्षी स्वाहा।
९७.ॐ भूर्भुवः स्वः य स्वाहा।
९८.ॐ भूर्भुवः स्वः मा स्वाहा।
९९.ॐ भूर्भुवः स्वः मृ स्वाहा।
१००.ॐ भूर्भुवः स्वः तात् स्वाहा।

शताक्षरा गायत्री मूल मन्त्र से अष्टोत्तरशत हवन के बाद भैरव हवन करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवंसिन्धुंदुरितात्यग्निः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥

शताक्षरागायत्रीहवनं परिपूर्णम्

●

महाभैरवहवनम्

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रीँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीँ कलाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रीँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीँ त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।

६३.ॐ ह्रौँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रौँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रौँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रौँ शान्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रौँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रौँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रौँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रौँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रौँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रौँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रौँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रौँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रौँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रौँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रौँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रौँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रौँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रौँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रौँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रौँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रौँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रौँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रौँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रौँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रौँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रौँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रौँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रौँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रौँ मुण्डभूपिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रौँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रौँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रौँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रौँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रौँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रौँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रौँ दुष्टभूतनिपेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रौँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रौँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रौँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रौँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रौँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रौँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रौँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रौँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रौँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रौँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

महाभैरवहवनं परिपूर्णम्

●

आवाहितदेवानां होमः

गणेशाम्बिकावरुणषोडषमातृकासप्तघृतमातृकासर्वतोभद्रदेवानां हवनम्—

गणेशहवनम्—गणेश के लिए आहुति प्रदान करे।

ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा॑ नि॒धिप॑तिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहम॑जानिगर्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्भ॒धम्॥ गणपतये स्वाहा।

अम्बिकाहवनम्—महागौरी के लिए आहुति प्रदान करे।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन॥ ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ अम्बिकायै स्वाहा ॥

वरुणहवनम्—वरुण के लिए आहुति प्रदान करे।

ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः॥ वरुणाय स्वाहा॥

गणेशसहितषोडशमातृकाहवनम्—मातृकाओं के लिए आहुति प्रदान करे।

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेवसोमम॥ आहमजानिगर्भधमात्त्वमजासिगर्भधम्॥ गणेशाय स्वाहा॥

ॐ आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः॥ गौर्यै स्वाहा॥

ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोविरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथःसूर्य्यश्च॥ आरोहतंवरुणमित्रगर्तन्ततश्चक्षाथामदितिन्दितिञ्चमित्रोऽसिवरुणोऽसि॥ पद्मायै स्वाहा॥

ॐ निवेशनःसङ्गमनोवसूनांविश्वारूपाभिचष्टेशचीभिः॥ देवऽइवसवितासत्यधर्म्मेन्द्रोनतस्थौसमरेपथीनाम् ॥ शच्यै स्वाहा॥

ॐ मेधाम्मेवरुणोददातुमेधामग्निःप्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्चवायुश्चमेधान्धाताददातुमेस्वाहा॥ मेधायै स्वाहा॥

ॐ सवितात्त्वासवानाꣳसुवतामग्निर्ग्गृहपतिनाꣳसोमोवनस्प्पतीनाम्॥ बृहस्प्पतिर्व्वाचधर्मपतीनाम्॥ सावित्र्यै स्वाहा॥

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनोविशल्योबाणवाँ२॥उत॥ अनेशन्नस्यया‍ऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः॥ विजयायै स्वाहा॥

ॐ वह्वीनाम्पिताबहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमनावगत्त्य॥ इषुधिःसङ्काःपृतनाश्चसर्वाःपृष्ठेनिनद्धोजयतिप्प्रसूतः॥ जयायै स्वाहा॥

ॐ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञःपुरएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥ देवसेनायै स्वाहा॥

ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःप्प्रपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्॥ स्वधायै स्वाहा॥

ॐ स्वाहाप्प्राणेब्भ्यःसाधिपतिकेब्भ्यः॥ पृथिव्यै स्वाहाग्नयेस्वाहान्तरिक्षायस्वाहावायवेस्वाहा॥ दिवेस्वाहासूर्य्यायस्वाहा॥ स्वाहायै स्वाहा॥

ॐ आपोऽअस्म्मान्मातरःशुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्प्वःपुनन्तु॥ विश्वꣳहिरिप्प्रम्प्र

वहन्तिदेविरुदिदाब्भ्यःशुचिरापूतऽएमि॥ दीक्षातपसोस्तनूरसितांत्वाशिवाꣳशग्ग्मांपरि दधेभद्रंव्वर्णंपुष्ष्यन्॥ मातृभ्यो स्वाहा॥

ॐ रयिश्श्चमेरायश्श्चमेपुष्टंचमेपुष्टिश्श्चमेव्विभुचमेप्रभुचमेपूर्ण्णंचमेपूर्ण्णतरञ्चमे कुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नंच्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ लोकमातृभ्यः स्वाहा॥

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्श्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्रजासु॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मंक्रियतेतन्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु॥ धृत्यै स्वाहा॥

ॐ अङ्गान्न्यात्मन्निभिषजातदश्श्विनात्मानमङ्गैःसमधात्त्सरस्वती॥ इन्द्रस्यरूपꣳशत मानमायुश्श्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतंदधानाः॥ पुष्ट्यै स्वाहा॥

ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः। सनःपर्षदतिदुर्गाणिविश्श्वा नावेवसिन्धुंदुरितात्यग्निः॥ तुष्ट्यै स्वाहा॥

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्रोत्रायस्वाहाव्वाचे स्वाहामनसेस्वाहा॥ आत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा॥

सप्तघृतमातृकाहवनम्—घृतमातृकाओं के लिए आहुति प्रदान करे।

ॐ मनसःकाममाकूतिंव्वाचःसत्त्यमशीय॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्यरसोयशःश्रीः श्रयतांमयिस्वाहा॥ श्रियै स्वाहा॥

ॐ श्रीश्श्चतेलक्ष्मीश्श्चपत्न्यावहोरात्रेपाश्श्र्वेनक्षत्राणिरूपमश्श्विनौव्व्यात्तम्॥ इष्ष्णं निषाणामुंमऽइषाणसर्व्वलोकंमऽइषाण॥ लक्ष्म्यै स्वाहा॥

ॐ भद्रङ्कर्ण्णेभिः श्शृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः॥ स्त्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः॥ धृत्यै स्वाहा॥

ॐ मेधांमेव्वरुणोददातुमेधामग्निःप्प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्श्च व्वायुश्श्चव्वायुश्श्च मेधां धाताददातुमेस्वाहा॥ मेधायै स्वाहा॥

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्रोत्रायस्वाहाव्वाचे स्वाहामनसेस्वाहा॥ स्वाहायै स्वाहा॥

ॐ आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः॥ पितरंचप्प्रयन्त्स्वः॥ प्रज्ञायै स्वाहा॥

ॐ पावमानःसरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवतियज्ञंव्वष्टुधियावसुः॥ सरस्वत्यै स्वाहा॥

सर्वतोभद्रदेवतानां हवनम्—सर्वतोभद्रदेवताओं के लिए आहुति प्रदान करे।

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्त्ताद्विसीमतःसुरुचोव्वेनआवः॥ सबुद्ध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चव्विवः॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः॥ प्रजावन्तःसचेमहि॥ सोमाय स्वाहा॥

ॐ तमीशानंजगतस्तस्त्थुषस्प्पतिंधियंजिन्न्वमवसेहूमहेव्वयम्॥ पूषानोयथाव्वेदसाम संद् धेरक्षितापायुरदब्ध्धये॥ ईशानाय स्वाहा॥

ॐ त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्र॒ꣳहवे॑हवेसु॒हव॒ꣳशूर॒मिन्द्र॑म्।। ह्वया॑मिश॒क्रंपु॑रुहू॒तमिन्द्र॒ꣳस्व॒स्तिनो॑म॒घवा॑धा॒त्विन्द्र॑ः।। इन्द्राय स्वाहा।।

ॐ त्वन्नो॑ऽअग्ने॒तव॑पा॒युभि॒र्म्म॒घोनो॑रक्षत॒न्व॒श्चवन्द्य।। त्रा॒ता तो॒कस्य॒तन॑ये॒गवा॑म॒स्य निमे॑ष॒ꣳरक्ष॑माण॒स्तव॑व्र॒ते।। अग्नये स्वाहा।।

ॐ य॒माय॒त्वाङ्गि॑रस्वतेपितृ॒मते॒स्वाहा॑।। स्वाहा॑घ॒र्म्माय॒स्वाहा॑घ॒र्म्मःपि॒त्रे।। यमाय स्वाहा।।

ॐ असु॑न्वन्त॒मय॑जमानमिच्छस्ते॒नस्ये॒त्यामन्वि॑हि॒तस्क॑रस्य।। अ॒न्यम॒स्मदि॑च्छ॒सात॑ऽइ॒त्यानमो॑देविनिर्ऋते॒तुभ्य॑मस्तु।। निर्ऋतये स्वाहा।।

ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्भि॑ः।। अहे॑डमानो व्वरुणे॒हबो॒द्ध्युरु॑श॒ꣳस॒मान॒ऽआयु॒ꣳप्प्रमो॑षीꣳ।। वरुणाय स्वाहा।।

ॐ आनो॑नि॒युद्भि॑ःश॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳसह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहिय॒ज्ञम्।। व्वायो॑ऽअ॒स्मिमनत्सव॑नेमादयस्वयू॒यंपा॑त स्वस्तिभिः सदा नः।। वायवे स्वाहा।।

ॐ व्वसु॑भ्य॒स्त्वारु॒द्रेभ्य॑स्त्वाऽऽदि॒त्येभ्य॑स्त्वा॒सञ्जा॑नाथांद्यावापृथिवीमि॒त्रावरु॑णौत्वा॒व्वृष्ट्या॑वताम्।। व्यन्तु॒व्वयो॒क्तꣳरिहा॑णाम॒रुतां॒पृष॑तीर्ग्गच्छव्व॒शापृश्नि॑र्भू॒त्वा दिवं॑गच्छ॒ततो॑नो॒व्वृष्टि॒माव॑ह।। च॒क्षु॒ष्पाऽअ॑ग्नेऽसि॒चक्षु॑र्म्मे॑पाहि।। अष्टवसुभ्यः स्वाहा।।

ॐ नम॑स्तेरुद्रम॒न्यव॑ऽउ॒तोत॒ऽइष॑वे॒नम॑ः।। बा॒हुभ्या॑मु॒तते॒नम॑ः।। एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा।।

ॐ य॒ज्ञोदे॒वानांप्रत्यै॑तिसु॒म्नमादि॑त्यासो॒भव॑तामृड॒यन्त॑ः।। आवो॒ऽर्व्वाची॑सुम॒तिर्व॑वृत्याद॒ꣳहोश्चि॒द्याव्व॑रिवो॒वित्त॒रास॑त्।। द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा।।

ॐ अ॒श्विना॒तेज॑सा॒चक्षु॑ःप्प्रा॒णेन॒सर॑स्वतीव्वी॒र्य्य॑म् ।। व्वा॒चेन्द्रो॒बले॒नेन्द्रा॑यदधुरिन्द्रियम्।। अश्विभ्यां स्वाहा।।

ॐ विश्वे॑देवास॒ऽआग॑तशृणु॒ताम॑ऽइ॒मꣳहव॑म्।। एदंब॒र्हिर्न्निषी॑दत।। उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि॒व्विश्वे॑भ्यस्त्वादे॒वेभ्य॑ऽए॒षते॒यो॒ति॒र्व्विश्वे॑भ्यस्त्वादे॒वेभ्य॑ः।। सपैतृक-विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।।

ॐ अ॒भित्यंदे॒वꣳस॑वि॒तार॑मो॒ण्यो॑ःक॒विक्र॑तु॒मर्च्चा॑मिस॒त्यस॑वꣳरत्न॒धाम॒भिप्प्रि॒यंम॒तिंक॒विम्।। ऊर्द्ध्वा॒यस्या॒ऽमति॒र्भाऽअदि॑द्युत॒त्सवी॑मनि॒हिर॑ण्यपाणिरमिमीत सु॒क्क्रतु॑ःकृ॒पास्व॑ः।। प्र॒जाभ्य॑स्त्वाप्प्र॒जास्त्वा॒नु॒प्प्राण॑न्तुप्रजास्त्वम॑नु॒प्प्राणि॑हि।। सप्तयक्षेभ्यःस्वाहा।।

ॐ नमो॑स्तुस॒र्प्पेभ्यो॒येकेच॑पृथि॒वीमनु। येऽअ॒न्तरि॑क्षे॒ येदि॒वि तेभ्य॑ः स॒र्प्पेभ्यो॒ नम॑ः।। अष्टकुलनागेभ्यः स्वाहा।।

ॐ ऋ॒ता॒षाडृ॒तधा॑मा॒ग्निर्ग्ग॑न्ध॒र्व्वस्तस्यौष॑धयोप्प्स॒रसो॒मु॒दो॒नाम॑।। सन॑ःऽइ॒दम्ब्रह्म॑क्ष॒त्रम्पा॑तु॒तस्मै॒स्वाहा॒ व्वाट्ताभ्य॒ꣳस्वाहा॑।। गन्धर्वाऽप्सरोभ्यः स्वाहा।।

ॐ यदक्क्रन्दःप्प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्राद्दुत वा पुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमहिजातंतेऽअर्व्वन्॥ स्कन्दाय स्वाहा॥

ॐ आशुःशिशानोव्वृषभोनभीमोघनाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम्॥ सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरःशतꣳसेनाऽअजयत्त्साकमिन्द्रः॥ नन्दीश्वराय स्वाहा॥

ॐ कार्षिरसिसमुद्द्रस्यत्त्वाक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥ शूलाय स्वाहा॥

ॐ कार्षिरसिसमुद्द्रस्यत्त्वाक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥ महाकालाय स्वाहा॥

ॐ शुक्रज्ज्योतिश्चचित्रज्ज्योतिश्चसत्यज्ज्योतिश्चज्ज्योतिष्माँश्च॥ शुक्रश्चऽ ऋतपाश्चात्यꣳहाः॥ दक्षादिसप्तप्रजापतिभ्यः स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन॥ ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ दुर्गायै स्वाहा॥

ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाꣳसुरे स्वाहा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःप्प्रतितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः॥ अक्षन्न्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्॥ स्वधासहितपितृभ्यः स्वाहा॥

ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्न्थांय्यस्तेऽअन्न्यऽइतरोदेवयानात्॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्ब्रवीमिमानःप्प्रजाꣳरीरिषोमोतव्वीरान्॥ मृत्युरोगाभ्यां स्वाहा॥

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगब्भर्धमात्त्वमजासिगब्भर्धम्॥ गणपतये स्वाहा॥

ॐ अप्प्स्वग्ग्नेसधिष्ट्ववसौषधीरतुरुध्यसे॥ गब्भेसञ्जायसेपुनः॥ अद्भ्यः स्वाहा॥

ॐ मरुतो यस्यहिक्षये पाथादिवोव्विकहसः॥ ससुगोपातमोजनः॥ मरुद्भ्यः स्वाहा॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यक्षानःशर्म्मसप्प्रथाः॥ पृथिव्यै स्वाहा॥

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा॥

ॐ समुद्रोऽसिनमभस्वार्द्रदानुः॥ शम्भूर्म्मयोभूरभिमावाहिस्वाहा॥ मारुतोऽसि मरुतांगणःशम्भूर्म्मयोभूरभिमावाहि॥ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा॥

ॐ प्रपर्व्वतस्यवृषभस्यपृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानाः॥ ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताअहिम्बुध्न्यमनुरीयमाणाः॥ विष्णोर्व्विक्रमणमसिविष्णोर्व्विक्रान्तमसिविष्णोःक्रान्तमसि॥ मेरवे स्वाहा॥

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गदायै स्वाहा॥

ॐ त्रिꣳशद्धामव्विराजतिव्वाक्पतङ्गायधीयते॥ प्रतिवस्तोरहद्युभिः॥ त्रिशूलायस्वाहा॥

ॐ महाँ२॥इन्द्रोवज्रहस्तःषोडशीशर्म्मयच्छतु॥ हन्तुपाप्मानंयोऽस्मान्द्वेष्टि॥ उपयामगृहीतोऽसिमहेन्द्रायत्त्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायत्वा॥ वज्राय स्वाहा॥

ॐ व्वसुचमेव्वसतिश्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्चमेऽर्थश्चमएमश्चमइत्याचमेगतिश्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥ शक्तये स्वाहा॥

ॐ इडऽएह्यदितऽएहिकाम्म्याऽएत॥ मयिवःकामधरणंभूयात्॥ दण्डाय स्वाहा॥

ॐ खड्गोव्वैश्वदेवःश्वाकृष्णःकर्णोगर्द्दभस्तरक्षुस्तेरक्षसामिन्द्रायसूकरःसिꣳहोमारुतःकृकलासःपिप्पकाशकुनिस्तेशरव्यायैविश्वेषांदेवानांपृषतः॥ खड्गाय स्वाहा॥

ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्मदवाधमंव्विमध्यमꣳश्रथायअथाव्वयमादित्यव्व्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम॥ पाशाय स्वाहा॥

ॐ अꣳशुश्चमेरश्मिश्चमेऽदाब्भ्यश्चमेऽधिपतिश्चमऽउपाꣳशुश्चमेऽन्तर्य्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमेऽआश्विनश्चमेप्प्रतिप्प्रस्थानश्चमेशुक्रश्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ अङ्कुशाय स्वाहा॥

ॐ आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः॥ गौतमाय स्वाहा॥

ॐ अयंदक्षिणाव्विश्वकर्म्मातस्यमनोव्वैश्वकर्म्मणंग्रीष्मोमानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मीत्रिष्टुभःस्वारꣳस्वारादन्तर्य्यामोऽन्तर्य्यामात्पञ्चदशःपञ्चदश भरद्वाजऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतयात्वयामनोगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ भरद्वाजाय स्वाहा॥

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्यश्रोत्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थीमन्थिनऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद्वैराजंव्विश्वामित्रऽऋषिःप्रजापतिगृहीतयात्वयाश्रोत्रंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ विश्वामित्राय स्वाहा॥

ॐ त्र्या॒यु॒षंज॒मद॑ग्ग्नेःक॒श्यप॑स्यत्र्यायु॒षम्॥ यद्दे॒वेषु॑त्र्यायु॒षंतन्नो॑अस्तुत्र्यायु॒षम्॥ कश्यपाय स्वाहा॥

ॐ अ॒यंप॒श्चाद्वि॒श्वव्य॑चा॒स्तस्य॒चक्षु॑र्वैश्वव्य॒चसंव्व॒र्षाश्चा॑क्षु॒ष्या॒जग॑तीव्वा॒र्षी जग॑त्या॒ऽऋक्स॑मृक्स॑माच्छु॒क्रःशु॒क्रात्स॑प्तद॒शःस॑प्तद॒शाद्वै॑रू॒पंज॒मद॑ग्ग्नि॒र्ऋषिः प्प्र॒जाप॑तिगृहीतया॒त्वया॒चक्षु॑र्ग्गृह्णामिप्प्र॒जाब्भ्यः॥ जमदग्नये स्वाहा॥

ॐ अ॒यंपु॒रोभु॒वस्तस्य॑प्प्रा॒णोभौ॑वाय॒नोव्व॑स॒न्तःप्प्रा॑णाय॒नोगा॑य॒त्रीव्वा॑स॒न्तीगा॑य॒त्र्यै गा॑य॒त्रंगा॑य॒त्रादु॑पा॒ꣳशुरु॑पा॒ꣳशोस्त्रि॒वृत्त्रि॒वृतो॑रथान्त॒रंव्व॑सिष्ठ॒ऽऋषिःप्प्र॒जाप॑तिगृहीतया॒त्वया प्प्रा॒णंगृ॑ह्णामिप्प्र॒जाब्भ्यः॥ वसिष्ठाय स्वाहा॥

ॐ अत्र॑पितरोमादयद्ध्वंय्यथाभा॒गमावृ॑षायद्ध्वम्॥ अमि॑मदन्तपि॒तरो॑य्यथाभा॒गमा वृ॑षायिषत॥ अत्रये स्वाहा॥

ॐ तंपत्नी॑भि॒रनु॑गच्छेमदेवाःपु॒त्त्रैर्ब्भ्रातृ॑भिरु॒तवा॒हिर॑ण्ण्यैः॥ नाकं॑गृब्भ्णा॒नाःसु॒कृतस्य॑लो॒केतृ॒तीये॑पृ॒ष्टेऽअधिरोच॒नेदि॒वः॥ अरुन्धत्यै स्वाहा॥

ॐ अ॒दि॑त्यै॒रास्नासीन्द्रा॒ण्ण्याऽउ॒ष्ष्णीषः॥ पूषासि॑घ॒र्म्माय॑दीष्ष्व॥ ऐन्द्र्यै स्वाहा॥

ॐ अम्बे॒अम्बि॒केऽम्बालिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्व॒कःसुभ॑द्रिका ङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्॥ कौमार्यै स्वाहा॥

ॐ इन्द्राया॑हिधि॒येषि॒तोव्विप्प्र॑जूतःसु॒ताव॑तः॥ उप॒ब्ब्रह्मा॑णिव्वा॒ग्घतः॥ ब्राह्म्यै स्वाहा॥

ॐ इन्द्र॑स्यक्क्रो॒डोऽअदि॑त्यैपाज॒स्यं॒दि॒शांज॒त्रवोऽदि॑त्यैभ॒सज्जी॒मूता॑न्हृदयौप॒शेना॒न्तरि॑क्षंपुरी॒तता॒नभ॑ऽउद॒र्य्ये॒णचक्रवा॒कौम॑तस्न्नाब्भ्यां॒दिवं॑व्वृ॒क्काब्भ्यां॑गि॒रीन्प्ला॒शिभि॒रुप॑लान्प्ली॒ह्नाव॒ल्मीका॑न्क्लो॒मभि॑ग्ग्लौ॒भिर्ग्गु॒ल्म्मान्हि॒राभिः॑स्स्रव॑न्तीर्ह्र॒दान्कु॒क्षिब्भ्या॑ꣳसमु॒द्रमु॒दरे॑णव्वैश्वान॒रंभस्म॑ना॥ वाराह्यै स्वाहा॥

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बालिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्व॒कःसुभ॑द्रिकाङ्का म्पीलवा॒सिनी॑म्॥ चामुण्डायै स्वाहा॥

ॐ आप्प्याय॑स्व॒समे॑तुतेव्वि॒श्श्वतः॑सोम॒व्वृष्ण्ण्याम्॥ भवा॒व्वाज॑स्यसङ्ग्थे॥ वैष्णव्यै स्वाहा॥

ॐ यते॑रुद्द्रशि॒वात॒नूरघो॒राऽपाप॑काशिनी॥ तया॑नस्त॒न्न्वा॒शन्त॑मया॒गिरि॑शन्ता॒भिचा कशीहि॥ माहेश्वर्यै स्वाहा॥

ॐ सम॑ख्ख्येदे॒व्व्याधि॒यासन्द॑क्षि॒णयो॒रुच॑क्षसा॥ माम॒ऽआयुःप्प्रमो॑षी॒र्म्मोऽअ॒हंतव॑ व्वी॒रंव्विदेय॒तव॑देविस॒न्दृशि॥ वैनायक्यै स्वाहा॥

आवाहितदेवतानां हवनं परिपूर्णम्

◆

अग्निपूजनम्

संकल्प:—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः ---प्रवरः---नामाऽहं कृतस्य हवनफलसाफल्यतासिद्ध्यर्थं स्वाहास्वधायुताय श्रीइष्टदेवतासहिताय अग्निपूजनं करिष्ये।

श्रीइष्टदेवताध्यानम्—हाथ में अक्षतपुष्प लेकर अग्नि में इष्ट का ध्यान करे।

ॐ पाशाश्चापासृक्कपालेऋणीसृञ्छूलहस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां, देवीं ध्यायेप्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥
ज्वलत्कोटिबालार्कभासारुणाङ्गीं सुलावण्यशृङ्गारशोभाभिरामाम्।
महापद्मकिञ्जल्कमध्ये विराजत्त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्रीभवानीम्॥२॥
क्वणत्किंकिणीनूपुरोद्भासिरत्न, प्रभालीढलाक्षार्द्रपादारविन्दाम्।
अजेशाच्युताद्यैःसुरैःसेव्यमानां महादेविमन्मूर्ध्नि ते भावयाम॥३॥
सुशोणाम्बराबद्धनीवीविराजन् महारत्नकाञ्चीकलापं नितम्बम्।
स्फुरद्दक्षिणावर्तनाभिं च तिस्त्रो बली रम्यते रोमराजीं भजेहम्॥४॥
इष्टशक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैः दोर्धैदोर्भिधारयन्तं जपाभम्।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः॥५॥

ॐ अग्ग्ने॒नय॒सु॒पथा॑रायेऽअस्म्मान्विश्श्वा॑निदेवव्व॒युना॑निविद्वान्॥ यु॒यो॒द्ध्य॒स्म्मज्जु॒हुराणमेनो॒भूयि॑ष्ठांते॒नम॑उक्तिंव्विधेम॥ ॐ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय वह्नये वौषट्।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहास्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि॥

अग्निपूजनं परिपूर्णम्

◆

स्विष्टकृद्धोमः

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥

अग्निपूजनपूर्वक स्विष्टकृत् हवन के पश्चात् भूरादि नवाहुति प्रदान करे।

स्विष्टकृद्धवनं परिपूर्णम्

◆

भूरादिनवाहुतिः

ॐ भूः स्वाहा॥ इदमग्नये न मम॥१॥ एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ भुवः स्वाहा॥ इदं वायवे न मम॥२॥ एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ स्वः स्वाहा॥ इदं सूर्याय न मम॥३॥ एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ त्वन्नो॑ऽअग्ने॒ व्वरु॑णस्य व्वि॒द्वान्दे॒वस्य॒ हेडो॒ऽअव॑यासिसीष्ठाः॥ यजि॑ष्ठो व्वह्नि॑तम॒ꣳ शोशु॑चानो व्विश्वा॒ द्वेषा॑ꣳसि॒ प्रमु॑मुग्ध्यस्म्मत् स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥४॥ एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ सत्त्वन्नो॑ऽअग्ने॒ऽव॒मो भ॑वो॒ती नेदि॑ष्ठोऽअ॒स्याऽउ॒षसो॒ व्व्यु॑ष्टौ॥ अव॑यक्ष्व नो॒ व्वरु॑ण॒ꣳ ररा॑णो व्वी॒हि मृ॑डी॒कꣳ सु॒हवो॑ नऽएधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥५॥ एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्त्वमयाऽअसि॥ अयानोयज्ञंव्वहास्ययानोधेहिभेषजꣳ स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥६॥ एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ येतेशतंव्वरुणयेसहस्रंयज्ञियाःपाशाव्वितताम‌हान्तः॥ तेभिर्न्नोऽअद्यसवितोतविष्णुर्व्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतःस्वर्क्काः॥ स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥७॥ एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ उदु॑त्तमंव्व॑रुणपाश॑म॒स्मदवा॑ध॒मंव्विम॑ध्य॒मꣳ श्र॑थाय॥ अथा॑व्वयमा॑दित्यव्व्र॒तेतवा नाग॑सोऽअदि॑तयेस्याम॥ स्वाहा इदं वरुणायादित्यायादितये च न मम॥८॥ एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम॥९॥ एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

नवाहुतिः परिपूर्णम्

●

कुमारीसुवासिनीपूजनम्

पूजागृह में सुवासिनी को लाकर प्रदक्षिणा करके, उद्वर्तनादि से स्नपन कराकर वस्त्रादि से अलंकृत करके पीठ पर समावेशित कर, अपना षडङ्गादिन्यास कर पूजनीया कुमारी का न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लाँ कुलकुमारिके हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लूँ कुलकुमारिके शिखायै वषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लैँ कुलकुमारिके कवचाय हुम्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लौँ कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट्।

षडङ्गन्यास के बाद कुमारी के तत्तद अङ्गों पर मातृकान्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः कुलकुमारिके शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ नमः कुलकुमारिके मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ नमः कुलकुमारिके वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ नमः कुलकुमारिके वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ नमः कुलकुमारिके वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऌँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॡँ नमः कुलकुमारिके वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ नमः कुलकुमारिके अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ नमः कुलकुमारिके अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः कुलकुमारिके जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः नमः कुलकुमारिके कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ नमः कुलकुमारिके वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ नमः कुलकुमारिके वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ नमः कुलकुमारिके वाममणिबन्धे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ नमः कुलकुमारिके दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ नमः कुलकुमारिके दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डँ नमः कुलकुमारिके दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ढँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ णँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ नमः कुलकुमारिके वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ थँ नमः कुलकुमारिके वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दँ नमः कुलकुमारिके वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ नमः कुलकुमारिके दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फँ नमः कुलकुमारिके वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बँ नमः कुलकुमारिके पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भँ नमः कुलकुमारिके नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ नमः कुलकुमारिके उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ नमः कुलकुमारिके हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ नमः कुलकुमारिके दक्षांशे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ नमः कुलकुमारिके ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ नमः कुलकुमारिके वामांशे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ळँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

ध्यानम्—दोनो हाथों में पुष्प लेकर ध्यान कर समर्पित करे।

शङ्खेन्दुं धवलां दिव्यां द्विभुजां वरदाभयाम्।
चन्द्रमध्यमहामोजभावाभावविराजिताम् ॥

शङ्ख तथा इन्दु के समान धवल, दिव्य, दो भुजाओं वाली, वर तथा अभय प्रदान करने वाली, चन्द्र के मध्य, महा ओजवान, भाव और अभावयुक्त देवी का ध्यान करता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इदं पाद्यं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इदं मधुपर्कं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इदमाचमनीयं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इदमनुलेपनं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐते अक्षताः कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एतानि पुष्पाणि कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एष धूपं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एष दीपं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इदं नैवेद्यं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इदं ताम्बूलं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इदं फलं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एषा दक्षिणा कुलकुमारिकायै नमः।

प्रार्थना—

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
पूजां गृहाण कौमारि! जगन्मातर्नमोस्तुते॥१॥

जगत्पूज्य, सम्पूर्ण जगत् में वन्द्य, सर्वशक्तिस्वरूपिणी, जगन्माता कौमारी पूजन ग्रहण करें, आपको नमस्कार है।

त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्॥२॥

त्रिपुरा देवी, सत्त्वरजतम तीन गुणोंवाली, सबको धारण करनेवाली, ज्ञानमार्गस्वरूप वाली, तीनो लोकों में वन्दित, त्रिमूर्ति रूपिणी का मैं पूजन करता हूँ।

कलात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥३॥

षोडश कलावाली, काल को भी भयभीत करनेवाली, करुणामयी, शिव के हृदय में रहनेवाली शिवा, करुणामयी जननी, हमेशा वर्तमान रहनेवाली कल्याणी देवी की मैं पूजा करता हूँ।

अणिमादि गुणोपेतामकारादि स्वरात्मिकाम्।
शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥४॥

अणिमादि सिद्धियों को प्रदान करनेवाली, गुणों की खान, अकारादि स्वर रूपवाली, शक्ति की ही एक भेद रूप लक्ष्मी तथा रोहिणी देवी की मैं पूजा करता हूँ।

कलाधारां कलारूपां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम्॥५॥

षोडश कलाओं को धारण करनेवाली, कलाओं के रूपवाली, कालचक्र स्वरूपिणी, समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, सदैव करुणा की वर्षा करनेवाली, कामिनी देवी की मैं पूजा करता हूँ।

चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्ड विनाशिनीम्।
प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्॥६॥

चण्डधारा, चण्डमायारूपिणी, चण्डमुण्ड का विनाश करनवाली, देवताओं की ईश्वरी चण्डिका देवी को मैं प्रणाम तथा पूजा करता हूँ।

सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवी शाङ्करीं प्रणमाम्यऽहम्॥७॥

सुख और आनन्द को देनेवाली, शान्त रूप में स्थित, समस्त देवताओं के द्वारा पूज्य, सभी भूतों में व्याप्त रहनेवाली, शाङ्करी देवी की पूजा करता हूँ।

दुर्गमे दुःस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम्॥८॥

दुर्गम, दुस्तर, दुःख त्रय (आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक) का विनाश करने वाली, दुर्गादेवी की मैं भक्ति पूर्वक पूजन करता हूँ, दुर्गा देवी को नमस्कार है।

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्॥९॥

सोने के रंग की आभा के सदृश सुन्दर, सुखसौभाग्य को देनेवाली, सुभद्र की जननी सुभद्रा देवी को मैं प्रणाम तथा पूजा करता हूँ।

ॐ ह्रीँ हंसः कुलकुमारिकां श्रीपादुकां पूजयामि।

प्रार्थना के बाद तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदानकर महाविद्या का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सन्ध्यायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्रिमूर्त्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सुभगायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उमायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कुब्जिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालसङ्कर्षिण्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपराजितायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भैरव्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महालक्ष्म्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पीठनायिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षेत्रज्ञायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चर्चिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मूलमन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदानकर प्रदक्षिणापूर्वक प्रणाम करे।

कुमारीसुवासिनीपूजनं परिपूर्णम्

◆

छागादिबलिदानम्

छागादि (कूष्माण्ड) बलिदानम्—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालिके काली रक्षिणी स्वाहा।

युग्म बलि को सिन्दूरादि से अलंकृत करके अर्घ्योदक जल से तीन बार सम्प्रोक्षण कर स्नान कराये।

ॐ वाराही यमुना गङ्गा करतोया सरस्वती।
कावेरी चन्द्रभागा च सिन्धु भैरव सागर॥१॥
पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च।
पराय परमेष्ठिने नमः हूँकारमूर्तये॥२॥

वाराही, यमुना, गङ्गा, सरस्वती, कावेरी, चन्द्रभागा, सिन्धु सागर तथा भैरव, हेमकूट स्थित क्रोध मूर्ति परा-परमेष्ठी को पशुपाश-विनाश के लिए मैं नमस्कार करता हूँ।

गन्धोदक से तीन बार प्रोक्षण करके, पुष्पाञ्जलि लेकर मन्त्रपाठ कर समर्पित करे।

ॐ कूष्माण्ड त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थिताः।
प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम्॥१॥

बलिरूप से कूष्माण्ड तुम महाभाग्य से उपस्थित हुए हो, कूष्माण्डरूपी बलि को मैं सदा भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ॥१॥

चण्डिकाप्रीतिकामस्य दातुरापद् विनाशिने।
चण्डिकाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः॥२॥

समस्त आपत्तियों के विनाश तथा चण्डिका को प्रीति प्रदान करने के लिए, चण्डिका के बलि! तुम्हें नमस्कार है॥२॥

यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोवधः॥३॥

यज्ञ के लिए स्वयम्भू ने पशुओं की निर्मित किया है अतः यज्ञ में वध योग्य तुम्हारा घात करता हूँ॥३॥

पार्श्वपूजनम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जयन्त्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मङ्गलायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ काल्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भद्रकाल्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मानस्तोकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विजयायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपराजितायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनन्तायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अङ्गपूजनम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रुधिरवदनायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चण्डिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चन्द्रार्काभ्यां नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बृहस्पतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उग्रदन्तिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महादन्तिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पृथिव्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धर्माय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

लौहखड्गपूजनम्—

ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्॥१॥

रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिकम्।
पिबमानं च रुधिरं भुञ्जानं कव्यसंहतिम्॥२॥

अतिशय उग्र तथा उग्र नयन, रक्त माला धारण किये हुए, रक्त का अनुलेपन किये हुए, कृष्ण वर्ण वाले, पिनाक धनुष धारण किये हुए, रक्त वस्त्र धारण किये हुए, हाथ में पान पात्र धारण किये हुए, हे खड्ग! पीने योग्य रुधिर तथा भोज्य कव्य समर्पित है।

ॐ कालिका कालि वज्रेश्वेरी लौहदण्डाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। तीन बार बलि का संप्रोक्षण करे।

ॐ ह्रीँ। सिन्दूर से मन्त्र को खड्ग के उपर लिखे तथा बलि के कर्ण मे बलि गायत्री सुनाये।

बलिगायत्रीः—

ॐ ह्रीँ बलिरूपाय विद्महे देवप्रियाय धीमहि तन्नो पशुः प्रचोदयात्।

खड्गप्रार्थना—

ॐ असिर्विनासनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते॥१॥

तीक्ष्ण धार, दुरासद, विनाशक, दक्ष, असि, धर्मपाल, श्रीगर्भ तथा विजय को नमस्कार है॥१॥

इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा।
नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः॥२॥

ब्रह्मा ने तुम्हारे इन आठ नामों को स्वयं रचा है, तुम्हारा कृत्तिका नक्षत्र तथा गुरु महेश्वर है॥२॥

रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः।
पितापितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा॥३॥

रोहिणी, ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि देवता सदा हमारी रक्षा करें॥३॥

नीलजीमूतसङ्काशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः।
भावशुद्धोऽमर्शणश्च अर्जितास्तथैव च॥४॥

नीलजीमूत के समान, काले दाँतों वाले, कृशोदर, भाव की शुद्धि, तथा अमर्शण के लिए तुम्हें अर्जित किया है॥४॥

इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः।
तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः॥५॥

इसी से महिषासुर का वध किया गया था, शुद्ध तीक्ष्ण धारवाले खड्ग! तुम्हें नमस्कार है॥५॥

श्रीमहाविद्याकालिका के जिह्वा की बुद्धि से एक बार मे ही घात करे।

ॐ पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि तन्नश्छागः प्रचोदयात्।

घात के बाद सम्पूर्ण रुधिर मुण्डादि देवी के आगे बराबर भाग करके दीपक जलाये।

ॐ क्रौँ क्रौँ नमो नमः।

प्रत्येक मुण्ड में दीप प्रज्वलित करके रुधिरादि से तर्पण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चामुण्डां तर्पयामि नमः पूर्वे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ योगिनीं तर्पयामि नमः दक्षिणे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डाकिनीं तर्पयामि नमः उत्तरे

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विदारिकां तर्पयामि नमः आग्नेयां।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पापराक्षसीं तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पूतनां तर्पयामि नमः वायव्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालिकां तर्पयामि नमः ईशाने।

ॐ अद्य दशवर्षावच्छिन्न श्रीमहाविद्याकालिकाप्रीतिकामिमं छागरुधिरं समुण्डं विष्णुदैवतं भगवत्यै महाविद्यायै तुभ्यमहं सम्प्रददे। हाथ में जल लेकर समर्पित करे।

विधिपूर्वक पात्रादि संस्कार करके यजमान सपरिवार नीराजन करे।

नीराजनविधिः—सर्व प्रथम दीपक का संस्कार करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फट्। दीपपात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमः। दीपपात्र का अभ्यर्चन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ। द्वादशबार जपकर संशोषण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ। षोडशबार जपकर संदहन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ। वामहस्ततल को दक्षहस्तपृष्ट पर रखकर निवेशन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ। षोडशबार जपकर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जय ध्वनि मातः स्वाहा। घण्टा का पूजन करे।

दीपज्योतिपूजनम्—दीपक का संस्कार करके दीप का पूजन करे।

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पाति नो भीतिर्भद्रकाली नमोऽस्तु ते॥

भद्रकालि! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होने वाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करनेवाला तुम्हारा त्रिशूल भय से हमारी रक्षा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महाविद्यायै ज्वालामालिन्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे।

जले ज्वाला स्थले ज्वाला ज्वाला पर्वतमस्तके।
त्रैलोक्यव्यापिनी ज्वाला ज्वाला देवि नमोऽस्तु ते॥

जल में, स्थल में, पर्वत के ऊपर, तीनों लोकों में व्याप्त ज्वाला (ज्योति) स्वरूपिणी महाकालिका ज्वाला देवी को नमस्कार है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महाविद्याकालिकायै ह्रीँ ज्वालामालिन्यै नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महाविद्यायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मूल मन्त्र से पूजनकर एक बार नाभिप्रदेश तक, दो बार स्तनमण्डल तक, चार बार मुखमण्डल तक पुनः सात बार पूरे शरीर तक कुल चौदह बार आरती घुमाये।

नीराजनम् (आरती)—

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजःपितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवःसदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽ आत्त्वेषंब्बर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि॥ अग्ग्निःप्प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त॥

जगजननी जय! जय ! मा! जगजननी जय! जय!।
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!॥
तू ही सत्-चित्, सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
मैया सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर,
सत्य सनातन सुन्दर, पर-शिव सुर-भूपा॥१॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
आदि अनादि अनामय, अविचल अविनाशी।
मैया अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर,
अमल अनन्त अगोचर, अज आनन्दराशी॥२॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी।
मैया अकल कलाधारी।
कर्त्ता विधि, भर्त्ता,
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि हर संहारकारी॥३॥

जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
तू विधि वधू, रमा तू, तू उमा महामाया।
मैया तू उमा महामाया।
मूल प्रकृति विद्या तू,
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी जाया॥४॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
राम कृष्ण तू, सीता व्रजरानी राधा।
मैया सीता व्रजरानी राधा।
तू वाच्छा कल्पद्रुम,
तू वाच्छा कल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा॥५॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
दश विद्या नव दुर्गा नाना शस्त्रकरा।
मैया नाना शस्त्रकरा।
अष्टमातृका योगिनि,
अष्टमातृका योगिनि, नव-नव, रूप धरा॥६॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
मैया महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि,
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डव लासिनि तू॥७॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
सुर मुनि मोहिनि, सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
मैया सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट स्वरूपा,
विवसन विकट स्वरूपा, प्रलयमयी धारा॥८॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
तू ही स्नेह सुधामयि, तू अति गरल मना।
मैया तू अति गरल मना।
रत्नविभूषित तू ही,
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थितना॥९॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
मूलाधारनिवासिनि, इह पर सिद्धिप्रदे।
मैया इह पर सिद्धिप्रदे।

कालातीता काली,
कालातीता काली, कमला तू वरदे॥१०॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी।
मैया नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी,
भेदप्रदर्शिनि वाणी, विमले! वेदत्रयी॥११॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
हम अति दीन दुःखी, मा! विपत जाल घेरे।
मा! विपत जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी,
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥१२॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
निज स्वभाव वश, जननी! दयादृष्टि कीजै।
मैया! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणमयि!
करुणा कर करुणमयि! चरण शरण दीजै॥१३॥
जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!।
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि॥

कर्पूर के समान गौर, करुणा के अवतार, भवानी के सहित शिव हमारे हृदय में वास करें॥१॥

ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं च यत्।
आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण जगदीश्वरि॥२॥

कर्पूर से युक्त बत्ती को जलाकर दिव्य आरती करता हूँ, हे जगदीश्वरि! इसे ग्रहण करें॥२॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितं।
आरार्तिक्यमहं कुर्मः पश्य मे वरदो भव॥३॥

केले के वृक्ष से उत्पन्न कर्पूर से आरती करता हूँ, हे महादेवि! कृपापूर्वक दृष्टि से देखकर वर प्रदानकर्त्ता बनें॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महाविद्यायै नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि॥

जलेन शीतलीकरणम्—शङ्खपात्र में जल लेकर देवता के चारो तरफ घुमायें।

पात्रमध्ये स्थितं तोयं, भ्रामितं देवतोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां, सर्वपापं व्यपोहतु॥

पात्र के मध्य में जल रखकर देवता के ऊपर भ्रामित करके मनुष्यों के अङ्ग लगने पर सभी पापों से मुक्त कर देता है।

पुष्पैः देवाभिवन्दनम्, आरार्तिक्यग्रहणम्, हस्तौ प्रच्छालनम्, पुष्पसंग्रहणम्, मन्त्रपुष्पाञ्जलिः। पुष्प से देवताओं का अभिनन्दन करके आरती ग्रहण करने के बाद दोनो हाथ धोकर दोनो हाथों में फूल लेकर पुष्पाञ्जलि बोलकर भगवती को तथा सभी देवताओं को समर्पित करे।

पुष्पाञ्जलिविधिः—दोनों हाथ मे पुष्प लेकर पुष्पाञ्ज्ली प्रदान करे।

ॐ य॒ज्ञेन॑य॒ज्ञम॑यजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्मा॑णिप्रथ॒मान्या॑सन्॥ तेह॒नाकं॑म्महि॒मान॑ः सचन्त॒यत्र॒पूर्व्वे॑सा॒द्ध्याः॒सन्ति॑दे॒वाः॒॥ ॐ राजाधिराजायप्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणायकुर्महे समेकामान् कामकामायमह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्तिसाम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां तदापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे॥ आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भावानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वरि॥

ऋतुओं के अनुसार उत्पन्न विभिन्न प्रकार के सुगन्धयुक्त पुष्पों की पुष्पाञ्जलि हम प्रदान करते है, स्नेहपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ महाविद्यायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि।

तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदानकर योनिमुद्रा प्रदर्शित करके छत्रचामर डुलाकर पुनः पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

बुद्धिः शरासने क्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च।
मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता॥१॥
ध्वनयो गीतिरूपेण शब्दवाद्यप्रभेदतः।
छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो॥२॥
सुषुम्नाध्वजरूपेण प्राणाद्यावाशरात्मना।
अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना॥३॥

इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीन् रथवर्त्मना।
मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः॥४॥
सर्वमन्यत वा क्लृप्तं तवोपकरणात्मना।

नीराजनं परिपूर्णम्

●

बलिदानविधिः

दिग्पालादिबलिदानम्

समस्त दिग्पाल, समस्त ग्रहमण्डलस्थ समस्त देवताओं को दधि (दही) माष (उर्द) तथा भक्त (चावल को उबाल कर) समस्त सामग्री मिश्रितकर उस पर दीपक जलाकर बलिदान प्रदान करे।

एकतन्त्रेण दिग्पालादिबलिदानम्—एक बार में ही सबका बलिदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च दिग्पालानां प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ दि॒विपृ॒ष्टोऽअ॑रोचता॒ग्निर्वै॑श्वान॒रोबृ॒हन्॥ क्ष्मया॑वृधा॒नऽओज॑सा॒चनो॑हितो॒ज्ज्योति॑षाबाधते॒नम॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दिग्पालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः दिग्पालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

दिग्पालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिन् समर्पयामि।

भो दिग्पालाः! ऐषु सदीपदधिमाषभक्तबलिषु गृह्णन्तु स्वां स्वां दिशं रक्षन्तु बलिं भक्षन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवन्तु।

अनेन बलिदानेन दिग्पालाः प्रीयन्तां न मम।

इन्द्राय बलिदानम्—इन्द्र के लिए बलिदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इन्द्रदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्र॒ꣳहवे॑हवेसु॒हव॒ꣳशूर॒मिन्द्र॑म्॥ ह्वया॑मिश॒क्रंपु॑रुहू॒त मिन्द्र॑ꣳस्व॒स्तिनो॑म॒घवा॑धा॒त्विन्द्र॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो इन्द्र! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां न मम।

अग्नये बलिदाम्—अग्नि के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अग्निदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चवन्द्य॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्य निमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अग्नि! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयतां न मम।

यमाय बलिदानम्—यम के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यमदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो यम! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन यमः प्रीयतां न मम।

निर्ऋतये बलिदाम्—निर्ऋति के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च निर्ऋतिदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ अ॒सु॑न्वन्त॒मय॑जमानमिच्च्छस्ते॒नस्ये॒त्यामन्न्वि॑हि॒तस्क॑रस्य॥ अ॒न्न्यम॒स्म्मदि॑च्च्छ॒सात॑ऽइ॒त्यानमो॑देविनिर्ऋते॒तुब्भ्य॑मस्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो निर्ऋति! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयतां न मम।

वरुणाय बलिदानम्—वरुण के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वरुणदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑माना॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्ब्भिः॑॥ अहे॑डमानो व्वरुणेह॒बोद्ध्युरु॑शꣳस॒मान॒ऽआयु॒ꣳप्प्रमो॑षीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वरुण! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममसकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयतां न मम।

वायवे बलिदानम्—वायु के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः ------प्रवरः------**नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वायुदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ आनो॑नि॒युद्भिः॑श॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳसह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहिय॒ज्ञम्।। वायो॑ऽअ॒स्मिनत्सव॑नेमादयस्वयू॒यंपा॑तस्व॒स्तिभिः॒सदा॑नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वायु! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयतां न मम।

सोमाय बलिदानम्—सोम के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः ------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च सोमदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ व्र॒यꣳसो॑मव्र॒तेतव॒मन॑स्त॒नूषु॒बिभ्र॑तꣳ।। प्र॒जाव॑न्तꣳसचेमहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो सोम! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयतां न मम।

ईशानाय बलिदानम्—ईशान के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च ईश्वरप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ तमीशा॑नु॒ञ्जग॑तस्त॒स्थुष॒स्पतिं॑धियञ्जि॒न्न्वमव॑सेहूमहेव्व॒यम्।। पूषानो॒यथा॒व्वेद॑सा॒मस॑ धेर॑क्षितापा॒युरद॑ब्धः॒स्व॒स्तये॑।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ईशानाय साङ्गय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ईशान! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन ईश्वरः प्रीयतां न मम।

ब्रह्मणे बलिदानम्—ब्रह्मा के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च ब्रह्मप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ अ॒स्मेरु॒द्द्रामे॒हना॒पर्व्व॑तासोव्वृ॒त्रहत्ये॒भर॑हूतौस॒जोषाः॑।। यःशꣳस॑तेस्तुवतेधायि॑ पज्ज्रऽइन्द्र॑ज्ज्येष्ठाऽअ॒स्म्माँ२।।ऽअ॒वन्तुदे॒वाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ब्रह्मणे साङ्गय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि।

भो ब्रह्मा! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयतां न मम।

अनन्तायबलिदानम्—अनन्त के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः**

-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अनन्तप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ स्यो॒नापृथिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेशनी।। यक्षान॒ꣳशर्म्मस॒प्प्रथाꣳ ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अनन्त! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम।

नवग्रहाणां बलिदानम्

एकतन्त्रेण ग्रहादिबलिदानम्—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च सूर्यादिग्रहाणांप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो॒व्यन्तो॒विप्प्रायमतिम्।। तेषांविशिप्प्रियाणांवो॒ऽहमिषमूर्ज्जꣳ॒ समग्ग्रभमुपयामगृहीतो॒ऽसीन्द्रायत्त्वा॒जुष्टंगृह्णाम्म्ये॒षतेयोनि॒रिन्द्रायत्त्वा॒जुष्टंतमम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहेभ्यः देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितेभ्यः इमां सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि।

भो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहेभ्यः! इमां बलीन् गृह्णन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदाः भवन्तु।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहाः प्रीयन्तां न मम।

सूर्याय बलिदानम्—सूर्य के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च सूर्यप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ आकृ॒ष्णेन॒रज॑सा॒व्वर्त॑मानोनिवे॒शय॑न्न॒मृतं॒मर्त्त्यं॑च॥ हि॒रण्ययेन॑स॒वि॒तारथे॒नादे॒वो या॑ति॒भुव॑नानि॒पश्य॑न्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्याय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराग्नि रूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्य! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्यः प्रीयन्तां न मम।

चन्द्राय बलिदानम्—चन्द्रमा के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च चन्द्रप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ इ॒मंदे॑वाऽअसप॒त्नꣳसु॑वद्ध्वंमह॒तेक्ष॒त्राय॑मह॒तेज्यैष्ठ्या॑यमह॒तेजान॑राज्ज्या॒येन्द्र॒स्येन्द्रि॒याय॑॥ इ॒मम॒मुष्य॑पु॒त्रम॒मुष्यै॑पु॒त्रम॒स्यैवि॒शऽए॒षवो॑ऽमीराजा॒सोमो॒ऽस्माक॑ब्ब्राह्म॒णाना॒ꣳराजा॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय चन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय चन्द्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

चन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय उमाऽऽपौरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय चन्द्र! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय सोमः प्रीयतां न मम।

भौमाय बलिदानम्—भौम के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः ------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च भौमप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ अ॒ग्निर्म्मू॒र्द्धादि॒वः क॒कुत्पति॑ःपृथि॒व्याऽअयम्॥ अ॒पाᳫंरेताᳫंसिजिन्वति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

भौमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय स्कन्दभूमिरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवता सहिताय भौम! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमः प्रीयतां न मम।

बुधाय बलिदानम्—बुध के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च बुधप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ उद्बु॑ध्यस्वाग्ने॒प्रतिजागृहि॒त्वमि॑ष्टापू॒र्त्तेसᳫंसृ॑जेथाम॒यञ्च॑॥ अ॒स्मिन्त्स॒धस्थे॒ऽ अध्युत्तरस्मि॒न्विश्श्वे॑देवा॒यज॑मानश्चसीदत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुधाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुधाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय नारायणविष्णुरूपाधि-देवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुध! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बुधः प्रीयतां न मम।

बृहस्पतये बलिदानम्—बृहस्पति के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च बृहस्पतिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ बृह॑स्पते॒ऽअति॒दु॒र्य्योऽअर्हा॒द्द्युम॒द्विभाति॒क्रतु॒म॒ज्जनेषु॥ यद्दि॒दय॒च्छव॑सऽऋत प्प्रजात॒तद॒स्म्मासु॒द्द्रवि॑णंधेहिचि॒त्रम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पतये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बृहस्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पति! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पतिः प्रीयतां न मम।

शुक्राय बलिदानम्—शुक्र के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः ------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च शुक्रप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ अन्नांपरि॒स्रुतो॒रसं॒ब्ब्रह्मणा॒व्यु॒पिबत्क्ष॒त्रंपयः॒सोमंप्प्र॒जापतिः॥ ऋ॒तेन॑-स॒त्त्यमिन्द्रि॒यंव्विपानꣳशुक्रमन्धस॒ऽइन्द्रस्येन्द्रि॒यमि॒दंपयो॒ऽमृत॒ंमधु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इन्द्रेन्द्राणि रूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्र! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्रः प्रीयतां न मम।

शनैश्चराय बलिदानम्—शनि के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च शनिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनꣳ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चराय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीप दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो यम प्रजापति रूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चर! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चरः प्रीयतां न मम।

राहवे बलिदानम्—राहु के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च राहुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधꣳसखा॥ कयाशचिष्ठयाऽवृता॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

राहवे साङ्गायसपरिवारायसायुधायसशक्तिकाय कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहुः प्रीयतां न मम।

केतवे बलिदानम्—केतु के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च केतुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे।। समुषद्भिरजायथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतुः प्रीयतां न मम।

पञ्चलोकपालादिबलिदानम्

एकतन्त्रेण पञ्चलोकपालानां बलिदानम्—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च पञ्चलोकपालानां प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम।। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्।। ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन।। ससस्त्यश्श्वकःसुभद्द्रिकाङ्का म्पीलवासिनीम्।। ॐ व्वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि।। नियुत्त्वान्त्सोमपीतये।। ॐ घृतंघृतपावानः पिबतव्वसांव्वसापावानःपिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा।। दिशःप्प्रदिशऽआदिशो व्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा।। ॐ यावांकशामधुमत्याश्श्विनासूनृतावती।। तयायज्ञं मिमिक्षताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पञ्चलोकपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पञ्चलोकपालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पञ्चलोकपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो पञ्चलोकपाल! इमं बलिं गृह्णन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदाः भवन्तु।

अनेन बलिदानेन गणेशादिपञ्चलोकपालाः प्रीयन्तां न मम।

गणेशाय बलिदानम्—गणेश के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च गणेशप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम।। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गणेशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो गणेश! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।

दुर्गायै बलिदानम्—दुर्गा के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च दुर्गाप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन।। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

दुर्गायै साङ्गयै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपदधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि।

भो दुर्गा! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन दुर्गा प्रीयतां न मम।

वायवे बलिदानम्—वायु के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः ------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वायुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ व्वायो॒येतैंसहु॒स्रिणो॒रथा॑सु॒स्तेभि॒राग॑हि।। नि॒युत्त्वा॒न्त्सोम॑पीतये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वायवे साङ्गय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वायु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयतां न मम।

आकाशाय बलिदानम्—आकाश के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः ------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आकाशप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ घृ॒तंघृ॑तपावानःपिबत॒व्वसां॑व्वसापावानःपिबन्ता॒न्तरि॑क्षस्यहु॒विर॑सि॒स्वाहा॑।। दिशः॑ प्प्र॒दिश॑ऽआ॒दिशो॑व्वि॒दिश॑ऽउ॒द्दिशो॑दिग्ग्भ्यः॒स्वाहा॑।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आकाशाय साङ्गय सपरिवाराय सायुधायस शक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो आकाश! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन आकाशः प्रीयतां न मम।

अश्विनीकुमारेभ्यः बलिदानम्—अश्विनीकुमारों के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अश्विनौप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ याव॒ांकशा॒मधुमत्याश्श्विनासूनृतावती।। तयाय॒ज्ञंमिमिक्षताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनीभ्यां नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनीभ्यां देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अश्विनीभ्यां साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अश्विनीकुमारौ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदोभव।

अनेन बलिदानेन अश्विनीकुमारौ प्रीयेतां न मम।

वास्तुपुरुषाय बलिदानम्—वास्तुदेवता के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामोऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वास्तोस्पतिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः।। यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्वशन्नोभवद्विपदेशंचतुष्पदे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोस्पतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोस्पतये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वास्तोस्पते साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वास्तोस्पति! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदोभव।

अनेन बलिदानेन वास्तोस्पते प्रीयतां न मम।

क्षेत्रपालाय बलिदानम्—क्षेत्रपाल के लिए बलिदान प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः**

-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च क्षेत्रपालप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ न॒हिस्प्पश॒मविदन्न॒न्न्यम॒स्म्माद्वैश्श्वान॒रात्पुरऽएतारम॒ग्ग्नेः॥ एमैनमवृधन्नमृता॒ऽअमर्त्त्यंवैश्श्वन॒रंक्षैत्रजित्त्यायदेवाः॥

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा॥१॥

भूतप्रेतगणों के साथ क्षेत्रपाल आपको नमस्कार है, इस पूजा तथा बलि को ग्रहण करके सदा के लिए सौम्य तथा प्रसन्न हो जायें॥१॥

पुत्रान्देहि धनंदेहि सर्वान्कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा॥२॥

हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करके हमें पुत्र, धन, आरोग्यता प्रदान करें तथा सदा सर्वदा निर्विघ्न करें॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूतप्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-ब्रह्मराक्षसगणसहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो क्षेत्रपाल! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।

प्रार्थना—

बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः॥१॥

आदित्य, अष्टवसु, मरुतादि गण,अश्विनी कुमार, रुद्र, सुपर्ण, पन्नग, खग सभी इस बलि को ग्रहण करें॥१॥

असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥२॥

असुर, यातुधान, पिशाच, राक्षसादि, डाकिनी, यक्ष, वेताल, योगिनी, पूतनादि, शिवायें इस बलि को ग्रहण करें॥२॥

जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः॥३॥

जृम्भक, सिद्ध, गन्धर्वादि, सौम्य, विद्याधर, पर्वत, दिग्पाल, लोकपाल तथा जो हमारे जीवन में विघ्न करनेवाले हैं सभी इस प्रदत्त बलि को ग्रहण करें॥३॥

जगतां शान्तिकर्तारा ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिन्थिनः॥४॥

शान्ति प्रदान करनेवाले ब्रह्मा तथा ऋषि-महर्षि हमारे जीवन में विघ्न न करें, हमारे पापों का शमन करें, हमें पापमार्ग में न जाने दें॥४॥

सौम्यो भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।
बलिं गृह्णन्तु ते सत्यं पालयन्ति सदा मम॥५॥

इस बलि को सभी भूतप्रेतादि सौम्य होकर ग्रहण करें तथा नित्य सदा सर्वदा हमारा पालन करें॥५॥

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र॥६॥

इस भूतल पर वास करनेवाले जो भूतप्रेतादि गण हैं हमारे द्वारा विधिपूर्वक प्रदान की हुई पूजा तथा बलि को ग्रहण करें एवं अपना वासस्थान कहीं अन्यत्र बना लें तथा हमारा जीवन निर्विघ्न करें॥६॥

अब्राह्मण नापितादि कोई यजमान के मस्तक पर वामावर्त घुमाकर बलि को घर के बाहर चौराहे पर ले जाकर रख दे तथा आचार्यादि ब्राह्मण सपत्नीयजमान के मस्तक पर अधोलिखित मन्त्र से जल छिड़कें।

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽव क्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्रप्पोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहाऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सङ्हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्प्रायणाय स्वाहा॥

बलिदान के बाद हाथ पैर धोकर पूर्णाहुति करे।

बलिदानविधिः परिपूर्णम्

●

पूर्णाहुतिः

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वरदनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि॥

ॐ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳसतक्रतो÷॥ पुर्णाहुत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ समुद्द्रादूर्म्मिर्म्मधुमाँ२॥ऽउदारदुपाꣳशुनासमममृतत्त्वमानट्घृतस्यनामगुह्यं य्यदस्तिजिह्वादेवानामृतस्यनाभि÷॥ व्वयंनामप्प्रब्व्वामाघृतस्यास्म्मिन्यज्ञेधारयामानमोभिः॥ उपब्रह्माश्श्रृमवच्छस्यमानंचतु÷श्रृङ्गोऽवमीद्गौरऽएतत्॥ चत्त्वारिश्श्रृङ्गा त्रयोऽअस्यपादाद्द्वेशीर्षेसप्तहस्तासोऽअस्य॥ त्रिधाबद्धोव्वृषभोरोरवीतिमहोदेवोमर्त्त्यार२ँ॥ऽआविवेश॥ त्रिधाहितंपणिभिर्ग्गुह्यमानंगविदेवासोघृतमन्न्वविन्दन्॥ इन्द्रऽएकꣳसूर्य्यऽएकञ्जजानव्वेनादेकꣳस्वधयानिष्टतक्षुः॥ एताऽअर्षन्तिहृद्यात्समुद्द्राच्छतव्व्रजारिपुणानावचक्षे॥ घृतस्यधाराऽअभिचाकशीमिहिरण्ण्ययोव्वेतसोमध्ध्यऽआसाम्॥ सम्म्यक्स्रवन्तिसरितानधेनाऽअन्तर्हृदामनसापूयमानाः॥ एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयोघृतस्यमृगाऽइवक्षिपणोरीषमाणः॥ सिन्धोरिवप्प्राध्ध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्न्वमानः॥ अभिप्प्रवन्तसमनेवयोषाःकल्ल्याण्ण्यःस्म्मयमानासोऽअग्ग्निम्॥ घृतस्यधाराःसमिधोनसन्त ताजुषाणोहर्य्यतिजातवेदाः॥ कन्न्याऽइववहतुमेतवाऽउऽअञ्ज्यञ्जानाऽअभिचाकशीमि॥ यत्रसोम÷सूयतेयत्रयज्ञोघृतस्यधाराऽअभितत्पवन्ते॥ अभ्यर्षतसुष्टुतिंगव्व्यमाजिमस्म्मासुभद्द्राद्द्रविणानिधत्त॥ इमंयज्ञंनयतदेवतानोघृतस्यधारामधुमत्पवन्ते॥ धामन्तेव्विश्श्वंभुवनमधिश्श्रितमन्तःसमुद्द्रेहृद्द्यन्तरायुषि॥ अपामनीकेसमिथेयऽआभृतस्तमश्यामममधुमन्तंतऽऊर्म्मिम्॥ पुनस्त्वाऽऽदित्यारुद्द्रावसवःसमिन्धतांपुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः॥ घृतेनत्वंतन्न्वंव्वर्द्धयस्वसत्त्याःसन्तुयजमानस्यकामाः॥ मूर्द्धानंदिवोऽअरतिंपृथिव्व्यावैश्श्वानरमृतऽआजातमग्ग्निम्॥ कविꣳसम्म्राजमतिथिंजनानामासन्नापात्रंजनयन्तदेवाः॥ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्रतो÷स्वाहा॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नयेऽद्भ्यश्च न मम॥

पूर्णाहुति करने के बाद वसोर्द्धारा होम करे ।

पूर्णाहुतिहोमः परिपूर्णम्

वसोर्द्धाराहोमः

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणसाङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वसोर्द्धारा होष्यामि।**

कुण्ड के ऊपर पूर्व की तरफ करके उसके ऊपर घृतपात्र रखकर नीचे यव मात्र छिद्र रखकर अग्नि के ऊपर स्रुव के मुख में सुवर्णनिर्मित जिह्वा बाँध कर वसोर्द्धारा छोड़े।

ॐ सप्ततेऽअग्नेसमिधःसप्तजिह्वाःसप्तऽऋषयःसप्तधामप्प्रियाणि॥ सप्तहोत्राःसप्तधात्त्वायजन्तिसप्तयोनीरापृणस्वघृतेनस्वाहा॥ शुक्रज्ज्योतिश्च्चचित्रज्ज्योतिश्च्चसत्यज्ज्योतिश्च्चज्ज्योतिष्मॉंश्च्च॥ शुक्रश्च्चऋतपाश्च्चात्यꣳहाः॥ ईदृङ्प्रतिसदृङ्॥ मितश्च्चसम्मितश्च्चसभराः॥ ऋतश्च्चसत्यश्च्चध्रुवश्च्चधरुणश्च्च॥ धर्त्ताचविधर्त्ताचविधारयः॥ ऋतजिच्चसत्यजिच्चसेनजिच्चसुषेणश्च्च॥ अन्तिमित्रश्च्चदूरेऽअमित्रश्च्चगणः॥ ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊपुणःसदृक्षासःप्रतिसदृक्षासऽएतन॥ मितासश्च्चसम्मितासोनोऽअद्यसभरसोमरुतोयज्ञेऽअस्मिन्॥ स्वतवाँश्चप्रघासीचसान्तपनश्च्चगृहमेधीच॥ क्रीडीचशाकीच्चोज्जेषी॥ इन्द्रंदैवीर्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानोगऽभवन्यथेन्द्रंदैवीर्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानो गऽभवन्॥ एवमिमंयजमानंदैवीश्च्चविशोमानुषीश्च्चानुवर्त्मानोभवन्तु॥ इमꣳस्तनमूर्ज्जस्वन्तंधयापांप्रपीनमग्नेसरिरस्यमद्ध्ये॥ उत्संजुषस्वमधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियꣳसदनमाविशस्व॥ घृतंमिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्श्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥ ॐ वसोःपवित्रमसिशतधारंवसोःपवित्रमसिसहस्रधारम्॥ देवस्त्वा सवितापुनातुवसोःपवित्रेणशतधरिणसुप्वा॥ ॐ कामधुक्षः स्वाहा॥

इदमग्नये वैश्वानराय न मम॥

अग्निप्रदक्षिणा—हाथ जोड़कर परिवार एवं अन्य सहयोगियों के साथ सपत्नीयजमान अग्नि की प्रदक्षिणा करे।

ॐ अग्नेनयसुपथारायेऽअस्मान्विश्श्वानिदेववयुननिविद्वान्॥ युयोद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठांतेनमऽउक्तिंविधेम॥

परिक्रमा करके यजमान अग्नि के पश्चिम दिशा में पूर्वमुख बैठे।

श्रीमहाविद्यापुरश्चरणे हवनकर्म परिपूर्णम्

●

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्

आचार्य कुण्ड के ईशानकोण से भस्म लेकर, पहले आचार्य के सहित समस्त ब्राह्मण फिर यजमान के शरीर में भस्म अनुलेपन करे।

ॐ त्र्यायु॒षं जमदग्नेः। मन्त्र से ललाट पर भस्म लगाये।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्। मन्त्र से ग्रीवा पर भस्म लगाये।

ॐ यद्देवेषु॒ त्र्यायु॒षम्। मन्त्र से दक्षिणबाहुमूल पर भस्म लगाये।

ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्। मन्त्र से हृदय पर भस्म लगाये।

संस्रवप्राशनम्। प्रोक्षणीपात्र जल का यजमान को प्राशन अथवा घ्राण कराये।

आचमनम्। पश्चात् आचमन कराये।

पवित्राभ्याम् मार्जनम्। प्रणीतापात्रस्थित पवित्री से मार्जन करे।

अग्नैपवित्रप्रतिपत्तिः। पवित्री को अग्नि में प्रक्षेप करे।

भस्मधारणं परिपूर्णम्

●

विभिन्नदानादिसङ्कल्पः

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्—यजमान ब्रह्मा के पूर्णपात्र दान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चाारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ--गोत्रः ------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकनामधेयब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे॥**

ब्रह्मा पूर्णपात्र ग्रहणकर बोले—**ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।**

प्रणीतापात्र के जल से ब्रह्मा सपत्नीयजमान के उपर उपयमनकुशा से मार्जन करे।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

उपयमनकुशा का अग्नि मे प्रक्षेपकर, ब्रह्मग्रन्थि को खोल दें।

यजमानाय श्रेयोदानम्—आचार्यादि ब्राह्मण यजमान के लिए श्रेयोदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चाारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ--गोत्रः ------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयो दानं करिष्ये॥**

सौमनस्यमस्तु। पुष्प प्रदान करे।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। अक्षत प्रदान करे।

भवन्नियोगेन मया अस्मिन् श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं एभिर्ब्रह्मगाणपत्यसदस्योपद्रष्टाजापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं जपपाठाभिषेक-हवनादिकं च तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव।

यजमान बोले—**भवामि।**

श्रेयोदान के बाद आचार्यादि ब्राह्मणों को यजमान यज्ञकर्म की दक्षिणा (मुख्यदक्षिण) तुरन्त अवश्य दे दे, विलम्ब करने से प्रायश्चित्त होता है।

आचार्यादिब्राह्मणाय दक्षिणादानम्—यजमान आचार्य को दक्षिणा प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।।**

आचार्याय गोदानम्—यजमान आचार्य को गोदाननिमित्त निष्क्रयद्रव्य प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं गोनिष्क्रयभूतं करोपस्थितद्रव्यं अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकनामधेयब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।**

ब्रह्मणे वृषभदानम्—यजमान ब्रह्मा को वृषभनिमित्त निष्क्रयद्रव्य प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं वृषभनिष्क्रयभूतं करोपस्थितद्रव्यं-----गोत्राय------प्रवराय-----शर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।।**

गाणपत्याय अश्वदानम्—यजमान गाणपत्य को अश्वनिमित्त निष्क्रयद्रव्य प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं अश्वनिष्क्रयभूतं करोपस्थितद्रव्यं-----गोत्राय-----प्रवराय-----शर्मणे ब्राह्मणाय गाणपत्ये तुभ्यमहं सम्प्रददे।।**

उपद्रष्टाय गन्त्रीदानम्—यजमान उपद्रष्टा को गन्त्रीनिमित्त (गाड़ी) निष्क्रयद्रव्य प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः**

-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं गन्त्रीनिष्क्रयभूतं करोपस्थितद्रव्यं-----गोत्रः------प्रवरः-----शर्मणे उपद्रष्टात्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।

सदस्याणां सुवर्णदानम्—यजमान सदस्यों को सुवर्णनिमित्त निष्क्रयद्रव्य प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं सुवर्णनिष्क्रयभूतं करोपस्थितद्रव्यममुकामुकगोत्राणां अमुकामुकप्रवराणां अमुकामुकशर्मणेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदातुमहं सम्प्रददे॥**

भूयसी दक्षिणदानम्—अन्य जन तथा सभी ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा प्रदान करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहार्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं निष्क्रयभूतंकरोपस्थितद्रव्यं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो नटनर्तकगायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्तिभूयसी दक्षिणां विभ्यज्य दातुमहमुत्सृज्ये॥**

सङ्कल्प करके ब्राह्मणों तथा अन्य कन्याओं, बहनों तथा गरीब लोगों को भूयसी दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मणभोजनम्—यजमान कर्म की परिपूर्ति के लिए ब्राह्मणभोजन का सङ्कल्प करके भोजन कराये।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासंख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये तेभ्यो ताम्बूल दक्षिणां च दास्ये।**

दानादिसङ्कल्पः परिपूर्णम्

●

आवाहितदेवतानामुत्तरपूजनम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीमहाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थञ्चावाहितदेवानामुत्तरपूजनं करिष्ये॥**

सङ्कल्प करके आवाहित देवताओं का यथोपचार उत्तरपूजन करे, पश्चात् प्रधानपीठसहित समस्तपीठों को दक्षिणा के सहित आचार्य को दान करे।

महागणपतिपूजनम्

हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर महागणपति का ध्यान करे।

ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा॑ निधि॒प॑तिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहम॑जानिगर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्ब्भ॒धम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धिसहितायमहागणाधिपतये नमः ध्यायामि ध्यानार्थे उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

महागौरीपूजनम्

हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर महागौरी का ध्यान करे।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्व॒कःसुभद्रि॒काङ्का म्पीलवा॒सिनी॑म्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः ध्यायामि ध्यानार्थे उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

स्वस्तिकलशस्थदेवतानां पूजनम्

हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर स्वस्तिकलश के देवताओं का ध्यान करे।

ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्ब्भिः॥ अहे॑डमानोव्वरुणे॒ हबो॒ध्युरु॑शꣳस॒मान॒ऽआयुः॒प्प्रमो॑षीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वस्तिकलशस्थवरुणाद्यावाहितविष्णवादिदेवताभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

षोडशमातृकानां पूजनम्

हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर षोडशमातृकाओं का ध्यान करे।

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥१॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश॥२॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥३॥

गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा मातृकायें, लोकमातृकायें, धृति, पुष्टि, तुष्टि तथा अपने कुल के कुलदेवी गणेश के सहित पूजित होकर हमारे घर हमें आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य सभी हमें हे मातायें! प्रदान करे तथा हमारे समस्त पूजा-अनुष्ठान को गणेश के सहित समस्त मातृकाएँ यज्ञ के सम्पूर्णफल के लिए निर्विघ्नता प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवतान्त आवाहितषोडश-मातृभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सप्तघृतमातृकानां पूजनम्

हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर सप्तघृतमातृकाओं का ध्यान करे।

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥१॥
यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥२॥

श्री, लक्ष्मी, धृति, मेधा, स्वाहा, प्रज्ञा तथा सरस्वती सप्तघृत मातृकायें मङ्गल कार्यों में सदैव पूजित होती हैं, अतः हे देवियों! अङ्ग के रूप में विधिपूर्वक पूजित होकर हमारे समस्त कार्यों को निर्विघ्नरूप से पूर्ण करानेवाली हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वन्त्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवानां पूजनम्

ॐ ब्रह्म॑जज्ञा॒नम्प्र॑थ॒मम्पु॒रस्ता॒द्विसी॑म॒तꣳसु॒रुचो॑व्वे॒नऽआ॑वः॥ सबु॒द्धन्न्या॒ऽउप॒माऽअ॑स्यव्वि॒ष्ठाꣳस॒तश्च॒योनि॒मस॑तश्च॒व्विवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्माद्यावाहितसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रधानकलशस्थदेवानामुत्तरपूजनम्

हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर प्रधानकलशस्थदेवताओं का ध्यान करे।

ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्भिः॥ अहे॑डमानोव्वरुणे॒हबो॒ध्युरु॑शꣳस॒मान॒ऽआयु॒ꣳप्रमो॑षीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

महाविद्यामुत्तरपूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप सुवर्ण के समान पीतवर्णवाली, किञ्चित् हरितवर्णवाली, किञ्चित् हरिणी रूप धारण करनेवाली, सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करनेवाली, सुन्दर वर्ण वाले चाँदी के समान श्वेतपुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, चन्द्रमा के समान सबको प्रसन्न करनेवाली, चञ्चलता हिरण्यमयी रूपवाली एवं हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी को मेरे लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः ध्यानार्थे उत्तरपूजनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत् विख्यात एवं अनपगामिनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ। मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः आसनार्थे उत्तरपूजनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ हैं अथवा जिनके आगे घोड़े जुटे हुए हैं ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ, दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी का अपने घर में सर्वदा निवास करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

जिनका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्दहास्ययुक्ता हैं, जो चारो ओर सुवर्ण से वेष्टित है एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं, अर्थात् जो लक्ष्मीजी दया से आर्द्र होते हुए तेज से देदीप्यमान है, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमल के सदृश गृह में निवास करनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं से सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहने वाली, सबकी रक्षा करनेवाली!, भक्तों को आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता रहूँ, हे लक्ष्मी! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अतः मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गादि सभी तीर्थो से प्रार्थनापूर्वक मैं जल लाया हूँ, यह जल का स्पर्श सुख प्रदान करनेवाला है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादुशीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूर के समान सुगन्धित, दूध के समान धवल, स्वाद में शीतल जल आचमन के लिए प्रस्तुत है इस आचमनीय जल को देवि! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयःस्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गाय से उत्पन्न सभी को जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए अति पवित्र दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! दूध से उत्पन्न मधुर तथा अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही हम आपके स्नान के लिए लाये हैं, इस दही को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मक्खन से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी आपको स्नान के लिए प्रदान करता हूँ, इस घृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे।

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्प कणों से उत्पन्न सुन्दर स्वादवाला मधुर शहद, तेज और पुष्टि को प्रदान करने वाला, दिव्य शहद स्नान के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे।

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुरस से उत्पन्न शर्करा शुभ पुष्टि प्रदान करनेवाली, सभी प्रकार के मल का अपहरण करनेवाली है, दिव्य स्नान के लिए इस शर्करा को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध, दही, घी, मधु और शर्करा से युक्त पञ्चामृत दिव्य स्नान के लिए आपको समर्पित है, इस पञ्चामृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों के दिव्य जल आपके स्नान के लिए समर्पित है, इस जल को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथविल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली देवी! आपके तेज से वनस्पति विशेष बिना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष उत्पन्न हुआ (आपके हाथ से विल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ) उस विल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर-बाहर की दरिद्रता को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

हे लक्ष्मी! देवसखा अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के

साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला के सदृश यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् कुबेर का धन और यश दोनों ही मुझे मिले, मै इस सुन्दर राष्ट्र में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः हे कुबेरदेव! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥

भूख तथा प्यासरूपी मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मीजी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मै नाश करता हूँ, हे लक्ष्मी! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं, धन-धान्यादि से सदा परिपूर्ण, गौ-अश्वादि पशुओं की समृद्धि को देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

हे लक्ष्मी! तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, ब्रीहि इत्यादि अन्नों के रूप अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोजयादि पदार्थो इन समस्त पदार्थो को प्राप्त करूँ। सम्पत्ति-यश मुझमें आश्रय लेकर रहे अर्थात् मै धनवान् कीर्तिमान् बनूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई है। हे कर्दम! आप मुझमें अच्छी तरह वास करे। इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे।

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥

हरे-हरे दुर्वाङ्कुर जो अमृतत्व तथा मङ्गल प्रदान करनेवाले हैं आपके पूजा के लिए मैं लाया हूँ आप प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

जिस प्रकार कर्दम ऋषि की सन्तति (ख्याति) से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से चौदह रत्नों के बाद लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ है। उसी प्रकार जल देवता स्निग्ध एवं मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करे (पदार्थों की सुन्दरता लक्ष्मी ही है) लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत चार पुत्र हैं। जिसमें हे चिक्लीत! तुम मेरे गृह मे निवास करो, केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयाभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे।

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

अरुणकालिक प्रकाश के समान आभावाला सिन्दूर तथा जवाकुसुम के सदृश वर्ण (रंग) वाले सिन्दूर से हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हो तथा पूजित हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित करने के बाद धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित करने के बाद सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे। दीप देवता को समर्पित किया जाता है, न कि चारो ओर घुमाया जाता है।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ दशाङ्गंगुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

दशाङ्ग, गुग्गुल, चन्दन तथा अगुरु जैसे गन्धों से युक्त धूप भक्तिपूर्वक हम समर्पित करते है हे महादेवि! इस धूप को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के झुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्रशरीरवाली, पुष्टि को देने वाली, पुष्टिस्वरूपा रक्त और पीतवर्ण वाली, कमल की माला धारणकर जगत् को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

चारों प्रकार का सुन्दर सुस्वादु षड्रसों से युक्त नैवेद्य हे देवी! भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ ग्रहण करके अपने में हमारी भक्ति को अचल करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ

अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे।

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यञ्च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य चन्दन तथा रजनी पुष्प से युक्त करोद्वर्तन हम प्रदान करते है, गणेशसहित मातृकाएँ प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे।

ॐ आर्द्रां यः करिर्णीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में भक्तो पर सर्वदा दयार्द्रचित्त, समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली, यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण स्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करनेवाली सूर्यज्वा अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालनपोषण करती हैं, अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे।

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदली पनसाऽऽम्रं कपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! द्राक्षा (किसमिस), खर्जूर (खजूर), कदली (केला), पनस (सिंघाड़ा), आम्र (आम), कपित्थ (कैथ), नारिकेल (नारियल), इक्षु (गन्ना), जम्बूफल (जामुन), फलों को आपके प्रसन्नता के लिए लाया हूँ, प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे।

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्॥

पूजा के पूर्ण फल की समृद्धि के लिए स्वर्णमयी मुद्रा आपके सामने समर्पित भाव से स्थापित है, जिसे स्वीकार करके जिससे प्रसन्न मन होकर हमारे मनोरथ को पूर्ण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे कृतायाः पूजायाः साद्‌गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केले के वृक्ष के) गर्भ से उत्पन्न कर्पूर प्रदीपित करके आपकी आरती हम करते हैं, जिसे देखकर आप प्रसन्न हों तथा हमारी समस्त कामनापूर्ति के लिए वर प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे यहाँ उस जगत्विख्यात् लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कही न जानेवाली हों, उन लक्ष्मी को प्राप्त कराओ। जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े, और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ, अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

जो मनुष्य शुचिता को प्राप्तकर अर्थात् शुद्ध होकर लक्ष्मी की कामना से श्रद्धापूर्वक पवित्र मन और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम करे और उसके साथ लक्ष्मीसूक्त तथा श्रीसूक्त के पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन निरन्तर जप करता रहे।

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः उत्तरपूजनार्थे मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

श्रीमहाविद्यायामुत्तरपूजनं परिपूर्णम्

महाभैरवमुत्तरपूजनम्

हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर महाभैरव का ध्यान करे।

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय सावरणाय सायुधाय सशक्तिकाय वटुकभैरवाय नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ग्रहमण्डलस्थदेवानामुत्तरपूजनम्

हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर ग्रहमण्डलस्थदेवताओं का ध्यान करे।

ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो॒व्यन्तोविप्रायमतिम्॥ तेषांविशिप्प्रियाणांव्वोऽहमिष मूर्ज्जꣳसमग्ग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डस्थदेवताभ्यो नमः ध्यायामि ध्यानार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

असंख्यातरुद्राणां पूजनम्

हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर असंख्यातरुद्र का ध्यान करे।

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्र रूपेभ्यः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः ध्यायामि ध्यानार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

नीराजनम् (आरती)—नवप्रदीप्त दीपकों के द्वारा सपरिवार नीराजन करे।

ॐ इ॒दꣳह॒विःप्र॒जननंमेऽअस्तु॒दशवीर॒ꣳसर्वगणꣳस्व॒स्तये॥ आ॒त्म॒सनिप्प्रजा॒ सनिपशु॒सनिलोक॒सन्न्यभय॒सनि॥ अ॒ग्निःप्प्र॒जांबहु॒लांमेकरो॒त्वन्नंपयो॒रेतोऽअ॒स्म्मासु धत्त॥ ॐ आरात्रि॒पार्थिवꣳ॒रजःपि॒तुरप्प्रायि॒धामभिः॥ दि॒वःसदाꣳसिबृह॒तीवि तिष्ठस॒ऽआत्त्वे॒षंव्वर्त्तते॒तमः॥

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव जी॥१॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
मैया टीको मृगमद को।

उज्ज्वल से दोउ नयना,
निर्मल से दोऊ नयना, चन्द्रवदन नीको॥२॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे।
मैया रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला,
लाल पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे॥३॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
मैया खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत,
ऋषि जन मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी॥४॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
मैया नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर,
अगणित सूर्य प्रभाकर, राजत सम ज्योती॥५॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषा सुर घाती।
मैया महिषा सुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना,
मधुर विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती॥६॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मैया शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे,
मधु कैटभ संहारे, सुर भयहीन करे॥७॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
मैया तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी,
वेद पुराण बखानी, तुम शिव पटरानी॥८॥

ॐ जय अम्बे गौरी।
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों।
मैया नृत्य करत भैरों।

बाजत ताल मृदङ्गा,
बाजत ढोल मृदङ्गा, अरु बाजत डमरू॥९॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
मैया तुम ही हो भरता।

भक्तन की दुःख हरता,
सन्तन की सुख करता, सुख सम्पति करता॥१०॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मैया वरद अभय धारी।

मन वांच्छित फल पावत,
मन इच्छित फल पावत, सेवत नर नारी॥११॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बाती।
मैया धूप दीप बाती।

श्री माल केतु मे राजत,
विन्ध्याचल मे विराजत, कोटि रतन ज्योती॥१२॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावें।
मैया जो कोई नर गावें।

कहत शिवानन्द स्वामी,
मन भजत हरिहर स्वामी, सुख सम्पति पावे॥१३॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव जी।
मैया हरि ब्रह्मा शिव जी।
कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानिसहितं नमामि॥
कदलीगर्भसम्भूतं, कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे, पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहाविद्यायै नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि॥

जलेन शीतलीकरणम्—पात्र में जल लेकर शीतलीकरण करे।

पात्रमध्ये स्थितं तोयं, भ्रामितं देवतोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां, सर्वं पापं व्यपोहतु॥

पात्र में जल लेकर देवता के उपर चारो तरफ घुमाने के बाद यजमान के उपर छिड़कने से सभी पापों से छुटकारा मिल जाता है।

पुष्पैः देवाभिवन्दनम्, आरार्तिक्यग्रहणम्, हस्तौप्रच्छालनम्, पुष्पसंग्रहणम्, मन्त्रपुष्पाञ्जलिः। पुष्प से देवताओं का अभिनन्दन करके आरती ग्रहण करने के बाद दोनो हाथ धोकर दोनो हाथों में फूल लेकर पुष्पाञ्जलि बोलकर भगवती को तथा सभी देवताओं को समर्पित करे।

पुष्पाञ्जलिः—दोनों हाथों में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ य॒ज्ञेन॑य॒ज्ञम॑यजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्मा॑णिप्प्रथ॒मान्न्या॑सन्॥ तेह॒नाक॑म्ममहि॒मान॑ः सचन्तु॒यत्र॒पूर्व्वे॑साद्ध्या॒ःसन्ति॑दे॒वाः॥ ॐ राजाधिराजायप्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणायकुर्महे समेकामान् कामकामायमह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्तिसाम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां तदपरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे॥ आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वरि!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मण्डपस्थ आवाहितदेवतासहितायै साङ्गयै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाविद्यायै नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि प्रदान करने के बाद स्तुत्यादि पाठ कर अवश्य समर्पित करे।

स्तुतिपाठनिवेदनम्—सर्वप्रथम देवी पुष्पाञ्जलि स्तोत्र का पाठ करे।

देवीपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते,
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१॥
सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते,
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।

दनुजनिरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥२॥
अयि जगदम्ब! कदम्बवनप्रियवासिनि तोषिणि हासरते,
शिखरिशिरोमणितुङ्गहिमालयशृङ्गनिजालयमध्यगते।
मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि महिषविदारिणि रासरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥३॥
अयि निजहुंकृतिमात्रनिराकृत धूम्रविलोचन-धूम्रशते,
समरविशोषितरोषितशोणित बीजसमुद्भव बीजलते।
शिव शिव शुम्भनिशुम्भमहाहवतर्पितभूतपिशाचरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥४॥
अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते,
निजभुजदण्ड निपातितचण्ड विपाटितमुण्ड भटाधिपते।
रिपुगजगण्डविदारणचण्ड पराक्रमशौण्ड मृगाधिपते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥५॥
धनुरनुषङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्ग नटत्कटते,
कनकपिशङ्ग पृषत्कनिषङ्ग रसद्भटशृङ्गहताबटुके।
हतचतुरङ्ग बलत्क्षितिरङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥६॥
अयि रणदुर्मद शत्रुवधाद्धुर दुर्धरनिर्भर शक्तिवृते,
चतुरविचार धुरीणमहाशय दूतकृतप्रमथाधिपते।
दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति-दानवदूत-दुरन्तगते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥७॥
अयि शरणागत-वैरिवधू-जनवीरवराभव-दायिकरे,
त्रिभुवनमस्तक-शूलविरोधि-शिरोधिकृतामल-शूलकरे।
दुमिदुमितामर-दुन्दुभिनाद-मुहुर्मुखरीकृत-दिङ्गनिकरे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥८॥
सुरललना-ततथेयितथेयितथाभिनयोत्तर-नृत्त्यरते,
कृतकुकुथा-कुकुथोदि-डदाडिक-तालकूतुहल-गानरते।
धुधुकुट-धूधुट-धिन्धिमितध्वनि-धीरमृदङ्ग-निनादरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥९॥
जय जय जाप्यजये जयशब्द-परस्तुति-तत्पर विश्वनुते,
झणझण-झिंझिम-झिंकृत-नूपुर-शिञ्जित-मोहित-भूतपते।

नटितनटार्ध-नटीनटनायक नाटननाटित-नाट्यरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१०॥
अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरम कान्तियुते,
श्रितरजनी-रजनी-रजनी-रजनी-रजनीकर-वक्त्रभृते।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराधिपते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥११॥
महित-महाहव-मल्लमतल्लिक-वल्लित-रल्लित-भल्लिरते,
विरचितवल्लिकपालिक-पल्लिक-झिल्लितभिल्लिकवर्गवृते।
श्रुतकृतफुल्ल-समुल्ल-सितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१२॥
अयि सुदतीजन लालस-मानस-मोहन-मन्थर-राजसुते,
अविरलगण्डगलन्मदनेदुरमत्तमतङ्गजराजगते।
त्रिभुवनभूषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधिराजसुते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१३॥
कमलदलामल-कोमलकान्ति-कलाकलितामल-भालतले,
सकलविलास-कलानिलय-क्रमकेलि-चलत्कलहंसकुले।
अलिकुलसङ्कुल-कुन्तलमण्डल-मौलिमिलद्-बकुलालिकुले,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१४॥
करमुरलीरव-वर्जित-कूजित-लज्जितकोकिल-मञ्जुमते,
मिलित-मिलिन्द-मनोहर-गुञ्जित-रञ्जित-शैलनिकुञ्जगते।
निजगणभूत-महाशबरीगण-रङ्गणसम्भृत-केलिरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१५॥
कटितटपीतदुकूलविचित्रमयूखतिरस्कृतचण्डरुचे,
जितकनकाचलमौलिमदोर्जितगर्जितकुञ्जरकुम्भकुचे।
प्रणतसुराऽसुरमौलि-मणिस्फुरदंशु-लसन्नखचन्द्ररुचे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१६॥
विजितसहस्रकरैकसहस्रकरैकसहस्रकरैकनुते,
कृतसुरतारकसङ्गरतारकसङ्गरतारकसूनुनुते।
सुरथसमाधि-समानसमाधि-समानसमाधि-सुजाप्यरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१७॥
पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे,
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।

तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीललयो मम किं न शिवे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१८॥
कनकलसत्कलशीकजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवम्,
भजति स किं न शचीकुचकुम्भनटीपरिरम्भसुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥१९॥
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते,
किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥२०॥
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे,
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते॥२१॥
स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्॥२२॥

देव्यापुष्पाञ्जलीस्तोत्रं परिपूर्णम्

अपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं,
परं जाने मातस्त्वदनुशरणं क्लेशहरणम्॥१॥
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणाऽलसतया,
विधेयाऽशक्यत्वात् तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥२॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः,
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥३॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता,
न वा दत्तं देवि! द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथाऽपि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत् प्रकुरुषे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥४॥
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया,
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानी चेन्मातस्तव यदि कृपा नाऽपि भविता,
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्॥५॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा,
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं,
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ॥६॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो,
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीम्,
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्॥७॥
न मोक्षस्याऽऽकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे,
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छाऽपि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै,
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः॥८॥
नाऽऽराधितासि विधिना विविधोपचारैः,
किं रुक्षचिन्तनपरैर्नकृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे,
धत्से कृपामुचितमम्ब! परं तवैव॥९॥
आपत्सुमग्नःस्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति॥१०॥
जगदम्ब!विचित्रमत्र किं परिपूर्णाकरुणाऽस्तिचेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्॥११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापाघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु॥१२॥

देव्यापराधक्षमापनस्तुतिपाठं परिपूर्णम्

भवानीस्तुतिः

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता, न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥१॥
भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः, पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाऽहं, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥२॥
न जानामि दानं न च ध्यान योगं, न जानामि तन्त्रं न च स्त्रोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥३॥
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वाऽपि मातः, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥४॥
कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः कुलाचारहीनः दुराचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाऽहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥५॥
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं, दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चाऽन्यत्सदाऽहं शरण्ये, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेकाभवानि॥६॥
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे, जले चाऽनले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥७॥
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो, महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥८॥

श्रीभवानीस्तुतिः परिपूर्णम्

◆

देवीस्तुतिः

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्यपादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे॥१॥
नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे॥२॥
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बुद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे॥३॥
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्येऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे॥४॥
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजां।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे॥५॥
नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला, समुत्खण्डिता-खण्डिताशेषशत्रो।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारबीजं, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे॥६॥

त्वमेवाघभावाधृता सत्यवादीः, न जाता जितक्रोधनात्क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाडी, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे॥७॥
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे।
विभूतिः शचीकालरात्रिःसति त्वं, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे॥८॥
शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां,
मुनि-मनुज-पशूनां दस्युभिस्त्रासितानां।
नृपतिगृहगतानां व्याधिभिः पीडितानां,
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद॥९॥

फलश्रुतिः

इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारहेतुकम्।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनाद् घोरसंकटात्॥१०॥
मुच्यते नाऽत्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले।
सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेद् भक्तिमान् सदा॥११॥
स सर्वं दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम्।
पठनादस्य देवेशि किं न सिध्यति भूतले॥१२॥
स्तवराजमिमं देवि संक्षेपात् कथितं मया॥

अनेन स्तुतिपाठाख्येन श्रीदुर्गादेवताप्रीयतां न मम।

उत्तरपूजनं परिपूर्णम्

●

आवाहितदेवतानां विसर्जनम्

स्तुत्यादि पाठ करने के बाद, देवी के सहित समस्त देवताओं को अपने-अपने लोक पधारने के लिए प्रार्थना कर, ब्राह्मणों, कुमारियों तथा सुवासिनियों को भोजन कराकर दक्षिणादि से सन्तुष्ट कर आशीर्वाद ग्रहण करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः ------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य महाविद्यापुरश्चरणकर्माङ्गत्वेन आवाहितदेवतानां उत्थापनं विसर्जनं करिष्ये।**

संकल्प करके सानुनय अग्नि तथा आवाहित समस्त देवताओं का यथोपचार पुष्पाक्षतादि से पूजन करके देवताओं तथा अग्नि को स्वस्वलोकगमनार्थ विदाकर कर्म का विसर्जन करे।

ॐ उत्तिष्ठब्ब्रह्मणस्पतेदेवययन्तस्त्वेमहे॥ उपप्प्रयन्तुमरुत÷सुदानवऽइन्द्रप्प्राशूर्ब्भ

वा॒सचा॥ ॐ यज्ञंगच्छयज्ञपतिंगच्छस्वांयोनिंगच्छस्वाहा॥ एषतेयज्ञोयज्ञपतेसह सूक्तवाकᳪसर्व्ववीरस्तंजुषस्वस्वाहा॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥१॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन॥२॥

प्रार्थना—हाथ में फूल लेकर प्रार्थना करे।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥१॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥२॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः॥३॥
यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नाम जपादपि।
न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥४॥

ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥ ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥

अनेन यथाशक्तिकृतेन महाविद्यापुरश्चरणकर्मणा श्रीमहाविद्याप्रीयतां न मम।

आवाहितदेवतानां विसर्जनम्

●

आचार्याय प्रधानपीठादिदानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य महाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थञ्च इमानि सोपष्करसहितानिप्रधानपीठादीनि अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

समस्त ब्राह्मणों के सहित आचार्य सपरिवार यजमान का रुद्रकलश तथा प्रधानकलश के जल को एकत्र कर अभिषेक करे।

आचार्याय प्रधानपीठादिदानं परिपूर्णम्

●

सपरिवारयजमानस्य अभिषेकः

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥१॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान्यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥२॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धाक्रियामतिः।
बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमाभौमो बुध जीव सिताऽर्कजाः॥५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वाः यक्षराक्षसपन्नगाः॥६॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः॥७॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये॥९॥

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥ ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासो देशेभवत्सरित्॥ ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्यऽ ऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥ ॐ पुनन्तुमा देवजनाःपुनन्तुमनसाधियः॥ पुनन्तुव्विश्वाभूतानिजातवेदःपुनीहिमा॥ ॐ देवस्यत्वा सवितुःप्प्रसवेश्श्विनोर्ब्बाहुब्भ्यांपूष्णोहस्ताब्भ्याम्॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्यन्त्रितयै दधामिबृहस्प्पतेष्ट्वासाम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्प्रसवे श्श्विनोर्ब्बाहुब्भ्यांपूष्णोहस्ताब्भ्याम्॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्यन्त्रेणाग्ग्नेःसाम्म्राज्येना भिषिञ्चामि॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्प्रसवेश्श्विनोर्ब्बाहुब्भ्यांपूष्णोहस्ताब्भ्याम्॥ अश्श्विनोभैषज्ज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि॥ सरस्वत्यैभैषज्ज्येनव्वीर्यायान्नाद्याया भिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेणबलायश्रियैयशसेऽभिषिञ्चामि॥ ॐ विश्श्वानिदेव सवितर्द्दुरितानिपरासुव॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव॥ धामच्छदग्ग्निरिन्द्रोब्ब्रह्मादेवोबृहस्प्पतिः॥ सचेतसोव्विश्श्वेदेवायज्ञंप्रावन्तनःशुभे॥ त्वंय्यविष्ठदाशुषोनॄःपाहिशृणुधीगिरः॥ रक्षा

तोकमुतत्क्मना॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यंशुष्मिणः॥ प्रप्रदातारंतारिष ऊर्जंनोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवीशान्तिरापꣳ शान्तिरोषधयꣳ शान्तिः॥ वनस्पतयꣳशान्तिर्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिꣳ सर्व्वꣳशान्तिꣳशान्तिरेवशान्तिꣳसामाशान्तिरेधि॥ यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नःकुरुप्प्रजाब्भ्योभयन्नꣳप्पशुब्भ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशीः भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

छायापात्रदानम्—कांस्यपात्र में घृत भरकर उसमें द्रव्य डालकर मुख अवलोकन का संकल्प करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य महाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं चाज्यावेक्षणं करिष्ये॥**

ॐ रूपेणवोरूपमब्भ्यागांतुथोवोव्विश्ववेदाव्विभजतु॥ ऋतस्यपथाप्प्रेतचन्द्र दक्षिणाव्विस्वःपश्श्यव्युन्तरिक्षंयतस्वसदस्यैः॥

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः -----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य महाविद्यापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदमवलोकितं कांस्यपात्रस्थितमाज्यं सदक्षिणां मृत्युञ्जयदैवतं मृत्युञ्जयदेवताप्रीतये सर्वारिष्टविनाशार्थञ्च अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

संकल्प करके यजमान ब्राह्मण को आज्यपात्र दे दे। ब्राह्मण आज्यपात्र ग्रहणकर **स्वस्ति वाढय** बोलकर यजमान को आशीर्वाद प्रदान करे।

अपराधक्षमापनम्

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥१॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥२॥
जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतु मेऽच्छिन्द्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः॥३॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वर॥४॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥५॥

कर्मणा मनसा वाचा महाविद्यार्चनं मया कृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वर॥६॥

यजमानरक्षाबन्धनम्—आचार्य यजमान के दाहिने हाथ में रक्षा बाँधें।

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः॥ तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥

यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम्—आचार्य यजमानपत्नी को रक्षा बाँधें।

ॐ तंपत्नीभिरनुगच्छेमदेवाःपुत्त्रैर्ब्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः॥ नाकंगृब्भ्णानाः सुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्ठेऽअधिरोचनेदिवः॥

यजमानतिलकः—आचार्य यजमान को सपरिवार तिलक करे।

ॐ युञ्जन्तिब्ब्रध्नमरुषञ्चरन्तम्परितस्थुषः॥ रोचन्तेरोचनादिवि॥ युञ्जन्त्यस्य काम्म्याहरीव्विपक्षसारथे॥ शोणाधृष्णूनृवाहसा॥ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाꣳ स्वस्तिनःपूषाव्विश्श्ववेदाꣳ॥ स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिꣳस्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्द्दधातु॥

यजमान-आशीर्वादः—आचार्य यजमान को आशीर्वाद स्वरूप फलादि प्रदान करे।

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्त्यारुद्द्रावसवःसमिन्धतांपुनर्ब्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः॥ घृतेनत्वंतन्वं व्वर्द्धयस्वसत्त्याःसन्तुयजमानस्यकामाः॥

श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥१॥
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा।
ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः॥२॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥३॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥४॥

यजमानपत्नि आशीर्वादः—आचार्य यजमानपत्नी को आशीर्वादस्वरूप फलादि प्रदान करे।

ॐ अनाधृष्टपुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्म्मेदाःपुत्रवतीदक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्त्येप्प्रजांमेदाःसुषदापश्चाद्देवस्यसवितुराधिपत्त्येचक्षुर्म्मेदाऽआश्श्रुतिरुत्तरतोधातुराधिपत्त्येरायस्पोषंमेदाः॥ व्विधृतिरुपरिष्टाद्बृहस्पतेराधिपत्त्यऽओजोमेदा व्विश्श्वाब्भ्योमानाष्ट्राब्भ्यस्प्पाहिमनोरश्श्वासि॥

श्रीमहाविद्यापुरश्चरणं परिपूर्णम्

परिशिष्टभाग १

महाविद्यायाः मातृकाया होमसामग्रीः

अयुग्मछद्म पुष्प (छितवन), उदुम्बर समिधा, अपामार्ग (चिचिडि), खदिर (खैर), पाकड, वट, पीपल, पलाश, मदार समिधा, कुश, दुर्वा, चमेली, विल्वपत्र, मदार का पर्ण, पलाश पुष्प, तिल, माष वटक (उर्द का बडा), धान्य चूर्ण (चावल का आटा), गोधूम चूर्ण (गेंहूँ का आटा), सैन्धव (सेन्धा नमक), कदली फल (केला), माष समिधा (उर्द की लकड़ी), यव (जौ)।

ब्राह्मण वरण-सामग्री

समस्त ब्राह्मणों के लिए वरण-सामग्री संख्यानुसार—

धोती, कुर्त्ता, बनियान, डुपट्टा या शाल, गमछा, लोटा, थाली, गिलास, आसन, आचमनी, अर्घा, तष्टा, जपमाली, रुद्राक्ष की माला ।

पूजनादि सामग्री

देवता को समर्पित करने की सामग्री—तांबे का कलश ढक्कन सहित १, भगवती के लिए साड़ी १, साया १, ब्लाउज , सुहाग पिटारी, धूप, दीप, पान, सोपाड़ी, सुगन्धि द्रव्य, पञ्चामृत, पञ्चगव्य, अन्य विविध द्रव्य।

अथ महाविद्यायाः मातृकाहोमः

नवकोणं लिखेद्यन्त्रं वह्निबीजेन संयुतम्।
तस्योपरि न्यसेत् पात्रं पूजां कृत्वा सुमन्त्रितः॥

अयुग्मछद्मपुष्पेण होमं कुर्यात् विचक्षणः। कं स्वाहा। उदुम्बरसमिधेन खं स्वाहा अपामार्गेण गं स्वाहा। खदिरेण घं स्वाहा प्लक्षेण ङं स्वाहा। न्यग्रोधेन चं स्वाहा अश्वत्थेन छं स्वाहा। पलाशेन जं स्वाहा अर्केण झं स्वाहा। आम्रेण ञं स्वाहा। कुशेन टं स्वाहा। दूर्वाया ठं स्वाहा। माषया डं स्वाहा। विल्वपत्रेण ढं स्वाहा। अर्कपत्रेण णं स्वाहा। पलाशपुष्पेण तं स्वाहा। तिलैः थं स्वाहा। वटकेन दं स्वाहा। तण्डुलचूर्णेन धं स्वाहा। गोधूमचूर्णेन नं स्वाहा। माषसमिधेन यं स्वाहा। माषेण रं स्वाहा। यवेन लं स्वाहा। लवणेन वं स्वाहा। गुडेन शं स्वाहा। सर्षपेण षं स्वाहा। माषेण सं स्वाहा। तिलेन हं स्वाहा। गुडेन क्षं स्वाहा। लवणेन यं स्वाहा। मत्सेन कं स्वाहा। माषेण बं स्वाहा। सर्षपेण भं स्वाहा। जम्बीर-समिधेन मं स्वाहा। यवपायसघृतैः सर्वभूतपिशाचं निःसारय निःसारय मारय मारय भक्षय भक्षय स्वाहा। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्वभूतपिशाचं छिन्धि छिन्धि स्वादय स्वादय स्वाहा। ॐ रुँ रुँ रुँ सर्वभूतपिशाचं मारय मारय स्वाहा। ॐ हैं हैं हैं सर्वभूतपिशाचमुच्चाटयोच्चाटय स्वाहा।ॐ हूँ हूँ हूँ सर्वभूतपिशाचं मोहय मोहय

निःसारय निःसारय स्वाहा। ॐ अँ स्वाहा। ॐ आँ स्वाहा। ॐ इँ स्वाहा। ॐ ईँ स्वाहा। ॐ उँ स्वाहा। ॐ ऊँ स्वाहा। ॐ ऋँ स्वाहा। ॐ ॠँ स्वाहा। ॐ ऌँ स्वाहा। ॐ ॡँ स्वाहा। ॐ एँ स्वाहा। ॐ ऐँ स्वाहा। ॐ ओँ स्वाहा। ॐ औँ स्वाहा। ॐ अँ स्वाहा। ॐ अः स्वाहा। सर्वभूत-पिशाचं निःसारय निःसारय स्वाहा। ॐ महाविद्यायै नमः॥

महाविद्याप्रयोगः

विनियोगः—ॐ अस्यश्रीमहाविद्यास्तोत्रमालामहामन्त्रस्य अर्यमात्रृषिः, गायत्रीजगतीछन्दांसि, श्रीसदाशिवदेवता, महाशिवप्रीत्यर्थे मनोवांछितसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।

ॐ महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम्।
चिन्तितां ज्ञानरूपेण मनोहृदयनन्दिनीम॥
उत्तमां सर्वविद्यानां सर्वभूतवशंकरी॥

ॐ कुलकरी श्रेयस्सकरी इष्टकरी पुष्टिकरी प्रजाकरी सर्वशत्रुक्षयकरी उत्साहबलवर्द्धिनी सर्वशत्रुग्रहोच्चाटिनी पुत्रपौत्रादिवर्द्धिनी एकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं पाञ्चाह्निकं षाष्ठहिकं साप्ताहिकं अष्टाहिकं सार्धमासिकं साम्वत्सरिकं वैजयन्तिकं वातिकं पैत्तिकं श्लेष्मायिकेतियकागन्तुककुष्ठरोग-पाण्डुरोग-मुखरोग-जठररोग-प्रमेहशूलविसूचिकाक्षयविस्फोटकादिविनाशनाय स्वाहा। ॐ वेतालज्वर-ज्वराग्निज्वर-भूतज्वर-प्रेतज्वर-पिशाचज्वर-ब्रह्मराक्षस-ज्वर-दृष्टिज्वर-विस्फोटकज्वर-पिड़ितज्वर-मासार्धज्वर-मातृप्रयोगादिविनाशनाय स्वाहा। ॐ अक्षशूल-कक्षशूल-कुक्षिशूल-कर्णशूल-गलशूल-दन्तशूल-गण्डशूल-शिरश्शूल-शिरोऽर्धशूल-पादशूल-पादार्द्धशूल-प्राणशूल-सर्वाङ्गशूल-विनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वशत्रूविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वस्फोटक क्लेशविनाशनाय स्वाहा। ॐ आत्मरक्षा-परमात्मरक्षा-प्रत्यङ्गरक्षा-शीतरक्षा-परगतिवायुरक्षा तेषां सकलबध्नामि। ॐ हूँ हूँ हूँ हरदेहिनी स्वाहा। ॐ इन्द्रदेहिनी स्वाहा। ॐ ईश्वर ब्रह्मदण्डं प्रहरदण्डेति हिलि हिलि मायादण्डं नित्यं विश्रामय विश्रामय। रागिणी हंसिनी शूलिनी गारुड़ी रक्ष रक्ष स्वाहा।ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हैं हौं हं ह्रः स्वाहा। गायत्री पुष्पधारिणी उल्कामुखी गजमुखी रुद्रमङ्गशिरो धारिणी गं गणेशाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ शिवाय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ मङ्गलाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ केतवे नमः। ॐ महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा। ॐ असिकुशलकराय वारय भुशुण्डिपालभूतप्रेतग्रहव्याघ्रादि

मृगान् बध्नामि ।सर्व मायां बध्नामि। ॐ सर्वबलं बध्नामि। ॐ बन्धनं कुरु कुरु स्वाहा ॐ पञ्चयोजनविस्तीर्णं रुद्रो वसति मण्डलं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ कँ स्वाहा। ॐ कँ कँ स्वाहा। ॐ खँ स्वाहा। ॐ खँ खँ स्वाहा। ॐ गँ स्वाहा। ॐ गँ गँ स्वाहा। ॐ घँ स्वाहा। ॐ घँ घँ स्वाहा। ॐ ङँ स्वाहा। ॐ ङँ ङँ स्वाहा। ॐ चँ स्वाहा। ॐ चँ चँ स्वाहा। ॐ छँ स्वाहा। ॐ छँ छँ स्वाहा। ॐ जँ स्वाहा। ॐ जँ जँ स्वाहा। ॐ झँ स्वाहा। ॐ झँ झँ स्वाहा। ॐ ञँ स्वाहा। ॐ ञँ ञँ स्वाहा। ॐ टँ स्वाहा। ॐ टँ टँ स्वाहा। ॐ ठँ स्वाहा। ॐ ठँ ठँ स्वाहा। ॐ डँ स्वाहा। ॐ डँ डँ स्वाहा। ॐ ढँ स्वाहा। ॐ ढँ ढँ स्वाहा। ॐ णँ स्वाहा। ॐ णँ णँ स्वाहा। ॐ तँ स्वाहा। ॐ तँ तँ स्वाहा। ॐ थँ स्वाहा। ॐ थँ थँ स्वाहा। ॐ दँ स्वाहा। ॐ दँ दँ स्वाहा। ॐ धँ स्वाहा। ॐ धँ धँ स्वाहा। ॐ नँ स्वाहा। ॐ नँ नँ स्वाहा। ॐ पँ स्वाहा। ॐ पँ पँ स्वाहा। ॐ फँ स्वाहा। ॐ फँ फँ स्वाहा। ॐ बँ स्वाहा। ॐ बँ बँ स्वाहा। ॐ भँ स्वाहा। ॐ भँ भँ स्वाहा। ॐ मँ स्वाहा। ॐ मँ मँ स्वाहा। ॐ यँ स्वाहा। ॐ यँ यँ स्वाहा। ॐ रँ स्वाहा। ॐ रँ रँ स्वाहा। ॐ लँ स्वाहा। ॐ लँ लँ स्वाहा। ॐ वँ स्वाहा। ॐ वँ वँ स्वाहा। ॐ शँ स्वाहा। ॐ शँ शँ स्वाहा। ॐ षँ स्वाहा। ॐ षँ षँ स्वाहा। ॐ सँ स्वाहा। ॐ सँ सँ स्वाहा। ॐ हँ स्वाहा। ॐ हँ हँ स्वाहा। ॐ लँ स्वाहा। ॐ लँ लँ स्वाहा। ॐ क्षँ स्वाहा। ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा।

ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिकभयनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते महेन्द्रदिग्दिशायां ऐरावतारूढं वज्रहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमैन्द्रमण्डलं बध्नामि स्वाहा। पूर्वदिशायां वज्रको नाम राक्षसस्तस्य वज्रकस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। इन्द्रमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रूं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते अग्निदिग्दिशायां मृगारूढं शक्तिहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं अग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। अग्निदिशायां अग्निज्वालोनामराक्षसस्तस्याऽग्निज्वालस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। अग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रूं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेताल सर्ववृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते दक्षिणदिग्दिशायां महिषारूढं दण्डहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं बध्नामि स्वाहा। दक्षिणदिशायां

एकपिङ्गलिको नाम राक्षसस्तस्यैकपिङ्गलिकस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। यममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते नैर्ऋत्यदिग्दिशायां प्रेतारूढं खड्गहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं नैर्ऋत्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। नैर्ऋत्यदिशायां मरीचिकोनामराक्षसस्तस्य मरीचिकस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि। नैर्ऋत्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते पश्चिमदिग्दिशायां मकरारूढं पाशहस्तस्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वरुणमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ पश्चिमदिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि। पश्चिममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिक भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिक भय विनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते वायव्यदिग्दिशायां मृगारूढं धनुर्हस्तं स्वपरिवार सहितं दिग्देवताधिपतिं वायव्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ वायव्यदिशायां तक्षको नाम राक्षसस्तस्य तक्षकस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि। वायव्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य फट् स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते उत्तरदिग्दिशायां नरारूढं गदाहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कुबेरमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ हिमवन्नगोत्तरदिशायां महाभीमो नाम राक्षसस्तस्य महाभीमस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। उत्तरदिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य फट् स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिक भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते ईशानदिग्दिशायां वृषारूढं शूलहस्तं स्वपरिवार सहितं दिग्देवताधिपतिं ईशानमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ईशानदिशायां भैरवो नाम राक्षसस्तस्य भैरवस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ईशानमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य फट् स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षस

वेतालसर्ववृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते ऊर्ध्वब्रह्मदिग्दिशायां हंसारूढं ब्रह्मास्त्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ब्रह्ममण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ उर्ध्वदिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। उर्ध्वमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य फट् स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते अधःअनन्तदिग्दिशायां लोष्ठनागारूढं चक्रहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं अनन्तकालाग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ अनन्तदिशायां अनन्तरूपो नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। अनन्तमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य फट् स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ शिखां मे क्लीं रक्षतु ब्रह्माणी ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं व्रीं क्लीं बूं ह्लूं फट् स्वाहा। ॐ शिरो मे रक्षतु माहेश्वरी ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं व्रीं क्लीं बूं ह्लूं फट् स्वाहा। ॐ उदरं मे रक्षतु रुद्राणी ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं व्रीं क्लीं बूं ह्लूं फट् स्वाहा। ॐ कटिं मे रक्षतु चामुण्डा ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं व्रीं क्लीं बूं ह्लूं फट् स्वाहा। ॐ पादौ मे रक्षतु महालक्ष्मी ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं व्रीं क्लीं बूं ह्लूं फट् स्वाहा। ॐ भुजौ मे ह्लीँ कौमारी रक्षतु। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं व्रीं क्लीं बूं ह्लूं फट् स्वाहा। ॐ जङ्घे मे रक्षतु नारसिंहि ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं व्रीं क्लीं बूं ह्लूं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय गणेश्वराय दुर्गायै महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसवेतालसर्ववृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

परिणामे महाविद्यां महादेवस्य सन्निधौ।
एकविंशतिवारेण पठित्वा सिद्धिमाप्नुयात्॥१॥
स्त्रियो वा पुरुषो वाऽपि पापं भस्मं समाचरेत्।
दुष्टानां मारणं चैव सर्वग्रहनिवारणम्॥२॥
सर्वकार्येषु सिद्धिः स्यात् प्रेतशान्तिर्विशेषतः॥

श्रीमहाभैरवीतन्त्रे महाविद्यास्तोत्रं परिपूर्णम्

●

परिशिष्टभाग २

सप्रयोगमहाविद्यास्तोत्रम्

विनियोग:—ॐ अस्यश्रीमहाविद्यास्तोत्रमालामहामन्त्रस्य अर्यमाऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीसदाशिवकालिकादेवता, क्रीँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, ह्रूँ कीलकं, श्रीसदाशिवकालिकादेवता च प्रीत्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां,
वीणानागेन्द्रशंखाऽऽयुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशुनानामणियुतहृदयां सिन्धुपात्रं वहन्तीं,
वन्देऽभीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्॥

ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं धनकरीं पुष्टिकरीं वृद्धिकरीं हलाकरीं सर्वशत्रुक्षयकरीं उत्साहकरीं बलवर्द्धिनीं सर्ववज्रकायारचितां सर्वग्रहोच्चाटिनीं पुत्रपौत्राऽभिवर्द्धिनीं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवर्द्धिनीं सर्वभूतस्तम्भिनीं द्राविणीं मोहिनीं सर्वाकर्षिणीं सर्वलोकवशङ्करीं सर्वराजवशङ्करीं सर्वयन्त्र-मन्त्र-तन्त्रप्रभेदिनीं एकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं पाञ्चाह्निकं साप्ताहिकं अर्धमासिकं मासिकं षाण्मासिकं साम्वत्सरिकं वैजयन्तिकं पैत्तिकं वातिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं कुष्ठरोग-मुखरोग-गण्डरोग-प्रमेहरोग-जिगररोग-समस्त-उदररोग-शुल्कविषक्षयकरीं-विस्फोटकादि-विनाशनाय स्वाहा। प्रेतादिज्वर-वेतालादिज्वर-रात्रिज्वर-दिवसज्वर-अग्निज्वर-प्रत्यग्निज्वर-राक्षसज्वर-पिशाचज्वर-ब्रह्मराक्षसज्वर-प्रस्वेदज्वर-विषमज्वर-त्रिपुरज्वर-मायाज्वर-अभिचारिकज्वर-दृष्टिज्वर-वृष्टिज्वर-स्मरादिज्वरप्रयोगादि-विनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा। अक्षिशूल-कुक्षिशूल-कर्णशूल-घ्राणशूल-उदरशूल-गलशूल-गण्डशूल-दन्तशूल-पादशूल-पादार्द्धशूलविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वस्फोटकसर्वक्लेशविनाशनाय स्वाहा। ॐ आत्मरक्षा-परमात्मरक्षा-मित्ररक्षा-अग्निरक्षा-प्रत्यग्निरक्षा-परगतिवातोरक्षा तेषां सकलबन्धाय स्वाहा। ॐ हरदेहिनी स्वाहा। ॐ इन्द्रदेहिनी स्वाहा। ॐ स्वस्यब्रह्म-दण्डं विश्रामय। ॐ विश्रामय विष्णुदण्डम्। ॐ ज्वर-ज्वरेश्वरकुमार दण्डम्। ॐ हिलि मिलि मायादण्डम्। ॐ नित्यं नित्यं विश्रामय विश्रामय वारुणी शूलिनी गारुड़ी रक्ष स्वाहा।

गङ्गादिपुलिने जाता पर्वते च वनान्तरे।
रुद्रस्य हृदये जाता विद्याऽहं कामरूपिणी॥

ज्वल ज्वल देहस्य देहेन सकललौहपिङ्गिलि कटिमपुरि किलि किलि महादण्डं कुमारदण्डं नृत्य नृत्य विष्णुवन्दित हंसिनी शङ्खिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रँ स्वाहा। ॐ ह्रँ ह्रँ स्वाहा। ॐ ह्राँ स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्राँ स्वाहा। ॐ ह्रीँ स्वाहा। ॐ ह्रीँ ह्रीँ स्वाहा। ॐ ह्रूँ स्वाहा। ॐ ह्रूँ ह्रूँ स्वाहा। ॐ ह्रैँ स्वाहा। ॐ ह्रैँ ह्रैँ स्वाहा। ॐ ह्रौँ स्वाहा। ॐ ह्रौँ ह्रौँ स्वाहा। ॐ ह्रः स्वाहा। ॐ ह्रः ह्रः स्वाहा। ॐ क्रँ स्वाहा। ॐ क्रँ क्रँ स्वाहा। ॐ क्राँ स्वाहा। ॐ क्राँ क्राँ स्वाहा। ॐ क्रीँ स्वाहा। ॐ क्रीँ क्रीँ स्वाहा। ॐ क्रूँ स्वाहा। ॐ क्रूँ क्रूँ स्वाहा। ॐ क्रैँ स्वाहा। ॐ क्रैँ क्रैँ स्वाहा। ॐ क्रौँ स्वाहा। ॐ क्रौँ क्रौँ स्वाहा। ॐ क्रः स्वाहा। ॐ क्रः क्रः स्वाहा। ॐ अँ स्वाहा। ॐ अँ अँ स्वाहा। ॐ आँ स्वाहा। ॐ आँ आँ स्वाहा। ॐ इँ स्वाहा। ॐ इँ इँ स्वाहा। ॐ ईँ स्वाहा। ॐ ईँ ईँ स्वाहा। ॐ उँ स्वाहा। ॐ उँ उँ स्वाहा। ॐ ऊँ स्वाहा। ॐ ऊँ ऊँ स्वाहा। ॐ ॠँ स्वाहा। ॐ ॠँ ॠँ स्वाहा। ॐ लृँ स्वाहा। ॐ लृँ लृँ स्वाहा। ॐ लॄँ स्वाहा। ॐ लॄँ लॄँ स्वाहा। ॐ एँ स्वाहा। ॐ एँ एँ स्वाहा। ॐ ऐँ स्वाहा। ॐ ऐँ ऐँ स्वाहा। ॐ ओँ स्वाहा। ॐ ओँ ओँ स्वाहा। ॐ औँ स्वाहा। ॐ औँ औँ स्वाहा। ॐ अँ स्वाहा। ॐ अँ अँ स्वाहा। ॐ अः स्वाहा। ॐ अः अः स्वाहा। ॐ कँ स्वाहा। ॐ कँ कँ स्वाहा। ॐ खँ स्वाहा। ॐ खँ खँ स्वाहा। ॐ गँ स्वाहा। ॐ गँ गँ स्वाहा। ॐ घँ स्वाहा। ॐ घँ घँ स्वाहा। ॐ ङँ स्वाहा। ॐ ङँ ङँ स्वाहा। ॐ चँ स्वाहा। ॐ चँ चँ स्वाहा। ॐ छँ स्वाहा। ॐ छँ छँ स्वाहा। ॐ जँ स्वाहा। ॐ जँ जँ स्वाहा। ॐ झँ स्वाहा। ॐ झँ झँ स्वाहा। ॐ ञँ स्वाहा। ॐ ञँ ञँ स्वाहा। ॐ टँ स्वाहा। ॐ टँ टँ स्वाहा। ॐ ठँ स्वाहा। ॐ ठँ ठँ स्वाहा। ॐ डँ स्वाहा। ॐ डँ डँ स्वाहा। ॐ ढँ स्वाहा। ॐ ढँ ढँ स्वाहा। ॐ णँ स्वाहा। ॐ णँ णँ स्वाहा। ॐ तँ स्वाहा। ॐ तँ तँ स्वाहा। ॐ थँ स्वाहा। ॐ थँ थँ स्वाहा। ॐ दँ स्वाहा। ॐ दँ दँ स्वाहा। ॐ धँ स्वाहा। ॐ धँ धँ स्वाहा। ॐ नँ स्वाहा। ॐ नँ नँ स्वाहा। ॐ पँ स्वाहा। ॐ पँ पँ स्वाहा। ॐ फँ स्वाहा। ॐ फँ फँ स्वाहा। ॐ बँ स्वाहा। ॐ बँ बँ स्वाहा। ॐ भँ स्वाहा। ॐ भँ भँ स्वाहा। ॐ मँ स्वाहा। ॐ मँ मँ स्वाहा। ॐ यँ स्वाहा। ॐ यँ यँ स्वाहा। ॐ रँ स्वाहा। ॐ रँ रँ स्वाहा। ॐ लँ स्वाहा। ॐ लँ लँ स्वाहा। ॐ वँ स्वाहा। ॐ वँ वँ स्वाहा। ॐ शँ स्वाहा। ॐ शँ शँ स्वाहा। ॐ षँ स्वाहा। ॐ षँ षँ स्वाहा। ॐ सँ स्वाहा। ॐ सँ सँ स्वाहा। ॐ हँ स्वाहा। ॐ हँ हँ स्वाहा। ॐ लँ स्वाहा। ॐ लँ लँ स्वाहा। ॐ क्षँ स्वाहा। ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भगवते भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते गणेश्वराय स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशक्ति भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्व-वेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमः शिवाय स्वाहा। ॐ सूँ सूर्याय स्वाहा। ॐ सोँ सोमाय स्वाहा। ॐ मँ मंगलाय स्वाहा। ॐ बुँ बुधाय स्वाहा। ॐ बृँ

बृहस्पतये स्वाहा। ॐ शुँ शुक्राय स्वाहा। ॐ शँ शनैश्चराय स्वाहा। ॐ राँ राहवे स्वाहा। ॐ कँ केतवे स्वाहा। ॐ महाशान्तिक भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-वेताल-वृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा। ॐ सिंह-शार्दूल-गजेन्द्र-ग्राह-व्याघ्रादि-मृगान् बध्नामि स्वाहा। ॐ गतिं बध्नामि स्वाहा। ॐ आज्ञां बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वं बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वजन्तुं बध्नामि स्वाहा। ॐ बन्ध बन्ध मोचनं कुरु कुरु स्वाहा।

दिग्बन्धनम्

ॐ नमो भगवते महेन्द्रदिग्दिशायां ऐरावतारूढं वज्रहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमैन्द्रमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ऐन्द्रमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिक-भूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते अग्निदिग्दिशायां मृगारूढं शक्तिहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं अग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ अग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षस-ब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते दक्षिणदिग्दिशायां महिषारूढं कृष्णवर्णं दण्डहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं बध्नामि स्वाहा। ॐ यममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते नैर्ऋत्यदिग्दिशायां प्रेतारूढं खड्गहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं नैर्ऋत्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते पश्चिमदिग्दिशायां मकरारूढं पाशहस्तस्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वरुणमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ वरुणमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष

रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते वायव्यदिग्दिशायां मृगारूढं धनुर्हस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वायव्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ वायव्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते उत्तरदिग्दिशायां नरारूढं गदाहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कुबेरमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ कुबेरमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते ईशानदिग्दिशायां वृषारूढं शूलहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ईशानमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ईशानमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिक भूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते उर्ध्वब्रह्मदिग्दिशायां हंसारूढं ब्रह्मास्त्रहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ब्रह्ममण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ब्रह्ममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते अधोअनन्तदिग्दिशायां लोष्ठनागारूढं चक्रहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं अनन्तकालाग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ अनन्तकालाग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा।

ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते विष्णुदिशायां गरुड़ारूढं गदाहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं विष्णुमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ विष्णुमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लूँ ह्लैँ ह्लौँ ह्लः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते पातालदिशायां कूर्मारूढं लोष्ठभागं कुपरिघहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं पातालमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ पातालमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लूँ ह्लैँ ह्लौँ ह्लः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

दिग्पिशाचानां बन्धनम्

ॐ पूर्वदिशायां वज्रको नाम राक्षसस्तस्य वज्रकस्याऽष्टादशकोटिसहस्रपिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। पूर्वदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लूँ ह्लैँ ह्लौँ ह्लः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ अग्निदिशायां अग्निज्वालो नाम राक्षसस्तस्याऽग्निज्वालस्य अष्टादशकोटिसहस्रपिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। अग्निदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लूँ ह्लैँ ह्लौँ ह्लः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षस बेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ दक्षिणदिशायां एकपिङ्गलिको नाम राक्षसस्तस्यैकपिङ्गलिकस्य अष्टादशकोटिसहस्रपिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। दक्षिणदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लूँ ह्लैँ ह्लौँ ह्लः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे

महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यदिशायां मरीचिको नाम राक्षसस्तस्य मरीचिकस्य अष्टादशकोटिसहस्रपिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। नैर्ऋत्यदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ पश्चिमदिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरस्य अष्टादशकोटिसहस्रपिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। पश्चिमदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ वायव्यदिशायां तक्षको नाम राक्षसस्तस्य तक्षकस्य अष्टादशकोटिसहस्रपिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। वायव्यदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ उत्तरदिशायां महाभीमो नाम राक्षसस्तस्य महाभीमस्य अष्टादशकोटिसहस्रपिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। उत्तरदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ ईशानदिशायां भैरवो नाम राक्षसस्तस्य भैरवस्य अष्टादशकोटिसहस्रपिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ईशान-दिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाच-राक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा।

ॐ ऊर्ध्वदिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्य अष्टादशकोटिसहस्रपिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ऊर्ध्वदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ अधोदिशायां नाग रूपो नाम राक्षसस्तस्य नागरूपस्य अष्टादशकोटिसहस्रपिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। अधोदिशायां पिशाचानां दिशां बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हूँ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसबेतालवृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ शिखायां मे ऐँ ब्रह्माणी रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ शिरो मे ह्रीँ वैष्णवी रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ ललाटे मे क्लीँ माहेश्वरी रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ भुजौ मे ह्रीँ कौमारी रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ उदरे मे ह्रीँ ऐन्द्री रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ जङ्घे मे ह्रीँ वाराही रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ पादौ मे ह्रीँ नारसिंहि रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ सर्वाङ्गं मे क्रीँ चामुण्डे रक्षतु। ॐ ह्राँ ह्रीँ व्रीँ ब्लीँ क्षौँ हुँ फट् स्वाहा।

परिणामे महाविद्यां महादेवस्य सन्निधौ।
एकविंशतिवारेण पठित्वा सिद्धिमाप्नुयात्॥१॥
स्त्रियो वा पुरुषो वाऽपि पापं भस्मं समाचरेत्।
दुष्टानां मारणं चैव सर्वग्रहनिवारणम्॥२॥
सर्वकार्येषु सिद्धिः स्यात् प्रेतशान्तिर्विशेषतः॥

सर्वमन्त्रकीलनम्

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥३॥
अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य जलं पाययेत्॥

महाविद्यामन्त्रः

ॐ ह्रूँ श्रीँ ह्रीँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐँ।

ध्यानम्

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥१॥
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥२॥

शिव उवाच

दुर्लभं तारिणीमार्गं दुर्लभं तारिणीपदम्।
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं दुर्लभं शवसाधनम्॥३॥
श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम्।
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम्॥४॥
तव प्रसादाद् देवेशि! सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः।
नमस्ते चण्डिके चण्डि! चण्डमुण्डविनाशिनी!॥५॥
नमस्ते कालिके! कालमहाभयविनाशिनी!।
शिवे रक्ष जगद्धात्रि! प्रसीद हरवल्लभे!॥६॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्।
जगत् क्षोभकरी विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्॥७॥
करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्।
हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्॥८॥
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालङ्कारभूषिताम्।
हरप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्॥९॥
सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्।
मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिङ्गशोभिताम्॥१०॥
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्।
उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम् ॥११॥
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्।
श्यामाङ्गीं श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्॥१२॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्।
विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्॥१३॥
आद्यामाद्या गुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम्।
श्रीदुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्॥१४॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्।
त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्॥१५॥

शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्।
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्॥१६॥
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्।
सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम्॥१७॥
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम्।
दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्॥१८॥
महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्॥१९॥
रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्।
भैरवी भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्॥२०॥
चतुर्भुजां दशभुजां अष्टादशभुजा शुभाम्।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्॥२१॥
अट्टहासां अट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।
कमलां छिन्नभालां च मातङ्गीं सुरसुन्दरीम्॥२२॥
षोडशीं विजयां भीमां धूम्रां च बगलामुखीम्।
सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्॥२३॥
प्रणमामि जगत्तारां सारां च मन्त्रसिद्धये।
इत्येवं च वरारोहं स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्॥२४॥
पङ्गित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि!।
कुजवारे चतुर्दश्यां अमायां जीववासरे॥२५॥
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्।
त्रिपक्षे मन्त्रसिद्धिः स्यात् स्तोत्रपाठाद्धि शङ्करि!॥२६॥
चतुर्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा।
निशामुखे पठेत् स्तोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्॥२७॥
केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा।
जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद् भुजङ्गिनी॥२८॥

मुण्डमालातन्त्रे महाविद्यास्तोत्रं परिपूर्णम्

महाविद्याकवचम्

भैरव उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्।
आद्याया महाविद्यायाः सर्वाभीष्टफलप्रदम्॥१॥
कवचस्य ऋषिर्देवि! सदाशिव इतीरितः।
छन्दोऽनुष्टुब्देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता॥२॥
धर्मार्थकाममोक्षाणां विनियोगश्च साधने।
ऐँकारः पातु शीर्षे मां कामबीजं तथा हृदि॥३॥
रमाबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः।
ललाटे सुन्दरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशतः॥४॥
भगमाला सर्वगात्रे च लिङ्गे चैतन्यरूपिणी।
पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा॥५॥
उत्तरे वैष्णवी पातु चेन्द्राणी पश्चिमेऽवतु।
माहेश्वरी च आग्नेय्यां नैर्ऋत्ये कमला तथा॥६॥
वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा ह्रीँशकेऽवतु।
इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्यां च यो जपेत्॥७॥
न फलं जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि॥

ॐ शान्तिः॥ ॐ शन्तिः॥ ॐ शान्तिः॥

रुद्रयामले महाविद्याकवचं परिपूर्णम्

●

परिशिष्ट भाग ३

पूजन सामग्री सूची

रोली—१०० ग्रा०
मौली—१ वण्डल बड़ारील
अबीर—१०० ग्रा०
बुक्का—१० ग्रा०
कपूर—१०० ग्रा०
लवङ्ग—२५ ग्रा०
इलायची—२५ ग्रा०
चावल खड़ा—५ कि०ग्रा०
रङ्ग(लाल, हरा, पीला, काला)—१० ग्रा० प्रत्येक
दियासलाई—१बण्डल
धूपबत्ती—५ बण्डल
यज्ञोपवीत—४० पीस
घी—३ कि०ग्रा०
शहद—१०० ग्रा०
चीनी—१०० ग्रा०
रुई—५० ग्रा०
इत्र—१० मि०ग्रा०
गुलाब जल—१०० मि०ग्रा०
पीली सरसों—१० ग्रा०
पञ्चरत्न—८ पुड़िया
सप्तमृत्तिका—८ पुड़िया
सर्वौषधी—८ पुड़िया
जौ—१०० ग्रा०
शतावरी—५० ग्रा०
सुपाड़ीबड़ी—१.५ कि०ग्रा०
पञ्चमेवा—५०० ग्रा०
गरिगोला—१ नग
नारियल पानी वाला—१२ नग
मेंहदी—१०० ग्रा०
हल्दी—१०० ग्रा०

कालीमिर्च—१०० ग्रा०
पाँच रङ्ग का ध्वजा—१ नग
लाल रङ्ग का ध्वजा—२ नग
हरे रङ्ग का ध्वजा—२ नग
काले रङ्ग का ध्वजा—२ नग
पीले रङ्ग का ध्वजा—२ नग
पलास का पत्तल—१० नग
कालाउर्द—५०० ग्रा०
तिल का तेल—५०० ग्रा०
सफेद कपड़ा—५ मी०
लाल कपड़ा—१ मी०
धोती सूती—१ नग
गमछा—१० नग
साड़ी-साया-ब्लाउज—१ सेट
सुहाग पिटारी—१ नग
कलश बड़ा मिट्टी का ढ़क्कनसहित—१ नग
कलश छोटा मिट्टी का ढ़क्कनसहित—२ नग
कसोरा—२५ नग
दीया—१०० नग
दोना—१०० नग
पूर्णपात्र—१ नग
चरुपात्र—१ नग
चौकी—२ नग
पाटा—३ नग
दूध—१०० ग्रा०
दही—१०० ग्रा०
पान का पत्ता—२५ पीस प्रतिदिन
फल—१० नग
मीठा—१ कि०ग्रा०
माला—२५ नग

फूल—५०० ग्रा०
दूर्वा—१ मुट्ठा
तुलसी—१० नग
विल्वपत्र—५० नग
आम्रपल्लव—३ नग
कुशा—१०० नग
गोबर—५० ग्रा०
गोमुत्र—५० ग्रा०

हवन सामग्री—

काला तिल—२ कि०ग्रा०
सफेद तिल—५०० ग्रा०
पीला सरसों—५०० ग्रा०
राई—५०० ग्रा०
कमलगट्टा—१०० ग्रा०
गुगुल—१०० ग्रा०
लोहबान—१०० ग्रा०
लाल चन्दन का चूरा—१०० ग्रा०
सफेद चन्दन का चूरा—१०० ग्रा०
सेंधा नमक चूरा—५०० ग्रा०
धान का लावा—१०० ग्रा०
पञ्चमेवा—१०० ग्रा०
धत्तुर फल का बीज—१०० ग्रा०
मदार का पत्ता—१०० नग
मदार की लकड़ी—१०८ नग
आम की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
बेर की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
लाल चिचिडि की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
पीपल की लकड़ी—५ कि०ग्रा०
गाय की गोहरी—१०० नग
गुलर की लकड़ी—१०८ नग
पलास की लकड़ी—१०८ नग
पलास का फूल—१०८ नग
वट की लकड़ी—१०८ नग
छितवन का फूल—१०८ नग
पाकड़ की लकड़ी—१०८ नग
खैर की लकड़ी—१०८ नग
उर्द का बड़ा बिना नमक का—१०८ नग
चावल का आटा—१०० ग्रा०
गेंहू का आटा—१०० ग्रा०
केला—१२ नग
सरसों की लकड़ी—१०८ नग
नीम्बु की लकड़ी—१०८ नग
उर्द की लकड़ी—१०८ नग
जौ की लकड़ी—१०८ नग
खोआ—१ कि० ग्रा०
गाय का दूध—२ ली०

तन्त्रशास्त्र के महत्वपूर्ण ग्रन्थ-मूल संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित

- तन्त्रसार : परमहंस मिश्र (1-2 भाग)
- कुलार्णवतन्त्रम् : परमहंस मिश्र
- नित्योत्सव : (श्रीविद्याविमर्शकसद्ग्रन्थ) परमहंस मिश्र
- त्रिपुरारहस्यम् : (ज्ञान एवं महात्म्य खण्ड) जगदीशचन्द्र मिश्र (1-2 भाग)
- तन्त्रालोक : राधेश्याम चतुर्वेदी (1-5 भाग)
- स्वच्छन्दतन्त्रं : राधेश्याम चतुर्वेदी (1-2 भाग)
- नेत्रतन्त्रम् : राधेश्याम चतुर्वेदी
- कामाख्यातन्त्रम् : राधेश्याम चतुर्वेदी
- महाकालसंहिता : (कामकला-कालीखण्ड) राधेश्याम चतुर्वेदी
- महाकालसंहिता : (गुह्यकाली-खण्ड) राधेश्याम चतुर्वेदी (1-5 भाग)
- [illegible]मलम् : सुधाकर मालवीय (1-2 [illegible]
- [illegible]तिलकम्-सुधाकर मालवीय [illegible]
- [illegible]दधि : सुधाकर मालवीय
- [illegible]त्रम् : कपिलदेवनारायण [illegible]
- [illegible]तन्त्रम्-कपिलदेवनारायण [illegible]
- [illegible]णतन्त्रम् : कपिलदेवनारायण
- [illegible]लाविलास : श्यामाकान्त द्वि[illegible]
- [illegible]स्यारहस्यम् : श्यामाकान्त द्वि[illegible]
- स्पन्दकारिका : श्यामाकान्त द्विवेदी
- सर्वोल्लासतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- नीलसरस्वतीतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- भूतडामरतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- सिद्धनागार्जुनतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- अन्नदाकल्पतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- त्रिपुरार्णवतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- विज्ञानभैरव : बापूलाल अँजना
- श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् । कपिलदेवनारायण (1-5 भाग सम्पूर्ण)
- देवीरहस्यम् : (रुद्रयामलतन्त्रोक्तम्) कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- स्वर्णतन्त्र : भाषा टीका
- महानिर्वाणतन्त्रम् : कपिलदेवनारायण
- बृहत्तन्त्रसार : कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- सौन्दर्यलहरी : लक्ष्मीधरी टीका सहित सुधाकर मालवीय
- सिद्धसिद्धान्तपद्धति : द्वारकादास शास्त्री
- आगमतत्त्वविलास : एस.एन.खण्डेलवाल (1-4 भाग सम्पूर्ण)
- राधातन्त्रम् : एस.एन. खण्डेलवाल
- सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्रम् एस.एन.खण्डेलवाल

◆◆◆

तंत्र विषयक महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ

- **श्रीविद्या-साधना** : (श्रीविद्या-उपासना का साङ्गोपाङ्ग शास्त्रीय विवेचन) (1-2 भाग सम्पूर्ण)
- **भारतीय शक्ति-साधना** : (शक्ति-विज्ञानः स्वरूप एवं सिद्धान्त का शास्त्रीय विवेचन)
- **ब्रह्मास्त्रविद्या एवं बगलामुखी-साधना** : (महाविद्याबगला-उपासना का शास्त्रीय विवेचन)
- **काश्मीर शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र** : (शिवसूत्र, शक्तिसूत्र एवं स्पन्दसूत्र के सन्दर्भ में)
- **मुद्राविज्ञान एवं साधना** : (नित्यकर्मीय एवं तान्त्रिक मुद्राओं का सचित्र एवं शास्त्रीय विवेचन)

◆◆◆

श्रीविद्यारण्ययतिप्रणीतं

श्रीविद्यार्णवतन्त्रम्

साधनात्मकभाषाभाष्योपेतम्

भाषाभाष्यकार-श्रीकपिलदेवनारायण

(1-5 भाग सम्पूर्ण)

◆◆◆

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन-वाराणसी

तन्त्रशास्त्र के महत्वपूर्ण ग्रन्थ-मूल संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित

- **तन्त्रसार** : परमहंस मिश्र (1-2 भाग)
- **कुलार्णवतन्त्रम्** : परमहंस मिश्र
- **नित्योत्सव** : (श्रीविद्याविमर्शकसद्ग्रन्थ) परमहंस मिश्र
- **त्रिपुरारहस्यम्** : (ज्ञान एवं महात्म्य खण्ड) जगदीशचन्द्र मिश्र (1-2 भाग)
- **तन्त्रालोक** : राधेश्याम चतुर्वेदी (1-5 भाग)
- **स्वच्छन्दतन्त्रं** : राधेश्याम चतुर्वेदी (1-2 भाग)
- **नेत्रतन्त्रम्** : राधेश्याम चतुर्वेदी
- **कामाख्यातन्त्रम्** : राधेश्याम चतुर्वेदी
- **महाकालसंहिता** : (कामकला-कालीखण्ड) राधेश्याम चतुर्वेदी
- **महाकालसंहिता** : (गुह्यकाली-खण्ड) राधेश्याम चतुर्वेदी (1-5 भाग)
- **रुद्रयामलम्** : सुधाकर मालवीय (1-2 भाग)
- **शारदातिलकम्**-सुधाकर मालवीय (1-2 भाग)
- **मन्त्रमहोदधि** : सुधाकर मालवीय
- **लक्ष्मीतन्त्रम्** : कपिलदेवनारायण (1-2
- **तन्त्रराजतन्त्रम्**-कपिलदेवनारायण (1-2
- **महानिर्वाणतन्त्रम्** : कपिलदेवनारायण
- **कामकलाविलास** : श्यामाकान्त द्विवेदी
- **वरिवस्यारहस्यम्** : श्यामाकान्त द्विवेदी
- **स्पन्दकारिका** : श्यामाकान्त द्विवेदी
- **सर्वोल्लासतन्त्रम्** : एस. खण्डेलवाल
- **नीलसरस्वतीतन्त्रम्** : एस. खण्डेलवाल
- **भूतडामरतन्त्रम्** : एस. खण्डेलवाल
- **सिद्धनागार्जुनतन्त्रम्** : एस. खण्डेलवाल
- **अन्नदाकल्पतन्त्रम्** : एस. खण्डेलवाल
- **त्रिपुरार्णवतन्त्रम्** : एस. खण्डेलवाल
- **विज्ञानभैरव** : बापूलाल अँजना
- **श्रीविद्यार्णवतन्त्रम्** । कपिलदेवनारायण (1-5 भाग सम्पूर्ण)
- **देवीरहस्यम्** : (रुद्रयामलतन्त्रोक्तम्) कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- **स्वर्णतन्त्र** : भाषा टीका
- **महानिर्वाणतन्त्रम्** : कपिलदेवनारायण
- **बृहत्तन्त्रसार** : कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- **सौन्दर्यलहरी** : लक्ष्मीधरी टीका सहित सुधाकर मालवीय
- **सिद्धसिद्धान्तपद्धति** : द्वारकादास शास्त्री
- **आगमतत्त्वविलास** : एस.एन.खण्डेलवाल (1-4 भाग सम्पूर्ण)
- **राधातन्त्रम्** : एस.एन. खण्डेलवाल
- **सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्रम्** एस.एन.खण्डेलवाल

तंत्र विषयक महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ

- **श्रीविद्या-साधना** : (श्रीविद्या-उपासना का साङ्गोपाङ्ग शास्त्रीय विवेचन) (1-2 भाग सम्पूर्ण)
- **भारतीय शक्ति-साधना** : (शक्ति-विज्ञानः स्वरूप एवं सिद्धान्त का शास्त्रीय विवेचन)
- **ब्रह्मास्त्रविद्या एवं बगलामुखी-साधना** : (महाविद्याबगला-उपासना का शास्त्रीय विवेचन)
- **काश्मीर शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र** : (शिवसूत्र, शक्तिसूत्र एवं स्पन्दसूत्र के सन्दर्भ में)
- **मुद्राविज्ञान एवं साधना** : (नित्यकर्मीय एवं तान्त्रिक मुद्राओं का सचित्र एवं शास्त्रीय विवेचन)

श्रीविद्यारण्ययतिप्रणीतं

श्रीविद्यार्णवतन्त्रम्

साधनात्मकभाषाभाष्योपेतम्

भाषाभाष्यकार-श्रीकपिलदेवनारायण

(1-5 भाग सम्पूर्ण)

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन-वाराणसी